॥ श्री ॥

बालकृष्णाजी सदासहाय

चौरासी वार्ता

श्रीमद्

आर्य्याणा परमानु कंम्पा

स्यद भागवदीय चतुरासी

ति संरव्याक बैषणावा नं

बार्ता

श्री युत मुन्शी नवल किशोर भागव
मालिक ग्रवध समाचार पत्रकीआज्ञानुस

स्थान मथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल सम्पादिकपत्रन्शीधर
मंनजरके प्रबंधसेमुम्बे उल्लसनामशिला
यंत्र में छापी गई ॥ दूसरीबार १००० पुस्तक

नवम्बर सन् १८७३ ई०

श्रीकृष्णायनमोनमः।
श्रीगोपीजनवल्लभायनमोनमः

अथश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवकनकीचौरासीवार्तालिख्यते

अथआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवकदामोदरदासहरसानीतिनकीवार्ता॥

सो एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभू पृथ्वीपरिक्रमा कौं पधारे हुते तब तहांदामोदरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकेसाथहे सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आपदामोदरदाससों अपने श्रीमुखसोंद्रमल्लाकहते, और कहतेजोयहमार्गतोरेलियेप्रगटकीनोंहैंसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आपऐसेकहतेसो पृथ्वीपरिक्रमाकरतश्रीगोकुलपधारेसोश्रीगोकुलमेंएकचौंतराश्रीगोविंदघाटऊपरहुतो तहांश्रीआचार्यजीमहाप्रभू आयविश्रामकरतेताठौर ऊपरश्रीआचार्यजीमहाप्रभूकीबैठकहैऔरश्रीद्वारिकानाथजीकोमन्दिरहैतहांश्रीआचार्यजीमहाप्रभूबैठेहुते तासमयश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकोमहाचिंतउपजी जोश्रीठाकुरजीनेतोआज्ञादीनीहैजोतुमजीवनकोंब्रह्मसंबंधकरावो तबश्रीआचार्यजीमहाप्रभू अपनेमनमेंविचारेंजोजीवतोदोषवंतहैऔरश्रीपुरुषोत्तमजीतोगुननिधानहैंतातेंऐसेंकैसेंसंबंधहोयतातेंचिंताउपजी सो अत्यंतआतुरभएतासमयश्रीठाकुरजीआपतत्कालप्रगटहोयकेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनसोंपूछेंजोतुमचिंताआतुरकोंहो तबश्रीआचार्य।

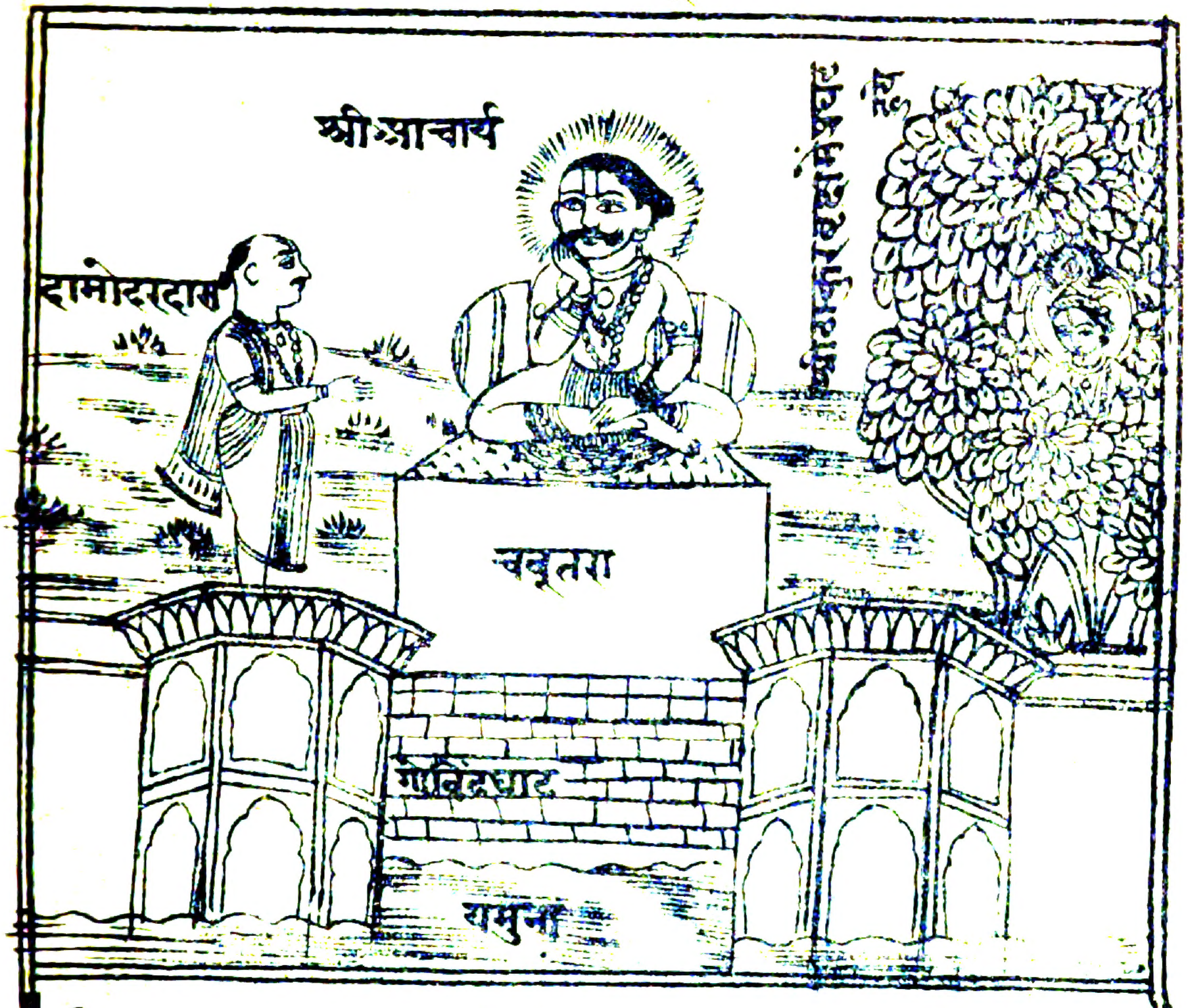

जी महा प्रभू आप कहैं जो जीव को स्वरूप तौ तुम जा
नत ही हौ दोषवन्त है सो तुम सों संबंध कैसें होय नव
श्री ठाकुर जी आप कहैं जो तुम जीवन कों ब्रह्म संबंध
करावोगे तिन कौं हौं अंगीकार करूंगो तुम जीवनकों
नाम देउंगे तिन के सकलदोष निवर्त होंयगे ये बातें
आवणा शुदि ११ के दिन अर्द्ध रात्रि कों भई प्रातः काल
पवित्रा द्वादशी हुती तातें पवित्रा सूत कौं करि राख्यो हुतो
सो पवित्रा श्री पूरन पुरुषोत्तम जी कों पहरायो मिश्री भो
ग धरी ता समय कें यं अक्षर हुते ताकों श्री आचार्य जी
महा प्रभू आप सिद्धांत रहस्य ग्रंथ की ये हैं सो श्लोक २०
॥ श्रावणा स्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि
साक्षात भगवता प्रोक्तं तदक्षर मुच्यते ॥१

ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछो जो दमला ने कछु सुन्यों नव दामोदर दास नें वीनती कीनी जो महाराज श्री ठाकुर जी के वचन सुने तो सही परंतु कछु समझ्यो नहीं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कही जो मो को श्री ठाकुर जी ने आज्ञा कीनी है जो तुम जीवन को ब्रह्म संबन्ध कराइ दो गे तिनको हों अंगीकार करूंगो तिन के सकल दोय निवर्त होंयगे ताते ब्रह्म संबंध अवश्य करनो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १

बहुर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें श्री ठाकुरजी के पास यह मांग्यो जो मेरे आगें दामोदर दास की देह न छूटे और श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदर दास सों कछु गोप्य न राखते और श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री भाग वत अहर्निस देखते कथा कहते और मार्ग को सिद्धांत भगवद लीला रहस्य श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के हृदय में स्थापन कीयो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

और एक समय दामोदर दास और श्री गुसांई जी एकान्त में बैठे हुते तब श्री गुसांईजी नें दामोदर दास सों पूछो जो तुम श्री आचार्यजी महाप्रभून को कहा कार जानत हो तब दामोदर दास ने कही जो हम तो श्री आचार्य जी महा प्रभून कों जगदीस जो श्री ठाकुर जी सिनहूं ते अधिक कार जानत हैं तब श्री गुसांई जी दामोदर सों कहे जो तुम ऐसें क्यों कहत हो तो श्री ठाकुर जी तें श्री आचार्यजी वड़े हैं तब दामो

दर दास नें कही जो महाराज दान वड़ो के दाना वड़ो
काहू के पास धन बहुत होय तो राज कहा करें जो दे
य ताकौं जानिये और श्री आचार्य जी महा प्रभून को
सर्वस्व धन श्री ठाकुर जी हैं सो हम जीवन कौं दान
किये नातें हम श्री आचार्य जी महा प्रभून कौं सब
ते वड़े करि जानत हैं ॥

वार्ता प्रसंग ३

और एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू तथा श्री
गुसांई जी अपनी बैठक में बैठे हुते पास दे चार बैष्ण
व हंसि वे खेलवे के बैठे हुते आप उन सों हंस ते खे
लते मसखरी करते बहुत प्रसन्नता में उन सों खेल
वे की वार्ता करत हुते ता समय दामोदर दास आये ता

दामोदरदास

समय श्री गुसांई जी नें बहुत आदर सन्मान कियो पा-
छें दामोदर दास बैठे तब श्री गुसांई जी सों दामोदर दास
नें कही जो महाराज अपनो मार्ग निश्चय ताकों नाहीं
यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरता को है तब श्री गुसांई
जी नें कही जो तुम साँची बात कहत हो परि हम कों
जब श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा होयगी तब
कष्ट आतुरता होयगी यह मार्ग तो श्री आचार्य जी
महाप्रभून की कृपा तें नहोय तब दामोदर दास साष्टांग
दंडवत करि के वीनती की जो हम कोंतो एकवार राज
सों वीनती करनी है पाछें आप प्रभू हो भली जानोगे सो
करोगे पर यह मार्ग तो या भांति को है तब श्री गुसांई
जी बहुत प्रसन्न भए और कहे जो हम को यह वार्ता श्री
आचार्य जी ढ्वारा है और कहे जो तुमन कहो तो कोनक
है हम तुम को देखत हें तब अति प्रसन्न होत हें आप श्री
आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जानि कें दामोदर दास
की सिक्षा मान न भये ताने बड़े सो बड़े ॥

वार्ता प्रसंग ४

और प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री ठाकुरजी
के पास यह भाष्यो जो मेरे आगे दामोदरदास की देह
न छूटे ताको हेत यह जो श्री आचार्य जी महाप्रभू सन्यास
ग्रहण करिवेको विचार मन में करें ता समें श्री गोपी
नाथ जी श्री गुसांई जी ये दोऊ भाई बालक हुते तातें
मार्ग को सिद्धान्त वार्ता श्री आचार्य जी महाप्रभू सन्या
स ग्रहण कीए तब कितनेक दिना पीछें श्री गुसांईजी
नें एक का नीरो पूछो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून ने मा-

र्ग प्रगट कीयो है सो उच्छव को कहा प्रकार है हम तौ कछू जानत नाहीं तब श्री अक्काजी ने कह्यो जो मार्ग तथा उच्छव को प्रकार सब दामोदर दास सों कहे हैं सो तुम उन सों पूछो तुम सों दामोदर दास कहेगो तब श्रीगुसांई जी दामोदर दास ने बहुत सन्मान करि भक्ति भाव सों घर में पधराये पाछें उच्छव को प्रकार श्री-गुसांई जीनें पूछो सो दामोदर दास ने सब कह्यो ॥

वार्ता प्रसंग ५

और एक समय दामोदर दास के पिता को श्राद्ध दिन हतो वा दिन श्रीगुसांई जी दामोदर दास के घर प धारे और दामोदर दास कों श्राद्ध करवायो पाछें उ स्थापन के समें दामोदर दास दक्षिणा कों लाये तब श्री-गुसांई जी ने कही जो मोकों श्राद्ध करवाये की दक्षिणा दे उ तब दामोदर दास कहे जो दक्षिणा में एक बात कहूंगो सो सिद्धांत रहस्य के डेढ़ श्लोक को व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है तब श्री गुसांई जी ने कही जो मा गें कहो तब दामोदर दास ने कही जो मैनें तो इतनों ही संकल्प कियो है तब श्री गुसांई जी चुप कर रहे पाछें दामोदर दास ने गाये कछु नालिका श्री गुसांई जी के आगे कही श्री भागवत की सुबोधिनी श्री आचार्यजी महा प्रभून के ग्रंथ की टीका और रहस्य वार्ता श्री आचार्य जी महाप्रभू कहे हैं सो सब कही ता पाछें श्री गुसांईजी दामोदर दास को नमस्कार करन न दे यातें जो श्री गुसांई जी अपने मन में विचारे जो श्री आचार्यजी महा प्रभून को स्वरूप दामोदर दास के हृदय विषे मदा सर्वदा

विराजमान हैं तो इन पास दंडौत नमस्कार न करावनो
याते नमस्कार न करन देते पाछें श्री आचार्यजी ..
..... महाप्रभून में दामोदर दास कों दर्शन दीयो औ
र आज्ञा दी जो अबतें तू श्रीगुसांई को चरणोदक नि-
त्य लीयो कर तब प्रातःकाल दामोदर दास श्रीगुसां
ईजी के पास आये और चरणोदक मांग्यो तब श्री गु
सांईजी ने चरणोदक को नाहीं कीनो तब दामोदर दा-
सनें श्री गुसांईजी सों कही जो मोको ..... श्री आचा
र्यजी महाप्रभून की आज्ञा भई है और दर्शन भए हैं औ
र कह्यो जातू श्रीगुसांईजी को चरणोदक नित्य लीजि
यो तब श्रीगुसांईजी ने चरणोदक दियो और दामोदर
दास को श्री आचार्यजी महाप्रभू तीसरे दिन दर्शन दंत
मार्ग को रहस्य वार्ता कहते ऐसी कृपा करते और कदा
चित तीसरे दिन दर्शन न होतो ता दिन दामोदर दास
के पेट में पीडा होती अत्यंत कष्ट पावते पाछें जब
दर्शन होता तब तत्काल कष्ट निवर्त हो जातो ऐसे
करत कितनेक वर्ष पर्यंत दामोदर दास कों श्री गु
सांईजी ने दर्शन दीनों तथा श्री आचार्यजी महाप्रभू
नने दर्शन दीनों ऐसी कृपा करते जो वात होती सो दा
मोदर दास श्रीगुसांईजी के आगे कहते और मार्ग के
प्रकार की वार्ता अहर्निस कहते जो दामोदर दास के
हृदय में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजमान हैं
ताते दामोदर दास कों दंडौत न करन देते और कहते
जो दामोदर दास की वार्ता को पार नहीं ऐसे मार्ग के
टेक के कृपा पात्र हैं ॥

वार्ता प्रसंग ६

नव श्री आचार्य जी महा प्रभू दामोदर दास कों पूछे जो दामोदर दास तू श्री गुसांई जी कों कहा करि जानत हो नव दामोदर दास नें कही जो महाराज हम तो तुम्हा रे पुत्र करि जानत हैं नव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें दामोदर दास कों आज्ञा दीनी जो जैसे तुम मोकों जानत हो तैसे इन कों स्वरूप जानिगों और श्री आचार्य जी म हा प्रभुननें शृंगार रस मंडन ग्रंथ कीयो हैं तामें लिये हैं नाते ये दामोदर दास ऐसे कृपा पात्र भगवदी हैं ॥

वार्ता प्रसंग ७

और प्रथम श्री आचार्य जी महा प्रभू दामोदर दास सों कह्यो जो यह मांग तेरे लिये प्रगट कीयो है ताको हेत यह जो जहां लगि श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास की स्थित गोप्य है पाछें दामोदर दास ने कह्यो जो में श्री ठाकुर जी के बच न तो सुने पर कछु समझो नहीं ता समें श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो आजहू दश जन्म कों अंत राय है ताको हेत यह जो जब लगि श्री आचार्य जी म हा प्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास के आगळ फेर फेर है मार्ग के स्थंभ प्रथमया नें कहें श्री आचार्य जी महा प्रभूननें दामोदर दास के हृदय में भगवद लीला स्थापी संपूर्ण सृष्टि कों सम्बोधन करि दे कों ताकों यह हेत जो जब लगि श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग की स्थित है तब लगि दामोदर दास की हू स्थिति है सो वे दामोदर दास ऐसे टंक के कृप

पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कों पार नहीं तातें इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ८

॥ वैष्णव १ ॥

अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के से- ॥

वक कृष्ण दास मेघन छत्री तिन्की वार्ता

सो एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परि क्रमा करी तब कृष्ण दास मेघन साथ हे सो बद्री नारायण के परली ओर किरनी नाम पर्वत है सो तहां ते एक बड़ी शिला गिरी सो कृष्ण दास ने हाथ सो थांभी तब श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रसन्न भये तब कृष्ण दास सों कह्यो

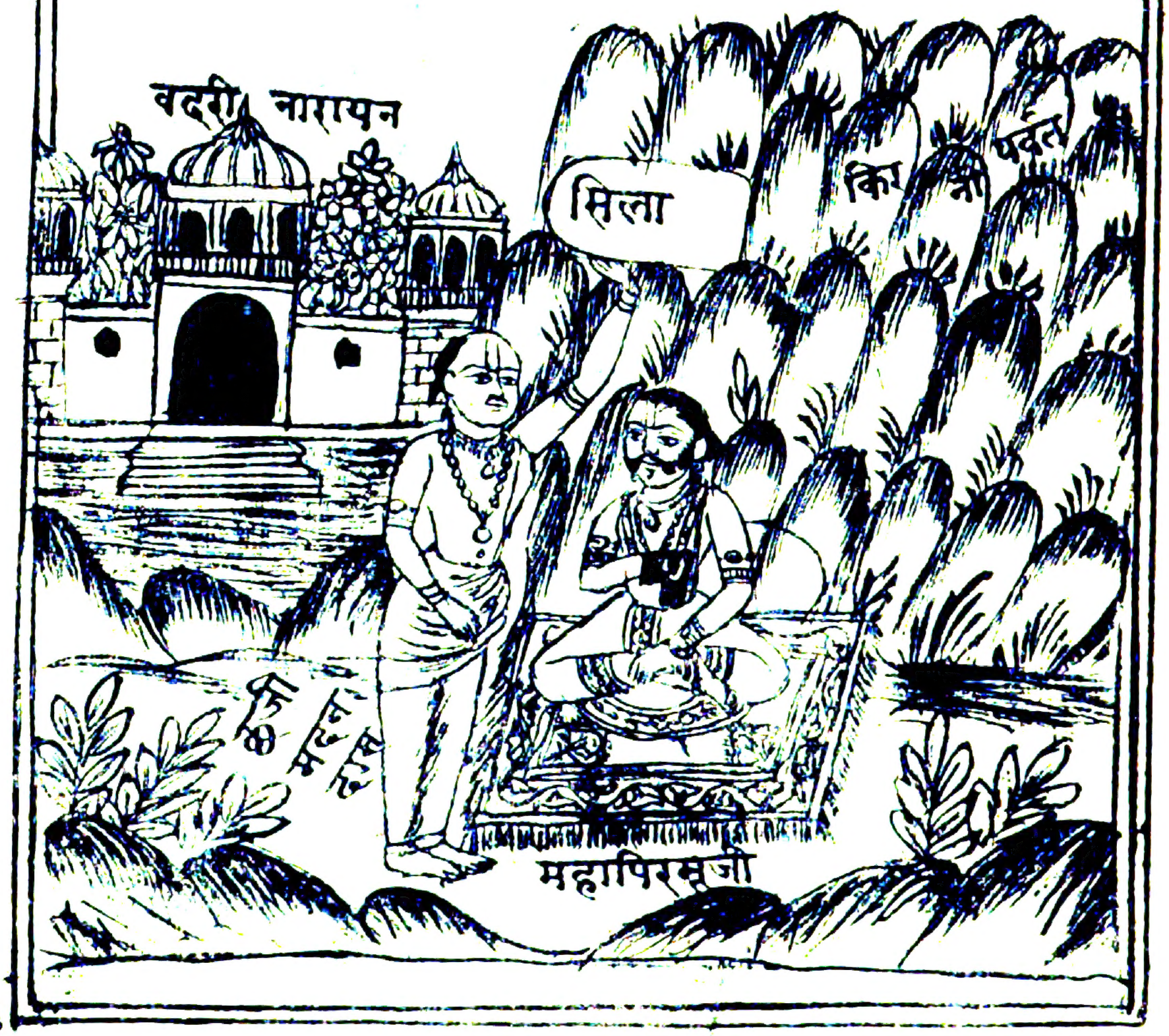

जो मांगि कहा मांगत है नव तीन वस्तु मांगी एक तो
मुखरता को दोष जाय दूसरे मार्ग को सिद्धांत समझें
तीसरे मेरे गुरू के घर पधारो तामें दोय वस्तु दीनी-
गुरू के घर पधारवे की नाहीं कीनी वद्र वद्रिकाश्र-
म ने आगें पधारे जहां जीव की गम्य नाहीं है तहां वेद
व्यासजी को स्थान है तहां पधारे तब कृष्णदास सों
कह्यो जो तू ठाड़ो रहियो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू
आगें पधारे तब वेद व्यास जी सामें आये सो श्री आचा
र्यजी महाप्रभून कों अपने धाम में ले आए पाछें वेद।
व्यासजी ने श्री आचार्यजी महा प्रभून सों कह्यो जोतु
मनें श्री भागवत की टीका कीनी है सो मो को सुनावो
तब श्री आचार्यजी महा प्रभून ने जुगल गीत के अ-
ध्याय को एक श्लोक कह्यो सो श्लोक

वाम बाहु कृत वाम कपोलो वलित भ्रूर
धरार्पित वेणु ॥ कोमलां गुलि भिराश्रित
मार्ग गोप्य देरयति यत्र मुकुन्दः ॥१॥

या श्लोक को व्याख्यान कह्यो सो तीन दिन में संपूर्ण
भयो तब वेद व्यास जीने वीनती करी जो मैं या भागवत
के व्याख्यान की अब धारणा करि सकत नाहीं तातें अब
क्षमा करौ पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभूनने वेद व्यास
जी सों कह्यो जो तुम वेदांत के जैसे सूत्र कहा कीये जो
माया वाद पर अर्थ लाग्यो तब व्यास जीने जो मैं कहा क
रूं मो कों आज्ञा ही ऐसी हती जो जैसे अर्थ करियो तब
श्री आचार्यजी महा प्रभूननें कही जो मैं ब्रह्म वाद
पर अर्थ कियो है सो व्यासजी कों सुनायो सो व्यास

जी सुन कर बहुत प्रसन्न भए ना पाछें वेद व्यास जी सों विदा होय के तीसरे दिन पधारे तब कृष्ण दास सों कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ने तब कृष्ण दास नें कह्यो जो महाराज हों कहां जाऊं मो कों तुम्हारे चरणारविंद विना और आश्रय नाहीं है तब यह सुनके श्री आचार्य जी महा प्रभू बहुत प्रसन्न भए तब कह्यो जो मांगि तब वेही तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरता को दोय जा य दूसरे मार्ग को सिद्धांत समझों तीसरे मेरे गुरू के घर पांव धारो सो तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधारवे की नाहीं कीनी ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू गंगा सागर पधारे तहां श्री आचार्य जी महा प्रभू पोढ़ रहे तहां कृष्ण दास पावदाव न हुते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू मन में विचारे जो धान के मुर मुरा होंय तो लीजिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून के अंतः करन की कृष्ण दास मेघन नें जानी इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून कों निंद्रा आई तब कृष्ण दास उठि के गंगा सागर उपर आए तब देखे तो पार .. एक दीया वरत है ताकी अटकर ले पैर के गंगा जी पार आये तहां गांव हो सो रेवन में ते गीले धान करवाये तहां गांव में जाय के भ रवूजा कों टका की जगह चार टका दे कें मुर मुरा सिद्ध करवाए तब लेकें आये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून के चरणारविंद दाब के जगाये और मुर मुरा आगें धरे तब कह्यो राज आरोगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू

ननैं पूछो जोतू कहां ते लायो तव समाचार कहेजो म
हाराज मैं पार ते लायो तव श्री आचार्य जी महाप्रभू
वहुत प्रसन्न भये तव कह्यो जो मांगि तव वेही तीनू व
स्तु मांगी मुखरता को दोष जाय मार्ग को सिद्धांत मेरे हृ
दय में आवे तीसरे मेरे गुरू के घर पाव धारो तव श्री
आचार्य जी महाप्रभू ने कह्यो सो जीव कहा मांगि
जानैं या समें जो मांगतो सोई देतो जो कहतो तो श्री
ठाकुर जीको स्वरूप दिखावतो तहांते श्री आचार्य
जी महाप्रभू मोरा पधारे तव कृष्ण दास ने वीनती क
रिकें कह्यो जो महाराज मेरे गुरू है सो बुलायलाऊं
तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तू खेद पावै
गो पाछें कृष्ण दास अकेले गुरु के पास आयो तव कृ
ष्णदास कों गुरु ने देख्योतव कृष्ण दास सों गुरुनें कर
ह्यो जो अरे तेनें और गुरू कीयो तव कृष्ण दास ने क
ह्यो जो मेनें तो और गुरू नाहीं कीयो मेरे गुरू तो तुमहीं
हौ पर तुम्हारी कृपा ते मेनें पूरण पुरुषोत्तम पाये है तव
गुरू ने कही जो पुरुषोत्तम क्यों जानियें तव गुरू के आ
गे अग्नि की अंगीठी धक धकाती हती तामें ते कृष्ण
दास ने दोऊ हाथ की अञ्जुली भरि कें अंगार हाथ-
में लिये और कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू जो
पूरण पुरुषोत्तम होय तो मेरे हाथ मति जरियों और
जो और भांति होय तो मेरे हाथ भस्म होय जइयों सो-
एक मुहूर्त लो अग्नि हाथ में राखी तव गुरु नें भयखाई
और कह्यो जो अग्नि डार देउ पाछें उन गुरून ने कृष्ण
दास के हाथ में सों अपने हाथ सों पकरि कें अग्नि

डर वाय दीनो तब कृष्ण दास उहांते खेद पाय के उठि आयो यह प्रसंग सब श्री वल्लभाष्टक की टीका में श्री गोकुलनाथ जी ने विस्तार करि कें लिख्यो है ॥ * ॥

प्रसंग २

बहुर मार्ग स्थ्यारूढ़ भयो पाछें कदाचित् गोप्य वार्ता होय सो सबन के आगें कहें पाछें काहू वैष्णवनें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो कृष्ण दास स बन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कृष्ण दास सों कह्यो जो क्यों रे तू सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब कृष्ण दास ने कह्यो जो महाराज आप उनही सों पूछिये जो मैंनें कहा कह्यो

हैं तव उन वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महा[illegible]न नें पूछो जो तुम सों कृष्ण दास नें कहा वार्ता कही है तव वैष्णवन नें कही जो महाराज हम को तो सुधि रही नाहीं तव श्री आचार्य जी महा प्रभू मुसिक्याय के चुप करि रहे ॥

प्रसंग ॥३॥

और एक समय श्री ठाकुर जी की इच्छा ते श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कृष्ण दास ने प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों प्रिय वस्तु कहा है सो मोसों कहौ मो ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभू कहें जो श्री ठाकुर जी उत्तम वस्तु के भोगता हैं परंतु गोर शब्देन वानी कहीयतु हैं गोरस अति प्रिय है ताके भाव अति वैचनी यहैं और सवन ते भक्ति को स्नेह प्रभाव अति प्रिय है ता ते भक्ति वत्सल कहावत हैं तव कृष्ण दास ने फिर प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों अप्रिय वस्तु कहा है तव श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी कों धूंआं समान अप्रिय वस्तु कछू नाही और नाते अ प्रिय भक्तन के द्वेषी हैं फिर कृष्ण दासनें प्रश्न पूछो जो महाराज श्री रघुनाथ जी संम्पूर्ण सृष्टि कों लेकें स्वधाम में पधारे हैं और राजा दशरथ कों स्वर्ग दीयो सो काहे ते ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो श्री रघुनाथ जी परम दयाल हैं तातें स्वर्ग दीयो नातर दश रथ कों स्वर्ग की योग्यता न हुती यातें अपनो वचन सत्य करिवे कों वनवास पठाय दीये ऐसो कर्म कीयो ॥

प्रसंग ॥४॥

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कृष्ण

दास ने प्रश्न पूछो जो महाराज भक्त होय के श्रीठाकुर जी
की लीला को भेद नाहीं जानत सो काहेतें तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कह्यो जो ग विधि पूर्वक समर्पण जो
कह्यो है सो नाहीं करत अनुभव क्यों जानें और भग
वद भक्त को संग करे तो श्री ठाकुर जी की लीला को
भेद जानें सो तो आप कों योग्यता मान काहू को संग
नाहीं करत और कछू करत हैं सो अंतः करन पूर्वकना
हीं करत हैं मोतें श्री ठाकुर जी के स्वरूप को तथा लीला
को भेद नाहीं जानत उत्तम भक्तन को संग करे श्री भा
गवत श्री सुबोधिनी ग्रंथन को अहर्निस अवगाहनक
रे तब भगवद भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी भक्तन
के हृदे विषें सदैव रहत हैं तथा सेवा करि कें बंधे हैं
तहां एक अन्य मार्गी वैष्णव जाके हृदय में श्री ठाकुर
जी विराजत हैं ताको संग करनो तहां गऊन धावन वै
ष्णव को दृष्टान्त दिए हैं जिन जिन भाव पूर्वक सेवा क
री तिन के सकल निवर्ते भए तातें लीलास्थ व्रज भक्तन
के भाव को विचार करनो जे वैष्णव श्री ठाकुर जी को स्व
रूप जानत हैं तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टि सों जानो
जाय जो आज्ञा होय सो जानो जे वैष्णव श्री ठाकुर जी
कों जानत हैं सो जो कछु कारज करत हैं और श्री ठाकुर
जी सों विरह भावना करत हैं अपनो स्व दोष भाव वि
चार करत हैं अपनो स्वरूप जानें जो हौं कौन हों पहलें
कहा हुतो भगवद संबंध किये ते कहा भयो अब मोको
कहा करतव्य एवं दिवस ऐसो विचार करत रहे तब अ
पनो स्वरूप जानें ए प्रागट्य व्रज भक्तन के अर्थ तथा ए

तन्मार्गीय के अर्थ तातें उत्तम संग होय तो एतन्मार्ग के ए ठाकुर जानें और प्रस्न पुराण अनेक सिद्धान्त इतिहास हैं ताने ब्रजराज के घर प्रगटे सो श्री ठाकुर जी न जाने जाय ए श्री ठाकुर जी कों तबही जानें तातें भगवद भक्त कों संग करनो सेवा कों प्रकार एतन्मार्गी वैष्नव जानत हैं तिन सों मिलि तिन कों भाव पूछि के सेवा करनी तब भगवद् भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी की स्नेह युक्ति सेवा करि जो श्री ठाकुर जी वा कों सब जतावै ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर में पधारे तब वेद व्यास जी साथ हे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें वेद व्यास जी सों पूछो जो भमर गीत को अध्याय में उद्धव जी कों ब्रज भक्तन के पास पठाए हैं ता प्रसंग में श्लोक आधो घटत है तब वेद व्यास जी नें श्लोक आधो कह्यो ॥

श्लोक ॥ आत्मत्वात् भक्तवत्सल्यात्
सत्य वक्तात् स्वभावतः ॥ +

या की टीका श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पहलेही की नी हैं सो सुनि के वेद व्यास जी बहुत प्रसन्न भए तापा छें श्री आचार्य जी महा प्रभू बद्रीनाथ जी के मन्दिर पधारे ता दिन वामन द्वादशी को दिन हुतो सो ता दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून को विचार मन में दृढ करिवे को हुतो तब श्री बद्री नाथ जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो मैनें फलाहार को सब योज कीनो

परि पाइयत नाहीं ताने तुम समोदु करि श्रीठाकुरजी
कों भोग धरि भोजन करों श्रीठाकुर जी को इच्छा गमी
दीखनहै इतने में श्रीकुम्भदासनें आय कें कह्यो॥
जो महाराज यहां तो कछु पावत नाहीं पाछें ना दिन
ते वामन द्वादशी के दिन दूध न करते उत्सवा ते च
पारणां ऐसो वचन है पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू
वद्रीनाथ जी ते विदा भये तब कुम्भदास सायहोहे

॥ वार्ताप्रसंग ॥६॥

प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू वेदव्यास जी के मंदि
र में पधारे तब कुम्भदास सों कह्यो जो तू ठाडो रहियो॥
तब कुम्भदास ठाडे रहे पाछें आप तीसरे दिन पधारे
तब कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ते तब कुम्भदा
स कह्यो जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानों तो
सेवक काहे को सेवक को आज्ञा में चलनों सो कु
म्भदास ऐसे कृपा पात्र भगवदीय प्रभून की आज्ञा
मानते ताते श्री आचार्य जी महाप्रभू कुम्भदास के॥
ऊपर सदा प्रसन्न रहते पाछें मुरखता को दोय मनमें
न लावते ऐसे आप उदार गाय जीवन की ओर नदे
खते दया राखते और अपनी ओर ते दया करिजी
वन को अंगीकार करते जीवन की ओर को विचा
र न करते कुम्भदास मार्ग तथा घर में सदैव रहते सो
वे कुम्भदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं
सो अब कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ७ ॥ वेदव्यव ॥ २ ॥ सम्बध ॥ १४ ॥

॥अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के ॥
सेवक दामोदर दास सज्यन वार्ता
कन्नौज के वा सीतनकी वार्ता है
सो दामोदर दास कों एक पत्र लाभे को पायो और तू
पत्र में वामों कह्यो जो या पत्र कों वांचनाकी तू सा
जैयो सो वह पत्र काहू सों वांच्यो न जाय सो कितेक
दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कन्नौज पधारे
तहां गांव के वाहिर आय उतरे और कृष्णदास मेघन
कों गाव में पठायो और कह्यो जो सीधो सामग्री लै
आउ परि काहू सों कहियो मती जो श्री आचार्य जी मह
प्रभू यहां पधारे हैं तब कृष्णदास गांव में जाय सीधो साम
ग्री सब लीनों सो लैकें जब चलन लागे तब दामोदरदा
सताही समय राजद्वार से आवत हुते सो मार्ग जान
कृष्णदास को देख्यो तब दामोदर दास घोड़ा ते उतर
कें कृष्णदास के पास आये और दंडवत कीये पाछें
पूछी जो तुम कहां ते आये और श्री आचार्य जी महा
प्रभू पधारे हैं तब कृष्णदास नें कह्यो जो आज्ञा नाहीं
तब दामोदर दास नें कह्यो जो ये श्री आचार्य जी महाप्र
भून विना काहे कों आवें सो जब कृष्णदास चले तब पा
छें २ दामोदर दास आये और घोड़ा हो सो पठाय दी
यो सो कृष्णदास कों दूर ते आवत श्री आचार्यजी म
हाप्रभून नें देख्यो पाछें दामोदरदास कों देख्यो तब दामो
दर दास नें दंडवत कीनी तब कृष्णदास सों श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें पूछो जो तेनें या सों क्यों कह्यो तब कृ
ष्णदास नें कह्यो जो महाराज मेनें तो इनसों नहीं कही

तब

दामोदरदास नें वीनती कीनी जो महाराज इन मोंसों
नाहीं कह्यो हूंतो इन के पाछें पाछें चल्यो आयो हूं जो
र श्री आचार्य जी महाप्रभू नाहीं कीए मोयानें कन्नौज
पधारेंगें तब पाछें करनें हैं तब श्री आचार्यजी महा
प्रभू मन मोंविचारे जो आज्ञा भई है सो आयहो होयगी
ताकें लिये नाहीं कही हुती पाछें श्री आचार्य महाप्र
भूननें दामोदरदाससों पूछो जो पत्र ल्यायो है तब दामो
दरदास नें वीनती कीनी जो महाराज पत्र को कहा काम
हैं मोकों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभू
ननें कहीजो तोकों आज्ञा भई है जो यह पत्र वांचे ता
कीतू शरण जइयो नातेंतू पत्र लाउ तब पत्र मगायो
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पत्र वाच्यो पाछेंका
पत्र को अभिप्राय दामोदर दास सों कह्यो दामोदरदा
स कों पाछें नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू
नकों दामोदर दास नें अपने घर पधराये पाछें दामोदर
दास तथा दामोदर दास की स्त्री दोउ जनें स्नान करिकें
श्री आचार्य जी महाप्रभू की शरण आये तब दामोदर
दास कों समर्पण करवायो और दामोदर दास की स्त्री
कों प्रथम नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू
ननें समर्पण करवायो तब दामोदर दास नें वीनती की
नी जो महाराज अबहम कों कहा आज्ञा है अबहम क
हा करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें आज्ञा करीजो अ
बलुम सेवा करो तब दामोदर दास नें कही जो महाराज
सेवा कोनभांति करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें
कही जो कहूं श्री ठाकुर जी कों स्वरूप देखो सो एक

दरजी के घर श्रीठाकुर जी को स्वरूप हुतो सोताको दा
मोदरदास द्रव्य देकें लै आये पाछें सब घर पोता पात्र
सब बदलाये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून ने बाल
रूप को पंचामृत में स्नान करवायो श्री द्वारकानाथ जी
नाम धस्यो पाछें सिंहासन बैठाये तब दामोदर के माथे
सेवा धराय के पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार भोग
सराय बीड़ा समर्पन लागे तब देखें तो पान हरे हैं तब
श्री महाप्रभून नें कह्यो जो दामोदर दास हरे पान कबहूं
नहीं समर्पिये उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर जी को
समर्पिये श्री ठाकुरजी तो उत्तम वस्तु के भोक्ता है पाछें
स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे तब श्री द्वारि
का नाथ जी की सेवा भली भांति सों होन लागी और श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो उतस्यो पर
काल्हो होय सो श्री ठाकुर जी कूं कबहूं न समर्पिये वह
काम न आवे सारे पर काल्हे में ते प्रथम श्री ठाकुर जी
कों लीजिये और उत्तम कोमल वस्त्र होय सो श्री ठाकु
रजी के काम आवें पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभून नें
और आज्ञा दीनी जो उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर
जी के लिये अपने घर लै आइये श्री ठाकुर जी की सा
मग्री में ते और ठौर खर्च न करिये तब दामोदर दास श्री
पुरुषदोऊ जने भली भांति सों सेवा करन लागे और सा
मग्री उज्जल होती जो रूपान के कटोरान में परस
राखते सो ऐसी उज्जल कोई जानतो नाहीं जोया
में सामग्री है या भांति सों सेवा करन लागे ॥

॰ वार्ता प्रसंग १

और दामोदर दास श्रीठाकुर जी कों जल ल्याप
मते सो एक दिन ब्रा को सुसरे दामोदर दास के
घर आय कें दामोदर दास सों कहन लागयो जो तुम
जल भरि ल्यावन हो सो हम कों जाति में लज्या आ
वत है नातें तुम जल मति भरो लौंडी के हाथ जल
भरावो तब दामोदर दास ने एक घड़ा तो आपनी
सो और एक घड़ा स्त्री के हाथ में दीयो तब दोऊ
जने घड़ा लैकें वाकी हाट के आगें होय कें निकसे

तब जलभरि कें घर आये पाछें दामोदर दास
को सुसर आयो सो आय कें दामोदर दास के
पावन पर्यो और बीनती करि के कह्यो जो मैं चूक्यो

॥ तब लौंडी किवाड़ खोलने लगी ॥

॥ अवते तुमहीं जल भरो परि स्त्री पास जल मति मं
गावो ॥ आज पाछें हम कबहूं न कहेंगे नव ॥ आपही
जल भरन लागे जो चाहिये सो ॥ श्री द्वारकानाथ जी
दामोदर दास से मांग लेने वातें करने सेवा करि कें
श्री ठाकुर जी कों ॥ ऐसे प्रसन्न कियें तब श्री ॥ आचा
र्यजी महाप्रभू ॥ आपने श्री मुखते कहें जो जिननें राजा
॥ अंवरीष न देख्यो होय सो दामोदर दास कों देखें ॥
राजा ॥ अंवरीष तो मर्य्यादा मार्गीय हुते ॥ और यह पु॰
ष्टि मार्गीय हैं इनमें इतनी ॥ अधिकता है ॥ ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ॥

॥ और एक दिन ग्रीष्म काल के दिन हुते तब श्री द्वार
कानाथजी कों पौढ़ाये ॥ आप दामोदर दास नाथ कें
चौवारे में सोये सो वादिन गरमी बहुत भयी तब श्री द्वा
रिका नाथ जी नें लौंडी कों ॥ आज्ञा दीनी जो किवाड़ खो
ल मोकों गरमी बहुत लागत है तब लौंडी नें किवाड़ खो
ले तब श्री द्वारिका नाथ जी नें लौंडी सों कह्यो जो पंखा
करि तब लौंडी नें पंखा कीयो सो घड़ी २ लौं पंखा कि
यो पाछें लौंडी सों कह्यो जो तू ॥ सो जाय कें सोय रहि ॥
तब सवारो भयो तब दामोदर दास देखे तो किवाड़ खुले
पड़े हैं तब पूछो किवाड़ किन खोले तब लौंडी नें कही
जो मोकों श्री ठाकुर जी नें किवाड़ खोलन की ॥ आज्ञा
करी है तब खोले हैं तब दामोदर दास लौंडी ने बहुत
खीजे ॥ और कह्यो जो तेनें किवाड़ क्यों खोले जो मो
कों श्री ठाकुर जी नें किवाड़ खोलन की ॥ आज्ञा क्यों न
करी ॥ आप क्यों न खोले ॥ और लौंडी सों क्यों कही पर प्रभु

बड़े दयाल हैं ता विषैं स्नेह होय ताहीसों संभाषण
करैं श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंगीकार में सब
समान हैं लौकिक में कोऊ उच ..... नींच कहि लेउ
श्री ठाकुर जी तो स्नेह के वस हैं पाछे श्री ठाकुर जी ने
कह्यो जो मैनें किवाड़ खुलाए हैं तब इन खोले हैं तू
तो चौबारे में जाय सोयो और मोकों भीतर सुवायेो
मोकों गरमी बहुत लगी ताते खुलाए हैं तू लोंडी सों क्यों
रवीजत है सों कहि के बहुत रवीजे तब दामोदर दास नें
कह्यो जो प्रसाद तब लेउ जब मन्दिर सम्हराऊं तब।
स्त्री ने कह्यो जो प्रसाद न लेउ तो जैमो क्यों वनै यहतो
पांच सात दिन को काम नाहीं प्रसाद लीये विना क्यों
चलैं तब कह्यो जो प्रसाद तो नाहीं लेंउ फलाहारक
रूंगो तब ऐसे करत २ मन्दिर सिद्ध भयो तब श्री द्वार
का नाथजी के मन्दिर में पाठ बैठाये तब उत्सव कीयो
वैष्णव कों प्रशाद लिवायो ता पाछें आपनें प्रशाद
लीयो ॥२॥ ५ महा

प्रसंग ॥३॥

और एक दिन दामोदर दास श्री ठाकुर जी कों राज
भोग समर्पि के सद्दया मन्दिर में समारन गये तब देखें
तो दुलीचा ऊपर विल्ली नें विगार दीयो है तब दामो
दरदास नें कही जो श्री ठाकुर जी अपनी सेवा हू रा
खसकत नाहीं ऐसें कह्यो तब श्री ठाकुर जी नें पार
चौकी ऊपर सों लात मारि के डार दीनी और दामोदर
दास सों श्री ठाकुर जी नें कह्यो जानू कैसो सेवक है
सेवक होय के याभांति कहत है ऐसे बहुत रवीजे

पाछें दामोदर दास नें वीनती कीनी मनुहार बहुत करी सामग्री सिद्ध करवाय के श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब श्रीठाकुर जी आरोगे पर तोहू मास दोय लों बोले। नांही तब दामोदर दास नें वीनती बहुत कीनी तब फेर वो खन लागे ॥३॥

वार्ता प्रसंग ४

बहुर एक समय दामोदर दास हरसानी इनके घर पाउंने आए सो दामोदर दास संवत्स वार के घर पांच सात दिन रहे तब इन ने भली भांति सों समाधान कीयो पाछें दामोदर दास हरसानी इन सों विदा होय कें अडेल आये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें दामोदार दास सो कह्यो जो दमला तू कहां उतसों हो और कहां प्रसंद लीयो हो तब दामोदर दास हरसानी ने श्री आचार्य जी महाप्रभू न सो वीनती कीनी जो महाराज कन्नोज में दामोदर दास संवत्स वार के घर उतसों हो परअनसखड़ी महा प्रशाद लेतो सखड़ी न लेतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास संवत्सवार केऊपर अप्रसन्न भए और कह्यो जो यह मेरो अंतरंग सेवक या कों सखड़ी महा प्रशाद क्यों न लिवायो सो-यह वात श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतः करन की दामोदर दास संवत्स वार नें घर बैठे जानी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अप्रसन्न भए मेरे ऊपर तब स्त्री सों कह्यो जो तू श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो और मैं तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के चरन दरसवे कों अडेल जात हों सो तब नहात

चले सो अड़ैल जाय पहोंचे तब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी तब श्री
आचार्य जी महा प्रभू पीठि दै बैठे तब दामोदर दास
संवलवार ने श्री आचार्यजी महा प्रभून सों बीनती
कीनी जो महाराज मेरो अपराध कहा है और जीव
तो अपराध करत ही आयो है परि अपराध
जानियें तो भलो है तब श्री आचार्यजी महा प्रभू
ननें कह्यो जो तेने दामोदर दास हरसानी को अपने
घर महा प्रशाद अनसरवड़ी क्यों लिवायो सरवड़ी
क्यों न लिवायो तब दामोदर दास संवलवार ने बीन
ती कीनी जो महाराज दामोदर दास सों आप पूछियें
जो सरवड़ी क्यों न लीनी तब श्री आचार्य जी महाप्रभू
ननें दामोदर दास हरसानी सों कह्यो जो तेनें सरवड़
महा प्रशाद क्यों न लीनो तब दामोदर दास ने कह्यो
जो महाराज श्री ठाकुरजी प्रातः काल बाल भोग श्रृं
गारने पाछें पकवान मिठाई दूध पाक बहुत लेतो सो
सरवड़ी की रुचि रहती नाहीं तातें न लेतो तब श्री आ
चार्यजी महा प्रभू ननें कह्यो जो तूतो अपनी इच्छा
ते न लेतो परि मोंको तो याके ऊपर बड़ी खुन्स भई
हती सो भक्तन के अंतः करन की वृति देखवे कों प्रभू
न कों प्रागट्य है काहे ते जो दामोदर दास संवलवार
नें अपने घर कन्नोज में श्री आचार्यजी महा प्रभून
के अंतः करन की जानी तो श्री आचार्यजी महाप्रभू
तो भक्तन के हृदय में सदा स्थिति हैं तो भक्तन के हृ
दय की वात क्यों न जानें परि भक्तन की परीक्षार्थ यह

प्रभून को प्रागट्य है पाछें दामोदर दास सवल वार के बहुत सन्मान करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभूननें वा कों अपने घर को पठायो तव दामोदर दास अपने घर कन्नोज में आए तव दोउ स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे ॥ ४॥

वार्ता प्रसंग ५

और सिंह नंद के वैष्णव श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास जाते सो सब कन्नोज में दामोदर दास को मिलि कें जाते जो वैष्णव आवते तिन सवन को कन्नोज में अपने घर आदर सन्मान करि कें उतारते सवन कों महाप्रशाद लिवावते पाछें जव अडेल विदा होने तव तिन वैष्णव प्रति एक एक मोहर एक एक श्री फल आचार्य जी महाप्रभून की भेट पठावते काहे ते जो मेरी दंडोत खान्यो हायन कैसें करेंगे अैसे श्री आचार्य जी महाप्रभू इन पर सदा प्रसन्न रहते ॥ ५॥

वार्ता प्रसंग ६

वहुर दामोदर दास को सुसर वहुत प्रसन्न हतो तिननें १०० सो लोंडी वेटी के दायज में दीनी जो मेरी वेटी बैठी रहेगी काम काज सव लोंड़ी करेंगी परि अैसे सेन करती सेवा सम्वन्धी कार्य्य सव आपु करती सो वह अैसी भगवदीय ही ॥

वार्ता प्रसंग ७

वहुर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के घर पोढ़े हुते और दामोदर दास पांव दावत हुतो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोद

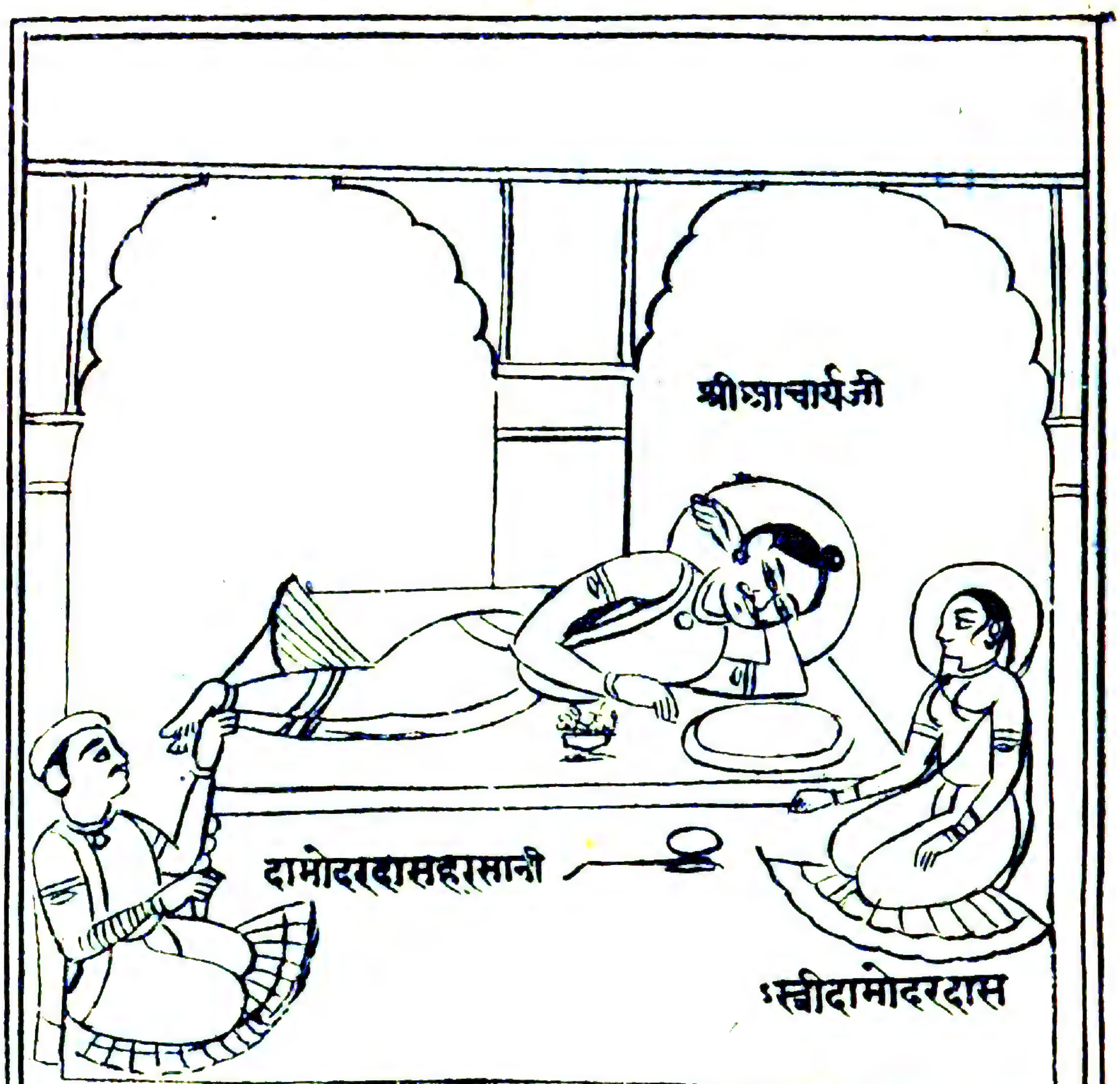

र दास सों पूछो जो दामोदर दास तेरे मन में काहू वात
को मनोरथ है तव दामोदर दास नें कह्यो जो महाराज
मोकों तो काहू वात को मनोरथ आय के अनुग्रह ते र
ह्यो नांही तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जा तू
अपनी स्त्री सों पूछि आउ जो तो कों काहू वात को मनोरथ
है तव दामोदर दास जाय कें अपनी स्त्री सों पूछो जो ते
रे काहू वात को मनोरथ है तव स्त्री नें कह्यो जो कोई वा
त को मनोरथ र ह्यो नाहीं एक पुत्र को मनोरथ है एक
पुत्र होय तो भलो तव यह वात दामोदर दास नें जा
य कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज

स्त्री को मनोरथ है जो एक पुत्र होय तो भलो है तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप कहें जो हां होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो श्री नाथ जी द्वार पधारे पाछें जब वाके समय भयो तब स्त्री गर्भ स्थित भई पाछें वा वारवर में कितनेक दिन में एक डांकोतिया आयो तब वाकों सब साथ की स्त्री पूछन लागी तब तामें ते काहू नें दामोदर दास की स्त्री सों कही जो अमुकी तू हू पूछि देखि जो कहा होयगो बेटा होयगो कै बेटी होयगी पाछें वाकी लौंडी ने जाय कै वा डांकोतिया सों पूछी जो दामोदर दास की स्त्री कें कहा होयगो बेटा होयगो कै बेटी होयगी तब वा डांकोतिया ने कही जो बेटा होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कितनेक दिन में कन्नौज में पधारे तब दामोदर दास चरण छूवन लागे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मोको छूवे मति तो कों अनाश्चय भयो है तब दामोदर दास ने कह्यो जो महाराज में तो कछू जानत नाहीं हौं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तू अपनी स्त्री सों पूछि आउ तब दामोदर दास ने स्त्री सों पूछो जो तेनें कछू अनाश्चय कीनों है सो स्त्री ने जो प्रकार भयो हुतो सो सब कह्यो सो बात श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो या के पेट में म्लेछ होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो अडेल पधारे पाछें यह बात दामोदर दास की स्त्री ने सुनी तब ते श्री ठाकुर जी के पात्रादिक सेवा सम्बन्धी वस्तु स्पर्शन करती और कहती जो मेरें पेट में म्लेछ है ताते श्री ठाकुरजी के पा

यतथा सामग्री कैसें करूं या भांति सों कहती पाछें जब प्रसूत के दिन आए तब दामोदर दास की स्त्री ने अपनी महतारी सों कहवाय पठाई जो मेरें पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर लै जैयो हम वाकों मुख न देखेंगे जो हम वाको मुख देखेंगे तो हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम वाको मुख न देखेंगे सो उपाय तू करियो पाछें वा की महतारी ने वैसेंही कीयो प्रसूत मात्र होत अपने घर लै गई पाछें धाय कों देकें बड़ो कीयो ॥७॥

वार्ता प्रसंग ८

बहुर कितनेक दिन पाछें दामोदर दास की देह छूटी तब वाकी स्त्री ने छिपाय राखी पाछें वा स्त्रीनें एक वैष्णव सों कही जो तुम अड़ैल कों एक नाव भाड़े करि ल्यावो सो वह वैष्णव भाड़े करि ल्यायो ता नाव में श्रीद्वारिका नाथ जी और घर में की सामग्री तिनूका पर्य्यंत कछू घर में राख्यो नाहीं घर में जो हतो सो सब नाव मे भर्यो तब वा वैष्णव सों कह्यो जो यह नाव अड़ैल कों लै जाउ श्री आचार्य जी महाप्रभून के मन्दिर में पहुंचाय आवो सो वह वैष्णव नाव लैकें चल्यो सो कोस तीस पर नाव गई तापाछें स्त्री ने प्रगट करी जो दामोदर दास की देह छूटि गई है तब वैष्णव जुरि आये दामोदर दास को संस्कार कीयो पाछें दामोदर दास को बेटा तुरक भयो हतो सो आयो आय के घर में देखे तो कछू नाहीं जल को भर्यो कलवा घर में धर्यो है सो देखि के मूड़ पीट रह्यो पाछें दामोदर दास को सुसर आयो तिननें अपनी बेटी सों कह्यो जो बेटी तुमने घर में कछू राख्यो नाहीं सो तू अब कहा खा

यगी तव ज्ञानें कही जो तुम देउगे सो मैं खाउंगी स्त्री-
लोगन के पास में सगे मौदरे कछू देत हैं ऐसी ग्याति की
कछू रीति है तव दामोदर दास की स्त्री ने अन्न जल कौत्यौ
ग कीयो सो थोरे से दिन में वाकी हू देह छूटी तव कृत्य दो
उन कौ साथ ही भयो वह ऐसी भगवदीय ही सो यहवा
त कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णव नें श्री आचार्यजी म-
हा प्रभून के आगे आय कही तव श्री आचार्यजी महा
प्रभून ने कही इन कौं योंही चाड़िये वेदोउजने ऐसे
भगवदीय हैं उन की सराहना श्री आचार्यजी महाप्रभू
श्री मुखते करते तातें इन की वार्ता अनिर्वचनीय है-
इन की वार्ता कहां तांई लिखियें ॥८॥

वार्ता प्रसंग ८ संवद ॥ २४ ॥

अव श्री आचार्यजी महा प्रभून के सेवक पद्मनाभ दास कन्नोजि या ब्राह्मण कन्नोज में रहर ते तिनकी वार्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महा प्रभू कन्नोज पधा
रे तव पद्मनाभिदास श्री आचार्यजी महा प्रभून के द-
र्शन कौं आए तव पद्मनाभिदास नें श्री आचार्यजी म
हा प्रभून के श्री मुखते भगवत् वार्ता कौ प्रसंग सुन्यो
नव जानी जो एतो साक्षात् ईश्वर हैं ऐसें श्री आचार्य
जी महा प्रभून के दर्शन भये प्रथम पद्मनाभि दास व्या
सआसन बैठते सो कन्नोज में अपने घर कथा कहत ऊं
चे आसन बैठने श्रोता बहुत कथा सुनिवे कौं आ
वते काहू के घर जानौं न पड़तो इत घर बैठे चली

आवती याभांति सों रहते सो पद्मनाभि दास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के श्रीमुखते भगवत् प्रसंग सुन्यो तब ते जान्यो जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानि कें पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरण आये नाम पायो पाछें समर्पण करवायो तब उत्थापन के समय श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पोथी खोली तहां दामोदर दास संचलवार के घर बैठे हते ता समय पद्मनाभि दास अपने घर ते आये श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दंडवत करि कें बैठे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पोथी खोली और श्लोक निबंधन को कह्यो ॥

॥ श्लोक ॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्व हेतु विव
र्जितं ॥ वृत्यर्थं नैव भुंजीत प्राणैः
कण्ठ गतै रपि ॥ तद्भावे तथै
वस्या तथा निर्वाह मांचरेत् ॥

यह श्लोक पढ़ सो पद्मनाथ दास ने सुन्यो पाछें दशमस्कंध की कथा कही सो सुनी तब श्री आचार्य जी महाप्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभ दास नें जल की अंजुली भरि कें संकल्प कीयो जो अबते कथा कहिवे को वृत न करूंगो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें संकल्प कीयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्रीमुखते कह्यो जो श्री भागवत वृत्त रथन कहनो और तो तुम्हारी वृत्य है तुम ब्राह्मण हो और पुराण महाभारथी तो इत्यादिक कहनो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो महा

राज हमने अब नौ संकल्प कीयो सो तो कीयो यातें क
हून कहनो तब श्री आचार्य जी महा प्रभू कहें जो तुम अ
हस्थ हौ सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभ दास
ने कह्यो जो महाराज भिक्षा मांगि कें निर्वाह करूंगा
पाछें एक जिजमान के घर वृत्यर्थ गए तिन तब बहुत
आदर सन्मान कीयो तब पद्मनाभ दास के मन में व
हुत ग्लानि आई जो कबहूं पहलें तौ भिक्षा वृत्य करी
नाहीं और अब वैष्णव भये ताकौं तौ यह भिक्षा हू उ
चित नाहीं तब फेर संकल्प कीयो जो अबतो भिक्षा क
तहूं न करूंगो तब फेर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें क
ह्यौ जो अब निर्वाह कौन भांति करोगे तब पद्मनाभदास
नें कह्यो जो अब वैष्णव कृत्य करि निर्वाह करूंगो पाछें
कोड़ी वचने लकड़ी लै आवने पर और वात न विचारी
या भांति देहा दि पर्य्यंत निर्वाह कीनो ऐसे टेक के कृपा
पात्र भगवदीय हे ॥

वार्ता प्रसंग १

अब श्री आचार्य जी महा प्रभू प्रयाग में पधारे हैं
तब पद्म नाभ दास आय हैं रात्रि पहर १ गई ही तब श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभ दास सों कही जो श्री
अक्काजी कों पार ते पधराय लावो सो सुनत ही पद्म
नाभदास उठि चले तब पांच सात वैष्णव तहां बैठे
हते सो कहन लागे जो यह ब्राम्हण बावरो भयो है ये
वे कहां जायगो नाव सब बंधी हैं घटवार सब घर
गये हैं तातें यह विरियां जाइवे की नहीं पर या कों
तौभी आचार्य जी महा प्रभून को आज्ञा है ता कौ वि

स्वामजोयह काम अधिक अवस्य होयगो सो घाट
ऊपर आये तव इत उत देखन लागे इतने में देखें तो
अकस्मात एक लरिका वर्ष दस को एक डोंगी लेकर
आयो सोवानें पद्म नाभ दास कों पूछो जो तू पार जाय-
गो तव पद्मनाभदास नें कह्यो हांहो जाऊंगो तव उन

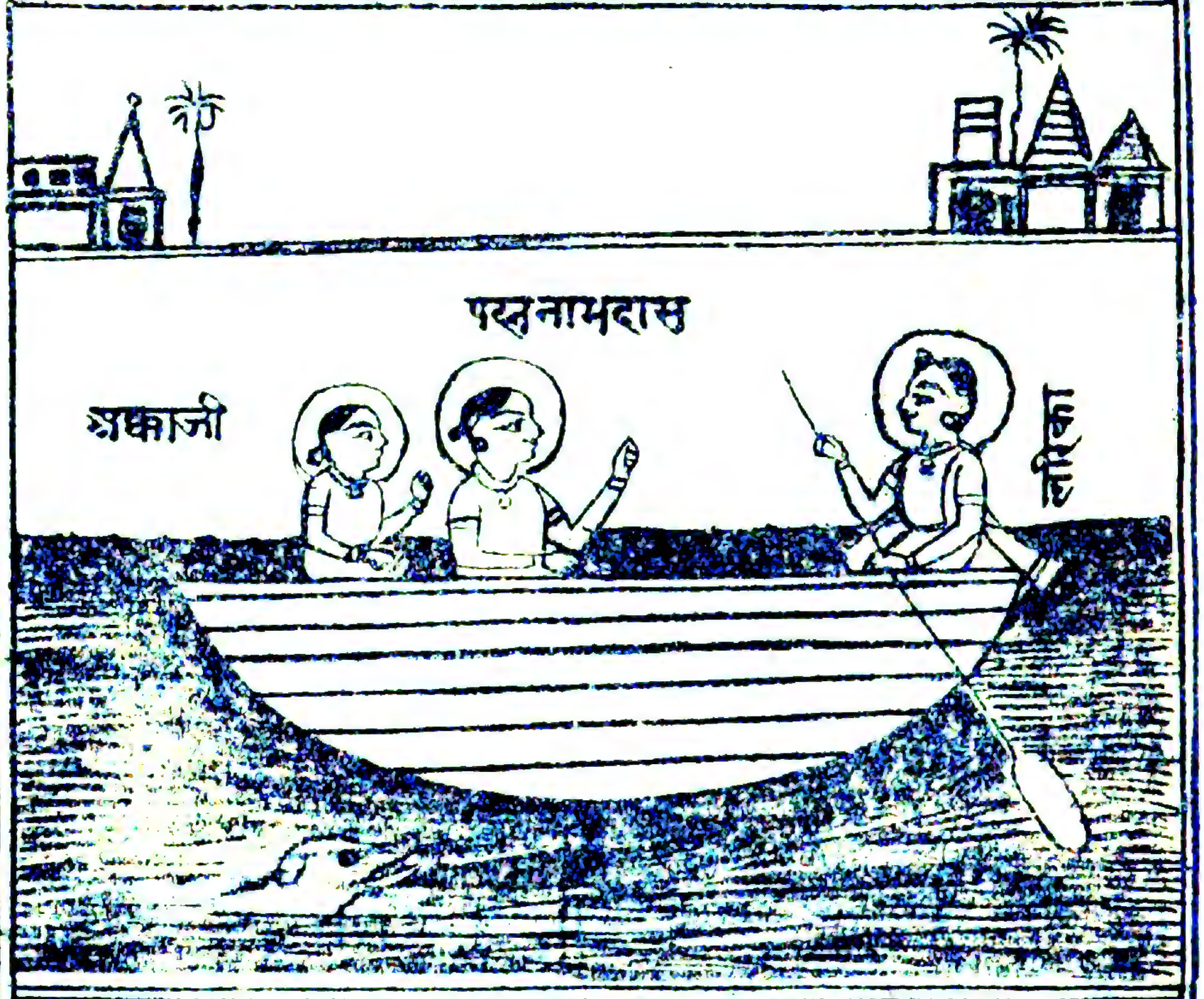

पार उतार दीनों पाछें फेरि पूछो जोतू फेरि आवेगो
तव पद्मनाभदास नें कह्यो जो घड़ी दोय पाछें आउं
गो तव लरिका नें कह्यो जोडोंगी राखन हों तू वेगी आ
इयो पाछे अडेल में जाय के श्री अक्काजी कों पधरा
य लाये तव वाही डोंगी में बैठार पार उतारे तव फिर
देखें तो वहां डोंगी हू नाहीं और लरिका हू नाहीं पाछें
श्री अक्काजी कों पधराय के घर आये पाछें श्री आ

चार्यजी महाप्रभून नें पद्मनाभि दास कों आज्ञा दीनी
जो जाउ सोय रहो जब जहां वैष्णव सोये हते तहां आ
ये तब वैष्णव सब पूछन लागे जो तुम कहा करि आये
तब पद्मनाभि दास नें सब समाचार कहे तब वैष्णवन
नें कह्यो जो तेनें श्री ठाकुरजी कों श्रम बहुत करवायो
पाछें वैष्णवन नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों पूछो
जो महाराज पद्मनाभ दास नें श्री ठाकुरजी कों श्रम
बहुत करवायो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें क
ह्यो जो यह जो भयो है कछू सो मेरी इच्छा ते भयो है ता
ते तुम पद्मनाभि दास सों कछू मति कहो॥

वार्ताप्रसंग २

बहुर एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीगो
कुल ते अडेल कों जात हते तब एक व्योपारी कछू
सुलैके साथ में चल्यो और श्री आचार्यजी महाप्र
भू कन्नौज के बीच पधारे तब व्योपारी पीछें रह्यो ता
के ऊपर चोर आय पड़े सो वस्तु सब लूट लीनी और
श्री आचार्यजी महाप्रभू आय नौदामोदर दास सब
सवार के घर पधारे सो वहां उतरे रसोई करि श्री ठाकु
रजी कों भोग समर्प्यो इतने में वह व्योपारी रोवत पी
टत आयो तब पूछो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू कहां
करत हैं तब पद्मनाभि दास ने कह्यो जो भोजन करत
होंयगे तब वा व्योपारी ने कह्यो जो हमारो माल सब
लुटि गयो है और श्री आचार्यजी महाप्रभू भोजन
करत हैं तब पद्मनाभ दास ने अपने मन में विचार्यो
जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे

घड़ी दोय की अवार होयगी तातें पद्मनाभदास वा
व्यापारी की वाह पकर कें एक माह की दुकान पर
लेगये ता साह नें पद्मनाभदास को बहुत आदर सन
मान कीयो तब वाने कह्यो जो आज्ञा करो कैसें पधारे
हो तब पद्मनाभ दास नें वा साह सों कह्यो जो या
व्योपारी कों इतनों द्रव्य दियो चाहिये या द्रव्य को ख
त पत्र व्याज हम लिख देयंगे तब साह ने कह्यो जो प
द्मनाभ दास जी तुम कों जितनों द्रव्य चाहिये नितनों
लेउ खत पत्र की कहा बात है तब पद्मनाभ दास नें
कह्यो जो पहिले तौ खत पत्र लिखवोंगो पीछें द्रव्य
लेउंगो बिना खत लिखे तौ लेउंगो नाहीं तब साह ने
कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभ दास ने खत
लिख दीनो तब साह नें वा व्योपारी कों द्रव्य दीयो त
ब वह व्योपारी तौ अपनो द्रव्य लेकें अपने घर गयो
तब पद्मनाभ दास अपने घर आये तब पद्मनाभद
स सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो जो पद्मनाभ
तू कहां गयो हो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो महा
राज एक काम गयो हो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू
आप तौ साक्षात ईश्वर सो तत्काल जानि गये तब प
द्मनाथ दास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें क
ह्यो जो हम वा व्योपारी कों संग तौ लीनों नें हुतो
जो वा कों माल देनो वह पीछें रह्यो तौ हम कहा क
रें पर तेंनें बहुत बुरी करी सो झटपट काढि कें पैसे
दीनों तब पद्मनाभ दास नें कही जो महाराज सो तो
सांच पर वह व्योपारी पुकार तो तो राज भोजन मंदो

य घड़ी की अवार होती तौ मेरौ जन्म सब वृथा जा
तौ और वरण तौ कान्ति देउगो यह कितनी कवात
है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तेंनें
धर्म गहने लिखदीनी सो काहे ते नव पद्मनाभ दास
नें कह्यो जो महाराज ऐसो गाढ़ो लिख दीयो जो बिना
दिये न जाय पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अड़ेल
पधारे पाछें पद्मनाभ दास एक राजा हुतौ ताके पा
स गए तब पद्मनाभ दास कौ वा राजा ने बहुत आदर
सनमान कीयो पाछें राजा ने कह्यो जो मो कों कृपा
करिकें कछु सुनावो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो रा
जा श्री भागवत तौ नाही सुनाउ कहो तो महाभारत
सुनाउं सो राजा ने कह्यो जो महाभारत ही सुनावो
सो महाभारत ही कहन लागे सो जब युद्ध को प्रसंग
आयो तब सबन के हथियार छुड़ायधरे तब आगें
कहन लागे सो कया कहत में कोई वीररस ऐसो
उफज्यो सो आपस में सब स्नात मुक्कान सों लरन ला
गे पाछें .... कितेक दिन में महाभारत सम्पूरण
भयो तब राजा बहुत दक्षिणा देन लाग्यो तब पद्मना
भदास नें कह्यो जो इतनों तौ में नाहीं लेउंगो मेरे मांथे
ऋण है तितनो लेउंगो पाछें वा साह कों मूल ब्याज
देनो हुतौ तितनों लीनों वाकी कौ फेर दीनों पाछें सा
ह कौं द्रव्य देकें खत फारि डारो ॥ २॥

वार्ता प्रसंग ३

और पद्मनाभदास कें एक बेटी कुमारी हुती ता
के निमित्त एकवर श्री आचार्य जी महाप्रभून कों सेव

कचाहियत हुतो सों वैष्नवन सों पूछन लागे तववै
ष्नवन नें कह्यो जो एक वर श्री आचार्य जी महा प्रभू
को सेवक है परि सनोडिया ब्राह्मण है सो पद्मनाभ
दास कों लौकिक त्याग में विवहार की सुधि रही ना
हीं वैष्नवन कह्यो जो भलो वैष्नव है सो या कों वे
टी दीजिये तव पद्मनाभदास ने कह्यो जो भलो सो
पद्मनाभदास नें वा वैष्नव कों तिलक कीयो विवाह
सही करि कें अपने घर आये तद तुलसा वड़ी वेटी
हुती तासों कह्यो जो अपनी वेटी को विवाह अमुक
वैष्नुव सों सही कर आयो हूं तव तुलसा ने कही जो
वह तो सनोडिया ब्राह्मण है और आपुन कनोजिये
ब्राह्मण हैं सो कैसें कैसें होय तव पद्मनाभ दास नें
कही जो अब तो भई सो भई तव तुलसा नें कह्यो जो
सगाई फेरो तव पद्मनाभ दास ने कही जो सगाई
कैसें फेरी जाय पाछें पद्मनाभदास ने कही छुरीला
वो मेरो अगूंठा काटो तव तुलसा नें कह्यो जो अगूंठ
कैसें काट्यो जाय तव पद्मनाभ दास ने कह्यो जो स
गाई कैसें फेरी जाय जो अगूंठा काटे तो सगाई फेरी
जाय पाछें पद्मनाभदास नें विवाह कर दीयो जात
के सब झखमार रहे वैष्नव के कहे कों विस्वास ता
ते सगाई न फेरी ॥३॥

वार्ता प्रसंग ४

और एक क्षत्राणि पद्मनाभ दास के घर नित्य
आवती तव एक दिन तुलसा नें कह्यो जो क्षत्राणि
जात नित्य कों आवत है तववा क्षत्राणीने कही जो

पद्मनाभदास बड़े भागवदीय हैं और महा पुरुष हैं और मेरे संतति नाहीं होत है तातें आवत हौं ताते तुम पद्मनाभ दास सों मेरी बीनती करो तब पद्मनाभ दास सों एक दिन तुलसा ने कही जो पद्मनाभ दास एक क्षत्राणी के संतति नाहीं होत है ताके लियें तुम सों बीनती करत हौं तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो तुलसा जल लाउ तब तुलसा नें जल लाय के आगे धर्यो तब जल लेके अंगूठा को चरणोदक करि कें पद्मनाभ दास ने क्षत्राणी को चरणोदक दियौ और कह्यो जो जा तेरे पुत्र होयगो ता को तू मथुरादास नाम धरियो पाछें वाके पुत्र भयो ॥

वार्ता प्रसंग ५

और एक समें बड़े रामदास जी अपने सेव्य ठाकुरजी कों पद्मनाभ दास के घर पधराय कें आप श्रीनाथजी की सेवा करन लागे श्रीनाथजी के भीतरिया भये तब पद्मनाभ दास श्री ठाकुरजी की सेवा करन लागे सो कितेक दिवस पाछें मुग़ल की फौज आई ताने गांव लूट्यो सो श्री ठाकुरजी कों मुग़ल लैगये तब पद्मनाभ दास वा मुग़ल के पीछे सात दिन लों रहे जल पान न कियो तब वा मुग़ल सों वाकी मुग़लानी नें कह्यो जो यह ब्राह्मण जल पान हूं नाहीं करत याकों सात दिन भये हैं अन्नजल छोड़ें सो जो यह ब्राह्मण मरेगो तो तेरे माथे हत्या चढ़ेगी तो तेरो संग छोड़ देउंगी नातर देव याके तेरे पास है सो तुम देव याके देउ तब वा मुग़ल नें पद्मनाभ दास को श्री ठा

कुर जी दीये सो लेकें पद्मनाभदास अति आनन्द पा
य कें अपने घर आए पाछें आप स्नान करि श्री ठाकु
र जी कों पंचामृत सों स्नान कराये अंग वस्त्र करि शृं
गार कीयो रसोई करि भोग समर्प्यो पाछें समयानु
सार भोग धराय अनोसर करि पाछें महा प्रशाद
आपु लीयो और जा दिन ते वा कन्नोज में श्री ठाकुर
जी मुगल के हाथ परे सो ता दिन रामदास नें हूं यह
बात जानी सो ता दिन ते बड़े राम दास ने हूं सात दिन
तांई महा प्रशाद लीनों नाहीं धरि श्री नाथजी की
सेवा सावधानी सों करत रहे यह बात पद्मनाभदा
स नें घर बैठे जानी जो रामदास हू या बात के ऊपर
बहुत दुख पायो सात दिन लों जल पान हूं नाहीं
लीयो यह जानि पद्मनाभ दास श्री नाथ जी के द
र्शन तथा रामदास जी सों मिलिवे कों श्री नाथ जी
द्वार आये तब श्री नाथ के दर्शन कीये पाछें राम
दास जी सों मिले तब रामदास जी ने पद्मनाभदास
सों कह्यो जो तुमनें बहुत दुख पायो तब पद्मनाभ
दास नें कह्यो जो हूं तो दुख पायो सो तो न्याव है
परि तुम मेरे मांथे सेवा पधराय आये और तुमनें से
त दिन लों महा प्रसाद नाही लीयो सो काहे ते तब
रामदास ने कह्यो जो तुम कहत हो सो तो सांच है परि
मैं हूं तो बहुत दिन लों सेवा कीनी है ताते इतनों तो
सवन्थ चाहिये पाछें कितनेक दिन लों उहां रहिके
पद्मनाभ दास श्री नाथ जी सों तथा रामदास जी सों
विदा होय के अपने घर आए पाछें सेवा करनलगे

वार्ता प्रसंग ६

और एक समय पद्मनाभ दास अपने सेव्य श्री ठाकुर जी श्री मथुरा नाथजी तथा अपनो कुटुम्ब लेकर अैड़ल आय रहे परंतु द्रव्य को संकोच बहुत हुतो तातें श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पते सो छोला तलि के समर्पते सो छोला अछी रीति सों बान कें पहिले दिन भिजोय राखते दूसरे दिन नाकी भांति सों तलि कें परोसते एक मुट्ठी भरि कें कहैं जो यह दारि एक मुट्ठी भरि कें धरें और कहैं जो यह रोटी है या भांति जितने सालन होंय तितनेन को नाम लेवें एक एक मुट्ठी समर्पते या भांति सों नित्य करते सो श्री ठाकुरजी सोई आरोगते पाछें एक वैष्णव नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे कह्यो जो महाराज पद्मनाभ दास श्री ठाकुर जी कों याभांति समर्पत है सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू भोग समर्पिवे की विरियां आप पद्मनाभ दास के घर पधारे सो जैसें नित्य भोग समर्पते तैसेई पद्मनाभ दास ने भोग समर्प्यो हो सो जब भोग उसरायो तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो महाराज यह खीर है यह भात है यह दारि है यह साक है यह मिखरन है यह रोटी है यह बरा है अैसें कहि के सब सामग्रीन के नाम लेके छोलान की ढ़ेरी बताई तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कों हृदय भरि आयो और कह्यो जो द्रव्य को संकोच है ताके लिये .. अैसे करत है पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो घर कों पधारे तब श्री अक्का जी सों कह्यो जो पद्मनाभ दास के घर नित

रसोई की सामग्री पठावति रहियो नव दूसरे दिन श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभदास के घर सीधो
सामग्री पठायो नव पद्मनाभदास नें तुलसी सो कह्यो
जो इहांते प्रभू काढ़न हार भये हैं नव पद्मनाभदास
ने दिन दोय चार को सामान करि पाछें अपने सब्य
ठाकुर जी श्री मथुरा नाथ जी सों कही जो महाराज
को मन होय तो श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास
पधराय आऊं तहां सकल सामग्री सिद्ध है तब श्री
मथुरा नाथ जी नें कह्यो जो मोको तेरो ही कीयो भा
वत है तातें तेरे यहां बहुत प्रसन्न हों तू कछु संकोच
मति करे ऐसे श्री मथुरा नाथजी आप कहे तब पद्म
नाभदासनें नाव भाड़े कीनी तामें श्री ठाकुर जी पधरा
ये और सब कुटुम्ब नाव में बैठाय के आप श्री आचार्य
जी महा प्रभून सों विदा होन गये और सीधो सामग्री
दिन दोय चार को आयो हुतो सो भंडारी कों फेर देके
आप श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास विदा होय
के दर्शन करिके दंडौत करि के कह्यो जो महाराज
हम तो चलत हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो
जो श्री मथुरा नाथ जी कहां हैं तब पद्मनाभ दास ने
कह्यो जो महाराज श्री ठाकुर जी तो नाव में विराजत
हैं श्री ठाकुर जी कों नाव में पधराय कें, हों महाराज
के पास दर्शन करिवे कों तथा विदा होयवे कों आ
यो हूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभ
दास कों विदा कीयो पाछें भंडारी नें आचार्य जी म
हा प्रभून सों आय कें कह्यो जो महाराज पद्मनाभ

दास के घर सीधो सामग्री दिन दैचार की पठाई हुती सो पद्मनाभ दास फेरि दे गए हैं तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्यो जो सीधो सामग्री पठाई तातें प द्मनाभदास गयो नातर न जातो यह वात आप श्रीमुखतें कही सो पद्मनाभदास की वार्ता श्रीगोकलुनाथ जी श्री सर्वोत्तम की टीका में लिखे हैं सो पद्मनाभ दास सो विरला कोटि स्वपी दुर्ल्लभ हैं सो वे पद्मनाभ दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ऐसे पर म कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता को पा एनाहीं पद्मनाभ दास की ऐसी ऐसी कितनीकवा र्त्ताहैं ॥६॥

छः

छः

वार्ता प्रसंग ७
वैष्णव ४ सम्बन्ध ॥२१

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक पद्म नाभ दास की बेटी तुल्सा तिनकी वार्ता लि० व्यते

सो एक समय एक वैष्णव श्री आचार्य जी महा प्रभू नको सेवक तुलसा के घर आयो सो श्रीठाकुर जीकों दर्शन कीयो तब राज भोग समर्प्यो हो तब तुलसा नें वा वैष्णव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद ले उ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो हूं तो घर जाय कें महा प्रशाद लेउंगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुप

ह्वै रही पाछें वह वैष्नव उठि कें अपने घर गयो तब तुलसा के मन में बड़ौ खेद भयो जो देखो मेरे घर तें वैष्नव भूखो गयो बड़ौ रि मन में आई जो ग्याति व्यवहार के लिये सखड़ी न लीनी होगी पर भलो! सकोर पूरी कार महा प्रशाद लिवाउंगी पाछें मेदा छानि सिद्ध कर वाई तब सोई पाछें गवि कों मथुरा नाथ जी पद्मनाभ दास के सेव्य ठाकुर तिनने स्वप्न में तुलसा सों जनायो जो सकारें वा वैष्नव कों सखड़ी महा प्रसाद लिवाइयो वह वैष्नव अपने घर प्रशाद नाहीं लेइगो पाछें वा वैष्नव सों स्वप्न में कही जो सकारे तू सखड़ी महा प्रसाद तुलसा के घर लीजियो पाछें प्रातः काल स्नान करि तुलसा नें पूरी करी श्री ठाकुर जी कों जगाय सेवा करन लागी इतने में वह वैष्नव आयो श्री ठाकुर जी के दर्शन कर बैठि रह्यो तब तुलसा भोग समर्पि कें बाहर आई तब वा वैष्नव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद लेउ तब वैष्नव नें कह्यो जो भलो तब वा वैष्नव ने स्नान करि तिलक मुद्रा करि कें स्मरन कीयो इतने में राज भोग सर्यो तब वा वैष्नव नें दर्शन कीयो पाछें तुलसा नें श्री ठाकुर जी कों अनोंसरि करि तुलसा बाहर आई तब पूरी वरो समाधो वा वैष्नव के आगे धर्यो और कह्यो जो महा प्रसाद लेउ तब वा वैष्नव नें कह्यो जो यह तो नाहीं लेउंगो हूं तो सखड़ी महा प्रशाद लेउंगो तब तुलसा ने कह्यो जो कछु सकोच मानि करो यह तो जाति व्यवहार है तब

वा वैष्णव नें कह्यो जो सोनो सांच पहिले तो ऐसें
हीं मन में आई हती पारि अब तो आज्ञा भई है पा
छें वा वैष्णव नें सरवड़ी महा प्रशाद लीयो तब दो
उजने परस्पर प्रसन्न भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर एक दिन तुलसा के घर श्री गुसांई जी
पधारे तब तुलसा ने भली भांति सों सेवा कीनी
ताते श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न भये और एक दि
न श्री गुसांई जी भोजन करि के पोढ़े हुते तब तुल
साने भगवद वार्ता करी अति प्रसन्नता में श्री गुसं
जी कही जो पद्मनाभ दास की संतति ऐसी हीचा
हिये पाछें श्री गुसांई जी ने तुलसा सों पूछो जो श्री
ठाकुर जी मानु भावना जनावत हैं तब तुलसा नें
कह्यो जो महाराज अब तो पेट भरि खाइयत है
और नींद भरि सोइयत है और श्री आचार्य जी
महाप्रभून के ग्रंथन को पाठ करि यत हैं तब श्री
गुसांई जी वहुत प्रसन्न भये वह तुलसा ऐसी भ
गवदीय हुती ताते श्री ठाकुर जी अति सहि न
सके तातें वा तुलसा के ऊपर श्री गुसांई जी वहुत
प्रसन्न रहते ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये
॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ५ सम्बन्ध ३३॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के।
सेवक पद्मनाभ दास को वेटा।
ताकी वहू पार्वती की वार्ता

सो पार्वती श्रीठाकुर जीकी सेवा नीकी भांतिकर
ती और पुरुषोत्तम दास मेहरा इनकों नीकी भांति
सों जानतो जब कन्नोज जातो तब पार्वती के घर उ
तर तो तब किननेक दिन पाछें पार्वती के हाथ पांव
सूजत है गो तब ते श्री ठाकुर जी की रसोई करत त
था स्नान करत बहुत ग्लानि आवती तब पु
रुषोत्तम दास महरा कों पार्वती नें पत्र लिख्यो तामें
लिख्यो जो मेरी बानती श्री गुसांई जी सों कहियो
मेरी देह को यह प्रकार भयो है तातें मोकों सेवा कर
त पाक करत बहुत ग्लानि आवत है सो मैं कहा क
रूं सो पुरुषोत्तम दास महरा ने पार्वती को लिखो
पत्र श्री गुसांई जी को वांचि सुनायो और बानत
कीनी भेट की मोहर ही सो आगें राखी पाछें श्री
गुसांई जी ने पुरुषोत्तम महरा कों आज्ञा दीनी जा
दिन दै चारि में कहांगो पाछें दिन दै चार बीते तब श्री
गुसांई जी नें पुरुषोत्तम दास महरा कों आज्ञा दी
नी जो पार्वती को पत्र लिख तामें लिखियो जोतू
श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो काहू
बात की ग्लानि मति लाइयो श्री ठाकुर जी तेरो रोग
सब आपही ते दूर करेंगे तब पुरुषोत्तम दास मह
रा ने पार्वती कों पत्र लिख्यो तामें श्री गुसांई जी नें
श्री मुख ते वचन कहे सो लिख पठाये सो वह पत्र
पार्वती पै पहुंचो सो पत्र वांचि के श्री गुसांई जी
की आज्ञा ते सेवा प्रसन्नता सों करन लागी कछू
ग्लानि मन में नहीं लावती पाछें महीना तीन चारि मे

हाथ पांच नीकें भए तब पार्वती बहुत प्रसन्न भई सो प्रसन्न तासों सेवा करन लागी बहुर श्री गुसाईं कों पत्र लिख्यो भेट पठाई और कह्यो जो महाराज के प्रताप तें नीका भई हो सो पत्र बांचि कें श्री गुसांईजी बहुत प्रसन्न भा सो वह पार्वती बड़ी कृपा पात्र भागवती हुती प्रभून के प्रमान चलती ता ते श्री गुसांईजी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह वार्ता सेवा पद्मनाभदास के कुटुम्ब की भई तातें पद्मनाभ दास बड़े भगवदीय है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १॥
वैष्णव ॥६॥ सम्बन्ध ३४॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पद्मनाभ दास कौ नाती पार्वती कौ बेटा रघुनाथ दास ताकी वार्ता।

सो रघुनाथ दास बनारस में बहुत शास्त्र पढ़ि कें श्री गोकुल आयो तब श्री गुसांईजी कों दंडौत कीनी सो गुसांईजी बड़ेन की कानि तें इन के ऊपर कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथदास सुनते सोएक दिन परमानन्द सों नीमे इन सों पूछो जो रघुनाथ दास तुम तौ बहुत शास्त्र पढ़े हौ पण्डित हौ आज श्रीगुसांईजी नें कहा कथा कही हुती सो कहौत व रघुनाथ दास ने परमानन्द सों नी सो कह्यो जोतु मतौ सांच पूछत हौ परि इनौ कछु समझत नांही

तव यह वात परमानन्द सोनी ने श्री गुसांईजी के आगे कही जो महाराज रघुनाथ दास तो कछु समझत नाहीं पाछें श्री गुसांईजी नें रघुनाथ दास कों ग्रंथ होय चार पढाए और मार्ग की प्रनालिका कही पाछें रघुनाथदास समझनलाग्यो बडो पंडित भयो सो कितनेक दिन पाछें अपने घर कन्नोज में आयो तव माता सों कही जो हूं तो न्यारो होयगो श्री ठाकुरजी की सेवा करूंगो तव माता नें कही तो भलेई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयो वाको। माता जल भर लावती पार्वती पात्र मांजती श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करती पर चारगी सव करती जव राज भोग सरतो तव अपनें घर अकेली लीटी करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्पि भोग सराय आप प्रशाद लेती या भांति सों करती ऐसें करत दिन पांच सात वीते तव अपने सेव्य श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो सुनी पार्वती मेरो गरो खरखरात है अकेली लीटान नें नातें तू दारि तो कसेो करि तव पार्वती ने कह्यो जो महाराज तुम तो दारि भात सालन सों आरोगत हो तव श्री ठाकुर जीने कह्यो जो मैंतो तेरो कीयो आरोगत हों पाछें दार भात सव सालन करन लागी तातें पार्वती वड़ी कृपा पात्र भगवदीय हती ये वार्ता सव पद्मनाभदास के परिवार की भई तातें वे पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता ऐसी ऐसी कितनीक है तातें अव

कहां नांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१

वैष्णव १ ॥ सम्बन्ध ॥ ३५

श्री श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवक रजो क्षत्राणी अडैल में रहती।

ताकी वार्ता

सो व रजो क्षत्राणी नित्य पकवान सामग्री करि श्री आचार्य जी महा प्रभून के लिये ले आवती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आरोगते वाकों नित्य नेम हुतो सो एक दिन लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन आयो सो श्री आचार्य महा प्रभून नें ब्राह्मण भोजन कों बुलाए हुते तहां घृत थोरो सो चाहियत हुतो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें एक वैष्णव सों कही जो रजो कैसें घृत ले आउ तब वा वैष्णव नें रजो सों कही जो रजो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें घृत मंगायो है तब रजो ने वा वैष्णव सों कह्यो जो घृत काहे कों चाहियत है तब वा वैष्णव नें कह्यो जो आज श्री लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन है सो ब्राह्मण भोजन कों बुलाए गये हैं सो थोरो घृत र सोई मैं धर्यो है ताते मंगायो है तब रजो ने कह्यो जो मेरें तो घृत नाहीं है तब वह वैष्णव फिर आयो आय कें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो कें घृत नाहीं है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू फेरि जा और वीज कें

कहियो जो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें घृत
मंगायो है तब वह वैष्णव फिर गयो और रजो
सों कह्यो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू खीजत हैं
तवहू रजो ने घृत नाहीं दियो तब वह वैष्णव फिर
आयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो
महाराज रजो घृत नाहीं देत तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें कह्यो जो अब कें फेरि जा और क
हियो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू खीजत हैं ता
ते घृत देउ तवहू नाही दियो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून सों कह्यो जो महा राज रजो घृत नाहीं दे
त तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें और ठौर ते कै
मचलायो तब रात्री कौं रजो पकवान लैकें आई
तब रजो कों देखि क श्री आचार्य जी महा प्रभू पीठ

रजो का पकवान लेकर श्री आचार्य जी महा प्रभू के पास आना और श्री
॥ महा प्रभू का पीठ दे बैठना ॥

है बैठे तब रजो ने कही जो महाराज मेरो अपराध
कहा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो
जो तें घृत न हतो तौ सामग्री कहां ते करतो
तब रजो ने कह्यो जो हूं लक्षमन भट्ट की बेटी तो
नाहीं मेरे घृत न हतो ताते न दीनों ताते तुम्हारे घृ
त हतो सो क्यों न दीनों तब श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें कह्यो जो में श्री ठाकुर जी कों घृत क्योंकर
के देउं तब रजो नें कही जो में श्रीठाकुर जी कों
घृत क्योंकर कें देउं तब आप बोले नाहीं तब रजो
नें सामग्री आगें राखी और कही जो राज आरोगो
तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो आज
श्राद्ध दिन है ताते दूसरी वार लेनों नाहीं तब रजो
ने कही जो महाराज तुम्हारे घर कों होय सो मति
लेउ यह तौ लीयो चाहिये तब रजो के आग्रह ने
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें आरोगी रजो श्री आचा
र्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही
ताते इन रजो की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १

वैष्णव ८ सम्बन्ध ३६

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तम दास क्षत्री बनारस में रहते तिन्की ॥ वार्ता ॥

सो सेठ पुरुषोत्तम दास को श्री आचार्य जी महाप्रभू

न की आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नाम लेन आवे
ताकों तुम नाम दीजियो नातें सेठ पुरुषोत्तम दास ना
मदेते और अपने घर श्री मदन मोहन जी की सेवा क
रते परि कबहू विश्वेश्वर नाथ महादेवजी के दर्शन
कों न जाते ऐसें करत बहुत दिन बीते तब एक दिन
विश्वेश्वर नाथ महादेव जाने सेठ पुरुषोत्तम दास सों
कह्यो जो सेठजी तुम हम सों गांव कों नातो तो गावो
कबहूं हम कों प्रशाद तो दियो करो ऐसें स्वप्न में
कही तब सवारे सेठ पुरुषोत्तम दास उठि सेवा सों प
हुच कें बाहर आये तब बस्त्र पहर कें बीड़ा दोय प्र
शादी लेकें इतरा प्रशाद को लेकें विश्वेश्वर नाथ म

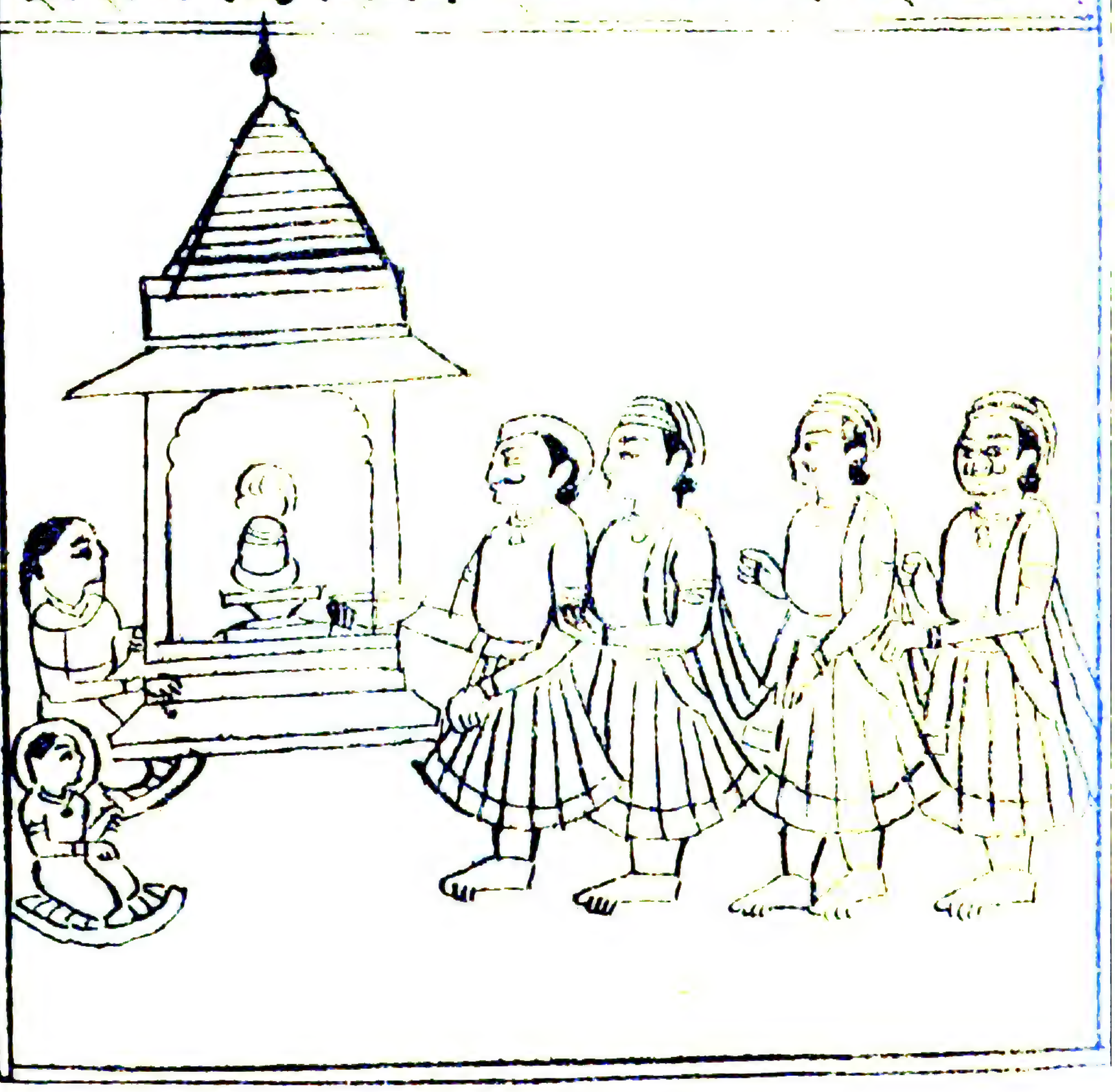

देवजी के दर्शन कों चले तब गांव के लोग आश्च
र्य भए जो सेठ पुरुषोत्तम दास कबहूं दर्शन कों न आ
वते सो आज क्यों आये सो सब लोग साथ आए सो
सेठ पुरुषोत्तम दास ने देवालय में जाय कें विश्वे
र नाथ महादेवजी के आगे बाड़ा दोय धरि प्रणाम कें
डवा धरि श्री कृष्ण स्मरन करि कें उठि चले तब वे
डे बड़े पंडित ब्राह्मण इतें तिननें सेठ पुरुषोत्तम दास
सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास दंडोत नमस्कार
कछू न कीनों श्री कृष्ण स्मरन करि कें उठि चले
सो तो तुम कों उचित नाहीं तब सेठ पुरुषोत्तम
दास ने उन ब्राह्मणान सों कह्यो जो तुम महादेव
जी कों पूछि लीजियों तुम सों महादेव जी कहेंगे
पाछें उन ब्राह्मणान में एक महादेव जी को बड़ो क
पापात्र भगवदीय इतो तासों महादेव जी ने स्वप्न
में कह्यो जो हमनें इन सों महा प्रसाद मांग्यो हो
सो देन आये हैं हमारो इन को व्यवहार जैसो लौकि
को है तातें तुम इन सों कछू मति कहो पाछें सेठ
पुरुषोत्तम दास बड़े उत्सव को प्रसाद कबहू क
बहूं ले जाते तब एक दिन महादेव जी नें कालं
भैरव सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के
घर ते अबेरो सबेरो आवत है तातें तू इन के घर की
चौकी पहरा नित्य देत रहियो सो काल भैरव नित्य
इन के घर की चौकी पहरा देतो सो एक दिन सेठ
पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के घर ते अबेरे आवत
हे सो सेठ पुरुषोत्तम दास घर के द्वार आये तब

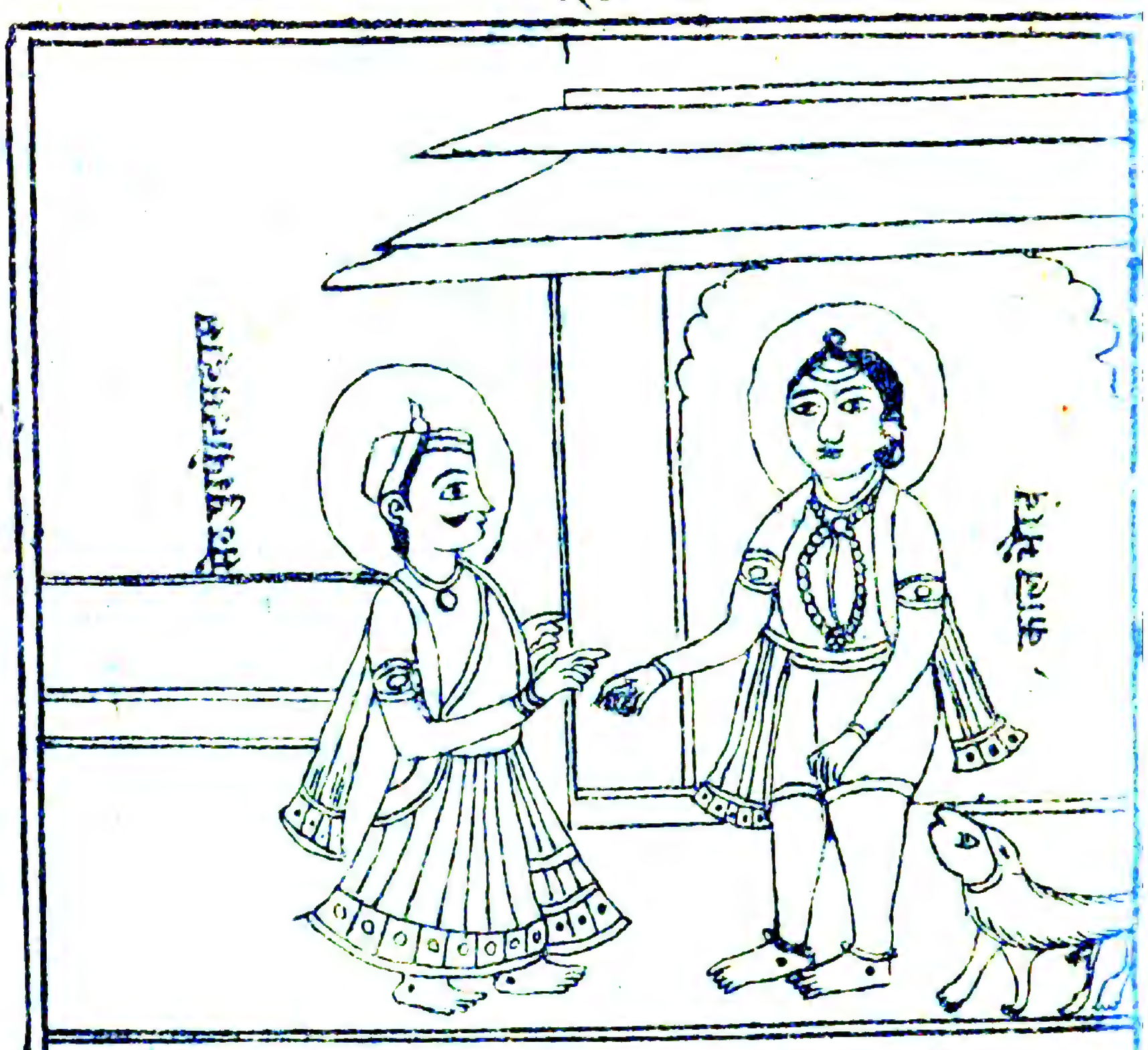

फिर कें देखें तौ काल भैरव एक ठौर ठाडो हैं तब से ठ पुरुषोत्तम दास नें ज्ञा सों पूछो जो तू कौन है तब वह बोल्यो जो हूं काल भैरव हों मोकों महादेव जीने आज्ञा दीनी है नाने तुम्हारे घर की चौकी पहरा देन हौं तब सेठ पुरुषोत्तम दास सिवकी दें कें भीतर गए ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर एक दक्षिण देशको ब्राह्मण सेवा हुतो सो बडो पंडित महादेव जी को कृपा पात्र हुतो सो ब्रा ब्राह्मण कों महादेव जी को साक्षात् दर्शन हो तौ सो वह ब्राह्मण नित्य प्रति महादेव जी के दर्शन करतो तब जल पान करतो एसो महादेव

जी को भक्त हुतो सो एक समें जन्माष्टमी को उत्स
व आयो सो विश्वेश्वर नाथ महादेव जी सेठ पु-
रुषोत्तम दास के घर गये जन्माष्टमी कोउत्सव
देखन कौं सो वा ब्राह्मण ने जन्माष्टमी के उत्सव
के दिना दर्शन नपायो और नवमी के दिना दुपहर
लों जब सेठ पुरुषोत्तमदास के घर ते महादेव जी
विदा होय के आये तब वा ब्राह्मण ने महादेवजी
को दर्शन पायो तब वा ब्राह्मण नें महादेवजी
सों पूछो जो काल्हि और आज हम दर्शन दुपहर
लों नाहीं पायो सो काहे तें तब वा ब्राह्मण सोम
हादेव जी नें कह्यो जो हम काल्हि सेठ पुरुषोत्तम
दास के घर उत्सव देखन गए हे सो अबही सेठ
पुरुषोत्तम दास के घर ते विदा होय के आवत हों
तब वा ब्राह्मण ने कही जो सेठ पुरुषोत्तम दास
कौन है तिन के घर तुम उत्सव देखन कौं जात हो
तब महादेव जी ने कह्यो जो बड़े भगवद भक्त हैं
तब वा ब्राह्मण ने कही जो मोहू को भगवद भक्त
करो तब महादेव जी ने कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम
दास के पास तू जाय के नाम लै आउ तब वा ब्रा
ह्मण नें कही जो तुमहीं मोकों नाम देउ तब म-
देव जी ने कही जो मैतो तोकौं नाम देउंगो सही
परि मेरो दीयो नाम तोकों फलेगो नाहीं ताते तू
सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नाम लै आउ वे तोकों
नाम देयंगे तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तम दास
के पास नाम लेवे गयो सो आय के भीतर खबर

कर वार्ई जो एक ब्राह्मण आयो है तब सेठ पुरुषो
त्तमदास नें कही जो बैठाऐं माथो खाली करन
आयो होयगो तब सेठ पुरुषोत्तम दास सेवा
मो पहुंचि कें बाहर आये तब वा ब्राह्मण ने दंडौत
कीनी तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें कही जो ऐसो स
र्वाचित क्यों करत हो हम क्षत्री तुम ब्राह्मण ऐसें
योंन घटै है तब वा ब्राह्मण ने सेठ पुरुषोत्तमदास
सों कही जो हमकों नाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम
ने कह्यो जो हंतो नाम नाहीं देउंगो बहुरि ब्राह्मण
ने बहुत आग्रह कीनो परि पुरुषोत्तम दास नें नाम
न दीनो तब वह ब्राह्मण महादेव जी के पास आयो
तब कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास नाम नाहीं देत
तब महादेव जीनें कह्यो जो तू फेरि जा हमारो नाम
लीजियो जो मोकों श्री महादेवजीने पठायो है तुम
सों महादेव जीनें कह्यो है तब वह ब्राह्मण फेरि से
ठ पुरुषोत्तम दास के पास आयो और कह्यो जो
मोकों महादेव जीनें पठायो है नातें मोकों नाम दे
उ तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें वा ब्राह्मण कों नाम
दीयो नाम सुनाय कें हाथ जोरि कें श्रीकृष्णस्मरन
कह्यो तब वा ब्राह्मण ने कह्यो जो अब मोकों श्र
नाम क्यों करत हो तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें कह्यो
जो अब तुम भगवद भक्त भये मेरे तुम वंदनीय हौ
तुम्हारे और हमारे वंदनीय श्री आचार्यजी महा
प्रभू हैं मैंनौ श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ कृपात
नाम दत हौं पाछें वह ब्राह्मण श्री आचार्य जीम

हाप्रभून के पास अंडेल आयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम समर्पणा करवायो पाछें कितनेक दिन रह कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथ पढ़े ॥*

वार्ता प्रसंग ॥२॥

वहुरि एक समय सेठ पुरुषोतम दास बैठे बैठे मंदिर वस्त्र करते हुते इतने ही में गोपाल दास बेटा श्री ठाकुर जी कों मंन भोग सरायवे कों मन्दिर में आय कें आयो तब देखें तो सेठ पुरुषोतम दास बैठे बैठे मन्दिर वस्त्र करत हैं तब गोपाल दास के मन में आई जो अब तौ सेठजी वृद्ध भए हैं ताते मैं सेवा में तत्पर मैं होउ तौ आछो तब यह बात गोपाल दास के मन की सेठ पुरुषोतम दास नें जानी तब कह्यो जो बेटा आगें आउ तब गोपाल दास जाय कें देखें तौ वर्ष बीस तथा पच्चीस के बैठे हैं तब पुरुषोतम दास नें कह्यो जो बेटा यह भगवदीयन की मन में न लावनी भगवदीय सदा तरुन हैं परि अवस्था होय ताकों मान दीयो चाहिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥

वहुर एक समय सेठ पुरुषोतम दास झाड़ खंड में मदार मधु सूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर मन्दिर है पर्वत को नाम मंदार पर्वत है ता ऊपरते मनुष्य गिरे तौ चोट न लगे और अपने सब पाप काँहि कामना करि गिरे तौ देह छूटे पाप

पदूर होंय और जो कामना करी होय सो दूसरे
जन्म में सिद्ध होय वह ऐसो स्थल है नहीं एक
समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे हते नहीं
सेठ पुरुषोत्तम दास और एक ब्राह्मण श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को सेवक सो दोउ जने मंदार
मधु सूदन जी के दर्शन कों पर्वत ऊपर चढ़े सो

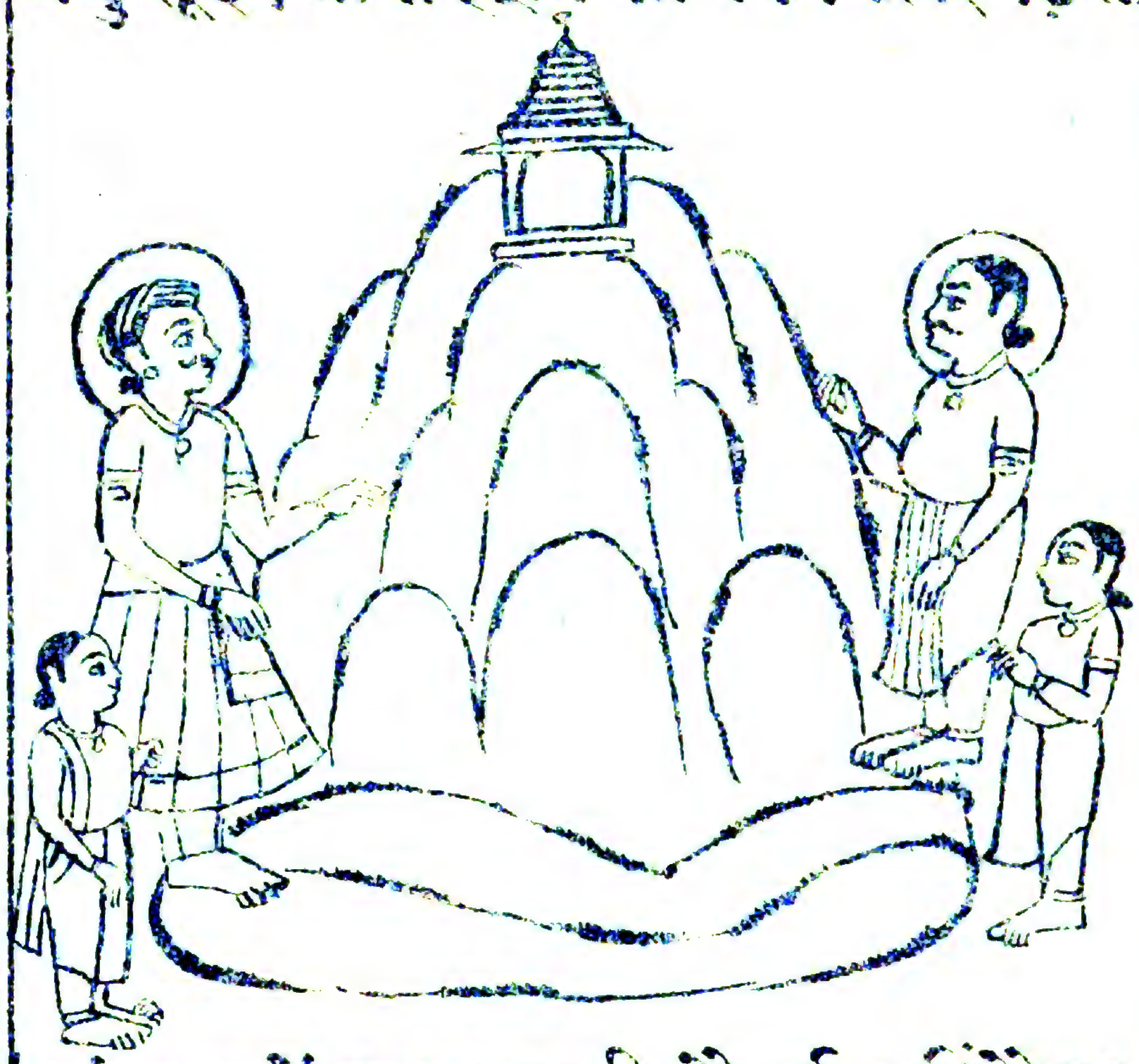

उहां जाय कें मधुसूदन जी को दर्शन कीनो पा
छें रात्रि पर गई तातें उहां हीं सोय रहे पाछें रा
त्रि कों एक सिद्ध आयो वह जाति को ब्राह्मण हु
तो वाने सेठ पुरुषोत्तम दास के साथ के ब्राह्मण
सों पूछो जो तुम कौन हो तब वह बोल्यो हम वै
ष्णव हैं श्री आचार्य जी महा प्रभू के सेवक हैं

तव वा सिद्ध ब्राह्मण ने कह्यो जो मेरे पास एक म
णि है सो तुम लेउ जाउ तो लेउ तव वा वैष्णव नें क
ह्यो जो यह मणि कौन काम आवत है तव सिद्ध ब्रा
ह्मण नें कही जो यह मणि ऐसो है जो मांगे सो देत
है तव वा ब्राह्मण नें कही जो मैं तो विरक्त हौं मेरे म
णि लेकें कहा करूं परि मेरे साथ एक खर्ची है सो
वह गृहस्थ है सो वह सावन है जो वाकों देउ तौ ज
गाऊं तव वा सिद्ध ब्राह्मण ने कही जो जगावो तव वा
वैष्णव ने सेठ पुरुषोत्तम दास कौं जगायो और कही
जो यह ब्राह्मण मणि सो तुम लेउ तव सेठ पु
रुषोत्तम दास नें कही जो यह मणि कौन काम आ
वत है तव वा मणि कौं प्रभाव कह्यो तव सेठ पुरुषो
त्तम दास नें कह्यो जो यह मणि हमारे काम को
नाहीं ताते हूंतो न लेउंगो तव सिद्ध ब्राह्मण फिर
गयो तव सेठ पुरुषोत्तम दास के संग ब्राह्मण हतो
तातें सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यो जो तुम तो गृह
स्थ हो बहुत कुटुम्बी हो तुम्हारे माथे सेवा है तुम
नें मणि क्यों न लीनी तुम को तो मणि लेनो उचित
हो तव सेठ पुरुषोत्तम दास नें कह्यो जो और ब्रा
ह्मण वातें मैं श्री ठाकुर जी कौं लगा श्री आचार्य
जी महा प्रभून कौं आश्रय छोड़ि कें कहा मणि को
आश्रय करूं नें मणि क्यों न लीनी तव ब्राह्मण क
हयो जो मैं तो विरक्त हौं मैं मणि लेकें कहा करूं
मोकों जगदीस सेर चून देयगो तव सेठ पुरुषोत्तम
दास नें वा वैष्णव सों कह्यो जो मोकों जगदीस सेर

चूनदेयगो तो मोकों कहा जगदीसदासमेरचूनन देयगो जगदीस कें काहू बात की न्यूनताहै ऐसें कहि कें दोउ जनेन नें दो मणि न लीनी वे सेठपु रुषोतमदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ॥ ३ ॥

॥ वार्ताप्रसंग ४ ॥

बहुरि एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू से ठ पुरुषोतम दास के घर पधारे तब दामोदरदास हरिसानी श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सेठ पुरुषोतम दास के सेव्य श्री ठाकुर जी मदन मोहन कों पंचा मृत स्नान करवायो और आप पाक करि श्री ठाकु रजी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर करि श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आप भोजन कीये तब दामोदर दास हरिसानी नें श्री आचार्यजीमहा प्रभून सों पूछो जो राज यह कहा तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरी आज्ञातें नाम देतहै तथापि ताकों याकी इतनी मर्य्यादा राखनी चाहियें सो वे सेठ पुरुषोतम दास श्री आचार्य जीमहाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कौ पार ना ही सो अब कहां हांतांई लिखिये ॥ ४ ॥

॥ वार्ताप्रसंग ५ ॥

वैष्णव ॥ ८ ॥ सम्बध ४१

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून

के सेवक सेठ पुरुषोतम दा
स की बेटी रुक्मनी२
ताकी वार्ता॥

सो एक समय श्री गुसांईजी कासी में पधारे हु-
ते तब तहां सूर्य्य ग्रहण आयो तब श्री गुसांई-
जी मन करणिका स्नान कों पधारे तब रुक्मनी हू-
श्री मदन मोहन जी कों स्नान कराय कें आप म
न करणिका स्नान कों गई श्री गुसांईजी पधारे जान
कें तब श्री गुसांईजी सों वैष्णवन नें कह्यो जो म-
हाराज सेठ पुरुषोतम दास की बेटी रुक्मनी आ
ई है तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो रुक्मनी आगें
आउ तब अपने पास बुलाय लीनी तब श्री गुसांई
जीने पूछो जो तू कितेक दिन पाछें गंगास्नान कूं अई

है तब रुक्मनी नें कह्यो जो महा राज चौदाम वर्ष पर्यंत पाछे आई हौं तब यह सुनि कें श्री गुसांई जी कौं हृदो भरि आयो और कह्यो जो रोसो भग वदीय जिन कों एक दाग हू अंग काप्यो नाहीं है जो गंगास्नान कों आवें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भ ये और रुक्मनी कों दरस कें श्री गुसांई जी कहते जो याके श्री ठाकुर जी आरोगा कब होयंगे ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर क्षत्री नाग सब कार्तिक मास में गं गा स्नान करते तब रुक्मनी नें सेठ पुरुषोत्तमदास सों कह्यो जो तुम आज्ञा करो तो मैहू कार्तिक स्नान करूं तब सेठ पुरुषोत्तम दास ने कह्यो जो भलेंई स्नान करि जो चाहिये सो लीजिये तब रुक्मनी ने कह्यो जो मेरो मंडप घृत दिवाय देउ मेरो नो घर मैंहे तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें खांड घृत दिवाय दीयो तब रुक्मनी पहर रात्रि पिछली रहे जब उठे सोने तन सामग्री करि कें समयराज भोग लों श्री मदन मोहन जी कों समर्पि फिर उत्थापन सों सामग्री करें सो सेन भोग लों समर्पि ऐसे कार्तिक मास में करें और वैशाख में शीतल सामग्री करें श्री ठाकुर जी कों आरोगावे सो प्रशाद वैष्णवन कों लिवावे या भांति सों करे सो एक दिन सेठ पुरुषो त्तमदास नें रुक्मनी सों कही जो रुक्मनी तू स्नान कब करत है तोकों जात कबहू देखियत नाहीं तू कार्तिक कौन वेर न्हाति है तब रुक्मनी ने क

ह्यौ जो मोकों स्नान सों कहा काम है मैं तौ या भां
ति सों करत हौं तब यह सुनि कें सेठ पुरुषोत्तमदा
स बहुत प्रसन्न भए श्री गुसांई जी आप श्रीमुख
ते सराहना करते रुक्मनी ऐसी कृपा पात्र भाव
दीय ह्यौ ॥

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितेक दिन में रुक्मनी की देह आसक्ति
भई तब रुक्मनी नें कह्यौ जो अब यह देह छूटै तो
भलौ है श्री ठाकुर जी की सेवा न होय आवै तौ य
ह देह कौन काम की है तब कितेक दिन पाछें रु
क्मनी देह छूटी सो एक वैष्णव नें श्री गुसांई जी सों
कही जो महाराज रुक्मनी नें गङ्गा पाई तब श्री गु
सांई जी श्री मुख ते कहे जो ऐसें मति कहो जो रु
क्मनी नें गङ्गा पाई ऐसें कहो रुक्मनी गङ्गा नें पा
ई वह रुक्मनी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी
कृपा पात्र भाव दीय ह्यौ तातें इनकी वार्ता अनि
र्वचनीय है सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग २।

वैष्णव ॥ ८ ॥ सम्बन्ध ४४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तम दा स को बेटा गोपालदास ताकी वार्ता ॥

सो गोपालदास सों श्री मदन मोहन जी सानु भा
वहते जो चहिये सो मांगि लेते ऐसें सदैव कृपा क

ते वहुरि गोपाल दास कीर्तन वहुत करते औं
र गोपाल दास की देह आसक्ति भयी तव भगव
दनाम को उच्चारण करते तव श्री मदनमोहन जी
आप हुंकारी देते ऐसी कृपा करते श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ग्रंथ सुवोधिनी जी श्री भागवत
निवंध और रहस्य ग्रंथ सो सव पाठ करते भग
वद लीला में मग्न रहते सदैव लीला को विचार
करते ऐसें करि कें सर्व काल व्यतीत कीयो
पाछें देह छूटी तव श्री गुसांई जीनें सुनी जो गो
पालदास की देह छूटी है तव आप श्री मुखतें
कही जो गोपालदास की सराहना करी सोवे गो
पालदास ऐसें भागवतीय है सो ये वार्ता सव
सेठ पुरुषोत्तम दास के परिवार की भई तातेइन
की वार्ता को पार नाहीं सो अव कहां तांई लिखि
ये ॥ * ॥ * ॥

वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥११॥ सम्बंध ॥४५

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक रामदास सार
स्वत ब्राह्मण ना०
की वार्ता है

सोवे रामदास श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भां
ति सों करते अपरस में जल भरते वीड़ा हू अप
रस में खवते या प्रकार सों करते सो रामदास के
पास द्रव्य वहुत हुतो सो कितेक दिन पाछें वह
द्रव्य खरच भयो थोरो सो द्रव्य आय रह्यो तव

मन में विचारी जो कछु आवत होय तौ भलो है न
व तादिन ते वह द्रव्य तातीन कौं व्याजू दीनों तव
व्याज वहुत आमन लाग्यो लोभ के लिये तातीन-
कौ व्योपार कीयो पूरब देश में फटे वस्त्र वुनत हैं-
तिन सों ताती कहत हैं तव राम दास जी के सेव्य श्री
ठाकुर जी श्री नवनीत प्रिया जीने कह्यो रामदास
तूतौ हम कौं तातीन पर राखत है तव रामदास जी
यह वात सुनि कें चौंकि उठे और कह्यो जो महारा
ज मोसों चूक परी तव रामदास जी तातीन पर गए
और कह्यो जो मेरो द्रव्य देउ तव उन तातीन नें-
रामदास जी सों पूछो जो यह कारन कहा है सो द्रव्य
मांगत हो तव रामदास जी नें कह्यो जो मैं कहा क-
रूं मो कों तौ लरिका संग काम पस्यो है तातें लरि
का कौ मन राख्यो चाहिये तव तातीन नें कह्यो-
जो हम द्रव्य इक ठौरो करत हैं तव कितेक दिन-
पाछें उन तातीन नें द्रव्य दीयो सो द्रव्य लैकें घर आ
ए फेर वैसें हीं सेवा करन लागे सो सव द्रव्य निवसो
तव वनियान की दूकान ते उचापति करन लागे त
व रुपिया वहुत है गयो तव उचापति वनियां की
दूकान ते दूर कीनी और वनियां की दूकान ते उ-
चापति करन लागे परि वा वनियां कौ हाट आगे
होय कें निकसते नाहीं और गेल होय के जाते तव
एक दिन वनियानें राम दास सों कही जो भलो तुम
मेरी दुकान के आगे होय कें नाहीं निकसत हौ और
उचापति नाहीं करत तौ मेरो लेखो करि कें मेरो

पैसा चुकाय देउ नगादा वहुत कारेंा कीयो तव श्री ठाकुर जी रामदास जी को स्वरूप धरि के वा वनिया की हाट ऊपर गए और श्री मुख तें कह्यो जो लेखो ल्याउ पैसा चुकाय देउं तव वा वनिया नें वही दीखि लेखो करि कें पैसा चुकाय दीनों रुपें या एक सो अधिक दाग श्री ठाकुर जी आप श्री मुख सों लिखि आये परि यह वात रामदास जी नें न जानी तव एक दिन रामदास जी कों वुलाय वे वैष्णव आए तव उन वैष्णवन के पाछें पाछें रामदास जी गए सो रामदास जी वा वनियां की दुकान के आगें होय कें निकसे तव आना कानीं दें कें निकसे इतने में वा वनियां नें कही जो रामदास जी तुम मेरी हाट ते उचापति नाहीं करत सो तो मेरो अभाग्य है परि तुमारो मांगे अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ तव रामदास जी ने कह्यो जो उहां ते फिरत आवत हौं तव रामदास नें मन में विचारयो जो मैंनो याकू कछु दीयो नाहीं और यह कहत है जो तुम्हारो अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ यह कारन कहा है परि जानि यत है जो यह श्री ठाकुर जी की ओर ते काम भयो है पाछें रामदास जी वैष्णवन के घर ते आये तव वा वनियां की हाट पै जाय कें लेखो मांगो जो लेख्यो ल्याउ तव वा वनिया नें कह्यो जो कहा लेखो देखांगे तव वा वनियां नें वही दिखाई तव वा वही में रामदास जी ने श्री ठाकुर जी के हस्ताक्षर देखे तव चुप करि रहे तव घर

आय रामदास जी नें स्त्री सों कही जो हूं तो घर में
नाहीं रहूंगो चाकरी करूंगो तब सिपाहगीरी को
विचार कीयो तब घोड़ा मोल लीयो सब हथियार
बांधन लागे तब जल और बीड़ा अपरस में लेन हे
सो अपरस छूटो बिना अपरस में लेन लागे सो कि
कदिन पाछें रामदास जी अड़ेल आय सो हथिया
र बांधेही जाय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के

श्रीआचार्यजी महाप्रभू

दर्शन कीने दंडवत कीनी तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें श्री मुख ते धन्य धन्य कह्यो जो राम
दास तू धन्य हे तब और वैष्णव पास बैठे हे सो क
हन लागे जो महाराज अब याकों धन्य क्यों कह
तहो अब तो यह अपरसता में नाहीं रहत हे सि

पाहीन में चाकरी करत हे तव श्री आचार्ये जी म
हाप्रभून ने कही जो यह धन्य याते हे श्री ठाकुर
जी कों श्रम नाहीं करवावत याकी बराबर काउ
धीरज वेत नाही श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ता
समें गंगास्नान कों पधारे तव मार्ग में एक खाड़
देख्यो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो
यह खाड़ अजहू भस्यो नाहीं सो इतनों कहत ही
वेष्नव सव खाड़ भरन लागे वागो पहरें ही तव रा
मदास जीहू एक टोकरा लैकें खाड़ भरन लागे त
व श्री आचार्य जी महा प्रभू स्नान करि कें पधारे
तव नांई खाड़ भर दीनों तव रामदास जी कों देखि
कें श्री महा प्रभू जी वहुत प्रसन्न भए ॥

वार्ता प्रसंग २

और रामदास जी कें कछु संतन न हुती तव
स्त्रीनें रामदास जी सों कह्यो जो तुम और विवाह
करौ तौ तुम्हारे वालक होय तव रामदास जी नें क
ह्यो जो हम को तो वालक की इच्छा नाहीं तव स्त्री
ने कह्यो जो मोकों तो वालक की इच्छा है तव रा
मदास जी नें कह्यो जो तो कों वालक की इच्छा है
तौ हमारे श्री नवनीत प्रेया जी की वाल भाव सों
सेवा करि जैसें वालक कूं खवाइये प्याइये खि
लाइये हित करिये तैसे तुम श्री नवनीत प्रियाजी
कों लडावो तव तेरें वालक होयगो तव रामदास
जी की स्त्री नें श्री नवनीत प्रिया जी की वाल भा
व सों सेवा करी सो या प्रकार सों सेवा करि जो वा

लक भयो है सो वे रामदासजी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो इन की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग २

वैष्णव ॥ ७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गदा धर दास०
सारस्वत ब्राह्मण कंडा
में रहते तिनकी
वार्ता ॥

सो गदा धर दास के मांथे श्रीमदन मोहन जी की सेवा हती सो श्री ठाकुर जी बडे गोर हते सो नित्य

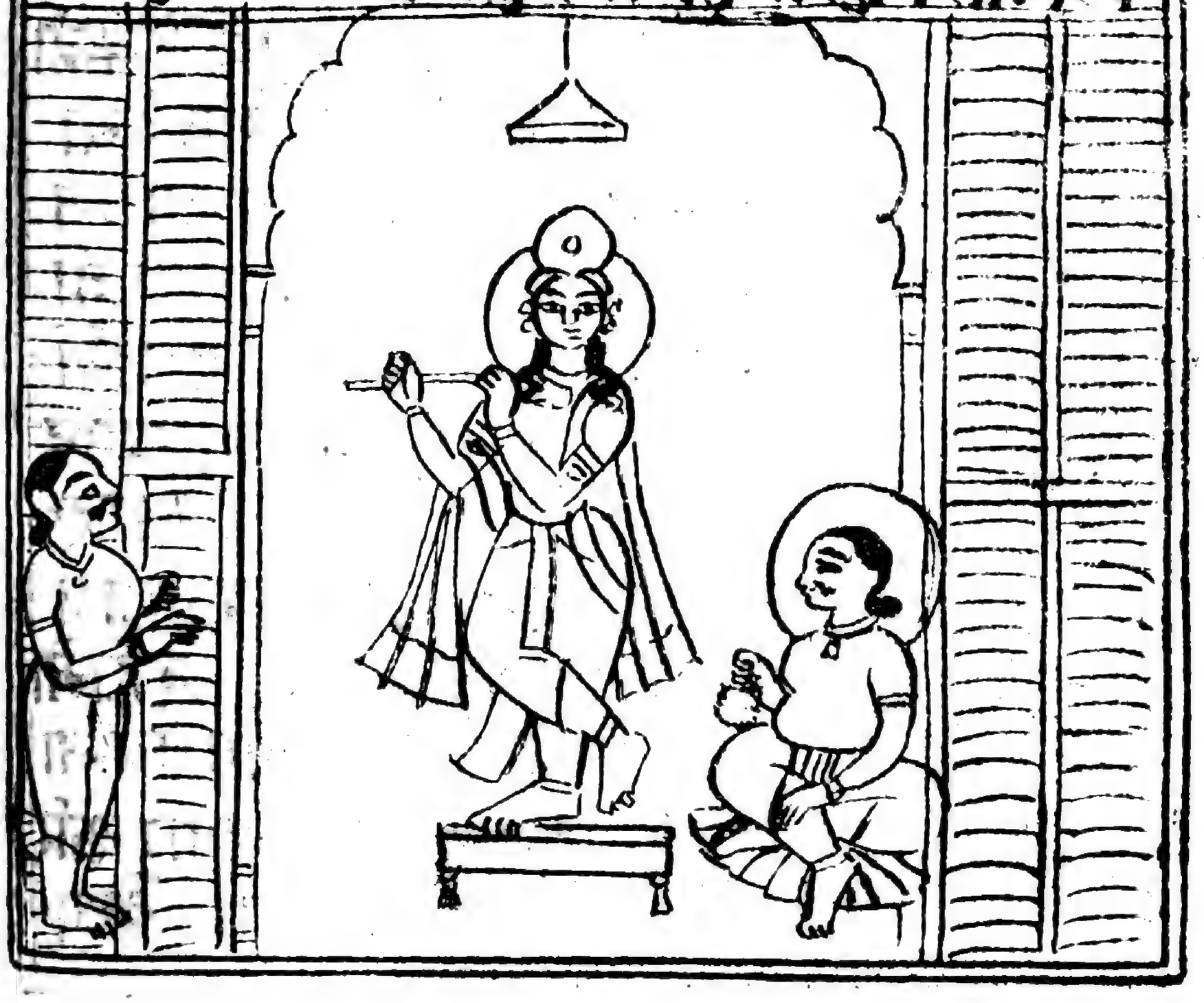

प्रीत जैसो उनके जिजमान के में आवतो तैसो श्री ठाकुर जी कों समर्पते सो एक दिन जिजमान के में कछू आयो नाहीं तब जल ही छान के समर्प्यो परि मन में बहुत खेद भयो छाती में आग सी उठी ऐसें करत रात्रि पर गई तब एक जिजमान द्वार पे आ य पुकार्यो और कही जो किवाड़ खोलो तब गदा धर दास नें किवाड़ खोले तब वा जिजमान नें एक वागो और चार रुपैया और कछू सामग्री गदाधर दास कों दीये और कह्यो जो आज मेरे पिता को श्रा द्ध दिन हतो ताकी यह दक्षिणा लेउ तब गदाधर दास नें लीनी सो वागो सामग्री घर में धरि कें श्री पवाज़ार में गये सो एक हलवाई मिठाई आछी क रत हतो ताकी हाट पे गए तब जाय कें वा हलवाइ सों पूछो जो तेरे मिठाई अछी है तब वा हलवाई नें कही जो मिठाई जलेबी अवही कीनी है या मेंते बेची नाहीं तब जलेबी तुलाय मोल दे कें घर आए त ब गदाधर दास आप कें स्नान करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समया नुसार भोग सराय अनो सर करकें पाछें वैष्णवन कों बुलाय महा प्रशाद सबन कों लिवायो सो अति अलौकिक स्वाद भयो ऐसो जो कछु कह्यो न जाय सो सब महा प्र शाद वैष्णवन कों लिवायो और आप भूखे ही सो य रहे पाछें सवारे उठि माधो सामग्री न्हाए तब स्ना न करि रसोई करी श्री ठाकुर जी सेवा शृंगार करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय वैष्ण-

व फेर बुलायें जब वैष्णव प्रशाद लेवे कों आये बैठे तब पूछन लागे जो राधि को महा प्रशाद ह मनें दीनों सो बहुत स्वाद भयो सो कयों कर सम पर्यो तब गदाधर दासनें सब प्रकार कह्यो तब स ब वैष्णव बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो गदाध र दास नें सत्य कह्यो ॥

॥ वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन गदाधर दास नें सब वैष्णव महा प्रसाद कों बुलाए हुते पाछे साक सजन करन हुतो तब गदाधर दास नें कही जो गंगा कोउ वै- ष्णव है सो साक लै आवे तब तिन में एक वैष्ण व वेणीदास को भाई माधोदास सो बड़ो विषयी हुतो नाते वेश्या घर में राखी हुती तिन नें कह्यो- जो मैं ले आऊंगो तब गदा धर दास नें कह्यो जो भ ले लै आवो तब माधोदास गयो सो वधुवा को- भाजी लै आयो सो माधो दास नें नीका भांति सों दोनी रसोई में पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्रीठा- कुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय अनों सर कर के वैष्णवन कों महा प्रशाद लेन बैठाए पाछे वह भाजी अति स्वाद भई तब गदाधर दास ने माधोदास कों आशीर्वाद दियो जो तू हरि भक्त दृढ़ होयगो पाछें गदा धर दास के आशीर्वाद ते माधोदास भला वैष्णव भयो सो वे गदाधरदास श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भ गवदीय हुते ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं ताते

इनकी वार्ता अब कहां तांई लिखिये॥

वार्ता प्रसंग १॥

वैष्णव॥८॥ सम्बन्ध॥४८

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक वेणीदास माधौ दास दोऊ भाई ति० न की वार्ता

सो बड़े भाई वेणीदास छोटे भाई माधौदास सो माधोदास वही जो गदाधर दास के घर वधुवा की भाजी लै आयो हो सो माधोदास बड़ो विषयी हतो तानें घर में वेश्या राखी हती ताने सब वैष्णव माधो दास की निंदा करते सो वात श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनी जो माधोदास बड़ो विषयी भयोहै घर में वेस्या राखी है सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें माधौ दास सों पूछो जो क्योरें माधो दास तेनें घर में वेश्या राखी है तब माधो दास नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज मेरो मन आसक्त भयो है तासों राखी है तब श्री आचार्य जी महा प्रभू आप चुप कर रहे सो तीन वेर आपने माधो दास सों पूछो तब तीन्यो वेर माधो दास ने योंही कही जो महाराज मेरो मन वासों आशक्ति भयो है तासों राखी है तब वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही जो महाराज अब तो नौ आप की कानि ही परि अब तो तुम्हारे आगें कहेगो तासों तुमनें तो कछू न कही तब श्री आ

चार्य जी महा प्रभून नें उन वैष्णवन सों कही जो वा
कौ मन वासों आसक्त भयो है सो श्री ठाकुर जी कौं
फेर तें कितनी वार लागेगी और गदाधर दास नें
वाकों आसीर्वाद दियो है जो ताकों दृढ भक्ति होय
गी सो यह माधो दास है तब कितेक दिन पाछें मा
धोदास की बुद्धि श्री ठाकुर जी ने फेरी तब तौ वानें
वेश्या दूर कीनी पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभून
की कृपा ते माधोदास भलो वैष्णव भयो॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर कितेक दिन पाछें एक माला मोतीनकी
वहुत सुन्दर वहुत मोल की विकवे कौं आई सो दे
ख कें माधोदास नें वड़े भाई वेणी दास सों कह्यो
जो यह माला श्री ठाकुर जी के कंठ लायक है त
व वड़े भाई वेणी दास नें कही जो यह माला कौन
हाहै हमारे पास जो है सो सब श्री नवनीत प्रिया
जी कौ है ऐसें कहि कें वात टार दीनी तब माधो
दास नें कही जो अपने घर में है सो सब ठाकुर जी
कौ है तौ माला क्यों न लेउ तब वड़े भाई वेणीदा
स ने कही जो हम गृहस्थ हैं हम कों विवाह का
ज सब करनों है ऐसें क्यों वनें तब छोरे भाई मा
धोदास नें कही जो हूं तो न्यारो होउंगो सो न्यारो
भयो द्रव्य सब वांट लीनी सो द्रव्य की वस्तु लैकें
दक्षिण गयो तब वस्तु सब बेची तब व्यवहार क
र कें द्रव्य वहुत उपज्यो तब एक माला मोतीन
की पहिले मोल ले उत्तमोत्तम लीनी सो माला ले

कें घर कों चले सो आवत वाट में एक बड़ी नदी आई तब नाव में बैठे तब नवनीत प्रिया जी ला ल छड़ी हाथ में लेकर आये और कह्यो जो नाव डुवाऊं तब माधौदास नें कह्यो जो निजे छातः करि ष्यति: तब श्री ठाकुर जी नें कही जो तू क्यों गयो

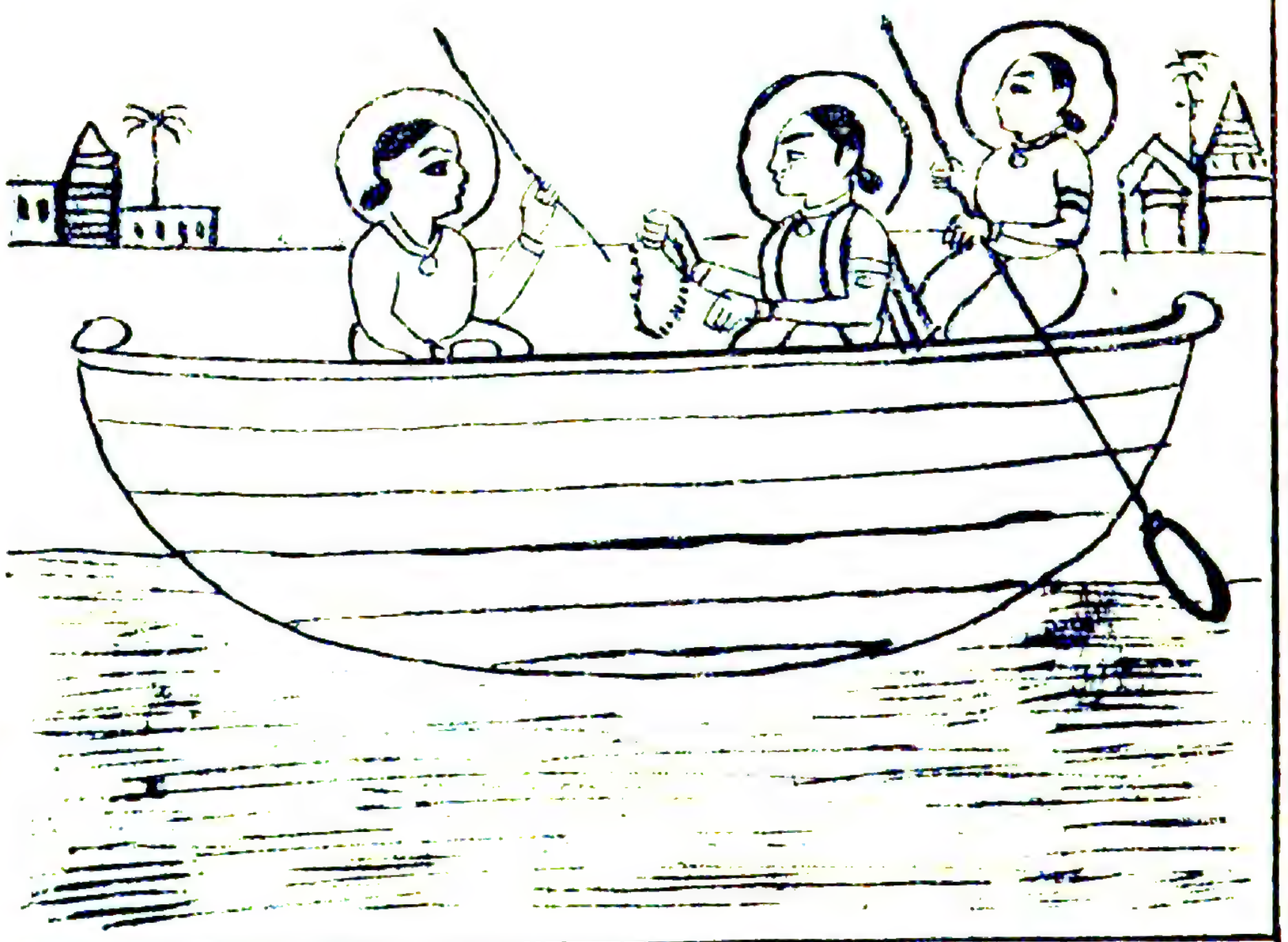

हो तब माधौ दास नें कही जो महा राज में माला लैन गयो हो तब श्री नवनीत प्रिया जी नें कही जो हमारे का मान्या न हती हमारे मान्या वहुतेरी हैं तब माधोदास नें कह्यो जो तुम्हारें मान्या व हुतेरी हैं पर सेवक कों तो उपाय करनो तब ना वहुवते ते रही जितने मनुष्य नाव में बैठे हुते ते सब हलकल करन लागे और माधोदास कों।

मन प्रसन्न हतो तब मदन के मन में आई जो एव
ड़ महा पुरुष हैं पाछें माधोदास उहांते घर आये
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून कों दंडवत कीनी
और हाथ में माला दीनी तब श्री आचार्य जी म-
हा प्रभून नें कही जो नाव डूबते ने कैसें रही तब मा
धोदास ने सब समाचार कहे तब और वैष्णव पा
स बैठे हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
कही जो वही माधोदास है जो श्री महा प्रभून की
कृपा ते श्री ठाकुर जी ने माधोदास कों मन फेरयो
और भगवद भाव उत्पन्न भयो आप्य ऊपर आ
सक्ति नाहुतो सो श्री ठाकुर जी के ऊपर भई सो
माधोदास ऐसे भगवदीय हैं ताते इन वर्णादा-
स माधोदास की वारता कों पार नाहीं सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव ॥८॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक हरिवंश पाठक सारस्वत ब्राह्मण व-नारस में रहत ॥ तिनकी वार्ता

सो वे हरिवंश पाठक पटना में गये हे सो वहां के हाकिम सों बहुत मिलाप हतो सो वा हाकिम अपने मन में कहे जो ए मेरे पास कछु मांगे तो में इन कौं देउं परि वे कछु मांगे नहीं यों करत डोल उत्सव के दिन हे रहे तब अपने सेव्य ठाकुर जी इ

तें तिनने स्वप्न में जताई जो तू मोकों डोल वृक्ष
लावेगो तव हरिवंश पाठक नें मन में विचारयो जो
अब कहा करूं तव हरि वंश पाठक हाकिम पास
गये सो जाय कें कही जो आप के पास कछू मांग
न आयो हूं सो मोकों दीयो चाहिये तव राजा ने क
ही जो कहा चाहिये तव हरि वंश पाठक ने कह्यो
जो मोकों दिन दूं में वनारस पहुंचनों है तव हाकि
म नें कह्यो जो भलो तव हाकिम नें घोड़ा और मनु
ष्य साथ दीये पेंडे में डांक चौकी वनाई ऐसे कर
त अपने घर आये पाछें आप मन्दिर में आय कें
डोल सिद्ध कीयो डोल की सामग्री सव सिद्ध क
रकें पाछें श्री ठाकुर जी कों डोल में वैठाये वहत-

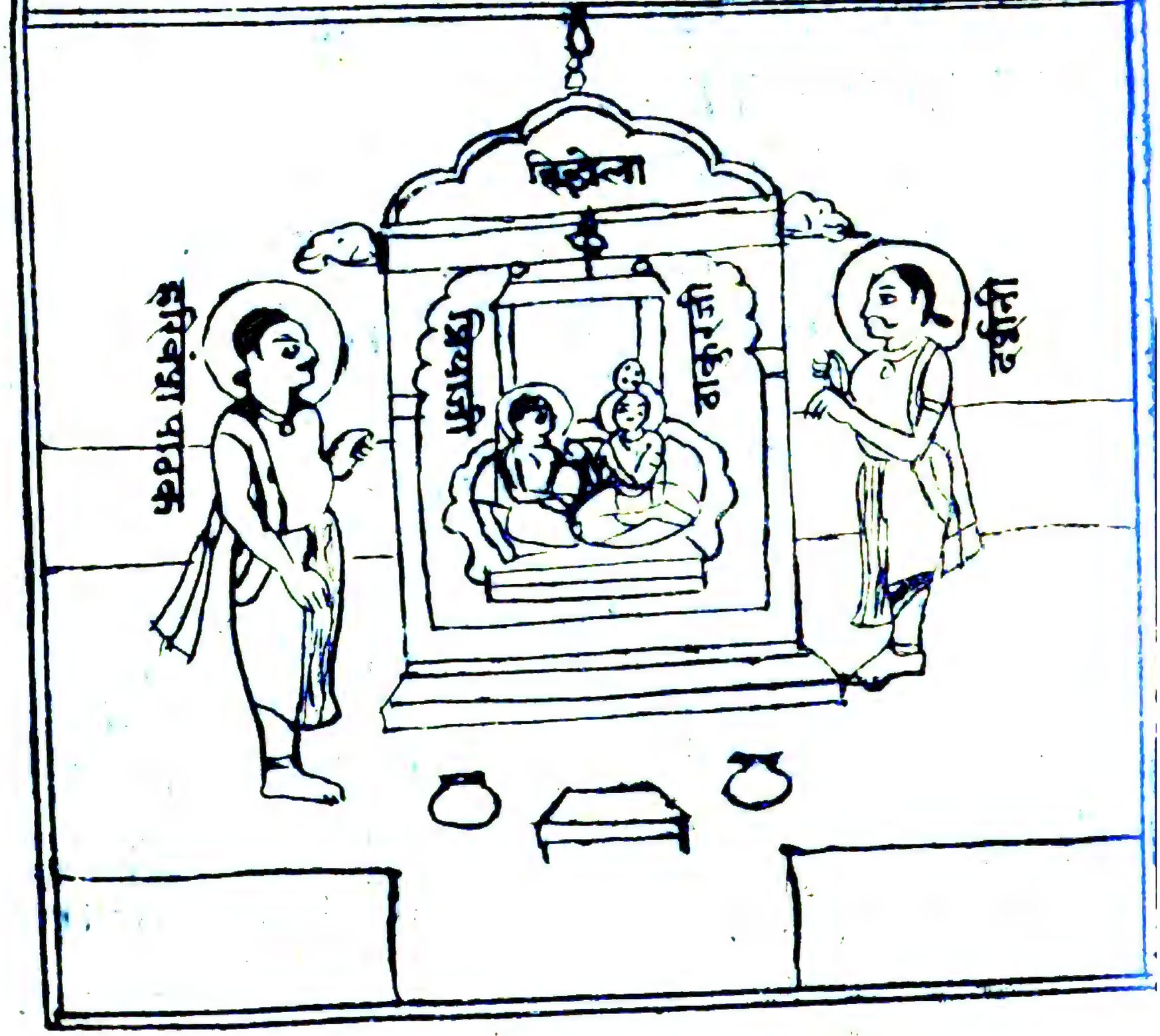

सुख भयो सो थोरे से दिन पाछें फिर यटना गये त
व हाकिम ने कही जो तुम को ऐसी कहा जलदी
हुती तव हरि वंश पाठक नें कही जो कछु काम
हुतो परि मन की वात कछु न कही सोवे हरिवं
श पाठक श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भागवदीय हे नाते इनकी वाती अनिर्वच
नीय है सो कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्त्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव १०॥ संवंध ५२

श्रव श्री आचार्य जी महा प्रभू
न के सेवक गोविंद दा
स भल्ला ताकी वार्ता

सो गोविंद दास भल्ला की गांठि में द्रव्य वहुत
हुतो सो श्री आचार्य महा प्रभून के सेवक भये त
व गोविंद दास ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों
पूछो जो महा राज मेरी गांठि में द्रव्य है सो मैं क
हा करूं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो श्री ठाकुर जीकी सेवा करि तव गोविंद दास
ने कह्यो जो महाराज सेवा कैसें करूं स्त्री अनु
कूल नाहीं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कं
ह्यो जो तू स्त्री को त्याग करि तव गोविंद दास
ने स्त्री को त्याग कीयो पाछें कह्यो जो महा राज द्र
व्य को कहा करूं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें कह्यो जो अवद्रव्य को चार विभाग करि तव
गोविंद दास नें द्रव्य के चार वट कीये तव फेरि क
ह्यो जो महाराज कहा आज्ञा है तव श्री आचार्य

जी महा प्रभून ने कह्यो जो विभाग तो श्री नाथ जी
कों समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्री कों दे·
और एक विभाग सेवा के लिये तू राखि तब गोवि
द दास नें कही जो महा राज कल्ह आप अंगीकार
करियें तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो भलो एक विभाग हमें दे तब सब विभाग जहां
के तहां देकें अपने घर को द्रव्य लेकें आपु महा
वन आय रहे सो महा प्रसाद वैष्णवन कों लिवा
वते वैष्णव न मिले तौ गायन कों खवावते नामं·
ते आप रंचक हून लेते आप न्यारी रीटी करि
भोग समर्पि के लेते ऐसी भांति सों सेवा करते
सो सब द्रव्य निवट्यो तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी·
की सेवा में आय रहे तब श्री गोवर्द्धन नाथजी
की परि चारणी करते रसोई की टहल सब कर
ते दोउ वार के पात्र मांजते और रात्रि इंढ़ तथा
सवा पहर पाछली रहती·· तब उठते सो गागरि
तहां ते लेकें चलते सो मथुरा में विश्रांत घाट पै
स्नान करि कें श्री यमुना जल की गागरि भरि कें
चलते सो राज भोग पहिले आय पहुंचते वहांरि
पाय मांजि रसोई पानि अपनी सब सेवा सों प·
हुंच कें नीचे आवते पाछिं तिलक पोछि माला
उतार गांठि बांधि कें आस पास के गामन तें भि
क्षा मांगि लावते सो सेर चार पांच की आहार क
रते सो आहार माफ़िक जुर तौ तब आवतौ तब
आप पास रीटी करि श्री नाथ जी की ध्वजा के

सन्मुख दिखाय तामें चरणोदक मिलाय प्रसाद ले
ते ऐसें निर्वाह करते तब ऐसी भांति करत बहुत दि
न बीते परि यह बात श्रीनाथ जी कों न भावे तब श्री
नाथ जीनें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो
तुम्हारो एक सेवक मोकों बहुत दुख: देत है तब श्री
आचार्य जी महाप्रभू गोकुल तें चले सो आगरे में
आए तब तहां के वैष्णव सों श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें पूछो जो श्री ठाकुर जी किन रुठाए हैं तब
उन वैष्णवन नें कही जो महाराज हम तो कछू जा
नत नाहीं तब वहां ते श्री आचार्य जी महाप्रभू म
थुरा पधारे तब मथुरा के वैष्णवन सों श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें पूछो जो श्री ठाकुर जी किन-
रुठाए हैं तब वहां के वैष्णवन नें कह्यो जो महा
राज हम तो कछू समझत नाहीं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभू उहांते श्री जीद्वार पधारे तब श्रीनाथ
जी के दोऊ कपोल हाथन सों छुई के कह्यो जो-
बाबा अनमने कैसें हो तब कही जो तुम्हारो से
वक मोकों बहुत खिजावत है तब श्री आचा-
र्य जी महाप्रभूननें सब सेवकन सों पूछो जो तुम
कहा कहा सेवा करत हो और कहा प्रसाद लेत हो
तब सबने अपनी अपनी सेवा कही और प्रसाद
लेवे को प्रकार कह्यो पाछें गोविंद दास सों पूछो
जो तू कहा सेवा करत है तब जो सेवा करत हुतो
सो सब कही और प्रसाद लेवे को प्रकार कह्यो
सो सब श्री आचार्य जी महाप्रभूनें सुनी तब अ-

यने मन में जानी जो इन रुठाए हैं तव श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें गोविंद दास भय्या सों कहीजो
तुम श्री ठाकुर जी की रसोई में प्रसाद लेउ तव गो
विंद दास नें कह्यो देव अंस कैसे लेउ तव श्री आ
चार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू हमारी रसोई
में प्रशाद लै तव गोविंद दास ने कह्यो गुरु अंस
कैसें लेउ तव श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कह्यो
जो तू सेवा मति करे तव गोविंददास क्रोधी अहंकार
सों सेवा छोड़ि कें मथुरा गए सो केसोंराय जी
की सेवा को इजारो पठान के पास ते लीयो तव
सेवा करन लागो सो एक वार श्री केसोंराय जी
की सिज्या निवार ने वुनाई सो सिज्या वहुत अ
द्भुत भई तव श्री केसोंराय जी वा सिज्या के ऊप
र पोढ़न लागे तव तैसी ही निवार वा गाम के हा
किम ने वुनवाई परि वह निवार वैसी न भई तव
वा कारीगर नें कही जो वह निवार तो श्री ठाकुर
जी की है तव हाकिम नें कही जो वह निवार मैं
देखूंगो पाछें हाकिम श्री ठाकुर जी कें दिवाले
में जाय के सिज्या ऊपर चढ़ि वैठ्यो सो गोविंद
दास नें सुनी तव गोविंददास नें आय कें गुस्सी लै
कें हाकिम को गारी दीनी जो तू कौन है सो हमारे
श्री ठाकुर जी की सिज्या ऊपर वैठ्यो है ऐसें वा
हाकिम कौं ठोर मार्यो तव हाकिम के मनुष्यन
नें गोविंददास को ठोर मार्यो सो यह वात श्री आ
चार्य जी महा प्रभून के आगे काहू वैष्णवनें जाय

कही और कहोजो ऐसी गति वैष्णव को क्यों व्
झिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो या
के परलोक में तो कछु हानि नाहीं परि इन मेरी आ
ज्ञा न मानी तासों याकी देह या भांति सों छूटी है·
यह गोविंद दास पहिले जन्म में श्री नंदरायजी को
भैंसा हुतो याने माटी पानी वहत दोयो सो वे गोवि·
द दास भल्या श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे
कृपा पात्र भागवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कौ पार
नाहीं सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

वैष्णव ॥११॥ सवन्द्य ॥५३

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवक अम्मा क्षत्राणी जो। कड़से में रहती तिन की वार्ता

सो अम्मा के दोय बेटा हुते सो दोऊ परम वैष्णव हु
ते आप वैष्णव हुती और वांके लरिका वासों अ
म्मा कहते और श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भां·
ति सों करती सो वाके सेव्य ठाकुर जी श्री बालकृ
ष्ण जी वासों अम्मा कहते सो कितेक दिन पाछे ए
क बेटा वाको मर गयो तब श्री ठाकुर जी की सो
ई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पे समयानुसार
भोग सराय पाछे रोवन लागी तब अम्मा कों रोवन
देखि कें श्री ठाकुर जी खेद पावन लगे श्री ठाकुर
जी कहैं अम्मा तू रोवे मति परि वह रोवत ते रहे नाहीं

ऐसें करत वाकों दूसरोहू बेटा मरगयो तब तो घहुत रोमन लागी तब श्री ठाकुर जी वाकों रो वते सो राखें और कहें अम्या तू मति रोवें तब अम्या रोवन ते रही नाहीं तब श्री ठाकुर जी ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो अम्या रोवति है सो मैं व हुत खेद पावत हों तब श्री गुसांई जी अम्या के घर पधारे और कह्यो जो अम्या तू मति रोवे श्री ठाकुर जी खेद पावत हैं तब रोवन ते रही और अम्या सेवा को सब साज करि कें पाछें स्नान करि कें पाछें मन्दिर में जाय कें दोऊ हाथ सों सोधों लगा य कें श्री ठाकुर जी कें लगावें या भांति सों सेवा आछी तरह करती ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन दूध को कटोरा श्री ठाकुरजी के आगे भरि राखो हुतो ता समय श्री गुसांई जी अम्या के घर पधारे मन्दिर को दरा सरकाय कें दर्शन करन लागे तब श्री गुसांई जी देखें तो ठाकुर जी दूध पीते हैं तब श्री गुसांई जी देखि कें पाछें फि र आये तब अम्या नें कही जो बादा पाछें क्यों फि र आए तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी दूध पावत हैं तब अम्या ने कही जो श्री ठाकुर जी तो लरिका हैं तुम कहा जानत नाहीं तब श्री गुसांई जी दर्शन करि कें पाछें फिरे और अम्या सों श्री गु सांई जीनें कह्यो जो यह दूध हमारे घर पठाय दीजियो तब अम्या नें कह्यो जो राज आपही तो ई

श्रीठाकुरजी

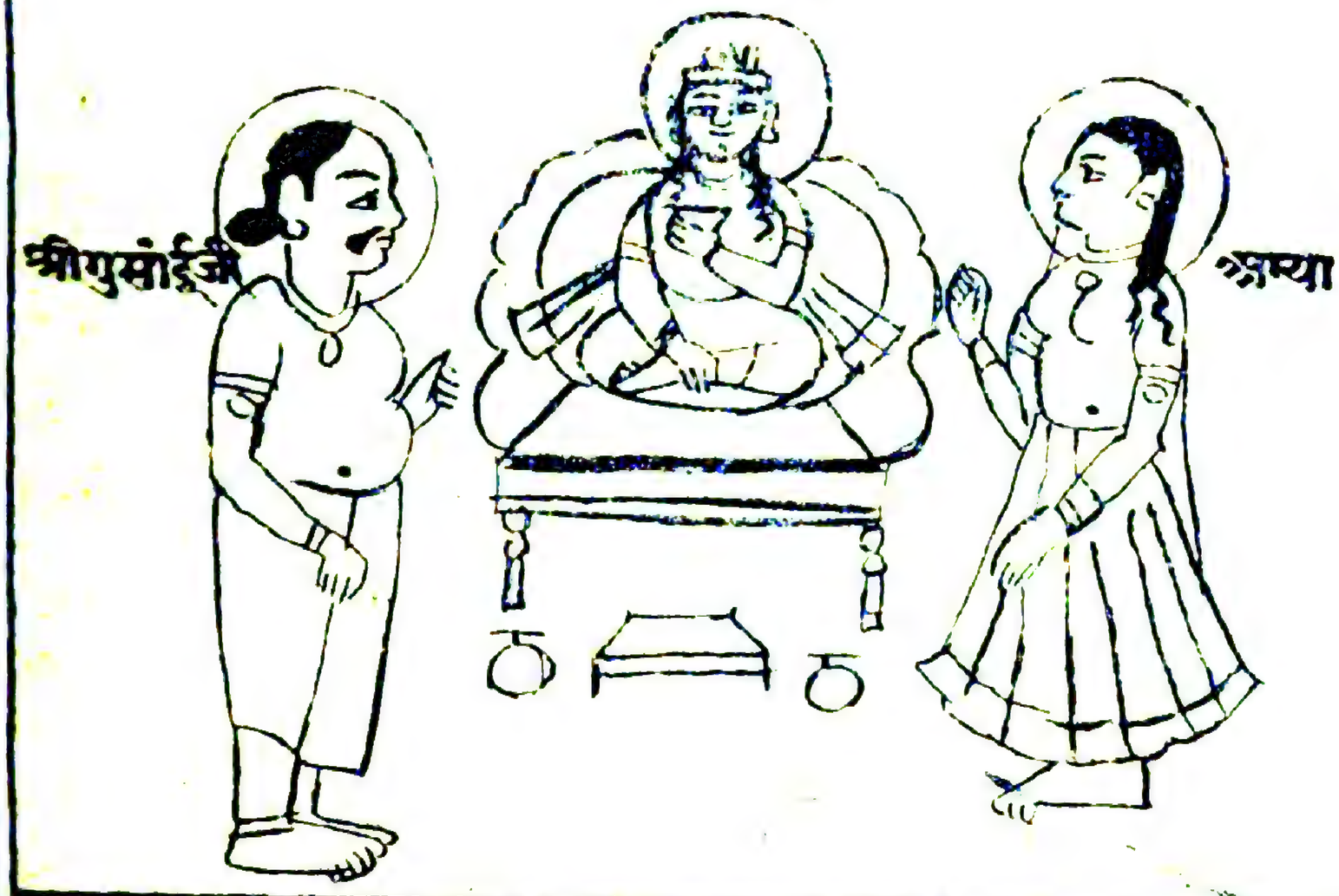

रोगन वारे भावे तौ इहां आरोगो भावे उहां आरो
गो पाछें श्री गुसांई जी आपतौ घर पधारे तव
अम्या नें वह दूध श्री गुसांई जी के घर पठायदी
यौ सो अम्या सौं श्री ठाकुर जी ऐसें सानु भाव-
हते प्रत्यक्ष वार्ता करते जो वस्तु चहिये सो मां
गि लेते सो अम्या श्री आचार्य जी महाप्रभून की-
ऐसी कृपा पात्र भावदीय ही ताते इनकी वार्ता
को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ॥१२॥ सम्बन्ध ५४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गज्जन धावन

दासी आगर के घर।
मीतिन्की वार्ता।

सो गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जीकी से
वा नीकी भांति सों करते श्री ठाकुर जी सानु भाव
हुते गज्जन के साथ श्री नवनीत प्रिया जी खेलते
गज्जन कों कबहूं गाय करते कबहूं वक्षरा करते
तब गाय को मुख अपने पीताम्बर सों पोंछ ते तब
वक्षरा करते तब पकर राखते चलन न देते और
जब घोरा करते तब पीठ ऊपर असवारी करते
जब हाथी करते तब ग्रीवा ऊपर असवारी करते

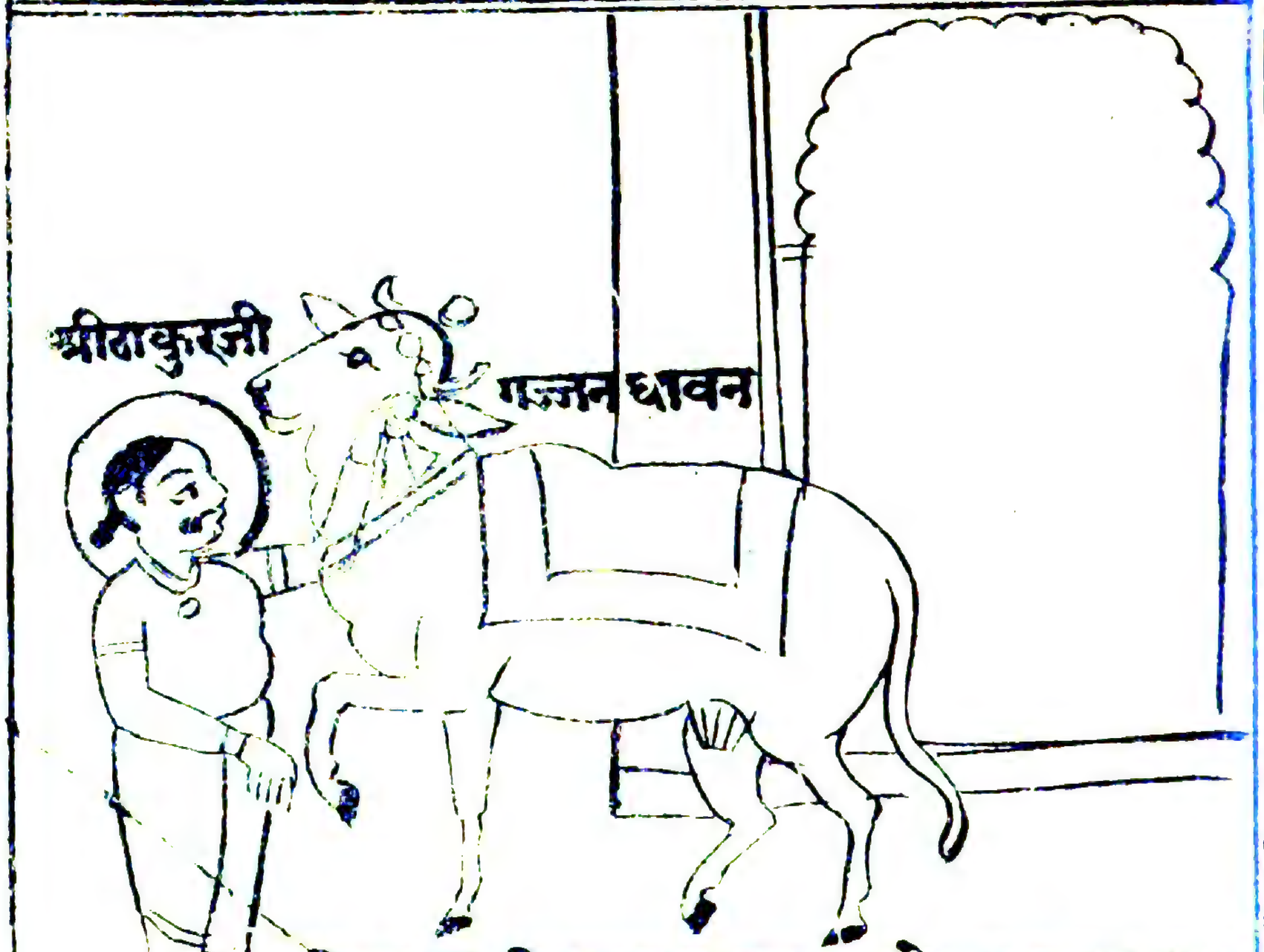

श्री ठाकुरजी का गज्जन धावन को गाय करना॥

ऐसें करत गज्जन के घटरु घिसि गये ऐसी कृपा
श्री नवनीत प्रियाजी गज्जन धावन के ऊपर ऐ

सी करने भोग सामिग्री जो चहिये सो मांगि लेने श्रै-
सी कितनीक वार्ता हैं सो कहां नांई लिखिये श्रौर-
एक दिन श्री नवनीत प्रिया जी ने गज्जन धावन सों-
कही जो मोकों श्री गुसांई जी श्री आचार्य जी महा
प्रभून के घर पधराय ना समय श्री आचार्य जी महा
प्रभू गोकुल मेंहते ताहां गज्जन आय कें श्री आचा
र्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज श्री नवनीत
प्रिया जी की ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून के पास पधराय तव श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कही जो भलो पधराय तव ग
ज्जन धावन नें श्री नवनीत प्रिया जी श्री आचार्यजी
महाप्रभून के मन्दिर में पधराये तव श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें जैसो प्रस्ताव वन्यो तैसें पधराय भोग
समर्प्यो पाछें रात्रि कों आप वहुत सोंधो लगाय कें
श्री नवनीत प्रिया जी कों अपनी सिज्या ऊपर ले
पोढ़े दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ता ऊपर पोढ़े
परि वह सिज्या छोटी भई तव श्री नवनीत प्रिया
जी नें कह्यो जो हूं तो या सिज्या ऊपर न पोढ़ूंगो तव
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो ऐसे कैसें
वनें तव श्री नवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो कछू वाध
क नाहीं है तव श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सों-
घों लगाय कें पास ही ले पोढ़े पाछें दूसरे दिन-
सिज्या वड़ी करवाई ता पर पोढ़ाए तव पोढ़े ता
पाछें थोड़े से दिन रहिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री
गोकुल तें अड़ैल कों पधारे तव गज्जन हू साथ ग

यो गज्जन धावन विना श्री नवनीत प्रिया जी एक क्षण हूं न रहते ऐसें हीं नवनीत प्रिया विना गज्जन एक क्षण न रहते तब एकदिन श्री नवनीत प्रिया जी के लिये श्री अक्का जी ने गज्जन धावन को पान लेवे पठायो कह्यो जो पान लै आवो तब गज्जन ऐसें तो कह न सक्यो जो श्री नवनीत प्रिया जी मोसों हित हैं सो मैं कैसें जाऊं ताते अन बोल्यो पान लेन को उठि चल्यो सो थोरी सी दूर गयो इतनें में ज्वर चढ़ आयो सो उहां ही पड़ि रह्यो और इहां श्री अक्का जी ने श्री नवनीत प्रिया को भोग समर्प्यो तब अक्का जी सों नवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो गज्जन कों बुलावो मेरो गज्जन आवेगो तब भोजन करूंगो तब श्री अक्का जी नें मनुष्य दोय बुलावन कों पठाये तब वे मनुष्य दे खें तो गज्जन थोरी सी दूर पै पस्यो है ज्वर चढ़ र ह्यो है मनुष्यन हां ते बुलाय ल्याये तब गज्जन आप स्नान करि मन्दिर में गयो तब तत्काल ज्वर उतर गयो तब गज्जन नें श्री नवनीत प्रिया जी सों कह्यो जो बावा भोजन क्यों नाहीं करत अब भोजन करो तब भोजन श्री नवनीत प्रिया जी नें कायो गज्जन धावन सों श्री नवनीत प्रिया जी ऐसे सानुभावहु ते श्री नवनीत प्रिया जी ते एक क्षण न्यारो भयो जो तत्काल ज्वर चढ़ आयो और जब निकट आयो तब तत्काल ..... ज्वर उतर गयो तातें गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी के सदा

पास रहते सोऊ गज्जन धावन श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भावदीय है नाते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई लिखिबये ॥ ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

वैष्णव १३ सम्बन्ध ५५

अब श्री आचार्यजी महा प्रभू
न के सेवक नारायणा दास
ब्रह्मचारी सारस्वत ब्रा
ह्मण महावन मेर
हते तिन्की
॥ वार्ता ॥

सो नारायण दास के सेव्य श्री ठाकुर जी श्री गो
कुलचन्द्रमा जी सों नारायण दास श्री गोकुल
चद्रमा जी की नीका भांति सों सेवा करते और गा
यन कौं घास खवावते सो धोय पोंछि के खवा
वते ताको तात्पर्य्य यह जो श्री ठाकुर जी दूध
आरोगत हैं जो मति दूध में रज आवै ऐसें करते
और श्री आचार्य जी महा प्रभू जब श्री गोकुल
पधारते तब नित्य प्रातः काल श्री गोकुल तें म
हाबन पधारते श्री गोकुलचन्द्रमा जी की सेवा
करिवे कों सो सेवा कार भोग समर्पि कें पाछें
श्री गोकुल पधार ते और नारायण दास जहां
हाथ पांव धोयवे कौ वरहे में जाते जा ठौर ते मा
टी खोदते ता ठौर द्रव्य निकसतो ता ऊपर मांटी

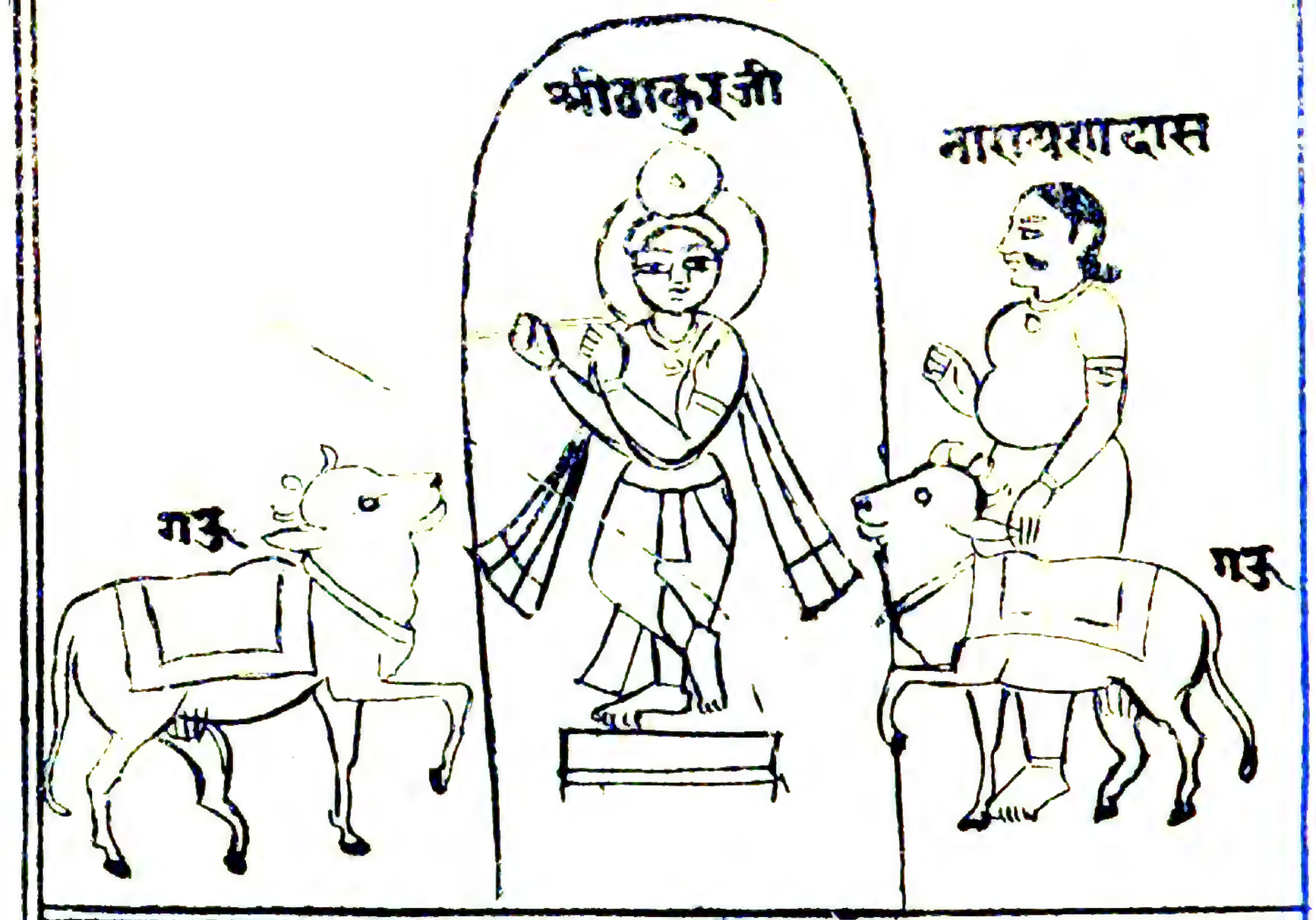

डारि उठि आवते परि द्रव्य कों स्पर्शीन करते सो
नारायण दास ऐसे त्यागी हुते सो नारायणदा
स एक दिन सोवत हुतो तहां खाट के आसपास
द्रव्य के ढेर भये हुते तब नारायणदास देखे तो खा
ट के आस पास द्रव्य के ढेर भये हैं तब नारायण
दास ने भतीजी सों कही जो बेटी वेगि उठि ....
घर में बिगार बहुत भयो है बुहारि कें कूरो सब
बाहर डारि आउ तब नरायणदास तो बाहेमें
देह कृत को गये पाछें भतीजीनें सोई कीयो स
ब बुहार कें कूडे की नांई बाहर डार दीनों जब
सब लीप डारी पाछें नारायणदास स्नान करि
मन्दिर में गये तब सेवा सिंगार सब करिकें श्री

ठाकुर जी के साम्हे देखें सो श्री ठाकुर जीनें नारायण दास कों अतिसुन्दर दर्पान दीनो तब अति प्रसन्न श्री ठाकुर जी कों देखि कें नारायण दासनें कह्यो जो महाराज यह घटा काहे कों उनहीं हैं न जानें कहां बरसेंगी पाछें आपहीं कह्यो जो यह घटा श्री आचार्य जी महा प्रभून कों सरवस्व हैं उहां बरसेंगी पाछें नारायण दास श्री गोकुलचन्द्रमा जी कों राज भोग समर्पि कें बाहर आय बैठे तब हदो भरि आयो जो श्री ठाकुर जी कौन भांति सों आरोगत हैं ऐसो विचार मन में ल्याए तब भतीजी ने कही जो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जहां भोग समर्पित हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कानितें आरोगत हैं सो तुमतो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक परम कृपा पात्र भागवदीय हो ताते तुम्हारो समर्प्यो कयों न आरोगेंगे तुम सन्देह कों करत हो तब नारायण दास नें कह्यो जो बेटी आरोगें जब जानियें तब कोई वैष्णव अपने घर आय अचानक महा प्रसाद लेय तब जानियें जो श्री ठाकुर जी आरोगे होंयगे वैष्णव ऊपर नारायण दास को ऐसो भाव हतो ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

बहुरि एक दिन नारायण दास श्री गोकुलचंद्रमा जी कों शृंगार करि रसोई में गये तहां शृंगार भोग कों सिद्ध करि कें सरायवे कों चार घरयो इतने में एक वैष्णव नें नारायण दास के पास आय कें वधाई दीनी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू गोकुल ने पधा

रत हैं सो नारायण दास सुनत ही तानी खीर कों दूध
गमें मेलि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पि उतावले
श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आतव
आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कर
कें दंडवत कीनी सो श्री आचार्य महाप्रभून के
चरणारविंद ऊपर मायो मेलि रह्यो तब नारायण दा
स कों मायो पर्कसि आप श्री हस्त सों उठायो और
पूछो जो श्री गोकुल चन्द्रमा जी के यहां कहा समय
है तब नारायण दास नें कही जो महाराज अबही
सिंगार भोग समर्पि कें आयो हूं सो सुनि कें श्री
आचार्य जी महाप्रभू तत्काल पधारे तब जानही
स्नान करि कें मन्दिर में हाथ धोय आचमन कीं
झारी हाथ में लेकें भोग सराय वे कों मन्दिर में प
धारे तब भीतर जाय कें देखें तो श्री गोकुल चंद्र
मा जी के श्री हस्त खीर में भरे हैं और श्री हस्त कम
ल खेंचि रहे हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री
गोकुल चन्द्रमा जी सों कही जो महाराज श्री हस्त
कों क्यों खेंचि रहे हो तब गोकुल चन्द्रमा जी नें क
ही जो तुम कों आये जानि के मोकों नारायण दा
स तानी खीर समर्पि कें तुमारे पास गयो सो खीर
मेरे हाथ सों तानी लागी सो मेनें थोरी सी चाट के
हाथ झटके सो सब मन्दिर में छींट लागीं हैं और
मेरे हाथ और ओठ राते भए हैं सो श्री गोकुलच
न्द्रमा जी के हाथ और ओठ अजहूं लाल हैं पाछें
श्री आचार्य जी महाप्रभूननें खीर पंखा सों सीरी

करि भोग समर्पि कें बाहर आये तब नारायणदा
स सों खोजे और कह्यो जो तेनें श्रीठाकुर जी कों तं
बोर्वीर समर्पी तब नारायणदास नें श्री आचार्य
जी महा प्रभून सों बीनती कीनी जो मेंराज कोप धा
रे जानि उतावलो राज पाम आयो तब श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें कही जो आज पीछें ऐसो काम
मति करियो पाछें समय भयो तब श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें भोग सरायो तब श्री गोकुलचं
द्रमा जी नें श्री आचार्य जी महा प्रभून के दोउ श्री
हस्त पकरि कें कह्यो जो तुम रवा महा प्रसाद लेउ
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो महा
राज जानि व्यवहार की कठिन है तब श्री गोकुल

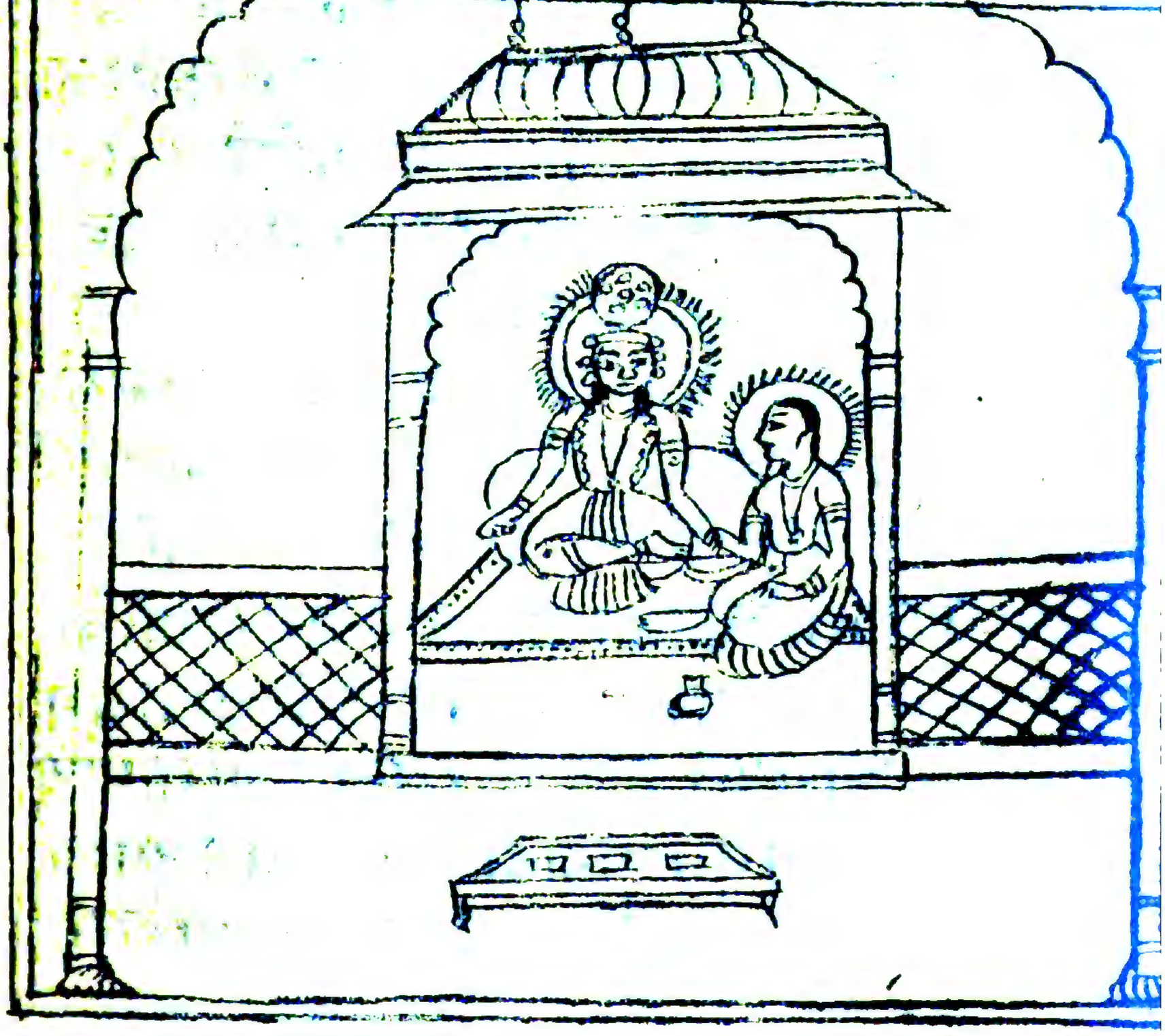

चन्द्रमाजीनें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा है तातेनुम
कछु विचार मति करौ रवीर को महा प्रसाद लेउ-
तब श्री गोकुलचंद्रमाजीनें रवीर को महाप्रसाद हो
मो अपने आगेही श्री आचार्य जी महा प्रभून कों
लिवायो तब श्री आचार्य जी महा प्रभूननें लीनो-
तादिन ते रवीर अनसखड़ी में होत है नारायणदा
समें श्री गोकुलचन्द्रमा जी ऐसी भांति सेवा कर
वावते वे नारायण दास ऐसे भागवदीय है तातें श्री गो
कुलचन्द्रमा जी ऐसी कृपा करते ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

वहुरि कितने क दिन पाछें नारायण दास की देह
थकी सो वहुत आशक्ति भई तब एक दिन श्री गो
कुलचन्द्रमाजीने नारायणदास सों कह्यो जो नारा
यन दास तू कछु मांगि तब नारायन दास ने कही जो
महाराज हूं यह मागत हूं जो तुम श्री गुसांई जी के
घर पधार सेवा करवावो नारायन दास के मन में यह
जो श्री ठाकुर जी और कहूं सुख न मानेंगे सेवा आ
छी भांति सों न होयगी सो नारायणदास नें अंत समें
श्री ठाकुर जी के पास यह मांग्यो पाछें कितनेक दि
न में नारायणदास की देह छूटी तब श्री गोकुल-
चन्द्रमा जीने कितेक दिन तांई कृष्णदास स्वामी के
पास सेवा करवाई पाछें श्री गुसांई जी के घर मथुरा
में पधारे सो श्री गुसांई जीने श्री रघुनाथ जी के माथे
पधराय दीए सो वे नारायण दास ब्रह्मचारी श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय

है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ३ ॥

वैष्णव १४ ॥ सम्बन्ध पृष्ट

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेव क एक क्षत्राणी महावन में रहती ताकी वार्ता है

सो एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू पृथ्वी परि क्रमा करत करत महावन पधारे सो वा क्षत्राणीकों चारि स्वरूप प्राप्त भए हैं सो चारों स्वरूप श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आनि राखे सो तिन चारों स्वरूपन के नाम एक तो श्री नवनीत प्रिया जी दूसो र एक श्री गोकुल चन्द्रमा जी और एक श्री लालत त्रिभंगी जी और एक श्री लाडले जी ये चारों स्वरू प श्री आचार्य जी महा प्रभून नें चार वैष्णवन के माथे पधराय दीए सो या भांति श्री गोकुल चन्द्रमा जी तो नारायण दास ब्रह्मचारी के माथे पधराये दूसो र श्री लाडले जी जीयदास क्षत्री के माथे पधराये और श्री लालित त्रिभंगी जी देवा क्षत्री के माथे प धराये और श्री नवनीत प्रिया जी गज्जन धावन के माथे पधराये या भांति चारों स्वरूप चार वैष्णवन के माथे पधराय दीए तब चारों वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरो सर्वस्व हैं सो स्वरूप तुम्हारे माथे पधराये हैं सो इनकी से वा तुम नीकी भांति सों करियो और तुम सों जब सेवा न होय आवे तब हमारे घर पधराय जैयो॰

पाछें नवनीतप्रिया जीने तो कछुक दिन गज्जन धा
वन के मांथे सेवा करवाई पाछें श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के घर पधराये सो सब तो गज्जन धावन
की वार्ता में लिख्यो है और श्री गोकुलचन्द्रमा जीने
किनेक दिन ताई नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे
सेवा करवाई पाछें कृष्णदास स्वामी के पास सेव
करवाई पाछें श्रीगुसांई जी के घर पधारे पाछें श्री
गुसांई जीने श्री रघुनाथदासजी के माथे पधराये
सो प्रकार नारायणदास ब्रह्मचारी की वार्ता में लि
ख्यो है और श्री लाडलेजी को प्रकार सब जीयदास
की वार्ता में लिख्यो है सो अब श्री आचार्यजी के
कुलमें विराजत हैं सो ललित त्रिभंगी जी अंतर
ध्यान भए सो प्रकार देवा क्षत्री कपूर की वार्तामें
लिख्यो है सो वह क्षत्राणी श्री आचार्य जी महा
प्रभून को ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही ताकी
वार्ता कहां लों ताई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव १५ सम्बंध ४८ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक जीयदास
की मूर्तिन की वा
र्ता लिख्यते

सो जीयदास के माथे श्री आचार्य जी महाप्रभू
नवें श्री लाडिले जीकी सेवा दीनी सो जीयदास के
पास श्री लाडिले जीने चार पहर सेवा करवाई सो
जीयदास के चार बेटा हुते तिनमें पुरुषोत्तमदास

कुवील दास इन दोऊ भाईन नें कोई एक दिन सेवा कीनी पाछें दोऊ भाईन के संतति न भई तब इन के पाछें इन के मामा कृष्णदास चौपड़ा हुते तिन के माथे श्री लाडले जी पधारे सो किते क दिन तांई कृष्ण दास चौपड़ा सों सेवा करवाई सो भली भांति सों सेवा कीनी सो एक समय महामरी आई सो कृष्णदास कें घर के सब कुटुम्ब की देह छूटी तब कृष्णदास अकेले रहे तब कृष्णदास के मित्र हरजी तथा मथुरा मल्ल पार्या हुते सो कृष्णदास तहां आय रहे सो कितेक दिन तांई कृष्णदास और हरजी दोऊ मिल कें सेवा कीनी पाछें कृष्ण दास की देह छूटी तब हरजी भाई नें डेढ़ वर्ष लों सेवा-

कीनी पाछें श्री गुसांई जी के घर पधारे सो श्री न
इन्ने जी अब विराजत हैं सो वे जीय दास श्री आ
चार्य जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भग
वदीय हैं सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां
तांई लिखिये ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥
वैष्णव ॥१६॥ सम्बन्ध ६०
अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक देवा झावी कपूर
तिनकी वार्ता लिख्यते

सो देवा कपूर के माथे श्री आचार्य जी महा प्रभू
ननें श्री ललित त्रिभंगी जी की सेवा पधराय दीनी

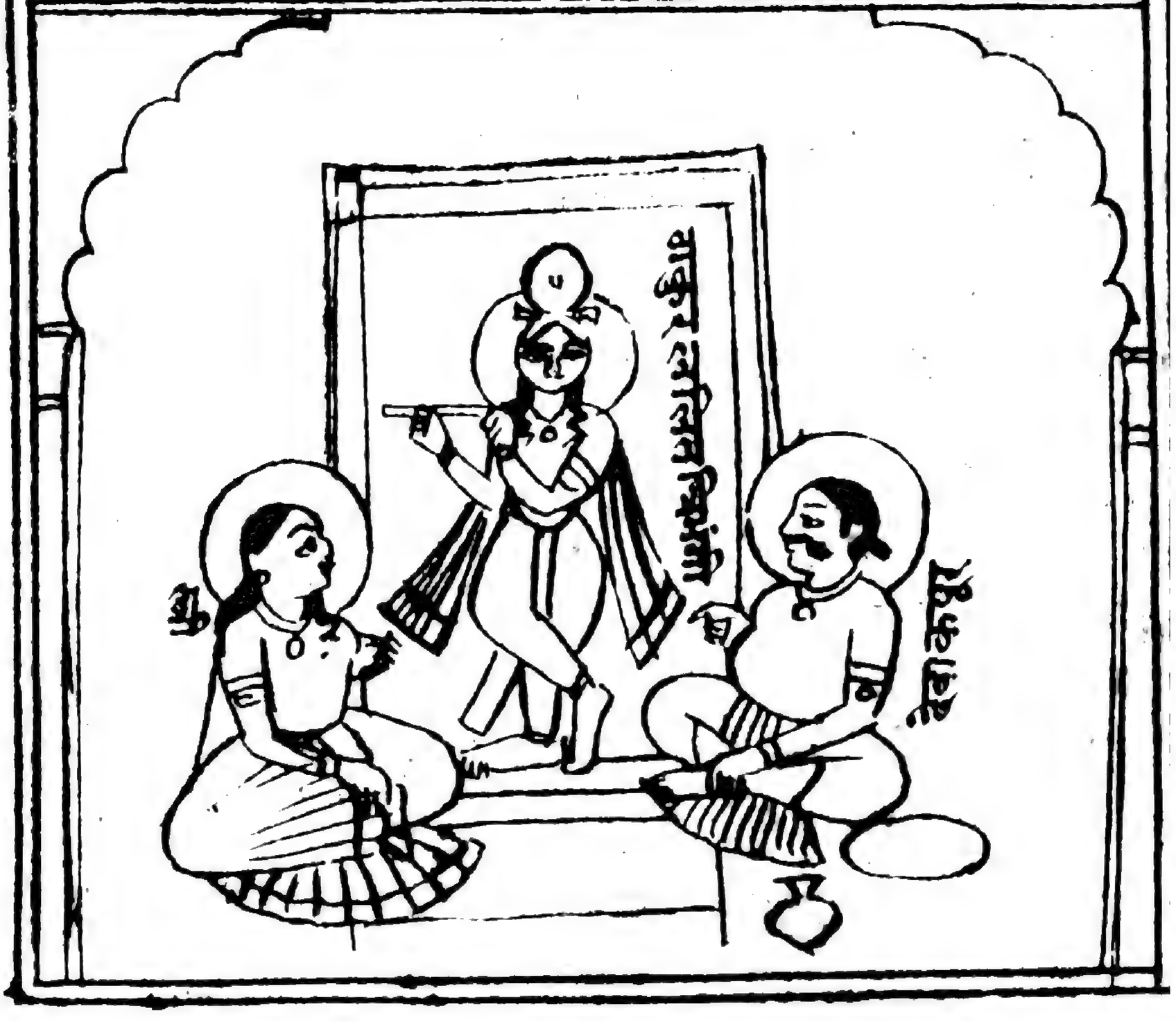

सो देवा कपूर की जब लों देह रही तब लों सेवा की
नी ता पाछें देवा कपूर की स्त्री की देह छूटी ताको
संस्कार कर आये ता पाछें मन्दिर उघार कें देखेंतो
श्री ठाकुर जी नाहीं और सामग्री सब धरी है एक
श्री ठाकुर जी नाहीं हैं सो जानें कहां अन्तर ध्यान
भए यातें यों जानी परी जो देवा कपूर के चार बेटा
हते पर उनके पास सेवा न करवाई श्री ठाकुरजी
तो स्नेह के वस हैं सो भगवद इच्छा ऐसी ही भई
ताते देवा कपूर तथा देवा कपूर की स्त्री श्री आ
चार्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदी
य हे ताते इनकी वार्ता कहां लों लिखिये॥
॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव १७॥ सम्बन्ध ६१॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक दिन कर दास सेठ तिनकी वार्ता लिख्यते॥*

सो दिन कर दास को कथा के ऊपर बहुत रुचि हुती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अडेल में कथा कहते तहां दिन कर दास नित्य सुनते सो एक दिन दिन कर दास रसोई करत हुते सो आ टो सान्यो हुतो ऊपरा बराय दीने है लोटी करि रा खी हुती इतने में श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेव क जल घरिया जो श्री ठाकुर जी कों जल भरिवे कों आयो तब दिन कर दास ने पूछो जो श्री आ चार्य जी महा प्रभू कहा करत हैं तब वा जल घ

रिया नें कह्यो जो पोथी खोली है अब कथा कहें
गें तब दिन कर दासनें काची ही अंगाकरी लीनी
सेकी नाहीं वेगि उठि वस्त्र पहर के आयो आय
के कथा सुनी श्री आचार्यजी महाप्रभू कथा कह
रहे हैं तब वाजलघरियानें श्री आचार्यजी महाप्र

भून सों कह्यो जो महाराज दिनकर दासनें काची
अंगाकरी लीनी सेकी हू नाहीं तब दिनकर दास
सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही जो तू काची
अंगाकरी कों खाय आयो है तब दिनकर दासनें
कही जो महाराज अंगाकरी तो नित्य लेउंगो परि य
ह अमृत कथा कब सुनूंगो तब श्री आचार्यजी महा
प्रभूननें कह्यो जो अब ते तू रसोई करि श्री ठा...

कुरजीकों भोग समर्पि प्रसाद लेइ पहुंचि कें जब आवैगो तब पोथी खोलूंगो तेरे आगे बिना कथा न कहेंगे आजते हमारी कथा को श्रोता तू तातें तू निश्चत होय कें आइयो तब ताही दिन ते दिनक दास वेगाही रसोई करि भोग समर्पि प्रसाद लेकें जब कथा के समय आवते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू पोथी खोलते सो वे दिन कर दास सेठ श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय है सो इनकी वार्ता को पार नाहीं ताते अब कहांतांई लिखिये ॥*

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव १८ ॥ संबंध ६२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक मुकन्द दा
स कायस्थ तिनकी
वार्ता लिख्यते

सो मुकन्द दास आप कवि हुते सो कवित कर ते सो कवित बहुत कीये हैं श्री आचार्यजी महाप्रभून के तथा श्री गुसांईजी के तथा श्री ठाकुर जी के बहुत कवित कीये हैं और मुकंद सागर एक ग्रंथ कीयो सो एक समय मुकन्द दास उ जैन के कार कुन होय कें आए तब तहां के पंडित सब आय मिले तब पंडितन नें मुकन्द दास सों कह्यो जो तुम हमारे पास श्रीभागवत सुनो तो सुनावें तब मुकन्ददास नें कह्यो जो तुम हमा रो भागवत जानत हो तब उन पंडितन नें कह्यो तुम

कहा भागवत न्यारो है तब मुकन्ददास नें एक श्लो
क को व्याख्यान कीयो पाछें महीना लों सुनायो
परि आप काहू पास कथा न सुनी कोई पंडित क
ल्पित व्याख्यान करतो ताको बहुत भांति दूषण दे
के आवते जो काहे ते सुबोधिनी में बहुत प्रवेश हो
मुकन्ददास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के चर
ण कमल पर दृढ़ता हुती ताते सुबोधिनी स्फुर्द
रूप हुती ऐसें करत करत कितनेक दिन में उज्जै
न में मुकन्ददास की देह छूटी तब काहू वैष्णव नें
श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आय कह्यो
जो महाराज मुकन्द दास नें अवंतिका पाई तब
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो ऐसें मति
कहो ताते ऐसें कहो जो मुकन्द दास कों अवंति
कानें पाए सोवे मुकन्ददास श्री आचार्य जी महा
प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय हे ताते
नकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये॥
वार्ता प्रसंग १॥ वैष्णव १८॥ सम्बन्ध ६३॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक प्रभू दास जल्लोटा।
क्षत्री मोहनन्द के।
वासी तिनकी।
वार्ता।

सो प्रभूदास के सेव्य ठाकुर श्री मदन मोहनजी
सो एज नगर सिकन्दर पुर में बैठे हैं सो जब श्री आ
चार्य जी महाप्रभू मथुरा पधारे तब प्रभूदास माथुर

तव एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभू आप संध्या वन्दन करि कें स्नान करत हुते विश्रांत के रूप तहां दोचार वैष्णव और बैठे हे तव तहां रूप सनां

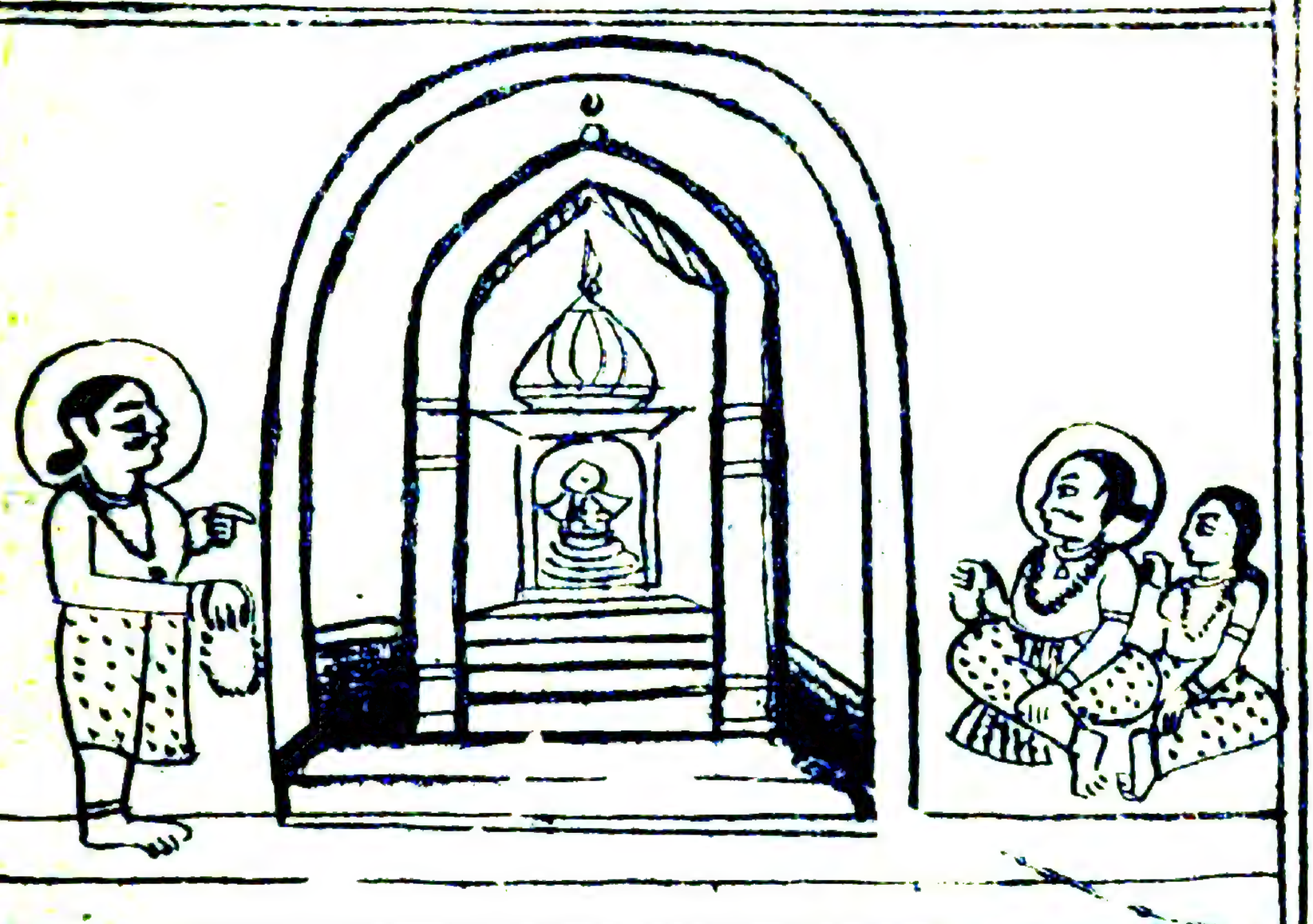

तन कृष्ण चैतन्य के सेवक नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों पूछो जो यह वैष्णव कौन हें तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो ये हमारे सेवक हें तव रूप सनांतन नें कह्यो जो ऐसे दुर्लभ क्यों रहत हें तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो में इन को वहुत वरजे जो तुम या मार्ग में मति परो पर इन मेरो कह्यो न मान्यो ताको फल ये भोगत हें पर रूप सनातन कछू समझे नाहीं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून के दर्शन करि कें रूप सनांतन तो गए पाछें

कितनेक दिन में एक वैष्णव रूप सनातन के साथ
को श्रीजगन्नाथजी के दर्शन को गयो तहां कृष्ण
चैतन्य मिले तब कृष्णचैतन्य नें वा वैष्णव सों श्री
आचार्यजी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे सो
वा वैष्णव नें कृष्णचैतन्य सों कह्यो जो
हुते तब वा वैष्णव नें कृष्णचैतन्य सों कह्यो जो
श्री आचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे हुते और
विश्रांत ऊपर मिले हुते बहुत नीके हैं और श्री
आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों रूप सनातन
हूं गए हुते विश्रांत ऊपर सो श्री आचार्यजी महा
प्रभूनसों रूप सनातन नें और वैष्णवन की वात पू
छी जो ये ऐसे दुर्लभ कों रहन हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कही प्रभूदास की वात कही जो
में इनकों बहुत वरजे परि इन मेरो कह्यो न मान्यो
ताको फल ये भोगत हैं सो यह वात सुनिकें कृ
ष्णचैतन्य कों मूर्च्छा आई सो एक मुहूर्त लों मूर्छा
रही पाछें सावधान भये तब फेरि पूछी जो तुमनें
कहा वात कही तब वा वैष्णव नें फेरि कह्यो जो
श्री आचार्यजी प्रभूननें कह्यो जो या मार्ग में मेंम
ति परो तब कृष्णचैतन्य कों फेरि मूर्च्छा आई सो
दोय मुहूर्त लों रही पाछें फेरि सावधान भए ऐसें
तीन वार पूछो सो तीनों वार मूर्च्छा आई चौथी वा
र फेरि वा वैष्णव सों पूछी जो कहा कही तब वा
वैष्णव नें कृष्णचैतन्य सों कही जो अब मोपे कही न जाय
जो यह वात ऐसो ह्वै जो केवल विरही होय सो जा

ने रूप सनातन कहाजानें ॥॰

॥वार्ताप्रसंग ॥१॥

श्रौर एक समय प्रभूदास नें वेगी रसोई करी सो दार तौ काची रही श्रौर श्रंगाकरी जरगई तब प्रभूदास के मन में श्राई जो श्रैसी सामग्री श्रीठाकुरजी कूं कहा समर्पू सो चरणोदक मेलि के प्रसाद लीयो श्रौर श्रीठाकुर जी तौ वाट देखतही रहे जो प्रभूदास भोग समर्पैगो श्रौर में श्रारोगूंगो श्री र प्रभूदास नें तौ विगरी सामग्री जानि के न समर्पी तब श्रीठाकुर जी नें श्री श्राचार्यजी महाप्रभू नसों क ही जो श्राज मोकों प्रभूदासनें भोग समर्प्यो नाहीं मेनें वाट देखी जो श्रव मोकों प्रभूदास भोग समर्पैगो श्रौर में श्रारोगूंगो पाछे प्रभूदास नें भोग समर्प्यो तब उत्थापन के समय प्रभूदास दर्शन कों श्राये तब श्री श्राचार्यजी महाप्रभूननें प्रभूदास सों कह्यो जो श्राज तेनें श्रीठाकुर जी के विनै समर्पे प्रशाद लीयो तब प्रभूदासनें सांची वात कही जो महाराज दार तौ काचीरही श्रौर श्रंगाकरी जरगई ताते ऐसी सामग्री जानि भोग समर्प्यो नाहीं चरणोदक मेलि प्रसाद लीयो तब श्री श्राचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो श्रैसी रसोई क्यों करी श्री ठाकुर जीने तौ वडी वार लौं वाट देखी जो प्रभूदास भोग समर्पैगो श्रौर में श्रारोगूंगो ताते तेंने श्रैसी रसोई क्यों करी सावधान नहि तेकें क्यों न करी पाछें सावधान ह्वै कें रसोई करनी जो

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू व्रज में पावधोर हुते तब प्रभू दास साथ हे तब एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें व्रज में श्री गोवर्द्धन के निकट स्थल भोग धरायो पाछें भोग सरायो तब प्रभू दास सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो प्रसाद लेउ तब प्रभूदास नें कह्यो जो महाराज मेनें स्नान नाहीं कीनों तब श्री आचार्य जी महा प्रभूननें प्रभू दास सों कही जो तू देखि तब श्लोक करि कें दिखवायो ॥ मो

❋ श्लोक ❋

वृक्षो वृक्षो वेणु धारी पत्रे पत्रे
चतुर्भुजः ॥ यत्र वृन्दावनं तत्र
लक्ष्या लक्ष कथा कुतः ॥१॥
जलादिभिः रजः पुरायरज मो
पि जलंवरं ॥ पत्र वृंदावनंत
त्र स्नानां स्नान कथा कुतः ॥२॥

यह श्लोक पढ़ि कें प्रभू दास कों दिखायो व्रज को स्वरूप वृक्ष वृक्ष बिषें वेणु धारी पत्र पत्र बिषें चतुर्भुज देखे या भांति कों प्रभूदास कों दर्शन करवायो ऐसो सादृष्य व्रज को स्वरूप दिखायो पाछें प्रभू दास नें प्रसाद लीयो दंडवत करि कें प्रभूदास के ऊपर श्री आचार्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा दृष्टी मो आप नें कृपा करि कें व्रज को स्वरूप दिखायो ॥❋॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप मन्दिर में हुते तब ऐसो मन में आई जो श्री ठाकुरजी को भोग समर्पिये सो दही को भोग समर्पिये ता समें प्रभूदास बाहिर हुते सो प्रभूदास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के अंतःकरन की जानी तब प्रभूदास बाहिर गये तब गांव में जाय कें एक अहीरी मिली तासों पूछो जो तेरें दही है तब वा अहीरी नें कह्यो जो हां दही है तब प्रभूदास ने कह्यो जो ल्याउ तब अहीरी दही लै आई तब प्रभूदास नें कह्यो या कों मोल कहि तब वा अहीरी नें कही जो तू मोकों का हा देयगो तब प्रभूदास नें कह्यो जो तू मांगेगी सो देउंगो तब वा अहीरी कही जो एक टका दे और कछा मुक्ति देयगो तब प्रभूदास नें कही जो यह तो टका लै और तोकों मुक्ति दीनी तब वा अहीरीनें कही जो तू मोकों लिख दे जो मुक्ति दीनी तब प्रभूदास नें लिख दीनी और दही लैकें घर आए सोद ही भीतर दीयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें वह दही भोग समर्प्यो सो श्री ठाकुर जी आरोगे सो वह दही अति स्वाद भयो पाछें गुसांई जी जब सांझ के समय दर्शन कों आये तब यह वात श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो महाराज प्रभूदास नें दही के ऊपर मुक्ति दीनी सो लिखि आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभूजीने प्रभूदास सों पूछी जो प्रभूदास वह दही अति स्वाद भयो हुतो

सो तेनें वाकों मोल कहा दीयो हुतो तब प्रभुदास
नें कह्यो जो महाराज वा अहीरी नें एक टका और
मुक्ति मांगी सो एक टका और मुक्ति दीनी तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तेनें कछु नदी
नों तब प्रभुदास नें कही जो महाराज हूं कहा कहूं
जो मोपें मांग्यो हुतो सो दीनों जो भक्ति मांगनी तो
भक्ति देतो पाछें वा अहीरी की सखी नें कह्यो जो
तोकों तो ठग लीनो तब वा अहीरी नें सखी सों
कह्यो जो तू कहा जानें ये बड़े भागवद भक्त हैं इन
की क्वन सत्य है तब कितनेक दिन में वा अहीरी
की देह छूटी तब यमदूत आए इतने में विष्णुदूत
हू आए सो आपुस में झगरन लागे तब यमदूतन
सों विष्णुदूतन नें कही जो याकों तो श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवक प्रभुदास नें मुक्ति दीनी है
सो कागद याकी साड़ी की खूंट ते बंध्यो है सो यह
बात वा अहीरी के संग सोदरन नें सुनी परि शांति
न देखे पाछें वा अहीरी कों विष्णुदूत लै जानि
लागे तब वा अहीरी नें विष्णुदूतन सों कह्यो
जो मेरी सखी कों दर्शन देउ वाकों अविश्वास
है पाछें विष्णुदूतन नें वाकों दर्शन दीनों तब
वह कहन लागी जो मोहू कों लै जाउ तब विष्णु
दूतन नें कह्यो जो हमारो हाथ कहा है हम तो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के सेवक प्रभुदास सों कहि तब वह स
खी प्रभुदास के पास आई तब प्रभुदास नें वाकों
श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम दिवायो

नव वाहू को कार्य भयो पाछें विल्वमृदत ला अदी
ीकौ ले गये नव वाकी मृत्ति भई पाछें वा अही
ी के सगे कुटुम्ब नें वाकी साडी के खंट ते काग द
खोलि कें देखो नव वाचि के गोवनले रहे सो प्रभू
दास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते श्री
सी सामर्थ्य हुती सो वे प्रभूदास वडे भागवदीय हे
तातेइनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*॥

वार्ता प्रसंग ४ वैष्णव २० सम्बन्ध ६७

अव श्री आचार्य जी महाप्रभू न के सेवक प्रभूदास ॥

भाट सीहनन्द ॥

के तिनकी ॥

वार्ता ॥

सो वे प्रभूदास भाट श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करते सो वहुत दिन सेवा करत वीते पाछें वृद्ध भयो तव वहुत आपुक्ति भए तव जानी यह देह दिन चार पाँच में छूटेगी तव सावधान ना छूटी असावधान भए तव सगरे मिल कें प्रभूदास कों प्रयोदक तीर्थ है तहां ले गये जव प्रयोदक आयो तव सावधान भए आंखि खोल कें देखें तो प्रयो दक तीर्थ है तव प्रभूदास ने कह्यो जो मोकों इहां क्यों लाए हो तव सगरे जनेन नें कह्यो जो यह प्र योदिक तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देखि कें लाये हैं तव प्रभूदास ने कही जो मोकों प्रयोदिक में कहा काम है मैंतो श्री आचार्य जी महा प्रभून

कौ मेलक हों मोकों प्रथोदक कहा कृनार्थ करोगो
मोकों दस १ लों इहां राखोगो नोऊ मेरी देह यहांन
छूटेगी तातें मोकों सीहनन्द ले चलो जब अपने श्री
ठाकुर जी के चरण देखूंगो तब देह छूटेगी तब दिन
पांच सात लों राखे पीछे दिन दिन प्रभूदास को शरीर
नीको भयो सावधान भए तब फिर सीहनन्द ले गये
तब अपने सेव्य श्री ठाकुर जी को देखें दर्शन करि
के दंडवत कीनी तब प्रभूदास नें श्री ठाकुर जी सों
कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें तुम कों मेरे
माथे पधराए हैं और ये तो बावरे लोग तुम्हारो आ
श्रय छुड़ाय के मोकों तीर्थ आगें ले गये पीछे श्री
आचार्य जी महाप्रभू ऐसो क्यों करें जो मेरी देह
तीर्थ पे छूटे पीछें श्री ठाकुर जी की सेवा सिंगार क
रिकें वेगिवेगि भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर
कीयो पीछें सबन ते कह्यो जोतुम वेगिवेगि प्रसाद
लेउ तापीछें मेरी देह छूटेगी तब सब प्रशाद लेचु
के तब सबन सों प्रभूदास नें जै श्री कृष्ण कह्यो औ
र प्रभूदास नें तत्काल देह छोड़ी पीछें सीहनन्द में
एक कायस्थ चौधरी हतो सो प्रभूदास की निन्दा क
रन लागो और कह्यो जो प्रभूदास प्रथोदिक ते उ
लटो फिर आयो और सीहनन्द में देह छोड़ी ऐसो
निन्दा करतो सो एक दिन रात्रि कों सोयो हतो तहां
कोऊ चारि जने हाथ में मुद्गर लेके आये सो कीर्तचौध
री कों बहुत मारयो तब कीरत चौधरी नें कह्यो जो
तुम मोकों क्यों मारत हो तब उन नें कह्यो जो प्र

भूदास की निन्दा तू क्यों करत है तब कीरत चौध
री नें कह्यो जो अब मैं निन्दा न करूंगो और वह
त मनुहार करी तब उन कह्यो जो तू फेरि निंदा करै
गो तौ तोंको याही भांति सों मारैंगो तब कीरत चौ
धरी नें कह्यो जो अबतें निन्दा न करूंगो भक्ति
करूंगो पाछें स्तुति करन लागे तब प्रभूदास की
बात चले तब कीरत चौधरी कहै जो वे बड़े महा
पुरुष हैं तब और लोग कहन लागे जो पहले तौ
तुम प्रभूदास की निन्दा करत हुते और अबस्तुति
क्यों करत हौ तब सबन कों कीरत चौधरी
ने अपने देह की व्यवस्था दिखाई और कह्यो
जो रात्रि कौं कोऊ चारि जने आय के मार मारहा

ङ्चरन कीयो ताते भागवदीय की निन्दा सर्वथा न करनी
और जो करे तो वा लोक में यही हाल होय और परलो
कमें अघोर नर्क में जाय सोवे पुरुषोत्तमदास आदि श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२१॥ *

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक पुरुषोत्तमदास आगरे
में राजघाट ऊपर रहते हुते तिनकी
वार्ता है ॥ *

सो एक समय श्री गुसांई जी आगरे पधारे हुते तब पुरुषोत्तम दास के घर उतरे तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री छिप रही तब पुरुषोत्तम दास सों श्री गुसांई जी नें पूछो जो तेरी स्त्री कहां गई है तब पुरुषोत्तम दास नें कही जो जनेऊ टूटी होयगी पाछें श्री गुसांई जी बे गि बेगि रसोई करि दार भात साक चार पांच करे तब रोटी बेलिवे की बार पुरुषोत्तम दास की स्त्री आई तब श्री गुसांई जी ने पूछो जो अबलों तू कहां ही तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री ने कही जो राज काज काम करत हुती पाछें पुरुषोत्तमदास की स्त्री ने रोटी बेल बेल दीनी तब रसोई सिद्ध भई तब श्री गुसांई जी ने श्री ठाकुर जी को भोग समर्प्यो पाछें समया नुसार भोग सराय पाछें वही थार कटोरा पडगीस व उन पात्रन में श्री गुसांईजी सों कही जो भात न

करिये तब श्री गुसांई जी नें कह्यो जो ये तो श्री ठाकुर
जी के पात्र हैं इन में भोजन कैसें करें नातरु हम इन पा
त्रन में भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तम दास नाम या इस
की स्त्री ने कह्यो जो महाराज की कृपा तें कछु द्रव्य
निवरयो नाहीं और पात्र नये मंगावेंगो आप इनमें
भोजन करिये तब श्री गुसांई जी भोजन करन कों
बैठे तब पुरुषोत्तम दास को स्त्री गुसांई जी के पास बै
ठिकें पंखा करन लागी और कह्यो जो महाराज
और सामिग्री आवेगी तब श्री गुसांई जी ने कह्यो
जो मोकूं रुचेगी सो मैं आरोगूंगो तब पुरुषोत्तमदास
नें कह्यो जो महाराज श्री चन्द्रावली जी के घर कैसें
आरोगत हो ऐसें कहि कें स्त्री पुरुष दोऊ जनें श्री
गुसांई जी कों बहुत सामग्री निवाय सोतिन के संकें
च के लिये श्री गुसांई जी कहे जो तुम कहोगे सो क
रेंगे तब भोजन कीये पाछें अपने सेव्य श्री ठाकुरजी
की सैया ऊपर पिछोरा बिछाय श्री गुसांई जी कों
पौढ़ाये पुरुषोत्तमदास चरण सेवा करन लागे स्त्री
पंखा करन लागी पाछें घड़ी एक रहि कें श्री गुसांई जी
नें दोउन सों कह्यो जो अब तुम जाय कें महाप्रसाद ले
उ तब उन कह्यो जो महाराज महाप्रसाद तो नित्य
लेत हैं परि तुम्हारी सेवा कब करेंगे सो ये स्त्री पुरुष
दोऊ जने श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय हैं तातें इन की वार्ता अब कहां
ताईं लिखिये ॥*

* ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२॥ *

श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक भपुर दास का
यस्य पोरगढ़ कें॥
वासी हुते॥
तिनकी
वार्ता

सो चपुरदास को श्री आचार्य जी महाप्रभून ऊप
र तथा श्री गोवर्द्धननाथ जी के वियें बहुत समस्व
हुतो जहां बैठते जहां ठाड़े होते तहां श्री नाथ जी
को पीठ न दैकें बैठते पीठ दैकें ठाड़े न होते सो च
रदास एक तुरक कें चाकरी करते परगना बहुत

कमायो जो कछु वस्तु आवती सों पहिलें श्रीनाथ
जी कों पहुंचावते और सालन साक पहुंचावते सो
सें सदा सर्वदा करते सो एक दिन वा तुरक नें त्रपुर
दास कों बन्दीखाने में दीए और कह्यो जो तेंनें मे
रो द्रव्य बहुत खायो है सोजब वह तुरक सोवो नद
काऊचार जन हाथ में मुगदर लैकें आए सो आय
के वा तुरक को खाट ते औंधों पटकि बहुत मारे
तब वा तुरक नें कह्यो जो तुम मोकों क्यों मारत हो

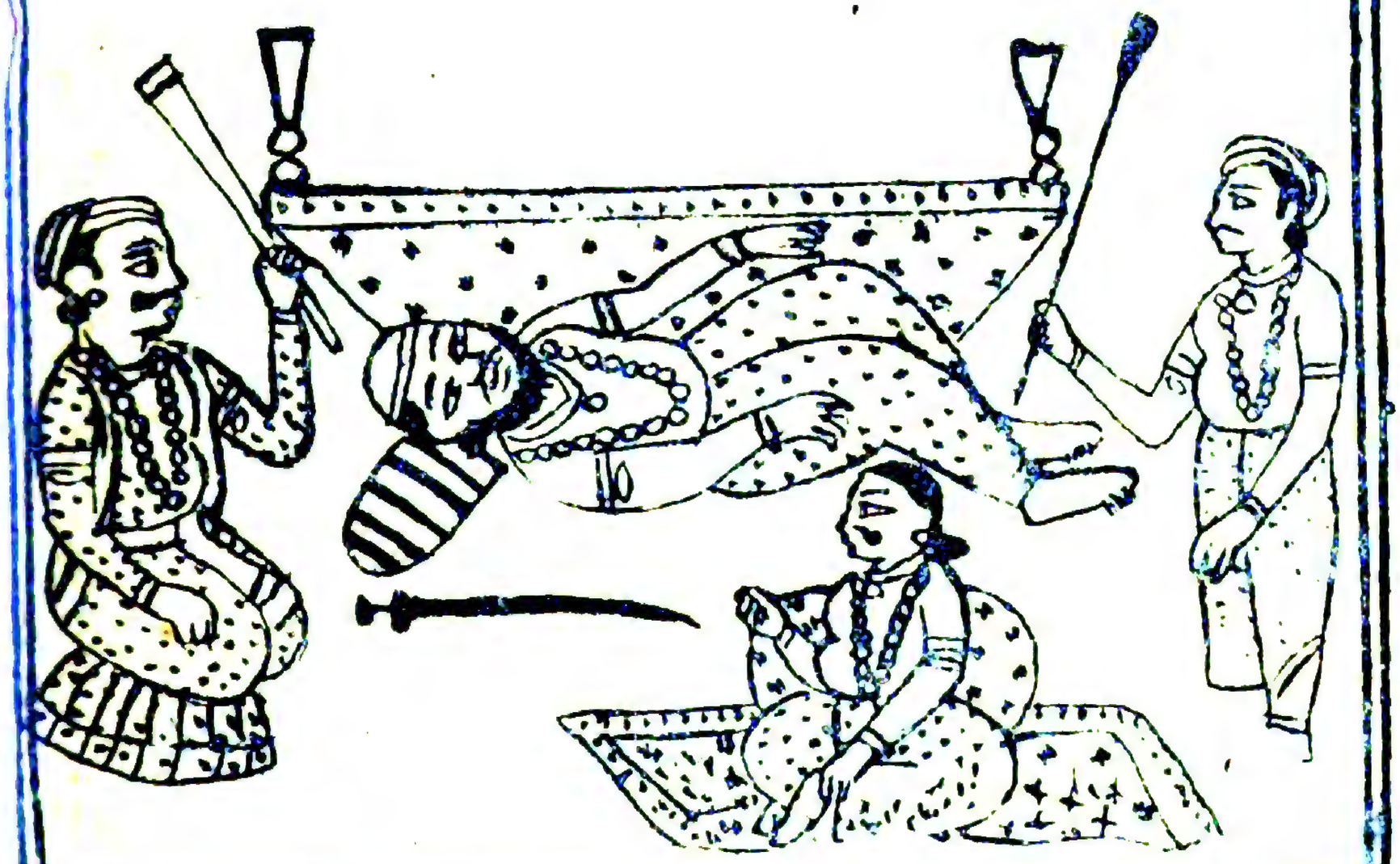

तब उन नें कह्यो जो तेंनें त्रपुरदास कों बन्दीखानें में
क्यों दियो है तब वह तुरक बहुत बिलबिलानो
हाहा करिकें नाक भूमि में घिस कें उनसों कह्यो
जो मोकों तुम मारो मति में अबहीं त्रपुरदास कों

छोड़त हों तब उन कह्यो जो त्रपुरदास कों न छोड़ेगो
तौ हम याही भांति सों नित्य मारेंगे ऐसें कह्यो न
व वेतो गये तब वा तुरक नें आयके अपने नागन
सों कह्यो जो त्रपुरदास कों पकरिवाने में ते अबही
छोड़ देउ तब मनुष्य त्रपुरदास को छोड़न गए तब
त्रपुरदास नें उनसों कह्यो जो अबतो रात्रि बहुत
गई है सबारें छोड़ियो तब वे मनुष्य फिर आय वा
वा तुरक सों कह्यो जो साहब त्रिपुरदास कहत
हैं जो अबतो रात्रि बहुत गई है सबारे छोड़ियो न
वबा तुरक नें अपने मनुष्यन सों कह्यो जो तुम अ
बही त्रिपुरदास कों छोड़ लावो तब वे मनुष्य वा
ही जाय कें त्रिपुरदास कों छोड़ लाए तब वा तुरक
ने त्रिपुरदास सों कह्यो जो तुम आपने घर जाउ
तब त्रिपुर दास नें कह्यो जो अबतो रात्रि बहुत
गई है सबारे जाउंगो तब वा तुरक नें त्रिपुरदास
सों कह्यो जो तू कहा काऊ कों जीव लेयगो नातो
तू अबही इतनी वेर अपने घर जाउ तब त्रिपुरदास
अपने घर आये॥

❋ वार्ता प्रसंग ॥१॥

बहुर कितनेक दिनपाछें त्रिपुर दास वाही तुरक
के साथ अटक गये पाछें एक दिन रसोया ने त्रपु
रदास सों कह्यो जो चरणोदक महा प्रसाद निवर्यो
है रंचकहू नाहीं तब त्रिपुरदास नें रसोइया सों क
ह्यो जो पांडे तेंने हम सों पहिलें क्यों न कह्यो हम
चरणोदक महाप्रसाद मगाय देते अब कहा

करियं तव रसोइयाचुपि कर रह्यो तव सवारे उठि
कें चिपुरदास तुरक के दरवार जान लगे तवक
ह्यो जो पांदे रसोई करि श्रीठाकुर जी कों भोग सम
र्पि प्रसाद लीजियो मेरी वाट मति देखियो मेरो
आवनों न वनेगो और मन में यह निश्चे कीयोजो
जवलों यहँ चलेगी तव लों काम काज करूंगो और
देह जव नचलेगी तव पड़ रहूंगो पि चरणोदक
महा प्रसाद लीये विनाजल पान न करूंगो यह नि
श्चार कीयो तव तुरक के दर्वार गये तव रसोइया
ने स्नान करि रसोई करन लागो तव आधी रसोई
भई दुनने में एक लोरिका वर्ष दस को नीन थैली
लायो सो एक थैली में तो चरणामृत और एक

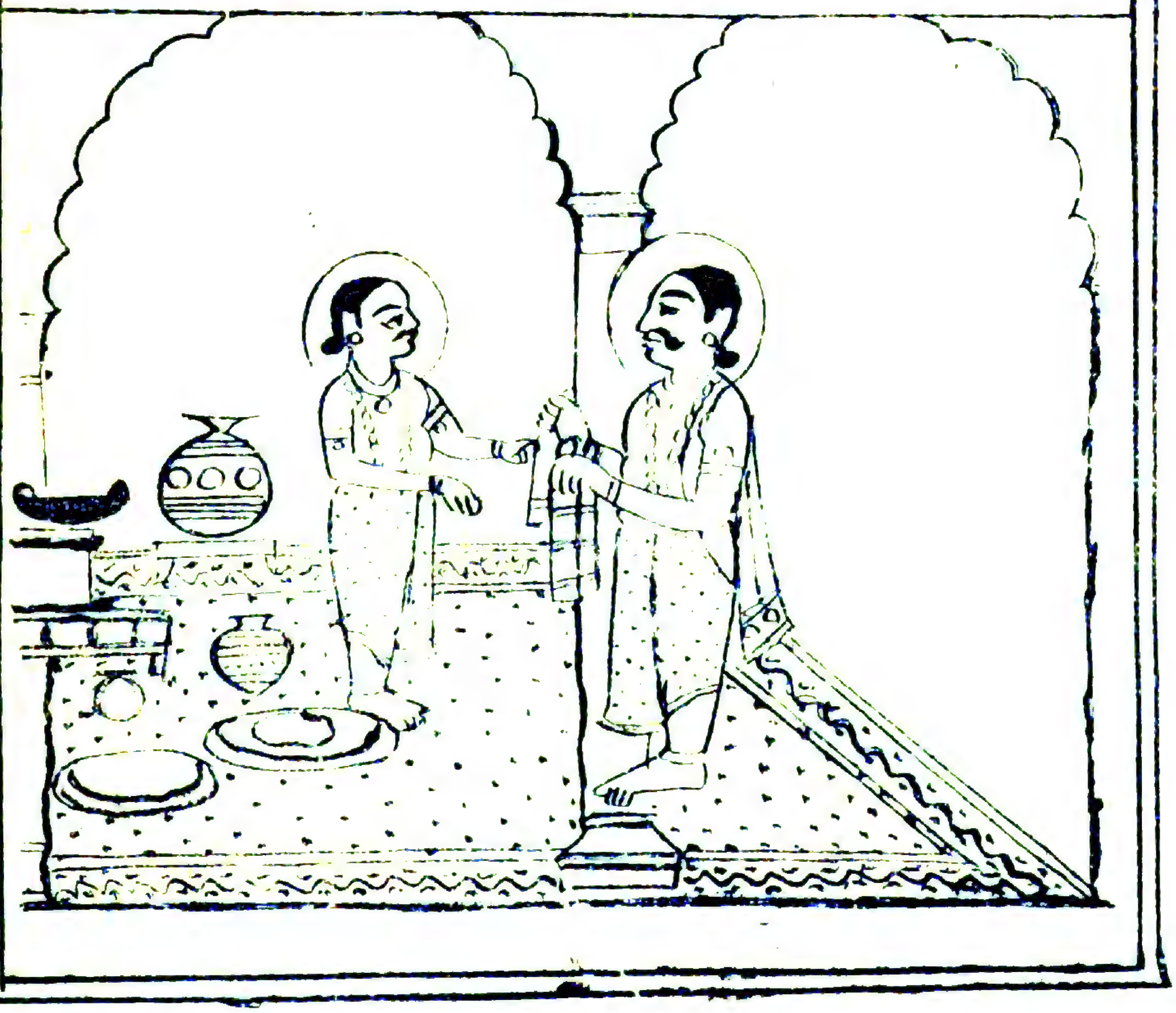

थैली में श्री आचार्य जी महाप्रभू को चरणामृत और एक थैली में श्री नाथजी को महाप्रसाद सो वे तीनों थैली रसोइया को दीनी और कह्यो जो ये तीनों थैली त्रिपुरदास नें पठाई हैं सो थैली देकें वह लरिका तुरं तही चल्यो गयो पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सरायो तब रसोईया नें त्रिपुरदास को बुलाय वे को मनुष्य पठायो पर त्रिपुरदास आये नाहीं तब दोय तीन वार मनुष्य बुलाय वे कों पठायो तब त्रिपुरदास ने रसोइयें सों कह्यो जो पांडे तुम मोकों काहे कों बुलावत हो मैंतो चरणामृत महाप्रसाद लीये विना जल पान न करूंगो तब रसोइया नें त्रिपुरदास सों कह्यो जो चरणामृत महाप्रसाद की थैली तो तुमही नें पठाई है एक लरिका वर्ष दश को हतो सो तीन थैली देगायो है तब त्रिपुरदास नें कह्यो जो वह लरिका कहां है मोकों दिखाय तब रसोईया नें कह्यो जो वह लरिका तो तुरतही थैली देकें चल्यो गयो तब त्रिपुरदास नें जान्यो जो ये श्री ठाकुर जी के काम हैं तब आप को धिक्कार करन लाग्यो जो मैंनें ऐसो हठ क्यों कियो जो श्री ठाकुर जी को श्रम करनो पड़ेो सो आप धिक्कार बहुत करन लागो जो मैंनें श्री ठाकुर जी को श्रम बहुत क्यायो पाछें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लीयें पाछें समर्प्यो महाप्रसाद पायो॥ +

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितनेक दिन में त्रिपुरदास की चाकरी छूटी

मो शीतकाल के दिन आए तब श्री नाथ जी कों कद
य पठावे सो काहूं ने पठावे इतनो श्रीघर में भाजी
चपुरदास की कवाय लइ दई जाती सो श्री नाथ जी
आप अंगीकार करते तब चपुरदास नें कह्यो जो म
व कहा कीये तब एक द्वाति पीतर की हुती सो
ची ताके दामन की गजी मंगाई सो रंगाई तापीछे क
वाय बनवाय कें श्री नाथ जी कों पठाई सो रंगी
रि कें भंडारी नें भंडार मेंडार दीनी तब किलनेक दि
न में श्री गुसांई जी श्री नाथजी द्वार पधारे सो जब श्री
नाथ जी को शृंगार करन लागे तब श्री गुसांई जी सों
श्री नाथजी ने कह्यो जो मोकों शीत बहुत लागतहै
तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो दूसरी अँगीठी लावो
तब दूसरी अँगीठी लाए तोहू कही जो मोकों सीत
बहुत लागतहै तब श्री गुसांई जीनें गद्दल उठायो
तबहू श्री नाथजीनें कही जो मोकों सीत लागतहै त
ब श्री गुसांई जीनें तीसरी अँगीठी मंगाई तबहू कही
जो मोकों शीत लागतहै तब श्री गुसांई जीनें भन्डारी
कों बुलायो और तासों पूछो जो कौन कौन वैष्णव
की कवाय आई हुती तब जाजा वैष्णव की आई हु
ती ताना वैष्णव को नाम लीयो तब श्री गुसांईजीनें
कही जो चपुरदास की कवाय नाहीं आई तब भ
न्डारी ने कह्यो जो चपुरदास की एक रंगीन कवाय
आई है सो भंडार में पडी है तब श्री गुसांई जी नें क
ह्यो जो वह रंगीन कवाय लै आवो तब भंडारी वह
रंगीन कवाय लै आयो तब श्री गुसांईजी देखें तो मे

लौ मरणजी सो होयहीं है तब वाकों भार पोंछि केंत
स्काल दरजी बुलाय के फरगुल सिद्ध करवाई तब
वह फरगुल श्री नाथ जी कों उढ़ाई तब श्री नाथ
जी नें कह्यो जो अब मेरो मीत निवर्त भयो ऐसें
श्री नाथ जी भक्ति के पक्षपात जो भक्ति भाव की
वस्तु कों यांभांति अंगी कार करें सो वे चतुर दासश्री
आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय
के लाले इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

इति प्रसंग ॥३॥ वैष्णव २३॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक पूरनमल्ल सर्वा।
* तिनकी वार्ता लिख्यते

सो पूरन मल्ल की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो सो पूरनम
ल्ल कों श्री नाथजीकी आज्ञा भई हुती जोतू मेरो मन्दि
र समराउ तब पूरनमल्ल श्री आचार्य जी महाप्रभू च
के पास आयो और आय के कह्यो महाराज मोकों
श्री नाथजीकी आज्ञा ऐसी भई है जो तू मेरो मन्द
र समराउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो
जो मन्दिर वेग समरावो तब पूरन मल्ल नें श्री आचार्य
जी महाप्रभून सों नाम पायो पाछें मन्दिर उठावन ला
गयो सो द्रव्य हुतो सो सब नाव खोदवे में लाग्यो जब
सब द्रव्य निवट्यो पाछें पूरनमल्ल पूरब चाकरी कों
गये तब राज सी लोगन नें श्री आचार्य जी महाप्र
भून सों पूछो जो महाराज आज्ञा देउ तो हम मन्दिर स
मरावें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री नाथजी
सों पूछो जो महाराज ये राजसी लोग मन्दिर सवरा
वन कहत हैं सो समरावें तब श्री नाथजी नें श्री आ
चार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो पूरनमल्ल आवेगो
तब मन्दिर समरावेगो तब राजसी लोगन सों श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें नाहीं कीनी तब वे फिर गये
तब कितेक दिन में पूरनमल्ल पूरबते बहुत द्रव्य क
माय कें लायो तब पूरनमल्ल नें कितेक दिन में मं
न्दिर समराय कें सिद्ध करवायो पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभूननें आछो मुहूर्त दीयव कें श्री नाथजी
के मन्दिर में पाठ बैठाये तब पूरन मल्ल ने बहुत द्रव्य
खरचो ॥ ✣

वार्ता प्रसंग २

बहुर श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे तब
पूरनमल्ल श्री नाथ जी के दर्शन कों आयो सो अति
आनन्द सों दर्शन कीयो तब श्री गुसांई जी नें कह्यो
जो पूरनमल्ल तेरे मन में और कछु मनोरथ है सो
सोऊ तू पूरनमल्ल ने श्री गुसांई जी सों कह्यो
जो महाराज मेरे मन में एक मनोरथ है जो अ
ति सुन्दर अति सुगन्ध को अरगजा अपने हाथन
सों मैं समर्पू तब श्री गुसांई जी नें आज्ञा दीनी जो
ला समर्पि तब पूरनमल्ल ने अत्युत्तम सुगन्धि को
अरगजा कपि कें श्री नाथ जी कों समर्प्यो तब पू
रनमल्ल नें आपने मन में अति आनंद पायो ता
पाछें पूरनमल्ल श्री नाथ जी के पास तें श्री गुसांई
जी के पास आयो तब श्री गुसांई जी पूरनमल्ल के
ऊपर बहुत प्रसन्न भए तब श्री गुसांई जी आपपो
ढ़े हैं सो उपरना पूरनमल्ल कों उढायो तब पूरनम
ल्ल अति आनन्द पायो पाछें श्री गुसांई जी नें श्री
नाथ जी कों पंचामृत सों स्नान करवायो पाछें
अंग वस्त्र करि कें सेवा शृंगार करि कें रसोई करि
भोग समर्प्यो समया नुसार भोग सराय के पाछें
श्री गुसांई जी नें श्री नाथ जी कों प्रसादी गहूला
पूरनमल्ल कों दियो पाछें प्रति वर्ष पर दीगहूला
श्री गुसांई जी पूरनमल्ल कों देते सो [illegible]
श्री गुसांई जी के तथा श्री आचार्य महाप्रभून के
ऐसे परम कृपापात्र भावदीये हे तातें इनकी वा
ती कहां तांई लिखिये ॥ ❋ २ जी

॥वार्ताप्रसंग॥२॥वैष्णव॥२४ सम्बन्ध॥※

अथ श्री आचार्यजीमहाप्रभू
नके सेवक पादवेन्द्र
दास कुम्हार॥
तिनकी
वार्ता

सो श्री आचार्यजी महाप्रभू तथा श्रीगुसांईजी जब परदेश कों पधारते तब पादवेन्द्रदास इनके साथ सामग्री लेकें चलते हुड़वाई कनात विना वांस की छोटी रावटी तथा एक दिन कों सीधो सामग्री इतनों बोझ लेकें संग चलते और रसोई की चाकरी सब करते रात्रि कों पहरो देते॥

वार्ताप्रसंग॥१॥

बहुरि श्री गुसांईजी श्री गोकुल में हुते तब रात्र पहर एक गई हुती तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो या विरियां मन्दिर की नींव खोदी जाय तो मंदिर में लो दृढ़ होय अब भलो मुहूर्त्त है ऐसें कहि कें श्री गुसांई जी तो पौढ़े पाछें पादवेन्द्र दास ने एक पहर में नींव खोदी सो खोदि सिद्ध कर राखी सो जब पिछली रात्रि कों श्री गुसांई जी पौढ़ के उठे न व देखें तो माटीन के ढेर पड़े हैं तब पूछो जो यह माटी कैसी है तब वैष्णवन नें कह्यो जो महाराज पादवेन्द्र दास ने खोदी है तब श्री गुसांई जी ने पादवेन्द्र दास सों पूछो जो यह नींव तेनें खोदी है तब पादवेन्द्र दास ने कह्यो जो महाराज रात्रि कों

वा वेर आपने आज्ञा करी हुती ताही वेर खोदी है सो नीव ऐसी वड़ी खोदी जो महीना एक लों राज म ज़दूर दए पन्द्रह लगें तोहू भीन जाय सो ऐसी सामर्थ पादवेन्द्र दास में हुती ॥१५॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और पादवेन्द्र दास ने श्रीनाथ जी द्वार को कूआ अपने ही हाथन सों खोद्यो सो मांटी निकसी नाके ईंट पकाई अपने हाथन हीं कूआ चिन्यो परि जल

पाद वेन्द्रदास

खारी निकल्यो तब पादवेन्द्रदास सोरा गयो श्रीगङ्गा जी मेते जल लैकें अंजुली भरि भरि केदारे और क है जोवा कूआ को जल आपसो करो ऐसें कहिकें तर्पणा कीयो ऐसें करत जब जान्यो जो जल मीतो

भयो तव श्री गंगाजी में ते निकस्यो पाछें श्री नाथ जी द्वार आए तव व्रा कृष्णा को जल श्रीनाथ जी कों अंगीकार करवायो सो पादवेन्द्र दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के परम कृपा पात्र भगवदीय हे ना तेइनकी वार्ता कहां तांई लिखिवये ॥ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव २४॥

अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गुसांई दास सार स्वत ब्राह्मण तिनकी

॥ वार्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों श्री ठाकुरजी की स्वरूप प्राप्ति भयो सो स्वरूप गुसांई दास के माथे सेवा को पधराय दीये और कही जो इनकी सेवा तू नीकी भांति सों करियों सो गुसांई दास सेवा नीकी भांति सों करन लागे सो गुसांई दास सों श्री ठाकुर जी मानुभाव भए बोलन लागे पाछें कितेक दिन में एक वैष्णव सो गुसांई दास नें कही जो तुम इहां रहो तो हम कों सहायता होय हम तुम मिलि कें सेवा करे परि वह वैष्णव हांन करें पाछें एक दिन श्री ठाकुर जी नें गुसांई दास सों कह्यो जानू मांकों व्रा वैष्णव के माथे पधराय पाछें व्रा वैष्णव सों गुसांई दास नें कह्यो जो श्री ठाकुर जी की आज्ञा तो ऐसी भ ईहै जो नू मांकों व्रा वैष्णव के माथे पधराय नाने भ वद इच्छा ऐसी ही दीसत है तव व्रा वैष्णव नें गुसां ईदास सों कह्यो जो तुम कहा करोगे तव गुसांई दास

नें कह्यो जो हूंतो वद्रिकाश्रम जाऊंगो उहां मेरो दे-
ह छूटेगो नवद्या वैष्नव नें गुसांई दास सों कह्यो जो
श्री ठाकुर जी की गति नाहीं जानी जात है जो तुम्हा
री देह उहां न छूटै और तुम इहां फिर आवो तो में-
श्री ठाकुर जी कौ देउंगो नाहीं नव गुसांई दास नें
कह्यो जो श्री ठाकुर जी ऐसी तो न करेंगे और क-
दाचित करेंगे तो तुम्हारो हार पोरिया रहूंगो श्री ठा
कुर जी के दर्शन करो करूंगो तब वा वैष्नव नें श्री
ठाकुर जी पधराये सोनी की भांति सों सेवा करन
लागयो पाछें गुसांई दास तो वद्रिकाश्रम गये सो-
वद्रिकाश्रम में उहां गुसांई दास की देह छूटी पाछें
वा वैष्नव ने गुसांई दास की देह छूटी की खवर-
पाई तब वह वैष्नव सुख सों सेवा करन लागयो-
तब वह वैष्नव श्री आचार्य जी महा प्रभून कौ क-
पात्र भलो वैष्नव भयो सो वे गुसांई दास श्री आचा
र्य जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय
हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ +
॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्नव ॥२६॥ सम्बंध ॥ *

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक माधो दास भट्ट काश्मीर के वासी। तिनकी वार्ता। लिख्यते।

सो माधो भट्ट प्रथम केशव भट्ट के सेवक हुते सो-
केशव भट्ट श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास श्री

ये सो बहुत दिन रहे सो श्री आचार्यजी महाप्रभू कथा
कहते सो केशव भट्ट सुनते सो माधो भट्ट श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के सेवकन में जाय बैठत तब भगव
द्वार्ता कहते सो प्रथम प्रसंग चले तब माधोभट्ट
सों केशव भट्ट ने कह्यो जो तू मेरो संग छांड़िके उ-
हां के सेवकन में क्यों जातहै वहां जाय के हांसी ठ-
ठोरी करतहै तब माधो भट्टनें केशवभट्ट सों कह्यो
जो मोको तुम्हारो संग तथा तुम्हारी कथा ते उहां
की हांसी अच्छी लागत है तोते हौं जात हौं तब केस
वभट्टनें जान्यो जो अब यह हमारे काम को नाहीं
अब हमारे काम ते गयो पाछें केसव भट्टने श्री-
आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो मैंने श्रीभाग-
वत तुम पास ते सुन्यो पर मोको कछू बोध न भयो
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तुम-
मेरी बराबर बैठि कें सुनो और जानि को भाव राखो
ताते बोध न भयो और माधो भट्ट की भागवत की
स्फूर्ति भई यह दैवी सृष्टी को प्रकार जान्यो तब
श्री भागवत की कथा सम्पूर्ण भई तब केसव भट्ट
ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो कछु गु
रु दक्षिणा लेउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून न
कह्यो जो हम कछु लेत नाहीं तब केसव भट्टनें क
ह्यो जो मैं तुम को एक सेवक समर्पित हों सो माधो
भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून कों सौंपे पाछें के
सव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास तें वि
दा होय कें अपने देश को गयो पाछें माधो भट्टनें

श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम पायो पाछें समर्पणा करवायो ॥

वार्ता प्रसंग १

और जा गाम में ..... माधौ भट्ट रहत हुतो ता गांम में एक बड़ो गृहस्थ रहत हुतो ताकें एक बे या हुतो सो मरगयो तब वह गृहस्थ बहुत रोवन लागयो विलाप करन लागयो और कहन लागयो जो कोउ याकों जिवावेगो तो मैंहू जीउंगो नाहीं तो मैंहू मरूंगो ऐसें कहि कें बहुत सोक करें तब ए क वैष्णव पेंडें में जात हुतो तब वा गृहस्थ कों विलाप करतो देखि कें वाने कह्यो जो या गांम में माधौ नाम के भगवदीय रहत हैं वे बड़े भगवदीय महा पुरुष हैं तिन कें पास तू जा वे कृपा करेंगे तब तेरो लरिका जीवेगो तब वह गृहस्थ माधौ भट्ट के पास आयो और बहुत विलाप करन लागयो और माधौ भट्ट सों कह्यो जो यह लरिका मेरो जीवेगो तो मैंहूं जीऊंगो नातर मैंहू मरूंगो या भांति सों बहुत विलाप करें और रोवे तब वा गृहस्थ कों देखि कें माधौ भट्ट कों दया आई तब मन में विचार करने लागे जो याको बेटा जीवै तो आछौ है यह गृहस्थ भलो है यह बहुत विलाप कर त है बहुत दुख पावत है यह विचार के माधौ भट्ट के मन में बहुत खेद भयो और कह्यो जो याको दुखदूर होय तो भलो है पाछें माधौ भट्ट मन्दिर में जाय कें श्री ठाकुर जी सों विनती कीनी एक श्लोक-

करि के श्री ठाकुर जी के आगें कह्यो ॥ सो श्लोक ॥ +

दया सर्व समर्थस्य दुरवारो व
दयालुता ॥ विश्वोद्धारण दक्ष
स्य उत्तवे कस्य सोभने ॥१॥

यह श्लोक श्री ठाकुर जी ने सुनि कें कह्यो जो यह कितनीक वात है जो तुम कों दया आई तो वासों क हो जो जा तेरो वेटा जीवेगो पाछें माधौभट्ट श्री ठा कुर जी कों पौढाय कें वाहर आये तव वागनहस्य सों कह्यो जो जा तेरो वेटा जीवेगो परि वागनहस्य कों विस्वास न परै मन में विचारे जो हूं घर जाउंगो और जो कदाचित न जीयो होयतो कहा करूं मुख तें तो कछु कह्यो न जाय परि मन में विस्वास परै नाहीं इतने में घर के लोग दौरि कें आय वासों क हो जो तेरो वेटा जीयो है ताकी वधाई देउ त व वह गनहस्य माधौ भट्ट कों दंडवत करिकें अपने घर आयो पाछें वधैया कूं वधाई दीनी और बहु त हर्षित भयो पाछें माधौ भट्टनें अपने मन में वि चार कीयो जो बहुत अनुचित कीयो अव ये लोग याही भांति सों नित्य दरव देयंगे याते अव या गा ममें रहिवे कौ काम नाहीं ऐसो विचार कें रात्रि जव आधी गई तव श्री ठाकुर जी कों जगाय संपु टमें पधराय कें तुरत ही गांव छोड़ि कें चले सो अडेल में श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आ यरहे दया आये ने म्यल छुटो श्री ठाकुर जी कों

आधीरात्रि के समय भाजनों परोतातें भगवदीय कों जो काम करनों सो विचार कें करनों विना विचारें सर्व था नहीं करनों ॥

वार्ता प्रसंग २

और श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री भागवत की सुबोधिनी कहते सो माधौ भट्ट वेगी वेगि लिखत जातें और जा ठौर न समझ परै ता ठौर लेखनी छोड़ कें बैठि रहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू माधौभट्ट कौं समझाय के अर्थ कहते तब माधौ भट्ट समझ के आगे लिखते और श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें माधौ भट्ट या भांति सों बैठते सो पावन दीसें ऐसी सावधानी सों रहते ॥

वार्ता प्रसंग ३

और एकसमय श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रदेस कों पधारें तब माधौ भट्ट साथ हे तब श्री आचार्य जी महाप्रभू पेंडे में एक गांम में उतरे तब रात्रि पहर डेढ़ गई हुती तब माधौ भट्ट उठि कें लघुवा धा कों गाम में आए तहां चोरन नें तीर चलायो सो माधौ भट्ट कें लाग्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कों नाम लेत माधौ भट्ट नें देह छोड़ी तब इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ के वैष्णव आय गये तब देखें तौ माधौ भट्ट की देह छूटी है तब वैष्णवन के मन में सन्देह भयो जो माधौभट्ट सारि के वैष्णव की ऐसी गति क्यों वृझिये तब साथ के वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून

सों पूछो जो महाराज यह वात कैसें होय जो मा धौ सा
रि के वैस्नव की ऐसी गति क्यों वूझिये तव श्री आ
चार्य महाप्रभून नें उन वैस्नवन सों कह्यो जो मा धौभ
द नें तो श्री ठाकुर जी के चरणारविंद चांपे सो इन को
कछू कर्तव्यता रही नाहीं यह बड़ो भगवदीय हो प
रन्तु सों एक भागवद अपराध परयो हो तव वै स्व न
नै पूछी जो महाराज ऐसो कहा अपराध परयो हो त
व श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह पहलें
अपने सेव्य श्री ठाकुरजी की सेया ऊपर फूल ल ह्या
वतहो सो एक दिन विना जानें फूलन में सुई रह गई
सो माधौभद्र नें नाहीं कीनी सोवा सुई को श्री ठाकु
रजी के श्री अंग में स्पर्शा भयो सो ना अपराध तें
ऐसें भयो पीर याकी देह सावधानता सों छूटी है
भागवद नाम लेत छूटी ताते यह श्री नाथजी कृपा
सहै मेरी कान ते श्री नाथ जी बुरी गति कवहू न
करेंगे अपने पास ही राखेंगे यह श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यो ताते वैष्नव न
कों श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करनी
वहुत सावधानी सों वे माधौदास भट्ट श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हे ताते
इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग २ वैसाख ॥२७॥
अव श्री आचार्यजी महाप्रभू न के सेवक गोपाल दास तिनकी वार्ता ॥

सो गोपाल दास नें मार्ग चलन वारेन कों अपने
घर के पास विश्राम के लीये अस्थल करि राखे
हतो जो मार्ग में विश्राम करे ताको हेत यह जो
कोई भगवद भक्त आय रहे तासों भगवद वार्ता
करें ता कारन अस्थल करि राख्यो हतो सो वहां ए
क समय पद्मावत उज्जैन के वासी सो द्वारिका
आवते हे सो रात्रि को वा गाव में आय रहे सो गोप
लदास सेवा सों पहुंचि कें पद्मावत के पास आ
ए और पद्मावत सों पूछो जो तुम कहा ते आए
हो तब पद्मावत नें कह्यो जो हम श्री द्वारिका ते
आए हैं तब गोपाल दास नें श्री रणछोड़ जी के
कुशल समाचार पूछे तब उहां के समाचार पद्म
ावत नें गोपाल दास सों कहे पाछें पद्मावत की
जो बालपने ते अवस्था हती सो बात चाली जो
पद्मावत द्वारिका में बहुत रहते श्री रणछोड़
जी के दर्शन बहुत करते सो जब खरची निवड़ती
तब अपने घर आवते सो पद्मावत के जिजमान
मावजी पटेल आजन कुनबी गांव के देसांई हु
ते सो पद्मावत द्वारिका जीते आवते तब मावजी
पटेल खरची देते सो लेकें जब पद्मावत द्वारिका
जी कों जाते ऐसें बरष दिनमें तीन बार जाते पद्म
ावत को श्री रणछोड़ जी के विषें बहुत आसक्ति
हुती सो श्री रणछोड़ जी की वार्ता पद्मावत नें
गोपाल दास के आगें कही तब गोपाल दास नें अप
ने मन में कही जो जैसी इनको श्री रणछोड़ जी के

दर्शन में आसक्ति है तैसी इनको श्री महाप्रभून के
विषें आसक्ति होय तो इनको कार्य होय तातें इन
सों कछु कहिये तब गोपालदास नें पद्मनाभदास
सों पूछो जो तुम सों कबहू श्री गुसांईजी बोलत
हैं कछु कहत हैं कछु मांगत हैं तब पद्मनाभदास नें
कही जो मो सों तो कबहू कछु कहत नाहीं तब
पद्मनाभदास नें गोपालदास सों पूछो जो कहा श्री
गुसांईजी काहू सों बोलत हैं तब गोपालदास
नें कही जो हांहा बोलत हैं तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून की वार्ता कही जो तुमनें एते दिन श्री
गुसांईजी सेवत हैं सो श्री गुसांईजी प्रगट भए हैं
तब पद्मनाभदास नें पूछो जो वे कहां हैं तब गोपाल
दास नें कही जो वे अडैल में हैं तब पद्मनाभदास नें
कही जो जैसो दर्शन श्री गुसांईजी देत हैं तैसो द
र्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देयंगे तब गोपालदा
स नें कही जो हांहां देयंगे तब पद्मनाभदास के मन में
विश्वास आयो जो यह बात सत्य ताही दिन ते पद्म
नाभदास कों आतुरता भई जो कब मैं जाऊं और क
ब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन पाऊं सो रात्र
दिन वहां हो रहे ता पाछें सवारे गोपालदास सों वि
दा होय कें तहां ते चलो सो मार्ग में विचार करत
जाय जो मैं कब जाऊं और कब श्री आचार्य जी मह
प्रभून के दर्शन पाऊं ऐसें विचार करत घर अपने
दरजोन में आए परि चित्त उदास में रहो पाछें माव
जी पटेल सों मिले तब मावजी पटेल नें पूछो जो

गुरुजी अब कें तुम्हारो मन प्रसन्न देखियत नाहीं
सो काहे ते तब पद्मरावल नें गोपालदास सो सुनी हु
ती सो वात कही जो श्री गोछेड़जी अड़ेल में प्रगट
भए सो मेरो मनोरथ दर्शन करिवे को हैं सो जानों हौं
कब जाउंगो तब भावजी पटैल नें कह्यो जो तुम र
णछोड़ जी के दर्शन कों जात हौ सो मोहूं कों अपने
साथ लेचलो तब पद्मरावल नें कही जो तुम गर
ीब लोग हो तुम्हारी साथ बहुत मनुष्य होंयगे और
यह दर्शन तौ एकांत स्थल को है तातें यह वात तौ
मोकों भावत नाहीं तब भावजी पटैल नें कह्यो जो
हूं तो सर्वथा तुम्हारे संग अकेलोही चलूंगो तब प
द्मरावल नें कह्यो जो भलो तब यह समाचार अपनी
स्त्री सों कहे और कह्यो जो मैं तौ पद्मरावल के संग
अडेल दर्शन कों जात हौं तब स्त्री ने कह्यो जो वहां
कहा है तब भावजी पटैल नें कह्यो जो वहां श्रीव
ल्लभाचार्य जी प्रगट भए हैं सो साक्षात श्री णछो
ड़जी प्रगट भये हैं और जैसो दर्शन श्री णछोड़
जी देत हैं तैसो दर्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देत
हैं सो यह वात सुनि कें भावजी पटैल की स्त्री के
मन में बहुत उत्साह भयो और कह्यो जो आप के
संग मैं हूं चलूंगी तब भावजी पटैल नें कह्यो जो
मैंतो पावन चलोंगो तू कैसें चलैगी तब स्त्री मे
कही जो मैहूं पावन चलूंगी मेरें कछू स्त्रीका तौ
है नाहीं तब पीछे भावजी पटैल नें कह्यो तोहम
तुम दोऊजन चलेंतो घर कौंन के भरोसे न हटा

स्त्री नें कह्यो जो मेरो घर ते कछु प्रयोजन नांही है
हो सर्वथा तुम्हारे साथ चलूंगी। तब भावजी पटै
लनें अपने मन में विचारयो जो याकों बहुत आतु
रता भर्यु दर्शन को बहुत मनोरथ है तब कह्यो जो
चलो तुम चल तब भावजी पटैलनें अपनो घर
काहू भले मनुष्य के हवालें करीनों तब पत्म
नावल भावजी पटैल तथा उसकी स्त्री विरजोये
तीनों चले सो जब प्रयाग पहुंचे तब अडैल को
दर्शन ... भयो तब बहुत आतुरता भई जो श्री
यमुनाजी होय के चल्यो जैये ता समें श्री ....
... आचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी ऊपर प
धारे हुते सो सन्ध्यावन्दन करत हुते तहां सेव

क दोय चार साथ हुते तब इन तीनोंन कौं श्री आचा
र्य जी महाप्रभून कौ दर्शन भयौ तब तौ बहुतही आ
तुरता भई ता समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें इन
कौं देख्यौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेवकन
सौं कह्यौ जो यह नाव पार लै जाउ पद्मनाभदास श्री र
णछोड़ जी के सेवक आये हैं सो इन तीनोंन कूं ना
व में बैठारि कें वेगि लै आउ सो नाव लैकें वैष्णव
पार आए तब उन वैष्णवन नें कह्यौ जो पद्मनाभदास
तीनोंजने होंय सो आवो श्री आचार्य जी महाप्रभून
ने नाव पठाई है तब पद्मनाभदास और मावजी पटैल
तथा उनकी स्त्री विरजा इन तीनों जनेन कौं नाव में
बैठाय के लै आए तब श्री आचार्य जी महाप्रभून
कौ दर्शन भयौ सो जैसौ गोपालदास ने कह्यौ हुतौ
तैसौई दर्शन भयौ सो दर्शन करि कें मन में बहुत प्र
सन्न भये पाछें पद्मनाभदास नें श्री आचार्य जी महा
प्रभू पास नाम पायौ सो नाम पाय कें उठे तब पद्म
नाभदास नें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज अंगीक
र करिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें प्रसन्न
होय कें कह्यौ जो तू कहा कहत है तब पद्मनाभदास
ने कह्यौ जो मोकौ गोपालदास नें कह्यौ है तासों
निवेदन करवाइये और पद्मनाभदास ने बीनती करि
कें कह्यौ जो महाराज मावजी पटैल और मावजी
पटैल की स्त्री विरजा ये दोऊजने आप की सरणा भे
ये हे सो इन कौं नाम निवेदन करवाइये तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करके नाम समर्पे

णाकरवायो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आपभो
तर पधारे तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें पद्मरा
वल सों कह्यो जो तुम महाप्रसाद इहांई लीजि
ये तव पद्मरावल नें वीनती करिकें कह्यो जो महा
राज मोकों तुमनें श्री रणछोड़ जी को दर्शन दीनों
है सो स्वरूप आप कृपा करिकें आरागोगे तव
श्री आचार्यजी महाप्रभून कों दर्शन भोजन कर
तमें पद्मरावल कों श्री रणछोड जी को दर्शनभयो
सो साक्षात श्री रणछोड़ जी भोजन करत हैं तव प
द्मरावल कों दृढ विस्वास भयो तव श्री आचार्यजी
महाप्रभू आपभोजन करि कें विराजे तव महाप्र
साद को पातर पद्मरावल कों कृपा करकें दीनी
पाछें पद्मरावल नें वीनती कीनी जो महाराज मो
कों कहा आज्ञाहै तव श्री आचार्य जी महाप्रभून
नें आज्ञा दीनी जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा करो
तव पद्मरावल नें कह्यो जो जैसो मेरो मन महारा
ज के स्वरूप में लग्यो है तैसो मन सेवा में लगो तो
सेवा करूं तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो
जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा सो करो जो तुम्हरो
मनोरथ श्री ठाकुर जी सब पूरन करेंगे तव पद्मरा
वल श्री आचार्य जी महाप्रभून सों विदा होयकें
अपने देश कों गये तव पद्मरावल अपने देस में
जायकें श्री ठाकुर जी की सेवा करन लागो तव अ
पने सेव्य श्री ठाकुर जी की सेवा वनवाई सो सेवा
छोटी भई तव श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो या सेवा

पे मोपें सोयो जाय नाहीं पाछें पद्मावल नेंदस
री सेवा वडी करवाई नाके ऊपर श्रीठाकुर जी
पौढन लागे और श्री ठाकुर जी सानुभाव जनावन
लागे और एक समय पद्मावल की स्त्री ने श्री ठा
कुरजी कों भोग समर्प्यो तामें खीर लाती समर्पी
तव श्रीठाकुर जी नें खीर में श्री हस्त मेल्यो तव खी
र वहुत ताती लागी सो श्री ठाकुर जी ने श्री आचा
र्यजी महा प्रभून सों कह्यो और श्री हस्त कमल दि
खायो सो लाल परि गयो तव पद्मावल श्री आ
चार्यजी महा प्रभून के पास वैठे हते तव पद्मा
वल सों श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्यो जो त
वी स्त्री ने श्री ठाकुर जी कों ताती खीर समर्पी सो

श्रीठाकुरजी को तातो खीर न समर्पिये तव पद्म
रावल ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो
श्रीठाकुरजी ने एक मुहूर्त्त लों सेरी क्यों न होंने
दीनी तव श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जो
श्रीठाकुरजी तो बालक हैं श्रीठाकुरजी को भोग
धरे पाछें विलंब न सहि सकें याते जो भोग धरि ये
सो बहुत तातो न धरिये सो पद्मरावल कों श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें ऐसी आज्ञा दीनी आज्ञा
दैकें श्रीठाकुरजी को ऐसो अनुभव जतायो पाछें
पद्मरावल अपने घर आये तव यह बात अपनी
स्त्री सों कही पाछें पद्मरावल बहुत सावधानी
सों सेवा करन लागे श्री आचार्य जी महाप्रभून की
कृपाते श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे
जो चहिये सो मांगि लेते अपनी सब बात कहते सो वे
पद्मरावल गोपाल दास के संग ते ऐसे भगवदीय हैं
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १ वैष्णव २८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू न के सेवक पद्मरावल सों चौरा ब्राह्मण उज्जै न के वासी ति न की वार्ता लिख्यते

सो पद्मरावल अडेल में आय कें श्री आचार्यजी
महाप्रभून के सेवक भए सो गोपाल दास वांसवाड़ा

के तिनकी वार्ता में लिख्यो है विस्तार करि कें पाछें
अपने देस कौं चलन लागे तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज हों तो अति
मूर्ख हौं जड़ हों कछु जानत नाहीं और मेरी जाति
के ब्राह्मण महा कर्मी जड़ हैं स्मार्ती हैं सो मोकों
दुख देत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें अ
पने चरणारविंद कौ चन्दन और चरणामृत दीनों
और कह्यो जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो च
रणामृत लीनो सो इतने ही में सब सिद्धांत स्फुर्द भयें
पाछें देश उज्जैन में आए पाछें बड़े २ ब्राह्मण प्रति
दिन पूछन लागे तब जितनेन ने पूछो तिनकूं प
ति उत्तर दैकैं सब विदा किये सो पद्मनाभदास कों
श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते ऐसी वि
द्या स्फुर्द भई जो बड़े पंडित जीत कें विदा कीये वे
पंडित प्रति उत्तर दैन सके ॥ +

वार्ता प्रसंग १

और पद्मनाभदास द्वारिका श्री रणछोड़ जी के द
र्शन कों चले तब श्री रणछोड़ जीनें स्वप्न में कह्यो
जो राज नगर में एक सेवक हमारो है ताके घर तू
जैयो और पाक उहांई करियो तब पद्मनाभदास
नें कह्यो जो महाराज मैंतो जानत नाहीं और वि
ना बुलाए में कौन के घर जाऊं तब श्री रणछोड़
जीनें कही जो वह तोकों आपही बुलावन कों
आवेगो पाछें श्री रणछोड़जीने अपने सेवकन
सों कह्यो जो पद्मनाभदास इहां आवेंगो सो उनकीसे

वातू नीकी भांति सों करि यों श्रीर श्रपने घर प
धराय पद्मरावल कों रसोई भली भांति सों करि
यों तव वा सेवक नें श्री रणछोड़ जी सों कह्यो जो
महाराज मैं उन कूं कैसें जानूंगो तव श्री रणछोड़
जीने कह्यो जो वे तो प्रसिद्ध हैं तू श्रापही ते जानें
गो तव कितनेक दिन में पद्मरावल उहां श्राये
सो वा गांव के वाहिर उतरे सो पद्मरावल के सा
थ विद्यार्थी एक हुतो तासों पद्मरावल ने कह्यो
जो तू गांम में जाय कें कोरी भिक्षा मांग लाउ तव
वह विद्यार्थी गांव में गयो सो चार पांच ठौर ते कोरी
भिक्षा मांग लायो तव पद्मरावल ने वा विद्यार्थी सों
कह्यो जो तू श्रन्न जाजा कैसें लायो है ताता कैसें ल
टों फेर श्राउ तव वह विद्यार्थी जाजा को श्रन्न लायो
हो सो ताकों फेरन लाग्यो तव एक ने कह्यो जो तुम
लेगये हे श्रव फेरन क्यों श्राए हो तव वा विद्यार्थी ने
कह्यो जो मैं कहा करूं हमारे वड़े गुरू हैं तिनकी
श्राज्ञा मानी चाहिये तव वा विद्यार्थी सों कह्यो जो
तुम्हारे गुरू को नाम कहा है तव वा विद्यार्थी ने क
ह्यो जो मेरे गुरू को नाम पद्मरावल है तव वह श्री
रणछोड़ जी को सेवक विद्यार्थी के साथ चलो श्रा
यो सो श्राय के पद्मरावल सों कह्यो जो मेरे घर पधा
रौ तव पद्मरावल नें कह्यो जो हूंतो काहू के घर जा
त नाहीं तव वा ने कह्यो जो मोकों श्री रणछोड़जी
ने श्राज्ञा दीनी है जो तू पद्मरावल कों श्रपने घर प
धराइयो सो रसोई भली भांति सों करवाइयो तव

पद्मरावल को अपने घर पधराए रसोई भली भां
ति सों करवाई सो पद्मरावल ने रसोई करि श्रीठा
कुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें प्रसाद लीयो और
रात्रि कों उहांही सोय रहे तब सवारें पद्मरावल च
लन लागो तब श्री गणछोड़जी कों सेवक राखन ला
गो तब पद्मरावल रहे नाहीं ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

बहुर एक दिन आटो बहुत मिल्यो और घृत थो
रो मिल्यो तब जितनी रोटीवा घृतमें चुपड़ी गई
सोतो ऊपर धरी और कोरी हुती सो नीचे राखी त
ब श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो और कह्यो जो
महाराज विनु चुपरी रोटी तो रहन दीजियो और
चुपरी रोटी आगारियो तब श्री ठाकुरजी नें तो
सबही रोटी आरोगी पाछें पद्मरावल सों कह्यो जो
तेने मेरे आगे काहे कों धरीं मेरे आगो जो तू धरे
गो सो आरागूंगो पाछें महाप्रसाद लेन कों बैठे तब
रोटी बहुत अद्भुत स्वाद भयी तब पद्मरावल ने क
तनीक रोटी बची सो साथ बांधि लीनी सो नित्य
जब पाक करि भोग समर्प पाछें प्रसाद लेन कों
बैठते तब रोटी मेंते एक टूंक मोलि लेते तब महा
प्रसाद लेते पाछें कितनेक दिन में द्वारका जाय
पहुंचे तब श्री गणछोड़जी कों दर्शन कीयो दिन
पांच सात रहि कें श्री गणछोड़जी सों विदा होय
कें चले तब मार्ग में गोपाल दास वास वाड़ा के घ
र आये तब रात्रि कों उहांही रहे तब पद्मरावल

ने गोपालदास सों कह्यो जो तुम्हारी कृपा ते मोकों श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ दर्शन भयो और तुम्हारी कृपा ते मोपै श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कृपा करी सो पद्मनाभन श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग ॥३॥ वैष्णव ॥२९

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक पुरुषोत्तमजोसी माध्योरा ब्राह्मणकी वार्ता लिख्यते ॥

सोरठक समय पुरुषोत्तमजोसी वनारस कों चले सो मार्ग में उज्जैन आयो सो उज्जैन आय कें पूछो जो पद्मनाभन के बेटा कहां रहत हैं .... सो पद्मनाभन के बेटा चारि हते सो तीन बेटा तो इकठोरे हते और बड़े बेटा कृष्णभट्ट सों न्यारे हते सो पुरुषोत्तमजोसी जहां पद्मनाभन के तीन्यो बेटा इकठोरे हते तिनके घर गये तिननें पुरुषोत्तमजोसी कों देखो सो अन्न दीयो सो कछू भूखे रहे तब मन में कह्यो जो पद्मनाभन के बेटा ऐसे क्यों बूझिये वे तो सूधे ब्राह्मण है पा हैं कृष्णभट्ट नें सुनो जो पुरुषोत्तमजोसी आए हैं तब कृष्णभट्ट ने पुरुषोत्तमजोसी कों अपने घर पधराय तब भली भांति सों प्रसाद लिवायो तब

पुरुषोत्तम जोसी वहुत प्रसन्न भये दिन चार राखे तव पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे तव कृष्ण भट्ट साथ चले सो मजल जाय उतरे तव रात्रि कों जव कृष्णभट्ट सोये तव पुरुषोत्तम जोसी ने अपनी स्त्री सों पूछो जो कृष्णभट्ट सोये तव स्त्री ने कही जो हां सोये तव पुरुषोत्तम जोसी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता कही पाछें कृष्णभट्ट ने मन में विचारयो जो पुरुषोत्तम जोसी नें मेरे आगें श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता नाहीं कही परि हौं अव कछू चर्चा वार्ता चलाऊं सो जव श्री गोकुल मजल पांच सात रह्यो तव कृष्णभट्ट ने प्रसंग चलायो सो पुरुषोत्तम जोसी घोड़ा पे हुते सो वे तो विह्वल भए तव कृष्णभट्ट नें पुरुषोत्तम जोसी की

स्त्री सों कहयो जो एक ओर ते तुम थांमे रहो और एक
ओर तें मैं थामत हौं तब कृस्नभट्ट ने वार्ता चलाई ।
सो भगवद वार्ता में पुरुषोत्तम जोसी तो विह्वलभ
ये सो घोड़ा ऊपर रह्यो न जाय तब दोउ जने आस पा
स थामें जाय ऐसे करत मजल आय उतरे तब घो
डा ऊपर ते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जोसी ने
कह्यो जो मोकों तुम क्यों उतारत हो तब कृस्नभ
ट्टनें कह्यो जो मजल कों मुकाम आय पहुंचो है
ताते उतारत हैं पीरे पुरुषोत्तम जोसी कों मंजल
आयवे की खबर नाहीं भगवद वार्ता में रसाविष्ट
भए सम्पूरण दिवस भयो पीरे प्रसाद लेवेहू की
कछु सुधि रही नांही ऐसें करत कितनेक दिनमें
श्री गोकुल आय पहुंचे तब पुरुषोत्तम जोसी ने
श्री गुसांईजी कों दर्शन कीनों और श्री गुसांईजी
सों पूछयो जो महाराज कृस्नभट्ट के ऊपर ऐसी कृपा
काहे ते भई है तब श्री गुसांईजी ने कह्यो जो याकों
चाचा हरिवंस जी कों संग है ताते ऐसो भयो तब
पुरुषोतम जोसी कों गर्भ निवर्त भयो और अति
प्रसन्न भये और कृस्नभट्ट सों आप वार्ता पूछन
लागे पाछें कितनेक दिन रहि कें श्री गुसांईजी सों
विदा होय के चले सो उज्जैन आये मार्ग में भागवद
वार्ता करत चले आये और दोउ जने अति प्रसन्न
भए सो वे पुरुषोतम जोसी श्री आचार्यजी महाप्र
भून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हे ताते इनकी
वार्ता कहां लों लिखिये ॥

॥वार्ताप्रसंग॥१॥ वैष्णव ३०॥ संबंध ८७॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू न सेवक जगन्नाथ जोसी तिनकी वार्ता

सो जगन्नाथ जोसी ने श्री ठाकुर जी कों वा गोपहराय सब सिंगार करि कें राज भोग कों यार आरो आन राख्यो तब जगन्नाथ जोसी के मन में आई जो श्री ठाकुर जी वागे पहरेंही आरोगत हैं ताते पार छूट जायगो तब श्री ठाकुर जी ने जग नाथ जोसी के मन की जानी तब पार में लात मा रि केंडार दीनों तब जगन्नाथ जोसी ने और पाव वेगिवेगि करिकें पार परोसि श्री ठाकुर जी के

आगें आनि राख्यो तब श्रीठाकुर जी के मनमें आ
ई जो वैसेही फोरि लीत मार के डार दीनों तब फेर
तीसरी वेर पाक करिके श्रीठाकुर जी के आगें
आनि राख्यो तबहू श्रीठाकुर जी ने लात मारि कें
डारि दीनों तब चौथी वार पाक करन लागे तब
जगान्नाथ जोसी बहुत श्रमित भये पाछें नीचो
यो करिकें विचार करन लागे जो कौन अपराध
ते श्रीठाकुर जी आगेगात नाहीं थार डार देत हैं
पाछें बहुत बीनती कीनी तब श्री ठाकुर जी ने यह
बात जताई जो तू थार छुइ वेते डर मत है तो तू
हमारे आगे काहे कों आनि राखत है इतनो व
चन श्री ठाकुर जी को सुनि कें जगान्नाथ जोसी
चौंक उठे तब नाक भूमि में घिस बहुत मनहार
करिकें कह्यो जो महाराज मैंतो कछू जानत ना
हीं अब मेरो अपराध क्षमा करिये पाछें श्रीठा
कुर जी आगेगे परि मास दोय लों बोले नाहीं के
र बहुत बीनती कीनी तब बोलन लागे ऐसो सरल भाव
हुतो॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

और जगान्नाथ जोसी श्रीठाकुर जी कों भोग
समर्पिने तामें ताती खीर बहुत समर्पिते सो श्री
ठाकुर जी वैसीही तानी खीर आगेगाते सो कि
तनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू गुज
रात पधारे तब खिरालू में जगान्नाथ जोसी के घ
रउतरे तब श्रीठाकुर जी को दर्शन कीयो तब दे

दे तौ श्रीठाकुर जी के भोग गने हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून में श्री ठाकुर जी तो भोग को [illegible]

जिह्वा और भोग गते क्यों हैं तब श्रीठाकुर जीनेक
हेगो जो जगन्नाथ जोसी सोकों नानी खीर बहुत
समर्पत हे सो तैसी ही में आगेलान हों तब जगन्नाथ
जोसी सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो त्
तानी खीर श्री ठाकुर जी कों क्यों समर्पत है तब जग
नाथ जोसी नें कह्यो जो महाराज हमतो कछू जान
त नाहीं जो ऐसी बात है हम तो जानत तो नानी खी
र भली तब श्री आचार्य जी महाप्रभूनें कह्यो जो
खीर सुहाती भली खीर बहुत तालो न समर्पियेना
पाछें जगन्नाथ जोसी वैसे ही करन लागे ॥ ÷

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभूनके
दर्शन करिवे कों जगन्नाथ जोसी अडेल कों चले
तब मार्ग में अन्न कूट को दिन आयो तब एक सेव
क साथ हतो तासों कह्यो जो चामर दार घृत खां
ड और कछु आछो सामग्री मिले सो सब लै आउ
तब वह सेवक गयो तब देखे तो गांव में कछू नाहीं
तब वह सेवक फिर आयो और कह्यो जो इहां तो
कछू मिलत नांही एक ज्वार मिलत है तब जगन्
थ जोसी नें कह्यो जो भलें ज्वार ही लेआउ तब गां
म में जाय कें ज्वार लीनी तब आछी भांति कूट फ
टक छानि बीन चुनि कें ले आये पाछें जगन्नाथ
जोसी नें वा ज्वार को रोमर कीयो तब वा सेवक नें

कह्यो जो भुसी निकसी है सो ताकों टोकरा में करि
ऊपर राख्यो जो ताकी वाफ़ सों जल्दी होय आवेगो
तब जगन्नाथ नें कह्यो जो मलें तब वह तोमर ख
दखदान लाग्यो तब वह टोकरा धामें गिर पर्यो
सो सब इकठोरो मिलि गयो पाछें भगवद इच्छा
मानि कें जैसो तैसो श्री ठाकुर जी कों भोग सम-
र्प्यो पाछें भोग सराय महा प्रसाद लीयो तब जोसी
रात्रि कों सोयो तब श्री ठाकुर जी ने कह्यो जो मेरे
पेट में दूखत है तब जगन्नाथ जोसी ने सुतिवा-
श्रौर सोंठ श्रौर अजवायण समर्पी परि मन में
पश्चाताप बहुत भयो पाछें श्री ठाकुर जीनें कह्यो
जो अब मेरे पेट में सुख भयो ॥+

वार्ताप्रसंग ३

बहुरि एक समय जगन्नाथ जोसी अपने सेव्य श्री
ठाकुर जी कों उत्थापन करि कें पास ठाढे हते श्री
ठाकुर जी कों मूंठा करत हते श्रौर वैष्णव ठाढे द-
र्शन करत हते ता समय एक रजपूत गारासिया
आयो सो वे वैष्णव हतो सो आय कें वैष्णवन में
ठाढो भयो ता समय एक डोकरी फूल की माला
लैकें आई सो वह माला दूर तें श्री ठाकुर जी कें ऊ
पर वानेंडारी तब जगन्नाथ जोसी कों रस चढ्यो
सो माला वैष्णवन के ऊपर डारी सो वह माला वै-
वैष्णव के गले में जाय परी तब वा गारासिया रजपू
त कों रिस आई तब गारासिया नें अपने मन में वि
चारी जो देखो या जोसी ने माला याको दीनी श्रौ

र बोल्यो न दीनो पर्‌यो भलो जो राजपूत को जायो जो या
जोसी को ठौर मारू तब वह राजपूत तरवार हाथ में
लेके नित्य नकल फिरे दाव पावै तो घात करै त-
ब जगन्नाथ जोसी एक दिन बाहिर भूमि ते आवत
हुते तब वा राजपूत नें जगन्नाथ जोसी के ऊपर पो
छे ते तरवार चलाई तब श्री ठाकुर जी नें वह त
वार श्री हस्त में थाम्यो और श्रीमुख में कह्यो।

याकों मार मति वह तब वेह गयो तब जगन्ना
जोसी फिर के देखे तो श्री ठाकुर जी आसन भये
पीछें ठाड़े हैं तब जगन्नाथ जोसी नें वा गरामिया
सों कह्यो जो फिरि रे पापी तेनें यह कहा कीयो
तब वह राजपूत तरवार डारि कें जगन्नाथ के पा
वन परयो और कह्यो जो मेरे ऊपर कृपा करिये

अनुग्रह कीयें और जगन्नाथ जोसी के पाव
हाथ सों पकर रह्यो तब जगन्नाथ जोसी कों दे
या आई तब वा कों नाम दीयो सो जगन्नाथजोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है तब वा रजपूत कों जग
नाथ जोसी ने नाम दीयो निवेदन करवायो तब
वह भलो वैष्णवदीय भयो वैष्णव के बीच ठाढ़ो
रह्यो ताकें फल सिद्ध भयो ऐ जगन्नाथ जोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तासे इनकी वार्ता
कहां तांई लिखिवे ॥ * ॥

॥वार्ताप्रसंग॥४॥वैष्णव॥३१॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक जगन्नाथ जोसी
की माता तिन
की वार्ता।
लिख्यते

ताकें दे बेटा हुते बड़े बेटा तो नरहर जोसी और छो
टे बेटा जगन्नाथ जोसी विद्यालू के वामी तिन दो
उन सों माता नें कह्यो जो तुम जाय के श्रीआचार्य
जी महाप्रभून के पास नाम पाइ आवो और समर्प
ण करवाय आवो और बेटान के हाथ में एक एक
मोहर दीनी सो मोहर एक लाटी में मोन्नि कें वे दोउ भा
ई अडैल कों चले सो कितनेक दिन में अडैल जाय
पहुंचे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अडैल में
हुते नाहीं ... आप तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्नाथ
रायजी के दर्शन कों पधारे हुते सो जगन्नाथ जोसी

नाह्र जोसी ने विचार कीयो जो हम छिपि रहेंगे
तौ हमारी माता खोजैगी जो नाम समर्पण कीये वि
नु तुम क्यों आए लाये आपुन पुरुषोत्तम क्षेत्र च
लैं यह अपने मन में विचार करकें जगन्नाथ जो
सी और नाह्र जोसी ये दोउ भाई पुरुषोत्तम क्षेत्र
कों चले सो थोरे दिन में पुरुषोत्तम क्षेत्र जाय पहु
चे जाय के पूछो जो श्री आचार्य जी महा प्रभू आ
कहां रहत हैं तब राक वैष्णव ने घर बताय दी
नों तहां ये दोऊ भाई गये तब श्री आचार्य जी मह
प्रभून कों दर्शन करिकें बैठे तब श्री आचार्य जी
महा प्रभून ने पूछो जो तुम्हारी माता नीकी है तब
इनको बहुत आश्चर्य भयो जो ये तो हम कों पह
चानत हैं और हम तो कबहूं देखे नाहीं और श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें फेरि पूछो जो श्री ठाकु
र जी के दर्शन कर आये तब इन दोउनें कह्यो जो
महाराज नाहीं किये तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें आज्ञा दीनी जो जाय कें दर्शन करी आवो
तब ये दोऊ भाई दर्शन कों गये नहां देखें तो श्री
आचार्य जी महा प्रभू जगन्नाथ राय जी के पास खड़े
हैं तब इनकों आश्चर्य भयो जो यह कहा हमनें
इनकों अबही घर देखि आये हते तब मन में फिर
जानी जो दूसरी थार होयगी तहां होयकें आये हों
गे फेरि मन में सन्देह भयो पाछें दर्शन करिकें आ
ये तब देखें तो श्री आचार्य जी महा प्रभू बैठे हैं तब
आय कें दंडोत करिकें बैठे तब दोऊ भाई विस्मय

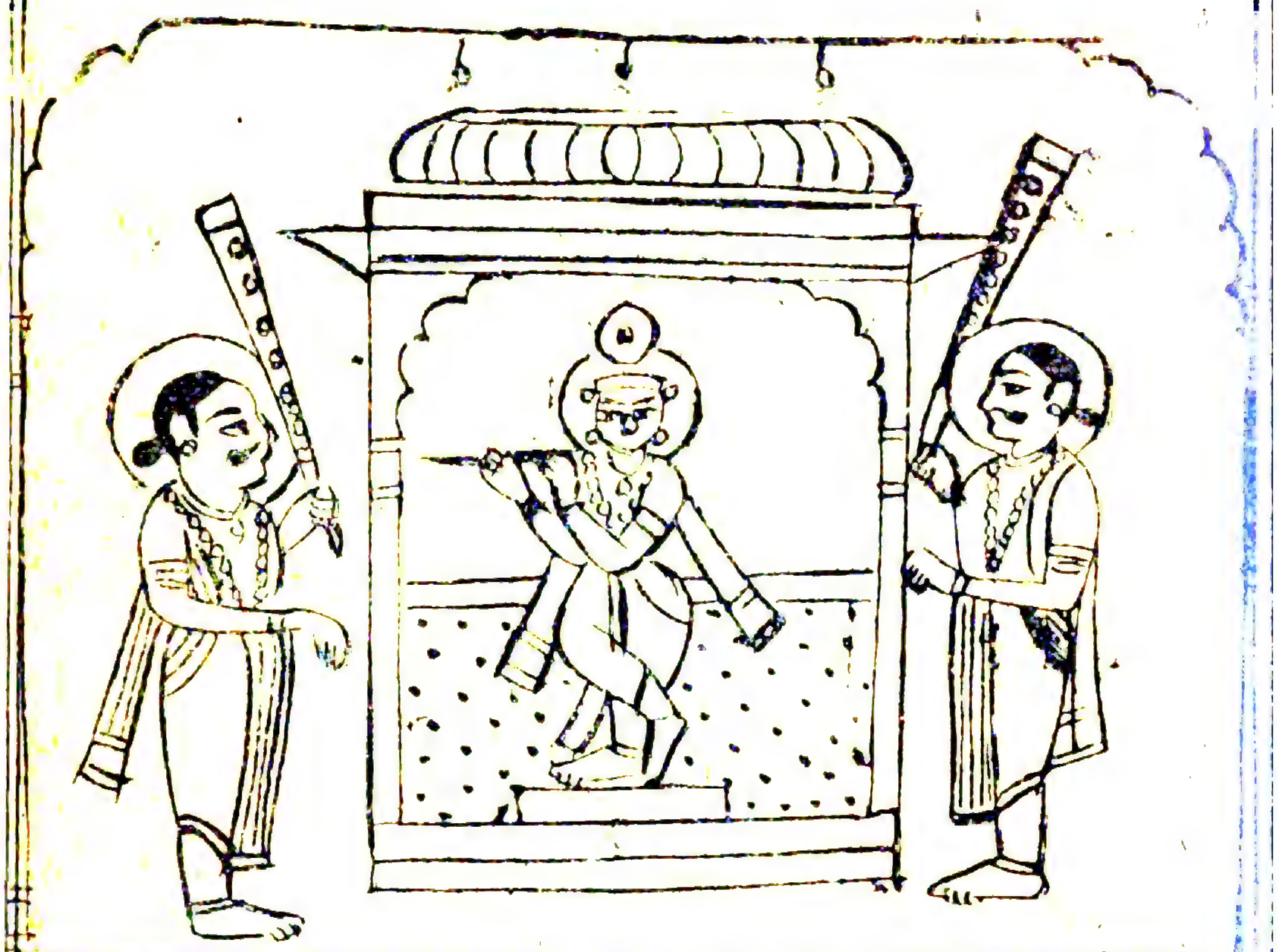

भये आपस में मोहंडो देखन लागे चकृत होय रहे
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछो जो दर्शन
कीर आये पीर जो तुम्हारे मन में सन्देह आयो
हतो सो निवर्त भयो तब इन दोउ भाई ने कह्यो
जो सन्देह तो निवर्त भयो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने कह्यो जो तुम्हारी माता ने भेट मो
हन पठाई हैं सो लावो तब नाठी मेते मोहर क
दि कें आगे धरी पाछें नाम निवेदन करवायो
अपनो महात्म इन दोउ भाईन कों आपने जैसो
दिखायो सो स्वरूप धारि भई ना पाछें वहांनि
तेनक दिन रहि कें आज्ञा मांगि के चले सो मार्ग
में श्री आचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप कों वि

चार करत जाय ऐसें करत अपने घर आय पहुंचे
सब माता सों सब समाचार कहे तब माता बहुत प्र
सन्न भई पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून का कृपा
ते भरे भगवदीय भए ताते इनकी वार्ता अब कहां
तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक नरहर जोसी जाम्नो
य जोसी के बड़े भाई ।
तिनकी वार्ता ।
लिख्यते ॥

सो एक समय नरहर जोसी पुरुषोत्तम क्षेत्र श्रीज
गन्नाथ राय जी के दर्शन को चले सो महा मजल जा
य उतरे तब स्नान करिकें रसोई करी श्री ठाकुर जी
कों भोग समर्प्यो तब देखें सो एक बालक वाय दस
को एक स्तव ऊपर ने उतर कें आय ठाड़ो भयो तब
वा बालक कों देखि कें नरहर जोसी को आश्चर्य भ
यो जो यहां यह लरिका कहां ते आयो तब वह ल
रिका नरहर जोसी के आगें हाथ पसार कें मांगन लो
ग्यो तब नरहर जोसी ने अपने मन में विचारयो जो य
ह सुन्दर लरिका मेरे आगें काहे कों हाथ पसारे
तब नरहर जोसी नें दै रोटी घी में चुपोरि कें तिनके
ऊपर दार धरि कें बालक के हाथ में दीनी तब वह
बालक थाली के स्तव ऊपर चढ़ि गयो पाछें फेरि न
रहर जोसी देखे तो वह बालक नाहीं तब दूसरे दि

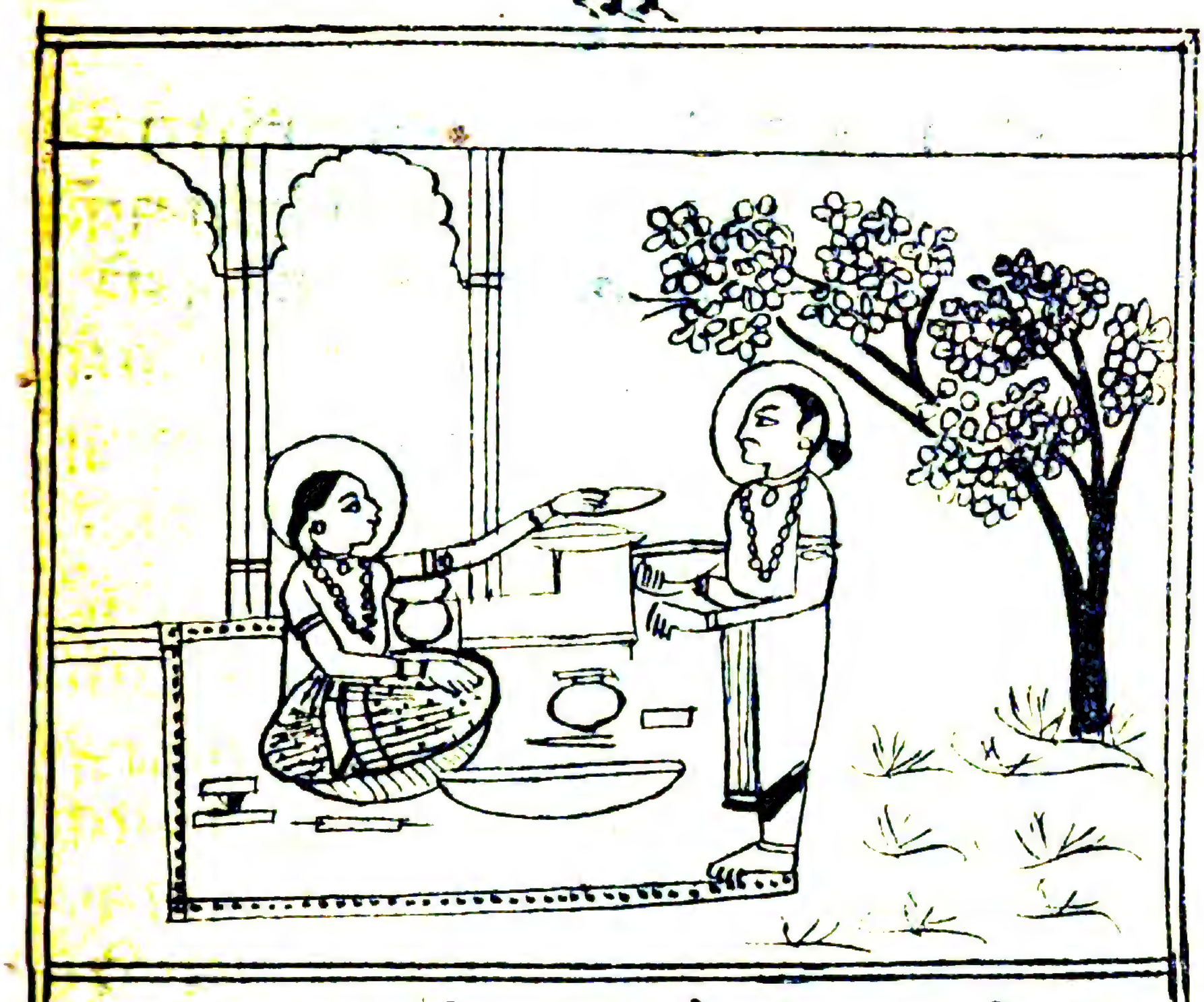

नभजल जाय उतरे स्नान करि श्री ठाकुर जी कों
भोग समर्प्यो तब तैसें ही वह बालक इमली के रू
ख ऊपर ते उतर कें आयो और तैसें हीं हाथ पसा
रयो तब नरहर जोसी कों और सन्देह भयो जो कोउ
छलि वे कों आयो होय तो कैसें देउं और जो भाव
द स्वरूप होय तो प्रसादी महा प्रसाद कैसें देंउ त
ब यह सन्देह करि कें वा बालक कों कछू न दीनो
तब वह बालक रूख ऊपर चढ़ि गयो पाछें नरहर
जोसी नें महा प्रसाद लीयो सो यह बात विठ्ठल
में जगन्नाथ जोसी सों श्री ठाकुर जी ने कही जो
आज में नरहर जोसी के पास गयो हो तहां में हाथ
पसार कें मारयो परि मोकों कछू न दीयो तब जग
न्ना थ जोसी ने वह दिन वह महीना वह सम्वत्

हवार लिखि राख्यो जो नरहर जोसी आवेंगो तब पूछेंगे तब कितनेक दिन पाछें नरहर जोसी अपने घर आये तब माता सों भाई सों मिले पाछें दूसरे दिन दोऊ भाई सेवा में हाजर तब जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे जो नीके हैं पाछें जगान्नाथ जोसी ने नरहर जोसी सों कह्यो जो अमुके सम्वत में अमुक महीना में अमुकी तिथि में अमुके वार पटना ते आगें पेंडे में मजल उतरे तब रसोई करिकें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो नहीं कोऊ बालक हाथ पसारत देख्यो तब नरहर जोसी ने कह्यो जो एक दिन तौ में सुन्दर बालक देख कें दै रोटी घी सों चुपरि ता ऊपर दार धरिकें दीनी और दूसरे दिन तो मोको सन्देह भयो जो कोऊ छलिवे कों आयो होय तो कैसें दउ ताते न दीनी तब जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो तुमने बुरी कीनी जान दीनी वेतो श्री ठाकुरजी आप हुते और जब आपन दोऊ भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों गये हुते तब हमारी माता नें मोहन भेंट पठाई हुती सो आपन सन्देह करि गरवी हुती तब आप श्री आचार्यजी महाप्रभून ने मांग लीनी तातें अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभून विना श्रीठाकुर जी विना और सन्देह न करनों अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभू के बल प्रताप ते उन विना कछू न संभवे तब दोऊ भाईन के मन में यह निश्चय भयो ॥ +

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

श्रीद्वारकसमयनरहर जोसी कों जिजिमानश्र लियान गाव में रहतो ताकों नाम महीधर जी हुतो तथा ताकी बहन कों नाम फूलवाई हुतो तिनसो नरहर जोसी ने कह्योजो तुम श्री गुसांईजी के पास नाम पावो वैष्नव होउ तब उन कह्योजो भलें श्र वश्य तुम श्री गुसांईजी कों पधरावो तब नरहरजो सी आगें आय कें श्री गुसांईजी कों पधराय कें श्र लियान में गये तब महीधरजी तथा फूलवाई सों कह्यो जो श्रीगुसांईजी पधारे हैं तब दोउ भा ई बहन अत्यंत प्रसन्न भए तब महीधरजी ने न रहरजोसी सों कह्यो जो में श्री गुसांईजी को खाली

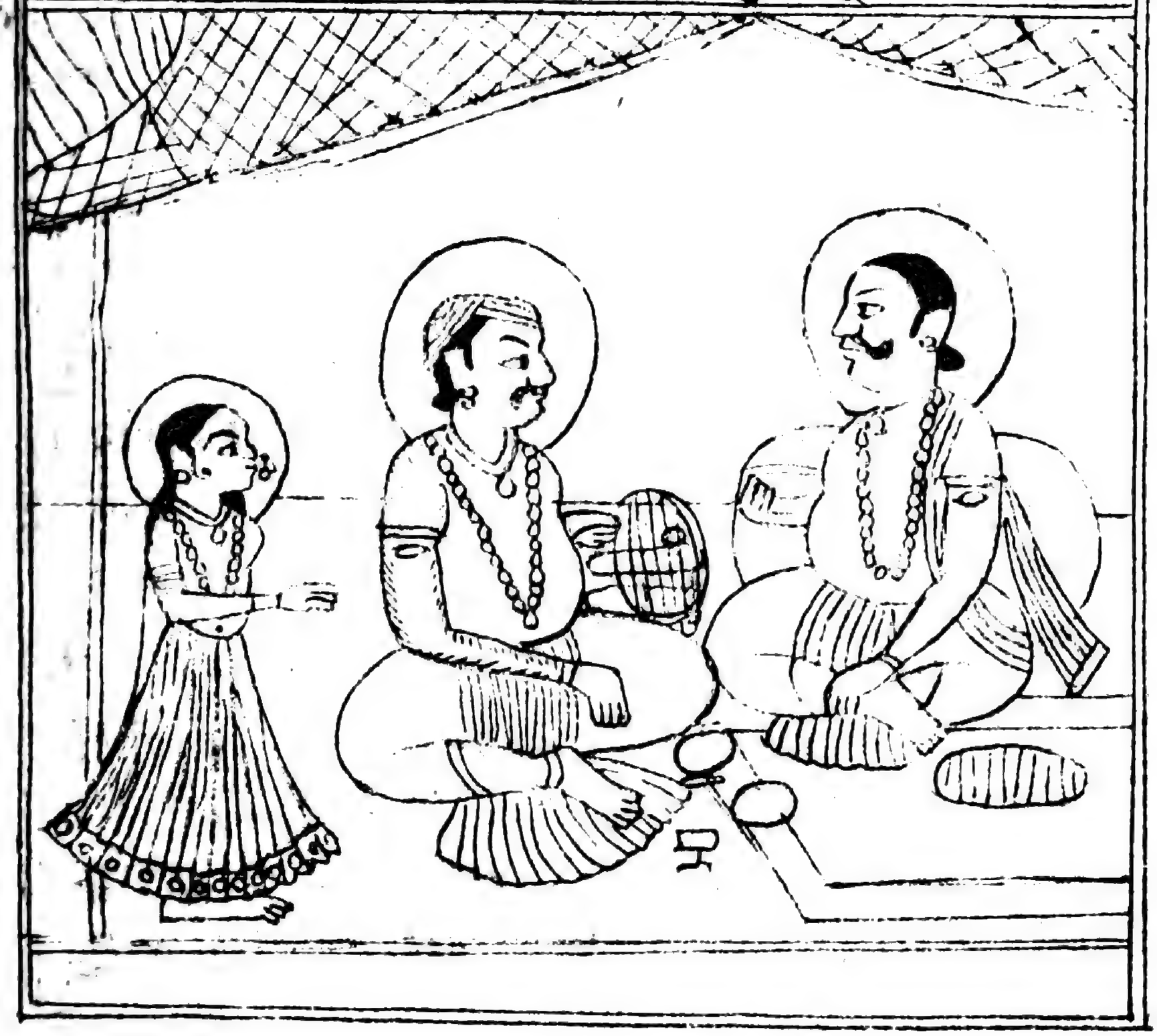

हाथन कैसें पधराऊं तब मद्दी धा जीने नरहर जोसी
सों रुपैया मोहरन की खीचरी करवाय कें न्योंछावर
करि कें श्री गुसांई जी कों अपने घर में पधराय त
पाछें मद्दी धर जी फूलवाई तथा सब वाल गोपा
ल सब कुटुम्ब कों श्री गुसांई जी के पास नाम दि
वायो निवेदन कर वायो और भली भांति सों श्री
गुसांई जी की सेवा करि कें विदा किए पाछें श्री
गुसांई जी द्वारिका कों पधारे तब नरहर जोसी खि
रालू अपने घर आये ता पाछें कितनेक दिन में
वा अलियान गांव में आगि लगी ता समय नर
हर जोसी खिरालू के तालाव के ऊपर ते नित्य
कर्म करिकें तुलसी फूल की डारी तथा झारी
हाथ में लैकें घर आवत हुते ता समय नरहर जो
सी के मन में आई जो अलियान गाम में आग लगी
तब नरहर जोसी पेंडें ठाढ़े होय कें तुलसी दल बीच
में धरि कें झारी में ते जल लेकें अंजुली सों तुलसी द
ल के पास पानी की धारा करके कुंडलिया कीनी इतने
ही में अलियान में आग बुझी और मद्दी धर जी की हवेली
घर सब बच्यो ता पाछें कितनेक दिन में नरहर जो
सी अलियान में गए तब फूलवाई ने नरहर जोसी
सों कह्यो जो यहां आगि को उपद्रव बहुत भयो है सो
श्री गुसांई जी की कृपा ते अपने तो कल्याण भ
यो तब नरहर जोसी ने कह्यो जो प्रभून की कृपा
ते सदा कल्याण ही होय इतनो कहि कें नरहर
जोसी खिरालू आये तब महाप्रसाद लीयो पाछें

दोऊ भाई एकांत बैठे तब नरहर जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो मैं एक दिन नित्य कर्म कर कें तालाव के ऊपर ते आवतहुतो तुलसी फूल कीडा रीतथा झारी मेरे हाथ में हुती और अलियानगां व में आगि लगी सो वात कही तब नरहर जोसी सों जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो आपुन कों इतनों हट। कीयो न चाहिये जो श्री ठाकुर जी कों श्रम करवायो यह अपने मार्ग की रीति नांही तब नरहर जोसी ने क ह्यो जो मैंतो हठ नाहीं कीयो परि मेरे मन में ऐसी आयी जो ये अवही वैष्नव भए हैं और आगि लगी ताते मैनें ऐसो कीयो तब दोउ भाई हंसि मुसिक्याय चुप कर रहे पाछें कह्यो जो प्रभू वड़े की वुकी हैं इनकी कृपा ते सब भलो होय आपन हठ न कीजै यह अपनों धर्म नाहीं ताते श्री वल्लभ राज कुमार की अद्भुत लीला है सरणा आये तिनकों अतिही कल्याण होय सो वे नरहर जोसी तथा ज गन्नाथ जोसी तथा इनकी माता ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे जो परमार्थ के लिये ऐसें कीयो ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहां तांई लि खिये ॥ + ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्नव ॥३२॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक गणाव्यास साचोरा। ब्राह्मण गोधरा के वासी तिनकी वार्ता लि०॥

सोजगान्नाथ जोसी ने प्रथम राणाव्यास पास नाम
पायेंहुतो फिर श्री आचार्य जी महाप्रभून पास नाम
पायेो परि जगान्नाथ जोसी राणाव्यास के पास बहुत
रहते सो एक समय राणाव्यास भगवद इच्छा ते गा
धरा की वेस्या नें इनसों संग कीयेो सो वात राजद्वार
में सुनी तव हाकिम के प्यादे राणाव्यास कों लेन आ
ये तव जगान्नाथ जोसी ने राणाव्यास कों और गांम
में करदीनों पाछें जगान्नाथ जोसी तहां अकेले रहे
और वे प्यादे आये हुते सो राणाव्यास कों ढूंढन
लागे तव जगान्नाथ जोसी नें कह्यो जो राणाव्यास
तो इहां नाहीं चलो हो उत्तर देउंगो तव जगान्नाथ जो
सी कों लायकें हाकिम के आगे ठाड़ो कीयेो तव
हाकिम ने कह्यो जो राणाव्यास कहां है उननें पराई
स्त्री सों अन्याव कीयेो है तातें वाकों लावो और
मेंतो जगान्नाथ जोसी कों नीकें जानत हो जो जाकों
नाम जगान्नाथ जोसी सों कवहूं अन्याव न करै यह
तो राणाव्यास नें अन्याव कीयेो है ताते उनकों ला
उ तव जगान्नाथ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही सुनों
तो में कहूं तव हाकिम ने कह्यो जो कहो तव जग
न्नाथ जोसी ने कह्यो जो राणाव्यास ने अन्याव
नाहीं कीयेो राणाव्यास ऐसो काम कवहूं न करै
तव हाकिम ने कह्यो जो क्यों जानियेे तव जगान्ना
थ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही मानों तो में कहूं जो
राणाव्यास के वदले जो कछु कहो सो में करूंत
व हाकिम ने एक पैया को मुगदर मगायेो सो अ

ग्नि में मेलि कें तातो कीयो तव जगन्नाथजोसी स्ना
नकरिकें आयो तव जगन्नाथजोसी नेठाडो होय
कें कह्यो जो राणाव्यास नें अन्याय कीयो होयतो
मोकों अग्निजराय के भस्म करि डारियो और नाही
अन्याय कियो होयतो मुगदल शीतल होयजइ
यो पाछें वह मुगदल अग्नि मेंसे काढ़ि कें दीउ हा
थन मों उठाय अपने गरे में मल्यो सो घड़ी१ लों
राख्यो सब जने बोले जो जोसी तू काढ़ि तव जगन्ना
थ जोसी ने कह्यो जोहूं काढ़ि कें कौन के गरे में डारूं
तव हाकिम नें कह्यो जो मेरे गरे में डारो पाछें जोसी
ने भूमि में डार दीनों तव भूमि जरगई तव सब जने
कहन लागे जो जगन्नाथजोसी तुम धन्य हो तुम
सांचे हो तुमकों तुम्हारे धनी को अैसो सांच है यों
कहिकें जगन्नाथजोसी को समाधान करिकें क
ह्यो जोसी तुम कछू मांगो मैं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों जो
जोसी ने कह्यो जोइतनों मांगत हों जो जानें यह चु
गली करी है तासों कछू मति कहियों तव यह सु
निकें हाकिम तथा सब जने वहुत प्रसन्न भये पाछें
जगन्नाथ जोसी अपने घर आये वे अैसे भगवदी
यहे जो श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते कहा
न होय ॥ ÷ ॥÷

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

और पाहले राणाव्यास नें माधोदास सारस्वत
के पास नाम पायो हुतो पाछें श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक भये तव परम वैष्णव भये सो वे राणा

व्यास सिद्धपुर में रहते सो रणाव्यास और जगन्ना
थजोसी सरस्वती में स्नान करतहुते ता समय ए-
क रजपूतानी सती होयवे कों आई तव रणाव्या
स के पास जगन्नाथ जोसी हुते तिनने पूछो जो सती
होत है ताको प्रकार कहा तव रणाव्यासनें कहो
जो प्रेत के संग दृथा ऐसो शरीर जरावत हैं जो रा-
णाव्यास नें मूंड हिलाय के कह्यो जो वह रजपूतानी
सती होन आई हुती ताने देख्यो तव वा रजपूतानी
नें क्षाय के मनुष्यन सों कह्यो जो हूं तो न जरूंगी
मोकों सत नाही है तातें मेरी हत्या चढ़ेगी ऐसें क-
हि कें बहुत हसिं दीनी और जरी नाहीं तव वे लोग
वा मृतक कों जराय कें वा स्त्री कों गांम के वाहिर
झोंपरी करि दीनी तव स्त्री उहां रही ता पाछें रणा
व्यास न्हायवे कों आये तव वा स्त्री ने रणाव्यास
सों आय कें पूछो जो तुमने मूंड हलाय के कहावा
त कही ता वात के देखतें हीं न जरी ताते मोसों क
ह वात कहो तव रणाव्यास नें कह्यो जो हम तो
आपुस में हंसत वात करत हुते तव स्त्री ने कह्यो
जो हमसों काहे कों दुरावत हो जो वात होय सो क
हो और बहुत आग्रह कीयो तव रणाव्यास ने क-
ह्यो जो हम आपस में हंसत हुते जो यह ऐसी उत्त
म देह पाय के नाहक प्रेत के साथ जरावत है यातें
हमें श्रीठाकुर जी की सेवा न कीनी न भजन कीयो
ऐसी उतम देह धरि कें श्री ठाकुर जी कों न भज्यो
तव वा स्त्री ने रणाव्यास सों कह्यो जो हूं तो तुम्हा-

रीपारणाहों जो जा भांति यह देह श्रीठाकुरजी के
काम आवै सो करौ तब यह बात सुनिके राणा
व्यास ने कह्यो जो अबतौ तोकों सूतक है सूतक उ
तरेगो तब होयगो तब स्त्री अपने स्थल कों गई प
रिवाकों बहुत विरह उत्पन्न भयो जो दिन प्रति दि
न आवे सो राणाव्यास कों दर्शन करि जाय ऐसें क
रत सूतक उतस्यो तब सुद्ध होय कें राणाव्यास के
प्रास आई तब राणाव्यास ने कही जो तू सवा रह्या
इयो सो वा स्त्री ने वादिन कछू खायो नाही पहिलें
चनाचवाय कें रहती सो वादिन वा स्त्री ने जल पान
हूं नाहीं कीयो पाछें प्रातःकाल भयो तब राणा
व्यास के आयवे कौ समो भयो तब आय के बैठि र
ही तब राणाव्यास आये और स्नान करिकें भागवद
स्मरण कीयो तब वा स्त्री सों कह्यो जो तू स्नान क
रिकें बैठि रही पाछें राणाव्यास ने श्री आचार्यजी
महाप्रभून कौ ध्यान धरिकें वाके कान में नाम सु
नायो तब नाम सुनतही वा स्त्री कों भागवद भाव
उत्पन्न भयो तब वा स्त्री नें राणाव्यास सों पूछ्यो जो
अब में कहा करूं तब राणाव्यास ने कह्यो जो आ
ज भागवद सेवा करि तब वा स्त्री ने कह्यो जो मेरी
स्थित तौ ऐसी है जो तुम कछू टहल देउ सो में क
रूं पाछें राणाव्यास उपरना परदनी धोयवे कों
देते सो धोयकें सिद्ध करिकें पहुंचावती प्रसाद
राणाव्यास के घर लेती ऐसें करत राणाव्यास के
घर कौ काम काज सब करन लागी पाछें भागवद

सेवाको सब काज काम करन लागी सो कितनेक दिन पाछें रणछो
व्यास के घर श्री आचार्यजी महाप्रभू पधारे तब रणछोव्यास
नें वा स्त्रीकों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नाम निवेदन
करवायो तब वह स्त्री परम वैष्णव भई सो रणछोव्यास श्री
आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम भगवदीय हे ताते
इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग । २ । वैष्णव ॥ ३३ ॥

श्रव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक रामदास सारस्व त ब्राह्मण राजनगर में रहते तिन की वार्ता

सो रामदासजी के मांथे नटवर गोपालजी श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें और अपनी पादुकाजी सेवाके लिये पध
राय दीनी सो सेवा सदैव करें ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे
सो रामदास विवाह करिकें पृथ्वी परिक्रमा कों चले सो।
कितनेक दिन में पृथ्वी परिक्रमा करिकें अपने घर
आये परि राम दास स्त्री कों अंगीकार न करते तब दि
न हे तथा चारि रहिकें द्वारिका कों चले तब रामदास
की स्त्रीहू साथ चली परि राम दास स्त्रीको साथ न
आवन देहि ईटन सों मारें परि रामदास की स्त्री तो दूर
दूर साथही भई और राम दास के दास की पाता में झूठ
न उवरे सो खाय नाहीं भूखी ही परि रहे परंतु पति के साथ
साथही रहे तब एक दिन श्री रणछोड़ जीनें रामदास सों
कही जो तू अपनी स्त्रीकों अंगीकार करि त्याग काहेको

करतहे तव रामदास नें कही जो में विरक्त हों वैरागी
हों मेरो स्त्री सों कहा काम हे तव श्री गणछोड़ जी नें
कह्यो जो तेने विवाह काहे कों कियो जोतू श्री आचार्य
जी महा प्रभून को सेवक हे तोकों ऐसी निठुरता न चाहिए
ये जो श्री आचार्य जी महा प्रभून को सेवक जानि कछू क
हत नाहीं अब हों कहत हों तू अपनी स्त्री कों संगी
कार करि तव रामदास नें अपनी स्त्री सों कह्यो जो
तू मेरे साथ चली आउ तव मार्ग में रामदास के सा
थ जान लागी तव मजल जाय उतरे तव रामदास नें
अपनी स्त्री सों कही जो तू वस्त्र साज लेकें डेरा में
बैठी रहियो और में ऊपरा वीनि लाउं पाछें आय

लानकीरि रसोई करी श्रीठाकुर जी कों भोगसम
र्प्यो भोग सराय पाछें प्रसाद लीयो और स्त्री कों
प्रसाद दियो सो कितनेक दिन मार्ग में चले आये
पाछें एक दिन श्री गणाछोड जीनें रामदास कों आ
ज्ञा दीनी जो तू अपनी स्त्री कों नाम दे तब रामदास
ने कह्यो जो हूं नाम कैसें देउं तब श्री गणाछोड जी
ने कह्यो जो तू नाम दे मेरी आज्ञा है तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून कों नाम लै श्री गणाछोड जी की आ
ज्ञा ते स्त्री कों नाम दीयो तब स्त्री के हाथ को म
हाप्रसाद लेन लाग्यो पाछें कितने क दिन में श्री
आचार्य जी महाप्रभू गुज नगर पधारे तब रामद
सनें आयकें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन
कीये तब रामदास ने कह्यो जो महाराज मेरी स्त्री
कों नाम समर्पण करवाइये तब आपने कह्यो जो
अबतो नेनें नाम दीयो है फेरि कहा तब रामदासने
कह्यो जो महाराज मैंतो श्री गणाछोड जी की आज्ञा
ते नाम दीयो है और मोकों श्री गणाछोड जी की आ
ज्ञा है जो श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नामनि
वेदन करवाइयो तबयह सुनि कें श्री आचार्यजी
महाप्रभूनें नाम निवेदन करवायो पाछें घर आ
य गृहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्री आचा
र्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीयहे
तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३४॥

कृपा श्री आचार्य जी महाप्रभू

नके सेवक गोविंद दुवे सांचौरा ब्राह्मण ति नकी वार्ता ॥

सो गोविंद दुवे श्री ठाकुरजीकी सेवा नीकीभां तिसों करें परि मन में विग्रह हुतो तब गोविंद दुवे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून कों वीनती पत्र लिख पठायो जो महाराज मेरे मनमैं विग्रह बहुत रहतहै तातें मैं कहा करूं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने नवरत्न ग्रंथ प्रगट करि गोविंद दुवे कों लिख पठायो और पत्र में लिख्यो जो यामनथ को पाठ तू नित्य करियो सो तेरी विग्रहता सब मिट जायगी सो छपापत्र आयो तब गोविंद दुवे नव रत्न को पाठ करन लागो सो पाठ करत गोविंद दुवे की सब विग्रहता मिट गई तब श्री ठाकुरजीकी सेवा नीकी भांति सों करन लागे ॥

वार्ता प्रसंग १

और एक समें गोविंद दुवे मीरा बाईके घर हुते तहां मीराबाई सों भगवद वार्ता करत अटके तब श्री आचार्य जी ने सुनी जो गोविंद दुवे मीराबाई के घर उतरे हैं सो अटके हैं तब श्री गुसांई जी ने एक श्लोक लिखि पठायो सो एक व्रजवासी के हाथ पठायो तब वह व्रजवासी चल्यो सो वहां जाय पहुंचो ता समय गोविंद दुवे संध्या वन्दन करतहुते तब व्रजवासी नें आय के वह पत्र दीनों सो पत्र वांचि कें गोविंद दुवे तत्काल उठे तब मीराबाई

वहुत समाधान की यो परि गोविंद दवे नें फिर पाछें नदेख्यो ॥१॥

वार्ताप्रसंग २

और एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आप द्वारि का पधारे तव गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी और पांच सात वेस्नव हुते सो आप के साथ हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभून सों द्वारिका में वीनती कीनी जो महाराज क छू कथा कहिये तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें गोवि द दुवे सों कह्यो जो अवही तो मोकों अवकाश नाहीं तव गोविंद दुवे नें वीनती कीनी जो महाराज योगी सी कहिये तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कथा कहिवे कों पोर्या

खोलीतव इतने में गोविंद दुवे सों श्री रणछोड़ जी वा तें करन लागे तव आपनें गोविंद दुवे सों कह्योजोपो थीखुलाय कें वातें कौंन सों करत हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें फिर देख्यो जो श्री रण छोड जी सों वातें करत है तव आपनें पोथी वांधी और फिर आपर पोढे ॥२॥

वार्तिप्रसंग ३

और सव वैष्णव श्री आचार्यजी महा प्रभून के यार कौ म प्रशाद पावते तव एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभूननें खवास सों कह्यो जो तुम इन वैष्णवन कौं यार कौ महा प्रशाद मति देउ सो ता दिन श्री आचार्यजी महा प्रभू भोजन करि कें उठे हुते सो उठतही खवास नें यार छूय कें मांजि धसो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून के यार कौ महाप्रशाद न मिल्यो सो तादि नि सव वैष्णवन नें उपवास कियो तव श्री रण छो डजी नें श्री आचार्यजी महा प्रभून सों कह्यो जो तुम इन वैष्णवन कौं यार नित्य देत हो तैसें इनकों नि त्य दीजियो तव दूसरे दिन श्री आचार्यजी महा प्र भून नें गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो तुम नें काल्हि महा प्रसाद कों नहीं लीनों भूखे काहे कों रहे तव गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों वीनती करि कें कह्यो जो महाराज काल्हि आप के यार कौ महा प्रशाद न मिल्यो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तुमकों अपने यार कौ महाप्र

साद तो न देतो परि तुम्हारी सिपारस बड़ी ठौर नैं भ
ई है तातें अब देनो पस्यौ पाछें जो नित्य थार को
महाप्रसाद देत हुते तैसेंही दैनें लागे तब ये वैष्ण
व प्रसन्न होय कें रसोई करन लागे तब तहां तो
ई श्री आचार्य जी महाप्रभू द्वारिका में विराजे
तहां तांई वैष्णव पास रहे पाछें श्री आचार्यजी
महाप्रभू श्री रणछोड़ जी सों बिदा होय कें अडेल
कों पधारे तब सब वैष्णव श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सा थ आए सो श्री आचार्यजी महा
प्रभून कों अड़ेल में पहुंचाय कें फेर अपने अप
ने घर आये पाछें श्री ठाकुर जीकी सेवा करन
लागे सोइ गोविंद दुवे श्री आचार्यजी महाप्र
भून के ऐसे परम कृपापात्र भागवदीय हैं तातें
इन की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता ॥४॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक राजा दुवे भाई।

दुवे दोऊ भाई सांचौरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो नागाम में दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मण और
रहते सो एक को नाम हरिकृष्ण हतो और एक
को नाम राम कृष्ण हतो सो बड़ो भाई रामकृष्ण
पढ़ो बहुत हुतो और छोटो भाई मूरख हुतो सो
सब बड़ो जो पढ़ो हुतो सो गांम के चौंतरा ऊपर

बैठि कें पटेल के आगें कया कहतो और छोटो भाई
मूरखहुतो सो खेती की रखवारी करतो सब टहल क
रतो सो वह बड़ो भाई कछू काम गयोहुतो दूसरे गां
म में सो तादिन इहां की कथा रहगई पाछें एकदिन
मेह की वर्षा बहुत भई सो वह छोटो भाई खेततेउठि
कें घर आयो तब भावज नें कह्यो जो तुम रोटी जे
लेउ तब बादेवर नें कह्यो जो सीत बहुत लागतहै
और में बहुत भीज्योहूं लातेतू तातो परोसे तो मेंजे
ऊं तब भावज नें कह्यो जो तू खाय तो खानातर
में जाय कें सोय रहतहूं अब तू कहा गांम केचौंतरा
ऊपर बैठि के पटेल के आगे कया कहेगो के बादे
की गरास फरेगो लाते खानो होय तो खा नातरहूं
तौजाय कें पड़ि रहूंगी और जैसो है तैसो खानात
र कहूं उठि जा तब बादेवर के मन में बहुत दुख
लाग्यो और अपने मन में विचारयो जोहूं या देश
को त्याग करूं कहूं निकस जाऊं ता पाछें घर में
ते निकस कें मन में विचार करन लाग्यो जो राजे
दवे माधोदवे बड़े महापुरुष हैं ताते इनकोंनमस्का
र करि कें जाऊं पाछें तहां गयो तब राजा दवे माधो
दवे दोऊ माईन को नमस्कार कीयो और रोवन ला
ग्यो तब दवे जीने पूछो जोतू कौंन हैं पाछें देखि कें
पहिचान्यो तब वासों कह्यो जोतू तो अमुके को
बेटा है हरिरुस्म तेरो नाम है और तू हमारा जाति
को है सो तोकों अैसो कहा दुख है तामों तू रोवत
है तबपाने कह्यो जो मेरे दुख को पार नाहीं तब

दुवेजीने कह्यो जो तू अपनों दुख काहि तोकों क
हा दुख है तब यामें कह्यो जो तुम मेरो दुख को दूर
करो तो मैं कहूं तुम बड़े हो महापुरुष हो तब दुवे
जी ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी बड़े हैं वे सेवक को दु
ख दूर करेंगे तू अपनों दुख काहि तब याने सब
समाचार कहे जो मोकों भावज नें ऐसे ऐसें व
चन कहे हैं सो मेरे हृदय में खटकत हैं ताते तुम्हा
पास आयो हूं सो मेरो दुख तुम से दूर होयगो पाछें दु
वे जीनें वाकों समाधान कीयो समाधान करि
के वाकों महा प्रसाद लिवायो पाछें रात्रि कों सो
य रह्यो तब प्रातःकाल भयो तब वासों दुवे जी नें
कह्यो जो तू स्नान करि आउ तब वह जाय के स्ने
न करि स्नान कर के आयो तब माधौदुवे सों
राजा दुवे ने कह्यो जो अब कहा करिये तुमहीं
जानों तुम्हारी जीभ चली है जो तुम करोगे नाहीं
तो कैसें छूटोगे झाड़ लग्यो है तब माधौदुवेनें कह्यो
जो अब तौ तुम्हारी शरण आयो है तुम श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के सेवक हो अब तौ याके
कार्य कीयो चाहिये तब पहिले तौ याको क्षौर
करवायो पाछें स्नान करवाय कें मन्दिर के द्वार
के आगें बैठायो तब माधौदुवे ने राजा दुवे सों
कह्यो जो अब याको कहनों होय सो कहो तब
राजा दुवे ने माधौ दुवे सों कह्यो जो तुम्हारो यह क
महै मेरो काम नाहीं ताते तुमहीं कहो तब माधौ
दुवे ने राजा दुवे सों कह्यो जो तुम बड़े हो ताते

तुमहीं कहो तब राजादवे ने माधोदवे सों कह्यो
जो मेरी आज्ञा है नाते तुमहीं कहो तब माधोद
वे ने वाकूं उपदेश दीयो अष्टाक्षर मंत्र कान में
कह्यो पाछें वाकूं अष्टोत्तर सत नाम को जप कर
वायो सो जप कीयो सो राक एक माला जप की
ये पाछें संस्कृत बोलन लाग्यो तब माधोदवे ने
राजा दवे सों हँसि कें कह्यो जो अब आज्ञा होय तो
एक वार याकों फेरि जप करवाइये तब राजाद
वे ने माधोदवे सों कह्यो जो अबपुन करवाइये
पाछें माधोदवे ने दूसरी वार जप करवायो तब
भगवद स्वरूप स्फुर्द भयो और पुराण दृनिहा
स में ज्ञान भयो तब माधोदवे नें राजा दवे सों
कह्यो हसि के कह्यो जो आज्ञा होय तो अब फेर
याकों जप करिवाइये तब राजा दवे नें माधोद
वे सों कह्यो जो अब यह दूतने ही को पात्र है अ-
धिक समाय नाहीं और कह्यो जो तुम कछु मन
में मति लाइयो जो हमते भयो है तातें यह कछू भ-
यो है से श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपा ते भ-
यो है तुमारो तुम्हारो स्वरूप तो वे जानत हैं पाछें ज्ञा ने
उहां ई प्रसाद लीयो पाछें दवे जी की आज्ञा मांगि कें
अपने गांम के चौतरा ऊपर जाय बैठो और कथा क
हन लाग्यो पहलें बडो भाई कथा कहतो सो वह गां
व गरो जानि कें कोई न आवतो सो वा दिन जहं तेवा
को सेक आयो ताने कथा कहत देख्यो तब वाने
गांम के पटैल सों आय कह्यो जो तुम कथा सुनवे

कों क्यों न गए भट्ट जी तो कथा काहि कहें तब पटेल ने
य के देवे तो भट्ट जी कहा कथा रहे है तब पटेल नें
कह्यो जो भट्ट जी अबतांई तुम कथा कहन कों नाहिं
आए तब भट्ट जी नें कह्यो जो पहिले बड़े भाई कथा
कहते ताते मैं नाहीं आवतो अबवे और गाम गए हैं
ताते मैं कथा कहिवे कों अब आयो हूं तब वे भाव
इच्छा ते भट्ट जी भली भांति कथा कहन लाग्यो ता
सब कोउ बहुत प्रसन्न भए और सब कोउ कहन
लागे जो हमारो बड़ो भाग्य है जो अब के ऐसो ब्रा
ह्मण मिल्यो तब कितने क दिन में वह कथा सम्पू
र्ण भई तब सबनें मिलि कें भट्ट जी की पूजा करी
और कह्यो जो अबलों तुम हीं कथा कहिवो करो
कथा कों आड़यो पाछें यह ब्राह्मण माधोदवे के
पास आयो आय के बीनती करी जो तुमारी कृपा
ते मैंनें कही जो जाकी यह पूजा मिली है सो तुम
लेउ यह सब द्रव्य तुम्हारो है तुम मेरे गुरू हो तब
जादुंव माधोदवेनें वासों कह्यो जो हमारे और तुम्हारे
गुरु श्री आचार्यजी हैं ताने यह द्रव्य सब उनको
है हमारो यामें कछू नाहीं ताते यह द्रव्य सब अडेल
पहुंचावनो तब वा ब्राह्मण नें सब द्रव्य अडेल
पहुंचायो सो कित नेक दिन पाछें गमदास सांचौर
ब्राह्मण और जगन्नाथ जोशी ये वैस्नव श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल जात हैं तिन
के साथ वह द्रव्य अडेल पहुंचायदीयो सब कित
नेक दिन में वाको बड़ो भाई आयो वह गांव गयो

हुतो सो आयो तब यानें राजा दुवे मांधो दुवे सो क
ह्यो जो तुम आज्ञा देउ तो मेरे पिता को ग्राम है सो
फेरों तब दुवे जी ने कह्यो जो अब कहा कछु संदेह
है तूजा सब सिद्धि होयगी तब वह दुवे जी सों आ
ज्ञा लैकें ग्राम कों चल्यो सो जाय पहुंच्यो पाछें
वा राजा सों मिल्यो आशीर्वाद दीयो तब वह रज
पूत वा भट्ट कों देखिकें बहुत प्रसन्न भयो और क
ह्यो जो हमारो बड़ो भाग्य जो तुम कृपा करिकें आ
ये और कह्यो तुम डेरा करो तब उन डेरा कीयो पाछें
रसोई को सामिग्री चलती करी पाछें सब जने भट्ट
जी के पास आय बैठे तब भट्टजी नें एक श्लोक को
व्याख्यान करो तब वे सब जने बहुत प्रसन्न भये और
र कह्यो जो तुम पांच रात्र कृपा करिकें रहो.. पाछें तुम
ही विदा करेंगे ऐसें कहि कें वे तो अपने घर को
गये पाछें रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग सम
र्प्यो भोग सराय कें महा प्रसाद लीयो तब दूसरे दि
न सब मिलि कें विचार करन लागे जो भट्ट जी की
विदा कब करिये और कहा करिये और यह ग्रा
म्हण बहुत योग्य है और बहुत दिन में आयो है
तब उन सबन में एक वृद्ध हुतो तिन नें कह्यो जो
याकों १००५ मन तो अन्न देउ और एक मत याकों
मुद्रा देउ और याके पिता को ग्राम पुरातन भूमि है
सो एक १०० सो बीघा है सो याकों लिखि देउ -
इतनों लिखि देउ जो हम हूं ब्राह्मण गिने ते छूटें तब
सबन नें कह्यो जो यह ठीक बात कहे है सो याके

कह्यो सबन को करनों चाहिये पाछें सबनें मिल-
कें चौठी निमित्त दीनी और कह्यो जो याको अन्न
सिद्ध है सो ले जाउ तबभट्ट नें कह्यो जो यह सब-
अन्न मेरे घर पहुंचाओ तब वा अन्न को भोज भ-
रि दीने और कह्यो जो अपने साथ लिवाय लेना
उ और सबनें मिलिके वस्त्र दीने और गाय और
एक भैंस और सत मुद्रा इतनी याको दीयो और
कह्यो जो तुम इतनो घृति वर्ष आय कें ले जायो क
रो तब भट्ट जी सबन सों विदा होय कें अपने गांव
कूं चले सो गाम पहुंचे तब अपने द्वारे के आगे आ
य पुकार्यो और पुकार कह्यो जो मामो चिरंजी-
वी लेहो पटेल के चौतरा ऊपर कथा कहिकें गो

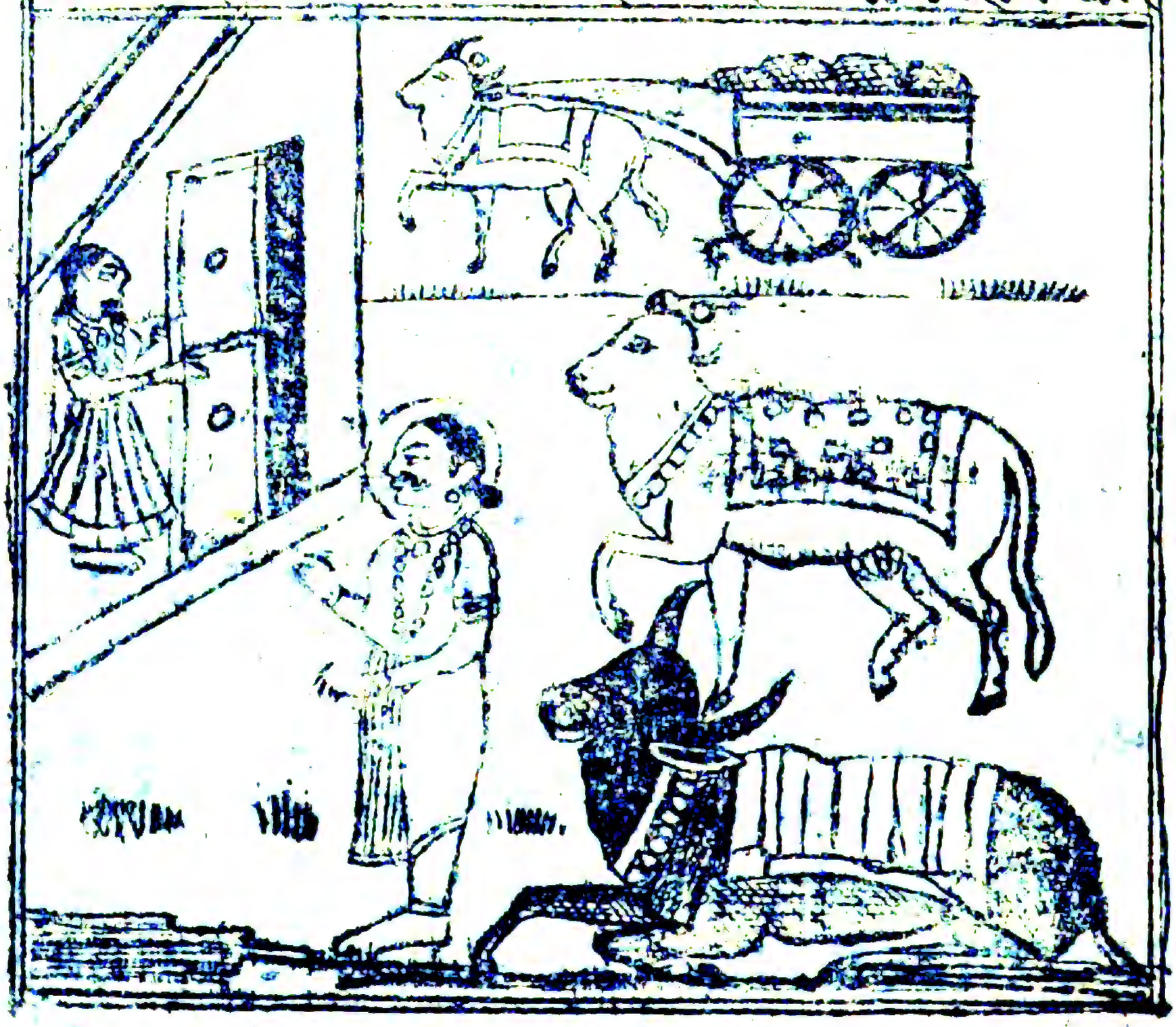

पिताकौं ग्रास फेरि कें आयो हौं ताते अब हारि खे
लि तब भाभी खेवाल कें देखें तौ देवर साचें ही ठाढ़ो
है तब देख कें बड़ो भाई उठि आयो तब देखे तौ छो
टे भाई के ऊपर भगवद तेज विराजत है तब वह बड़े
भाई डरयौ जो मति यह कछु मन में बुरी लावे तब
वह छोटो भाई भाभी के पाय लागयो और कह्यो-
जो तुम्हारे वचन ते मोकों श्री ठाकुरजी की कृपा भई
है तब वा के बड़े भाई नें कह्यो जो स्नान करो महाप्र
साद लेउ तब छोटे भाई ने कह्योजो मैंतो राजा दुवे
माधोदुवे कों नमस्कार कीये विना जलपान न क
रूंगो तब ताके बड़े भाई नें कह्यो जो यह कहा तब
छोटे भाई नें कह्योजो यह भयो है सो सब उन की
कृपा ते भयो है मोकों तो तुम नीकें जानत हो जैसो
हो तैसो तब बड़े भाई ने कह्यो जो में तुम्हारे साथ-
चलूंगो तब दोऊ भाई राजा दुवे माधौदुवे के घर
गये तब जाय कें बड़े भाई ने उन कों नमस्कार की
यो और छोटे ने दंडोत करी तब राजा दुवे ने माधो-
दुवे सों कह्यो जो तुम्हारो सेवक आयो है और य
ह प्रसंग याके बड़े भाई के आगें मति कहियो त
ब दुवे जी ने कह्यो आवो बैठो तब वे दोउ भाई वै
ठे ना पाछें दुवे जी सों छोटे भाई नें सब वार्ता निवे-
दन करी तब दुवे जी ने कह्यो जो तेरे ऊपर श्री आ
चार्यजी महाप्रभून को हाथ है ताते जैसो कोन
होय तब ताके बड़े भाई नें कह्यो जो हम तो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन नाहीं करे हम

ने तौ तुमदेखे हौ और जैसें याके ऊपर कृपा करकें
याकों कृतार्थ कीयौ है तैसें मोकूं हूं कृपा करकें कृ
तार्थ करौ तब वाकूं हूं दुवेजी ने कृतार्थ कीयो नाम
सुनायो पाछें दोऊ भाईन कों महाप्रसाद लिवायो
पाछें छोटे भाईनें दुवेजी सों कह्यो जो आज्ञा होय
तो अन्न औ मुद्रा गाय भैंसि कपड़ा उहासों जो ला
यौहौं सो आप के मन्दिर में आवै तब दुवेजी ने क
ह्यो जो तुम तौ जानत ही हौ जो या द्रव्य के धनी तौ
श्री आचार्यजी महा प्रभू हैं तब वाने कह्यो जो
आप की आज्ञा प्रमान तब दुवेजीनें कह्यो जो अ
न और गाय भैंसि और सब द्रव्य इकठौरो करौ पा
छें दुवेजीसों दोऊ भाई विदा होय कें अपने घर
आये तब सब द्रव्य हतो सो इकठौरो कीयो पाछें
दिन थोरे में श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका
पधारे तब सिद्ध पुर में रणाव्यास के घर उतरे तब
राजा दुवे माधौदुवे और वह सब द्रव्य लैकें श्री
आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों सिद्ध पुर में
आये तब आयकें श्री आचार्यजी महाप्रभून
के दर्शन कीये पाछें इन दोउ भाईन कों श्री आचा
र्यजी महा प्रभून पास नाम निवेदन करवायो
और वह द्रव्य हतो सो सब भेट कीयो तब तिन दै
चार रहि कें आप आगें पधारें तब राजा दुवे मा
धौदुवे और वे दोऊ भाई ब्राह्मण श्री आचार्यजी
महाप्रभून सों विदा होंय कें अपने घर आये पाछें
वे दोऊ भाई ब्राह्मण राजा दुवे माधौदुवे के संगते

बड़े भावदीय भरा लाते संग करनों सो भावदीय
को करनों वे राजा दवे माधोदुवे ऐसे कृपापात्र भग
वदीय है लातेदुनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३५॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक श्लोकदास सांचोरा
ब्राह्मण तिनकी वा
र्ता लिख्यते ॥

सो उत्तम श्लोकदास श्रीनाथजी के सेवकनकी
सोई करते और सबन कूं आप पोसतेताते भव
सेवक उत्तम श्लोक दास कों महतारी करि बोलते
सेवकन कों प्रीत से परोसते ताते श्री गुसांई जी
नके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते वे उत्तम श्लोकदास
श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भग
वदीय है लातेदुनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३६॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक ईश्वर दवे सांचो
रा ब्राह्मण तिनकी
वार्ता

सोई ईश्वर दवे श्रीनाथजी के सेवकन कीसो
ई करते और उत्तम श्लोकदास हू श्रीनाथजी के
सेवकन की सोई करते सो तब उत्तम श्लोकदास
की देह छूटी तब श्री गुसांई जी नें ईश्वर दवे को
नाम उत्तम श्लोकदास धर्यो सोवे श्रीनाथजी के

सेवकन की रसाई करते सो अपनी गांति ते द्रव्य म
गाय कें सवन के लीने अधिक घृत परोसते लाने
याह सों सब सेवक महतारी कह के बोलते सो य
ह बात श्री गुसांईजी ने सुनी सो सुनि कें बहुत प्रसन्न
भये नव ईश्वरदुवे सों श्री गुसांईजी ने पूछो जो तुम
अपनी गांति ते द्रव्य को घृत मगाय कें काहे कों
परोसत हो तव ईश्वरदुवे ने कह्यो जो महाराज इ
न कों सेवा में श्रम बहुत होत है तव यह सुनके श्री
गुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और कहे जो याकों
सब सेवकन ऊपर ऐसी बात सल्प है नव ईश्वरदु
वे सों श्री गुसांईजी ने कह्यो जो तू मागो हों तेरे
ऊपर बहुत प्रसन्न भयो हों तव ईश्वरदुवे ने प्रसन्न
होय कें कही जो महाराज मेरो मन तुम ऊपर तेंज
प्रसन्न होय तव श्री गुसांईजी सूं वैष्णवन नें कही
जो महाराज याने यह कहा मागयो तव श्री गुसांई
जी सुनि कें चुप करि रहे तव श्री गुसांईजी सूं हरिदा
सनें पूछी जो महाराज मेरे मन में सन्देह है जो उत्तम
श्लोक ने यह कहा मागयो तव श्री गुसांईजी नेक
हंसे जो यह सन्देह तो उनही सों मिटेगो तव उन
वैष्णवन नें उत्तम श्लोक दास सों पूछो जो तुमने श्री
गुसांईजी पास कहा मागयो तव उत्तम श्लोक दास
ने कह्यो जो जव श्री गुसांईजी मोपर प्रसन्न होय
कें कह्यो जो हूं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों तातें तू
मागि तव श्री गुसांईजी मोकों प्यारे लागे तव मैं
ने विचार भयो जो साक्षात प्रभूजी की प्रसन्नता ते

स्वरी प्यारो लागत हों और मैं सेवक हों और जोक
वाचित कोऊ अपराध तें मन प्रसन्न होय जायत
व तौ मन कहूं विगरे ताते यह मांग्यो जो सदा
निरंतर तुमारे चरणारविंद पर मन रहे सोइ तुम कें
दीए ते रहे तब यह वात सुनि कें सब वैष्णव प्रसन्न
भए तब विचारें जो सेवक कों ऐसो ई धर्म चाहिये
पाछें श्री गुसांईजी प्रसन्न होय के श्री अंग की से
वा दीनी सो वे मुखिया भीतरि पा धरयें — ये उत्तम
श्लोक दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को
पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ३७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक वासुदेव दास छ
कड़ा सारस्वत ब्राह्म
ण सोहनंद के।
तिन की।
वार्ता

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के बड़े
पुत्र श्री गोपीनाथ जी सो अडेल ते आगरे पधारे
सो आगरे में वैष्णवन नें एक सो एक मोहर भेट
कीनी पाछे आगरे ते श्री गोपी नाथ जी नें आज्ञा
करी जो कोऊ ऐसो वैष्णव है जो एक सो एक मो
हर हमारे घर पहुंचावे तब वासदेव दास नें कह्यो
जो महाराज मोहर मोको देउ में पहुंचाउंगो तब वे

मोहर वासदेव कुकड़ा कों दीनी सो मोहर लाय कें
मोसों कें गोला कीयो सो गोला की पूजा करत
बार्रा में चले गये सो तिन पांच में अडेल जाय प
ड़्यो सो गांव के बाहर गोला फेरि कें मोहर कादि
पाछें श्री गुसांई जी कों दीनी और श्री गोपीनाथ
जी को पत्र श्री गुसांईजी कों दीनों पाछें श्री गु
सांई जीनें वह पत्र वांचि के मोहर गिनवीनी
पाछें श्री गुसांई जीनें वासुदेव दास कों महाप्र
साद लिवायो पाछें "वासुदेव दास ने श्री गुसांई
जी सों विनती कीनी जो महाराज पत्र को जुवाब
लिखिये और पत्र में मोहरन की पहुंच लिख
ये जो हूं तो सवारे जाउंगो तब श्री गुसांईजीनें
वा पत्र को जवाब लिखि दीनों जो मोहर पहुंची
ताकी पहुंच लिखि ..... पत्र दीइयो सो दीइ कें
वासदेव दास कों दीनों पाछें वासुदेव दास सोयर
हे तब रात्रि घडी एक रही तब वासदेव दास उठि
कें श्री गुसांई जी के पास आय कें दंडौत करिके
अडेल ते चले सो पांच दिन में श्री द्वार आय श्री
गुसांईजी को पत्र श्री गोपीनाथ जी को दीनों दि
न दश में अडेल आए और गये सो पत्र पांच
कें गोपीनाथ जी बहुत प्रसन्न भए और पूछ्यो जो
वासदेव दास मोहर कौन भांति सों ले गये हते तब
वासदेव दास नें कह्यो जो महाराज मोहरन को
गोला करिकें वा गोला की पूजा करत ले गयो तब
श्री गोपीनाथ जी नें कह्यो जो या भांति कबहू

नरखिवय "जो स्वरूप करि मानिये ताकों याभां
ति कैसें करिये तब वासुदेवदासनें कह्यो जो महा
एज प्रतिष्ठा तो न भई हुती ॥+

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक समय श्री गुसांईजी श्री मथुरामें
विराजतहुते सो एक समय श्री गुसांईजी शृंगारक
रि सेवा ते पहुंचि कें बाहर बैठक में विराजे सो बैठ
क में बैठि कें रूपचन्द नंदाकों पत्र लिख्यो तामें
वसंत कों सामग्री मंगावनी तब वासुदेव सों कह्यो
जो तूं इतनी सामग्री लेकें संध्या कों आइयो तब
भंडारी कों आज्ञा दीनी जो याकों टोकरा याकों प्र
साद को देउ तब भंडारी ने ऐसें गेंहु को आहार
दीनो टोकरा में तब श्री गुसांईजीने वासदेव दा
स कों आज्ञा दीनी जो तोकों पनहीं पहरें को क
छू चिंता नाहीं पेडें में प्रसाद खानचाल्यो जैयो
तब वासुदेवदास सोई करत आयसो तब अप्पे आ
य पहुंचे तब नांई प्रसाद खायचुक तब फेरि फा
रिकें रूपचन्द नन्दा के घर गये ता समय रूपचन्द
नन्दा अपने घर प्रसाद लै चुक्यो हो चलू लैकें सोक
करत हो सो वासदेव दास पत्र लैकें आए तब रूप
चन्द नदा नें हाथ धोय पोंछि कें वह पत्र माथेच
ढाय के लीनों और भाई सों कह्यो जो वासदेव दास
आयाहैं सो घर में कह्यो ये भूखे होंयगे तब वासदेव
दास ने कह्यो जो मोकों तो मथुरा जानों है तासों मोको
खडी महा प्रसाद लेवे को अवकाश नाहीं ताते

सामग्री लै देउ तौ मैं जाऊं इहां तौ प्रसाद ले आऊं तौ
तब रूपचन्द नन्दा वस्त्र पहर कें सामिग्री लैंन गये
तब वासदेव दास साथ गये तब रूपचन्द नन्दा नें
छोटे भाई गोपालदास सों कह्यो जो अपने घर में
जितनों प्रसाद होय सो तू लैकें छारकू दरवाजे वे-
ठि यो हम आवत हैं तब छोटे भाई नें जितनों घर
में प्रसाद हो सो सब लैकें छारकू दरवाजे आय वै
ठ्यो और रूपचन्द नन्दा बाजार में आयकें सब सा
मग्री लीनी तब वासुदेव दास नें कह्यो जो मेरो स
गो घर तौ प्रसादी है तब सब सामग्री पिछली ओ
र कटि सों दृढ़ कर बांधी पाछें रूपचन्द नन्दा पै
र वासदेव दास छारकू दरवाजे आए तब देखें तो
छोटो भाई बैठ्यो है प्रसाद लीये सो सब प्रसाद सों
वासदेवदास की झोरी भरी प्रेम विदा कीए आप
दोऊ भाई घर कों आए प्रेम आप वासदेव मथुरा
कों आए सो तीसरे पहर श्री गुसांईजी स्नान क
रवें कों पधारे हुते ता समय वासदेव दास सामग्री
लैकें आय ठाड़ो भयो तब श्री गुसांई जी उठि कें वा
सदेव दास की कटि ते सामग्री खोलि लीनी श्री
र श्री गुसांई जी वासदेव दास के ऊपर बहुत प्रस
न भए और आज्ञा दीनी जो तोकों महा प्रसाद
की सामग्री राखी है सो जाय कें प्रसाद लै तब वा
सुदेव दास विश्रांत स्नान करि कें आयो तब प्र-
साद लीनों सो वासुदेव की क्षुधा बहुत हुती मा
डे खातो परि जैसो खातो बहुत तैसोही बहुत

पराक्रम हुतो मथुरा ते दोय पहर में आगरे गऱ्यो
रक्षार श्रीजी पराक्रमी हुते ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

बहुर नित्य प्रति श्री गुसांईजी श्री ठकुर जी
की सेवा करिकें बाहिर आय कें खवास सों कहते
जो तू चेली पीढ़ा लेकें विष्रांत जैयो और आप
दर्शनार्थ जन्मस्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन
करकें पाछें श्री गुसांई विश्रांत स्नान को पधार
तेया भांति सों श्री गुसांईजी नित्य करते सो राक
दिन मथुरिया चौबे सब मिल कें काजी के पास
जाय कें चुगली करी जो तुम इनसों लागा बांधी क
रे सो इनके सेवक आय हैं सो तुमकों दोय चार

हजार रुपेया ये देइगें तब काजी मनुष्यबोय सो
हथियार बांधि कें जन्म स्थान आय ठाडो भयो इ
ने में श्री गुसांई जी श्री केशोराय जी के दर्शन कों
पधारे तब दर्शन करिकें बाहर आय पाछें घोड़ा
ऊपर सवार भये तब काजी ने कह्यो जो अबतु
म कहां जाउंगो तब वासुदेव दास नें श्री गुसांई
जी सों बीनती कीनी जो महाराज मोकों बुरी न-
ज़र दीसतहै तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जोयेते
सो कहा करेंगे तोसों होय सो लहू करि तब वासदे
वास देवें तो एक के हाथ में ढ़ाल और एक गुरज देवे
सो ताकें वासदेव नें एक धपेड़ मारी सो धपेड़ल
गत मात्र वह तो गिर पस्यो तब वाकी ढ़ाल और
गुरज लेकें वासदेव दास के पीछे मनुष्य बीस प-
चीस हुते तब वे भाजिकें हवेली में बैठि कें दरव
जो देकें छिपाइ ते तब श्री गुसांई जी घोरा ऊपर स
वार भये और उनके दरवाजे होकर पधारे तब
वासदेव दास ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो म-
हाराज अब भले इकठोरे भए हैं जो आज्ञा होय तो
इन सबन कों दल बाजो तोरि कें मारों तब श्री गुसां
ई जी ने नाहीं करी और कह्यो जो तेरो ये कहा-
लीन है पाछे श्री गुसांई जी विश्रांत पधारे तब
दूसरे दिन श्री गुसांई जी स्नान कों पधारे तब व
ह काजी अपने मनुष्यन कों साथ लेकें गारे में प-
ड़ काढ़ेकें आय कें बीनती करी जो महाराज आ
ज मैं कन्हैया देखे और भीम हू देखे जो प्रभू

जीके प्रतापतें सब डरे तब श्री गुसांई जीने कह्यो जो
यह कैसो हुतो जो फिर यासों बोलतो तो अकेलो यह
सबन कों मारतो तुम सब ठौर रहत और याको मन
मेंतो बहुत आई हुती पर हमेंतो ऐसो न करनो हुतो
पाछें कार्जो कों समाधान करिकें घर कों पठायो सो
श्री गुसांई जीकी कृपा ते श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके सेवक ऐसे सामर्थ्य वान हुते॥ वा॰ प्रसंग २

और सीहनन्द में उत्सव होतो तब वासुदेव दास
कों बुलावते नाहीं तब एक समय सीहनन्द के वैष्णव
मिलिकें श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्शन कों आ
ये सो तिनके साथ वासदेव दास हू आये तब वैष्णवन
ने श्री गुसांई जीकों दर्शन कीयो पाछें उहां रहि कें
कोई समें पाय कें वासदेव दास नें श्री गुसांई जी
सों विनती करिकें कही जो महाराज ये वैष्णव मोकों
सीहनन्द में उत्सव होत है तब बुलावत नाहीं तब श्री
गुसांई जी चुपकरि रहे तब पाछें उन वैष्णवन कों ज
बडेरा कों विदा कीये तब तिन मेंतबार पांच भुस्वि
या रहे सो तिनकों श्री गुसांई जी ने राख्यो और सब
वैष्णवन कों डेरा पठाये तब श्री गुसांई जीने उन
वैष्णवन सों पूछो जो तुम वासदेव दास कों उत्सव
कीर्तन में कों नाहीं बुलावते हो तब उन वैष्णवन
नें विनती करिकें कही जो महाराज वासदेव दास
कों बडे उत्सव में कों नाहीं बतहें और छोटे उत्सव
में नाहीं बुलावते जो ये भूखे रहे गें तो दोष लागे
तब श्री गुसांई जीने उन कों आज्ञा दीनी जो तुम

वंधान वांधो जो १०० वैष्णवन कों वुलावो तो पचा
स ५० तो और वैष्णवन कों वुलावो और पचास में
एक वासदेव दास कों वुलावो और जहां ५० पचास
वुलावो तो २५ पच्चीस तो और वैष्णवन वुलावो जो
२५ पच्चीस में एक वासुदेव दास कों वुलावो और ज
हां पच्चीस वुलावो तहां तेरह तो और वैष्णवनें वु
लावो और वारह में एक वासदेव को वुलावो ऐ
सें दृष्टांत श्रीगुसांई जी नें वंधान वांध्यो ऐसें
पांच ताई वंधान वाध्यो ऐसें जितने वुलावने हो
य तितने तो और वैष्णव वुलावो और आधेन
में एक वासदेव को वुलावो तव उन वैष्णवननें
नें कह्यो श्रीगुसांई जी सों जो महाराज येतो भूखे
रहेंगे तव श्रीगुसांई जी नें उन वैष्णवन सों कह्यो
जो दृष्टांत तुम आधे में वासदेव दास कों वुला
वो तामें चाहे सो होय ताकों तुम कहा करोगे सो
यह प्रकार मेनें तुम को कर दीनों है सो मेरी आज्ञा
ते तुम कों कछू वाधा नाहीं जो तुम आधे में वास
देव दास कों खुसी सों वुलावो पाछें भूखो रहे तो
तुमकों कछू दोष नाहीं पीर यह श्री आचार्यजी
महाप्रभून कों सेवक है ताते वुलाए विना वासदे
व दास कों तुम उत्सव मांति करियो तव वैष्णवन
नें कही जो महाराज की आज्ञा होयगी सोई करेंगे
तव वे कोई क दिन श्रीगोकुलनाहके पाछें सव वैष्ण
व सोइ नन्द कों गये तव के वैष्णव सोई करनलागे
श्रीगुसांई जी वासदेव कों श्री आचार्यजी महाप्र

भून कौ सेवक जानि कें ऐसी कृपा करते सोंवे-
वासदेव दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपा पात्र भगवदीय हे तानेइनकी वार्ता
कहां तांई लिखिवेये ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ७ ॥ बैसाख ॥ ३८ ॥ संवंध १०८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के ।
सेवक वावा वेणु और कृष्ण
दास चचरिया देवदा
स तिन की वार्ता
लिख्यते ।

सोइ वावा वेणु हृदय के नेत्रन सों देखते सो-
वावा वेणु और छोटे भाई कृष्ण दास ये दोऊ भाई
श्री केसों रायजी के आगें कीर्तन करते तहां यादव
दासहू कीर्तन में साथ हुते तव कीर्तन करन लागे
सो यह पद गावत हुते जो देखरी नैनन गिरवर धः
रन सो यह पद गावत कृष्ण दास नें अपनी देह छो
ड़ीतव यादव दासनें वावा वेणु सों कह्यो जो यह
पद गावत कृष्णदास नें अपनी देह छोड़ी तव वावे
वेणु नें कह्यो जो हम तो अपनी देह श्री नाथजी हू
र में छोड़ेंगे पाछें कृष्ण दास को संस्कार श्री केसों
राय के पीछे कीयो तापाछें सूतक उतरो तवशु
द्ध होय के श्री नाथजी द्वार चले सो कितनेक दिन
में श्री नाथजी द्वार आय पहुंचे तव पर्वत ऊपर आ
य कें वावा वेणु नें श्री नाथजी के दर्शन कीये पाछें
वावा वेणु नें कीर्तन किये तव श्री नाथजी के कंठ

ते फूल की मालागिरी सो माला और एक बीड़ा
रामदास भीतरया नें वावा वेणु कूंदीनों सो वावा
वेणु ने मांथे चढ़ाय कें लीनों तव रामदास भीति
रियानें वावा वेणु सों कह्यो जो तुम्हा रीविदा।
श्री नाथजी नें कीनी तव वावा वेणु ने श्री नाथ
जी कों दंडौत कीनी पाछें नीचे उतरे सो आन्योर
की ओर उतरे तव वावा वेणु नें यादवदास सों क
ह्यो जो हूतो पर्वत ते नीचे उतरि कें अपनी देहछो
ड़ंगो तू सावधान रहियो और तू वेगो आइयो ऐसें
यादवदास सों कहि कें वावा वेणु पर्वत ते नीचेउ
तरि कें श्री नाथजी कों दंडौत करत मात्र अपनी
देह छोड़ी पाछें यादवदास ने वावा वेणु को संस्का
र कीयो पाछें सूतक उतरयो तव सुद्ध होय कें याद
वदास श्री गुसांई जी के पास आए सो श्री गुसांई
जी को दर्शन कीयो और दंडौत कीनी तव श्री गु
सांईजी यादवदास कों परम भगवदीय जान कें
मन में विचारें जो कोई एक दिन में यादवदास की
हू स्थिति ह्वै ताकें लिये श्री गुसांईजी विचारे जो
श्री नाथजी की सेवा में यादवदास को राखियेतो
आछो ह्वै तव श्री गुसांई जी नें कह्यो जो यादवदास
तुम अकेले हो ताते अब श्री नाथजी की सेवा
करो तव श्री गुसांईजी की आज्ञा ते यादवदास
ने श्री नाथजी की सेवा नीकी भांति सों करी सो
सेवा सों पहुंचि कें यादवदास नीचे उतरे और नी
की भांति सों सेवा करते सो कहूं वार्ता में जाय

के यादव दास लकड़ी परी होंय सो दूकठोरी करीपा-
छें जबजान्यो जो लकड़ी सिद्ध भई तब श्रीनाथजी
पास आज्ञा मांगि कें दंडौत करि कें नीचे उतरे सो अ
ग्नि लैकें जहां लकड़ी दूकठोरी हुतीं तहां आपअ
ए सो लकड़ीन कौं श्रीनाथजीकी ध्वजा के आगारी
चौंतरा बनायो सो चौंतरा के ऊपर आप पोढे जादि
श्रा कौ व्यार चलत हुती तादिश्रा कों अग्नि धरि-
कें ध्वजा कों प्रनाम करि कें श्रीनाथ कौ स्मरण क
रकें यादवदास नें अपनी देह छोड़ी पाछें व्यार ते-
अग्नि जरि उठी सो जर कें भस्म होगई यादवदास ने

अपने हायन सों अपनो संस्कार कीयो तथा बावां-
वेणु को संस्कार कीयो ताते यादवदास नें अपनों

यही विचार कीयो जो सब सेवकन कों मेरो संस्कार
करिवे में कष्ट होयगो और सेवा में विरोध होयगो
ताते यादवदासनें अपनो संस्कार अपने हाथन
सों कीयो और पहिलें वावावेगु ने यादव दास सों क
ह्यो हुतो जो तू वेगो अइयो विलम्ब मति करियो-
सोतो श्री गुसांई जी ने श्री नाथजी की सेवा सोंपी
ताते इतने दिन विलम्ब भयो पाछें दिन द्वै भए तब
श्री गुसांई जी नें पूछो जो यादवदास देखिय तनहीं
सो कहां गयो है तब सेवकन नें कह्यो जो महाराज
यादवदास कहूं वन में लकड़ी इकठोरी करत हुते
तब श्री गुसांई जी नें कही जो उहां जाय कें देखो-
तो तब श्री गुसांई जी के कहत मात्र वैष्णव जाय-
कें देखें तो उहां कछू नाहीं रूख की ढेरी परी है तब
वैष्णवन नें श्री गुसांई सों आय कें कह्यो जो महा
राज उहां तो कछू देखयत नाहीं रूख की ढेरी परी
है तब श्री गुसांई जी अपने श्रीमुख सों कह्यो जो
ऐसो भागवद भक्त जो काहू कों दुख न देतो वे याद
वदास श्री महा प्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भग
वदीय जो स्वइच्छा तें अपनी देह छोड़ी सो सबगवा-
लन ने देखो सो चकृत होय रहे ताते वावा वेगु और
रकृष्णदास घघरिया और यादवदास वनिया ऐसे
सेकृपापात्र भागवदीय हे ताते इनकी वार्ता कोपा
रनाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ॥

वार्ताप्रसंग ।१। वैष्णव ।१। ई। संबंध १०८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जगतानन्द सारस्वन ॰ ब्राह्मण थानेश्वर के वा सी तिनकी वार्ता लिख्यते

सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहते तव समय श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे सोज गतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हते सो तहां श्री आचार्य जी महा प्रभू जाय विराजे नव जगता नन्द सरस्वतीनें एक श्लोक को व्याखान कीयो तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो याको व्याख्यान भावतो बहुत है तव जगतानन्द नें कह्यो जो श्लोक को अर्थ तो कह्यो जो श्री शुकदेव जीने कह्यो सो कह्यो तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो श्री शुकदेव जी सारिकाहैं तव जगतानन्द नें कह्यो जो अधिकी व्याख्यान होयतो तुमही आयकें कहो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू तो व्या सन आसन बैठ्यो है हम तेरो अति क्रम क्यों करि कहें तव इतनों सुनत मात्र जगतानन्द चौकी छोड़ के उठि ठाढ़ो भयो तव श्री आचार्यजी महा प्रभून नें चौकी ऊपर वस्त्र बिछाय कें पोथी धरी और फिर आप ताके नीचें बैठे और वा श्लोक को भाव फेरि कें वाको अर्थ कह्यो सो व्याख्यान करत करत तीन पहर व्यतीत भये तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो या श्लोक को व्याख्यान

मांस दोय तीन लों वीतेगो परि अब तुम भूखेहो
उगे ताते अब तुम उठो तब जगतानन्द ने कह्यो
जोमहाराज आप तौ ईश्वर आप के भाव घटिवे
के नाहीं तहां चाहो तहां तौ ई कहो तब श्री आ
चार्यजीमहाप्रभून ने पोथी बांधी तबजगतानन्द
नेंसाष्टांग दंडवत कीनी और कह्यो जोमहाराज मे
रो घर पावन करिये तुमतो साक्षात पूरन पुरुषोत
तम हो तब श्री आचार्यजीमहाप्रभून नेंकह्योजं
तूतो अन्य मार्गीय है हम तेरे घर कैसें पधारें
गें तब जगतानन्द सरस्वती स्नान करि कें आ
य ठाड़ो भायो और वीनती करि कें कह्यो जोम
हाराज मोकों कृपा करि कें नाम दीजिये तब

श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करिकें नामदीयो तव श्री आचार्यजी महाप्रभू वाके घर पधारे और जगतानंद के घर सेव्य ठाकुर जी हुते सो वे तुलसीमांम बैठिते तहां वे सदा एक लोटी श्री ठाकुर जी के ऊपर डारतेहे तव श्री ठाकुर जी कूं श्री आचार्यजी महाप्रभून नें तुलसीमेसू काढ़िकें पंचामृत सों स्नान करवाय न्यारे बैठाये पाछें शृंगार करि राजभोग समर्प्यो पाछें जगतानंद कौं सेवा की विधि सिखाई और कहयो जोनित्य याही भांति सों सेवा करियो तव जगतानंद भले भगवदीय भये सो श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करन लागे सो वे जगतानन्द श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसं· ॥१॥ सम्बंध ॥११०॥ वैष्णव ४०

॥ अथ श्री आचार्यजीमहाप्रभून के सेवक आनंददास विप्रभरदास दोऊभाई तिन्हीहुते तिन की वार्ता

सो वे दोऊ भाई अति कृपा पात्र भगवदीय हे सो वे दोऊ भाई एकत्र बैठिकें भगवदवार्ता करते तथा श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता अहर्निस करते कबहूं वार्ता कहत कहे भाई कौं निंद्रा आय जाती तव श्री ठाकुर जी हुंकारी देते

वड़े भाई आनंन्द दास सो तो भगवद वार्ता के अ
वेश में जानते नाहीं जो हुंकारी कोंन देतहै जव
वार्ता कहि चुकते तब आनन्द दास विश्वंभर
दास सों पूछते जो मैनें तोसूं वार्ता कही सो तूस
मझ्यो तव विश्वंभर दास ने कही जोमेंतो इहां
तांई सुनी पाछें मोकों तो निन्द्रा आई हुती तव
आनन्द दास नें कह्यो जो तूतो अव तांई हुंकारी
देतहुतो तव विश्वंभर दास ने वासों कही जोमें
तो हुंकारी दीनी नाहीं तव आनन्द दास नेकही
जो श्रीठाकुर जी नें हुंकारी दीनी होयगी तव दोउ
आनन्द दास विश्वंभर दास अपने मनमे वहुत
प्रसन्न भए और कह्यो जो हमारो वड़ो भाग्य है
है श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपाते श्रीगो
कुल जाने हुंकारी दीनी हमारी कही सव वार्ता
सुनी ताते वे दोऊ भाई आनन्द दास विश्वंभ
दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के जैसे कृपा
पात्र भगवदीय है तातें इनका वार्ता अव तांई
लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४१ ॥

॥ अव श्री आचार्य महाप्रभून ॥
॥ को सेवक एक ब्राह्मण ॥
॥ हुती तिनकावानी ॥
॥ लिख्यते ॥

सो ब्राह्मणी के मांथे श्री आचार्यजी महाप्रभून ने
श्रीवालकृष्ण जाको सेवा पधराई हुती सो तह

ब्राह्मणी श्री बालकृष्ण जीकी सेवा करती परि वह
अपने घर में निपट निकंचन हुती ताने श्रीठाकुर
जी के आगे मांटी के कूजा भरवावती और रसोई
में मांटी के पात्र और घर निपट संकीर्ण हुतने ही
में सब रसोई मंन्दिर आचार हुते और नेत्रन सों
थोरो दीसे दृढ़ भई ताते जैसी सेवा करती सो और
वैष्णव देखिकें सेवा करत में सो आपुस में सब
चर्चा करन लागे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
या ब्राह्मणी के मांथे कहा जानिकें सेवा पधराई है
यह तो कछू समझत नाहीं ऐसे सब वैष्णव आ
पुसमें चर्चा वार्ता करन लागे सो एक दिन श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को कोस ऊपर गांव हुतो तहां
पधारे हुते पाछें नहांते फिरे तब तहांते ब्राह्म
णी के द्वार के आगो होय कें निकसे तब साथ के
वैष्णव हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
वीनती कीनी जो महाराज आपने ब्राह्मणी के
मांथे श्री बालकृष्ण जी की सेवा पधराई है ताकी य
ह घर ह सो याके घर पधार कें देखिये याको घ
र याको आचार कैसो है तब श्री आचार्य जी महा
प्रभू आप अंतरयामी वा ब्राह्मणी
के घर पधारे सो तासमें वह ब्राह्मणी रसोई क
रत हुती रोटी करकें घी सों चुपरत जाय और श्री
ठाकुरजी आप आगे गत जाय परि वाकों तो दी
सत कछू नाहीं हाथ सों टटोरे कहे जो रोटी आगे
धरी सन नाहीं कहा मूसा विलाई लै जात हैं ऐसें

कहे और रोटी करतजाय और श्रीठाकुर जी।
आरोगत जाय सो श्री आचार्यजीमहाप्रभू आप
ठाडे ठाडे देखें पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नेंव
डोकरीसोंकह्यो जो अरी बाई तेरो बड़ोभाग्यहै जो
तेरी करी रोटी श्रीठाकुरजी आप आरोगतहैं तब व
ह बाई श्री आचार्यजी महाप्रभून करि पाछें बोली
जो महाराज मेंनाहीं जानी जो राज पधारे हैं मो कोंतो
कछु दीसत नाहीं परि तुम्हारी कानिते श्रीठाकुरजी
मान लेतहैं तब श्री आचार्यजीमहाप्रभून ने वैसवन
सों कह्यो जो श्री ठाकुर जीतों स्नेह के वसहैं ताते मे

केवल

रीकानि सों श्रीठाकुरजी आरोगतहे और उनकीमहि

मान लेते हैं तब वैष्णव मुसिक्याय कें चुप करि रहे॰
पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू अपने घर पधारे वा
बाई के ऊपर बहुत प्रसन्न भये वह बाई श्री आचार्य
जी महाप्रभून की ऐसी परम कृपा पात्र भगवदीय
ही तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई॰
लिखिये ॥ (*)

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥४२॥ सम्बन्ध ॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक एक
क्षत्राणी तिन॰
की वार्ता
है

सो वह क्षत्राणी आप चरखा कातती सो सूत के
पैसा होय तीन आवते सो ताकी जो सामाग्री आव॰
ती सो लै आवती रसोई वाल भोग करि श्री ठाकुर॰
जी कों भोग समर्पती ऐसें निर्वाह करती सो एक दिन॰
ऐसो विचार कै सो जो सूत कातें सो थोरो॰ अधिक का
ते सो इक ठोरो करत जाय सो टका दश बारह को भेलो की
यो सो सूत बेचि कें टका दश बारह आये सो विनको घृत
खांड लेआई सो घर आय कें मैदा छानी पाछें दूसरे दिन से
वके लड्डवा सिद्धि कीये और मन में कही जो दिन दश बारह
कों सामिग्री सिद्धि भई है सो दिन दश बारह कों नित्य भ
ई हों सो ता दिन श्री ठाकुरजी कों आगे गाई और बाकी सर्व सामग्री
एक हांडी में करकें मंदिर में धर सर्वी पाछें श्री ठाकुरजी कों

समर्प्यो भोग सराय आरती करिकें आपमहा
प्रसाद लैकें चरखा कातन लगी तब श्री ठाकुरजी
आप सिंहासन ते उतरि कें सामग्री कीहांडी लैकें
सिंहासन ऊपर आय बैठे मोहाड़ी मेते लड़ुवा का
ढ़िकें आप आरोगन लागे तब मंन्दिर मेंहांडी रख
र खटान लागी तब वा क्षत्राणीनें कही जो कछ

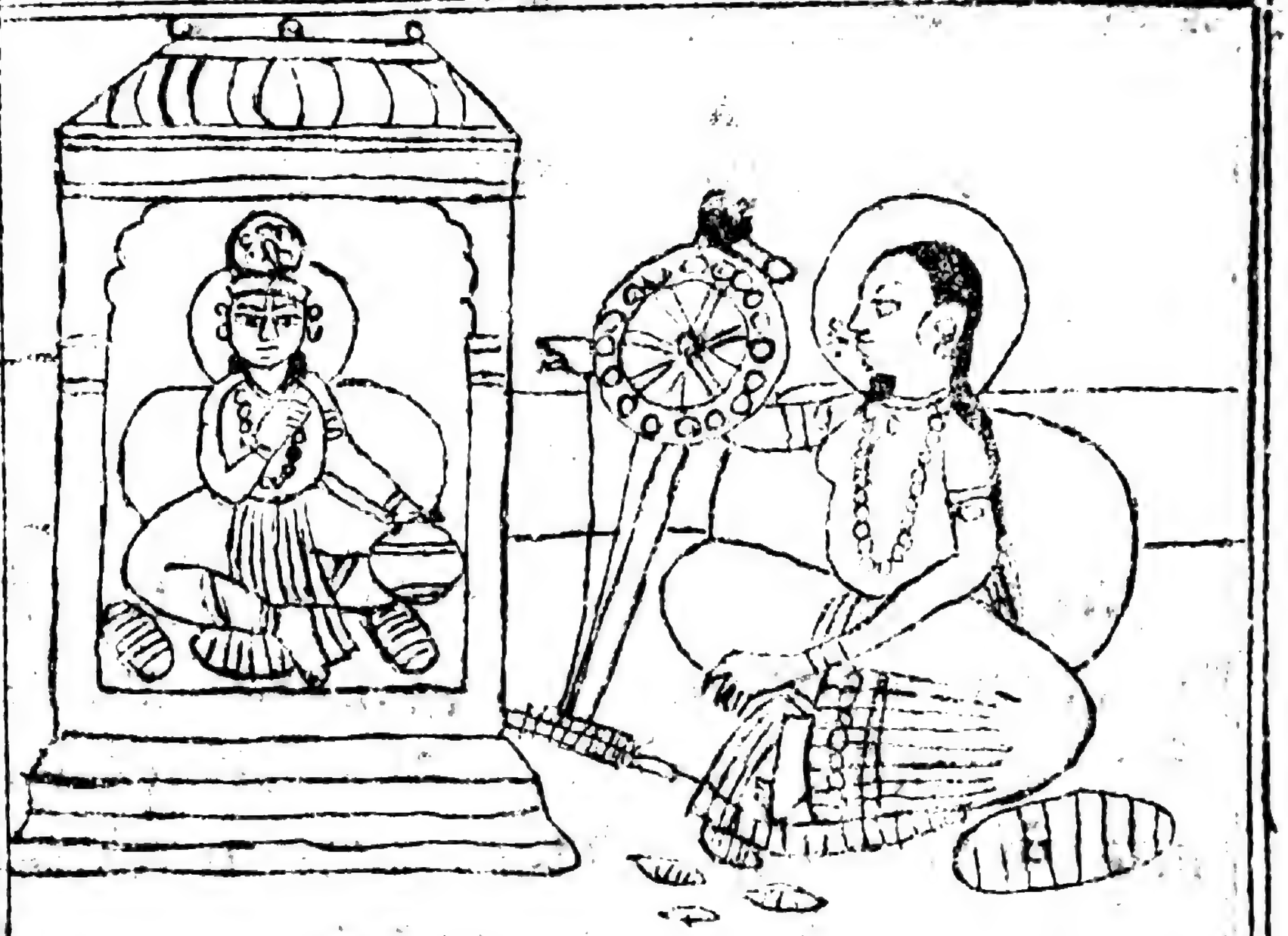

मृसा विलाई होय देखूं तौ सही कौंन है तब वह क्षा
त्राणी कातत हुती सो तहां ते उठि कें देखन गई
मन्दिर के किवाड़ खोल कें देखें तौ श्री ठाकुरजी
सिंहासन ऊपर हांड़ी लैकें बैठे हैं और वा मेंते लं
डुवा काढ़ि काढ़ि कें आरोगत हैं तब वह क्षत्रा
णी देखि कें, ला तो कूटन लागी और कहन लागी

जोयह सामग्री तौ तुम्हारे ही लिये दिन दसवार
ह्वको करि राखीहुती यह तुमने कहा कीयो जो
आजही आरोगे तब श्री ठाकुर जीनें कह्यो जोर
कहा तू लेखवो करि कें आजही निवरी तेनें आ
लस कें लिये इकठौरी करि राखी हुती सो कहा
नित्य नई न होती तब वह सवाणी बोली जो म
हाराज मेरो अपराध क्षमा करो अब ते नई सा
मग्री नित्य प्रति करि कें समर्पूंगी सो श्री ठाकुर
जी याके लिये आरोगे जो यह दिन दश बारह
कों निश्चत होती तो याकों आरत रहती नाहीं
और जो नित्य की नित्य सामग्री करे तो याकों
आरति रहे जो मोकों सामग्री करनी है ताते श्री
ठाकुरजीने ऐसें करी तातें श्रीठाकुरजी की सा
मग्री दिन चारि ते अधिकी नकरनी और या
सवाणीनें छाती कूटी जो श्री ठाकुरजी आरोगे
ताके लिये कूरी श्री ठाकुर जीनें समर्पी नहीं वे
आरोगे वानें छाती याके लिये नाहीं कूटी जो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की तो यह मर्या
दा है जो श्री ठाकुरजी के आगें भोग धरिये सो
आरोगे उठाय धरिये सो सामग्री होय सो नइ
रोगें तो श्री ठाकुर जीनें आचार्यजी महाप्रभू
के मार्ग की मर्यादा छोड़ी तो कदाचित मोहवे
छोड़ें याके लिये वा सवाणीनें छती कूटी नवे
श्री ठाकुरजीनें कही जो तू तो आजही लेखवो क
रि निवरी नित्य नई कहा न होती तब याकों नि

श्चय भयो जो मार्ग की मर्य्यादा तो श्री ठाकुर जीपें
नाहीं छोड़ी हों दश बारह दिन कों निश्चत होय बैठ
ती ताकें लीये श्री ठाकुर जी आरो गे ताते वह छात्राणि
श्रेसी परम भगवदीय ही तिन कों श्री ठाकुर जी सेवा
ते एक क्षण हूं स्वास्थ होन देते नाहीं सेवा में सदा
आरति रहे सो कियो वा छात्राणी सों श्री ठाकुर जी
श्रेसे सानुभाव हुते जो चहिये सो मांगि लेते श्रेसी
कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता को पा
र नाही सो कहां तांई लिखिये ॥
वार्ता प्रसंग ॥१॥ चैत्सव ४३॥ सम्बंध ११३

श्रव श्री आचार्य जी महा प्रभून।
के सेवक सास वहू दोउ ह
त्राणी सास को नाम गो
रजा वहू को नाम
समराई सीहनं
ढकी वासीति
नकी वार्ता
लिख्यते
॥ हैं ॥

सो इनके मांये श्री आचार्य जी महा प्रभूननें श्री द्वारको
दर जी की सेवा पधराई हुती सो इन सास वहूनते श्री ठा
कुर जी वहुत सानुभाव हुते सो एक समय श्री आचार्य
जी महा प्रभू याने स्वर पधारे तब याने स्वा ही में रहे परि
सीहनन्दन पधारते जो काहे तें याने स्वर श्रीर सीह नंद के

वेत्र सरस्वती नदीहै सो श्री आचार्यजी महाप्रभू
स्वरस्वती उल्लंघन न करते काहेते जो आप आवा
चहैं तातें याने घर ही में रहते सो श्री आचार्यजी
महाप्रभू याने घर पधारे तब सास नें वहू सों
कह्यो जो में श्री आचार्यजी महा प्रभून के दर्शन
कों जात हों तू श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति
सों करियो सिंगार करि रसोई करिकें भोग समर्पि
यो इतनों वहू सों सास कहि कें श्री आचार्य
महा प्रभून के दर्शन कों गई तब वहू न्हाय कें
सेवा करन लागी जब पाक सिद्धि भयो तब श्री
ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब समयानुसार
भोग सरावन गई तब देखे तो सामग्री सब यथा
स्थिति ज्यों की त्यों है तब वहू नें बीनती कीनी
जो महा राज में तो जानत कछू नाहीं और सास
ने तो मोसों कह्यो नाहीं और तुम आरोगत ना
हीं सो काहे ते अबहूं कहा करू ऐसें बहुत वि
लंबिलाय कें खेद करन लागी जो मोसो कछू
चूक परी होयगी रसोई आछीन भई होयगी त
या पात्र मांजिवे में सुद्ध न भये होंयगे कछू तो
भयो होयगो जो श्री ठाकुर जी आरोगत नाहीं
पाछें भोग सराय पात्र मांजे आछीभांति सोंधोय
पाछि कें फेरि रसोई करि दूसरी वार जब पाक
सिद्धि भयो तब श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो
ऐसो में कहत जाय जो मोते कछू चूक परी हो
यगी होतो कछू जानत नाहीं कहा भयो तातें

श्री ठाकुर जी आरोगे न होयंगे अब आछी भांति सों पात्र मांजि कें रसोई करी है सो अब श्री ठकुर जी आरोगेंगे सो जब समय भयो तब दूसरी वेर भो ग सरावन गई तब देखे तौ श्रीठाकुर जी के आगे सामग्री यथास्थित है तब फेरि बिलखि बिलखि वे रोवे और बीनती करै और कहै जो महाराज हों कछू जा नत नाहीं सो तुम क्यों नाहीं आरोगत और अपने मन में विचार करती जाय जो मोकों रसोई करनों आवत नाहीं कै मेरी देह कौ कछू दोष है ऐसें वि चार करत जाय और भोग सरावत जाय और छा ती भरि आवे और कहै मेरो कौन अपराध होयगो जो श्री ठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पा त्र आछी भांति सों मांजि कें तीसरीवार भोग सम प्यो समय भयो तब भोग सरावन गई तब फेरि सा मग्री यथा स्थित है तब तौ महा खेद भयो जो अब कहा करूं श्रीठाकुर जी भूखे रहेंगे सामनेतौ मोसों कछू कह्यो नाहीं ऐसें कहे तब मूर्छा खा य कें श्रीठाकुर जी के आगें भूमि में गिर परी और रुदन बहुत दुख करन लागी अमित बहुत भई तातें वा कौ तनक निद्रा हू आई सवारे सों जल हू नाहीं लीनों सो कंठ जुरयो सूखे अति व्याकुल है कें परी तब श्री ठाकुर जी ने वाकौ बहुत दुख सह्यो न गयो तब सिंहासन तें नीचें उतरि कें श्री ठाकुर जी ने वासों कह्यो जो तू काहे कौं खेद करत है हों तीन्यौं वेर आरोगों हूं तू कछू संदेह मति करै तब

याने कह्योजो मैं कैसें जानूं तव श्रीठाकुर जीनें कह्योजो तू भूखी है कछू खायले तव कह्यो जोहूं तो न खाउंगी तव आप कों आरोगन देखूंगी तव लेउंगी तव श्रीदामोदर जीने कह्योपरि यह तो मानैना हीं तव आप जल की झारी लैकें आए और कह्यो अरी तेरो गरो सूखैगो जात है तू तनकजल पान तो लै तव श्री ठाकुर जी अपने श्री हस्त सों वाके मुख में जल चुवायो तव कह्यो जो सवारें तू देखगी तौ मैं आरोगूंगो तव उठि कें सखडी महा प्रसाद सब गायन कों लिवायो रसोई पोन कें रसोई की सामग्री सब सिद्ध करी सखी रात्रि कों उत्साह सों सोय रही पाछें प्रातःकाल उठि के नित्यकर्म तथा स्नान करि तथा रसोई करि तव पाक सिद्ध भयो तव श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो जबटेरा सरकावन लागी तव श्री दामोदर जी बोले जो अब तू टेरा अब काहे कों सरकावत है अब तू देखि में आरोगत हौं और सब सामग्री यथा स्थित रहेगी तव समराई तहां ठाडी भई और श्रीठाकुर जी भोजन करत देखे तव श्री ठाकुर जी आप भोजन कीए पाछें सब सामग्री थार में ज्यों की त्यों यथा स्थित रही तव श्री ठाकुर जीनें कही जो याही भांति सों तू नित्य जानि लीजियो तव समराई ने कही जो हूंतो देखूं तबही मानूं ता पाछें नित्य भोग धरे तव श्री ठाकुर जी कों भोजन करत देखे तव श्रीठाकुर जी हू समराई के देखत भोजन करे जो चाहे

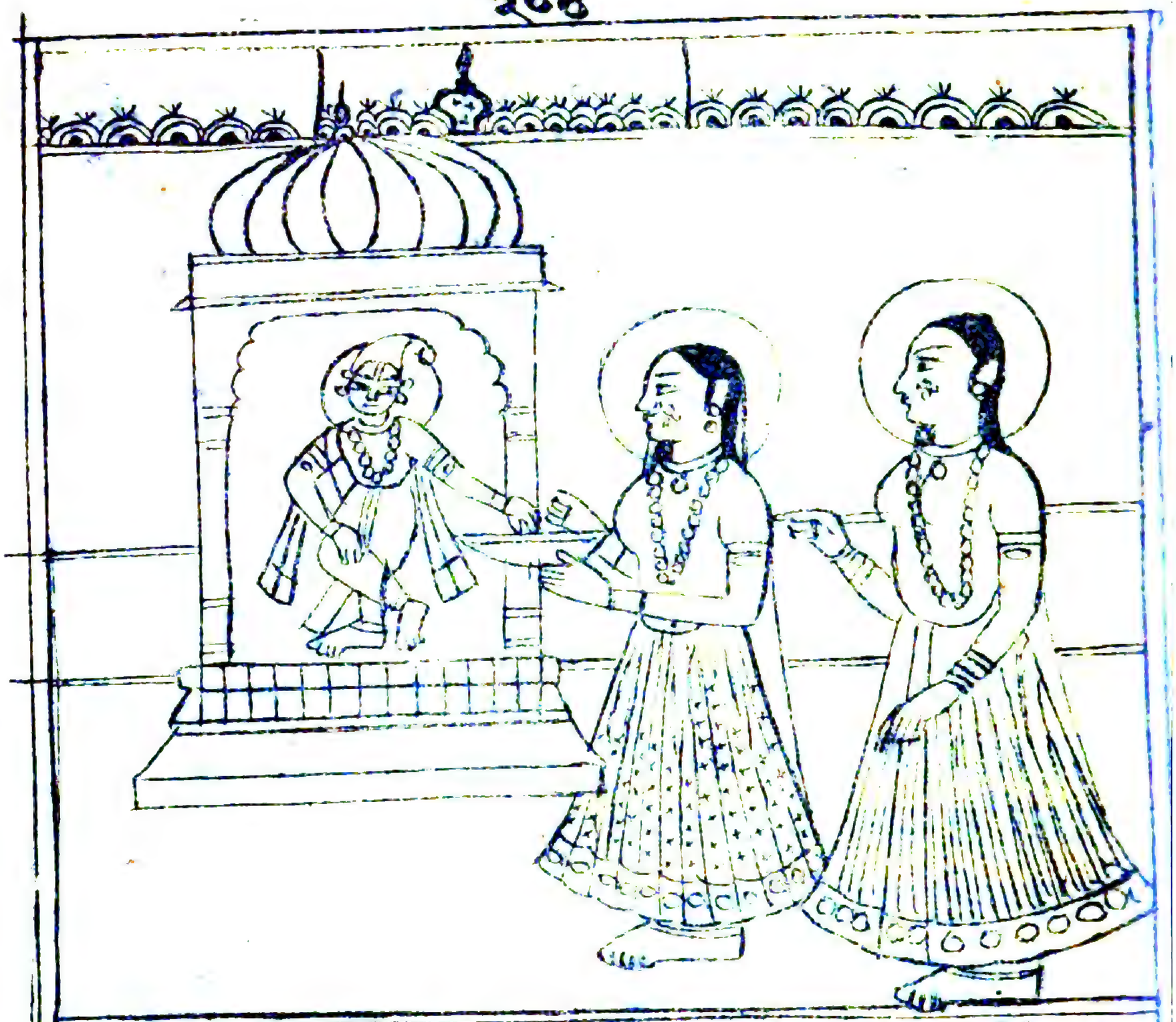

सो मंगि लेय पाछें ठाकादिक को दे पाछें वाको सब रस को अनुभव करवायो सो समराई सकल रस को अनुभव करन लागी तब यह वात श्रीदामोदरजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें समराई की सासगोरजा सों कही जो श्री ठाकुरजी कछु मानुभाव जनावतहैं तब गोरजा तो कछु बोली नाहीं पाछें गोरजा श्री महाप्रभून सों विदा होय कें सीहनंद अपने घर आई तब दूसरे दिन सासनें सेवा की सोई की कें अपने श्री ठाकुरजी कों भोग सम र्पीउत भोग सर्यो तब बहू चौंकि उठी जो श्री ठाकुरजी आगे नाहीं तब सास नें कही जो सुनि

वहू श्री ठाकुर जी तौ लरिकाहैं ताते तोही सों हि
लेहोयंगो ताते रसोई तू वेगि करि तब वहूनें रसो
ई करि भोग समर्प्यो तब श्री ठाकुरजीनें कह्यो
जो मैंतो अबही आरोगोहौं तब वहूने कही जोहूं
तौ देखूं तब मानूं तब भोग समर्पि कै कह्यो जो महा
राज आरोगो तब समराई के देखत श्री ठाकुरजी
आरोगे सो जब सास रसोई करै तब वहू कों बुले
वैजो थार लै जाऊ सो वहू थार लै जाय कै आरो
गावे ऐसें नित्य प्रति करै सो यह बात श्री ठाकु
रजीनें श्री महाप्रभूनसों कही पाछें वहू श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों घानें स्वर गई
तब आय कै श्री आचार्यजी महाप्रभून कोदर्शो
न कीयो ता समय श्री आचार्यजी महाप्रभू पा
क करत हुते तब समराई रोटी वेलन कों बैठी
तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें वहू सों कह्यो
जो तेरी सब बात हमसों श्री ठाकुर जीनें कही हैं
जोहम कों समराई भलीभांति सों सुख देतहैं तब
समराई मुसिक्याय रही और कह्यो जो इतनीहू
बात श्री ठाकुर जी के पेट में नाहीं ठहरी तो क
हा करिये पाछें कह्यो जो महाराज लरिकौं क
हा पूछत हौ तब श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनकें
बहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहन
लागे जो देखो इनसों कैसो सम्बन्ध है श्री ठाकुर
जीको और कहें जो या वहू के ऊपर बहुत कृ
पा है और वहू सात्विक करनी सो नीकी भांति सों

करती सो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्योजोनि
त्य सालन क्यों नाहीं करत तब वहू बोलीजोलर
िका के मन में आवै सो कीयेतब यह सुनि कें
श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये याकी
सास गोरजा बहुत उत्तम सामिग्री करती ताते
श्री ठाकुरजीकों बहुत प्रिय लागती तातें इनसां
स बहून के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते तातें इन सास
बहून कों दर्शन देवे कों श्री महाप्रभूजी तथादे
रिवे के निमित्त प्रति वर्ष आय याने स्वरूप धार
ते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहते जो कहा
कीयेसो सरस्वती उल्लंघनी नाहीं नातर इन
को सीहनन्द में दर्शन देतो सो वे सास बहू ऐसी
धर्मकृपा पात्र भागवदीय ही तातें इनकी वार्ता क
हांनांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
की सेवक कृष्णा दासी रु
क्मिनी बहूजी की दा।
सी हुती ताकी
वार्ता॥

सोकृष्णादासी अडैल में श्री रुक्मनी बहूजी की
खवासी करती सो एक समय रुक्मनी बहूजी
कें गर्भ रह्यो हो तब कृष्णादासी नें कह्यो जो अब
कें बेटा होयगो तिनको नाम श्री गोकुलनाथ
जी धरूंगी सो गर्भ के दिन सम्पूरण भये तब रु

कनीजी वहू के पेट में विथा भई तव छछ्मादा
सी नें जाय कें जोतषी सों पूछो जो अव मुहूर्त कैसो
है तव वा जोषी नें दिन नीकौ न कह्यो तव कृस्मा
दासी फिरि आय कें श्री रुकमनी वहूजी के पेट पै
हाथ फेरयो और कह्यो जो महाराज अव तौ मति
पधारो आज कौ दिन नीकौ नाहीं तव पेट की व्यं
धि सव दूर भई पाछें दिन दोय तीन वीते तव कृस्म
दासी ने विचार्यो जो अव फेर पूछिये जो आज दि
न कैसो है तव कृस्नदासी ने फेरि जाय कें पूछो
जो आज दिन कैसो है तव वा जोतषी ने कह्यो जो
आज दिन वहत नीकौ है तव कृस्मा दासी नें आ
य कें श्री रुकमनी वहूजी सों वीनती करि कें क
ह्यो जो महाराज अव पोढ़िये अव वालक प्रध

ट होयतौ भलो है तब वहूजी महाराज पोढ़ीं तब छ
ष्मादासी नें वहूजी महाराजके पेट पेहाथ फेस्यो
और कह्यो जो महाराज अब पधारिये तब श्री गुसां
ईजी श्रीनाथजी द्वार पधारे हुते तब पेट में व्यथा भ
ई और बालक को जन्म भयो तब तामें छष्मादासी
नें श्री गोकुलनाथजी नाम धर्यो तापाछें श्री गुसांई
जीकों बधैया पठायो तब श्री गुसांई जी महा राज
अडैल कों पधारे तब नाम करण कीयो तब
श्री वल्लभ नाम धर्यो पीर छष्मा दासी की कानि
ते श्री गोकुल नाथ जी नाम राख्यो ऐसी छष्माद
सी के ऊपर कृपा थी जो जाके कहते दोउ नाम प्रसि
द्ध भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

पाछें श्री घनश्यामजी को जन्म भयो तब नाम क
रण विचारन लागे तब श्री वल्लभजीनें कह्यो जो
श्री गोकुल नाथ जी नाम धरो तब श्री गुसांईजी
नें कह्यो जो यह नाम तौ तिहारो है तब दोउ नाम प्र
माण कीये सो श्री वल्लभकुल के विषें सब को श्री
वल्लभ नाम कहत हैं और सब जात में श्री गोकुल
नाथजी नाम प्रसिद्ध भये और जन्म पत्र में श्री कृष्ण
हैं सो गोप्य राख्यो श्री गुसांई जीनें कह्यो जो यह ना
म गोप्य रहे नाते छष्मादासी श्री आचार्यजी महा
प्रभून की ऐसी कृपापात्र भावती यही सोइनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ७५ ॥ * ॥ *

॥ अथ श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ॥

सेवक वूला मिश्र पंडित तिनकी वार्ता है

सो वूला मिश्र एक कपूर छत्रीके मोहिन हुते नाकी
स्त्री कें संतति नहुती तव वानें दूसरो विवाह कीयो
तव ताहू स्त्री कें संतति न भई तव वहू नें वा क्षत्री सों
कह्यो जो तुम हरिवंश पुराण सुनों तव तुम्हारें संतती
होयगी तव वा क्षत्री नें जाय कें वूला मिश्र सों प्रार्थ-
ना करी जो तुम मोकों हरिवंशपुराण सुनावो तव वू
ला मिश्र नें कह्यो जो अव तो मोकों अवकाश नाहीं
जव अवकाश होयगो तव तुम्हारे घर जाय कें
सुनाउंगो तव वह क्षत्री अपने घर आयो जव एक
महीना वीत्यो तव एक दिन अचानक वूला मिश्र
वा क्षत्री के घर पधारे तव वूला मिश्र कों वा क्षत्री
ने वहुत आदर सन्मान कीयो तव वूला मिश्र नें
कह्यो जो तुम दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय
वैठो तव दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय वैठे
तव वूला मिश्र ने देह शुद्ध होवे के लिये एक दान
करवायो पाछें हरि वंश पुरान को एक श्लोक
अंत को सुनायो ॥ *

श्लोक

इदं मया ते हरि कीर्तनं महत् श्री
कृष्ण महात्म्याय पारमुदतं अव-
राय वर्ष्मोषु समासुतत्फलै पच्या
पि लोकेषु स दुर्लभं महत् ॥ १ ॥

यह हरिवंशपुराणा के अंत को श्लोक सो वूला
मिश्र ने वा स्त्री कों सुनायो और आशीर्वाद दीयो
और मंत्राक्षत पढ़ि कें वा स्त्री की वड़ी स्त्री की गो
द में दीए तव वा स्त्री नें कह्यो जो यह मिश्र जीवु
मने कहा कीयो यह तो स्त्री धर्म हूं नाहीं होतहैत
व वूला मिश्र नें कह्यो जो श्री ठाकुर जी सर्व साम-

र्थवान है जो देनहार होयंगे तो याही कों पुत्र देयंगे
अव तो मैनें याकों अक्षत दीये सो तो दीये नवइ
तनों कहि कें वूला मिश्र अपने घर कों चलनला
गे तव वा स्त्री नें वहुत वीनती कीनी जो मोकों
सम्पूरणा हरिवंस पुराणा सुनावो तव वूला मिश्रनें
कह्यो जो तोकों श्री ठाकुर जी सम्पूरणा कों फल

एक ही श्लोक में देहिंगो ऐसें कहि कें वूला मिश्र तौ अपने घर कों आये पाछें वा वड़ी स्त्री कों कह्यु आई पाछें गर्भवंत भई तव कितनेक .... दिन में वाकें पुत्र भयो वे मूला मिश्र श्री महाप्रभून के ऐसे भगवदीय है तिनके अनुग्रह तेवाकें पुत्र भयो हरिवंस पुराण कौ एक श्लोक सुनेते सम्पूर्ण सुने को फल भयो ताते वूलामिश्र ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां ताई लिखिये ॥॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ७६ ॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभू
न की सेवक मीरावाईके
पुरोहित रामदासति
नकी वार्ता
लिख्यते

सो एक दिन मीरावाईके श्री ठाकुर जी के आगें रा मदासजी कीर्तन करतहुते सो रामदासजी श्री आचा र्यजी महाप्रभूनके पद गावतहुते तव मीरावाईवोल्यो जो दूसरो पद श्री ठाकुर जी कौ गावो तव रामदास जीने कह्यो मीरावाई सों जो अरे दारी रांड यह कौन कौ पद है यह कहा तेरे खसम कौ मूड़ है जो जा। आज ते तेरो मुहडो कवहूं न देखूंगो तव तहां तेस व कुटुम्व को लैकें रामदासजी उठिचले तव मी रावाईनें वहुतेरो कह्यो परि रामदास जी रहे नाहीं पाछें फिरि कें वाको मुख न देख्यो ऐसें अपने प्रभू

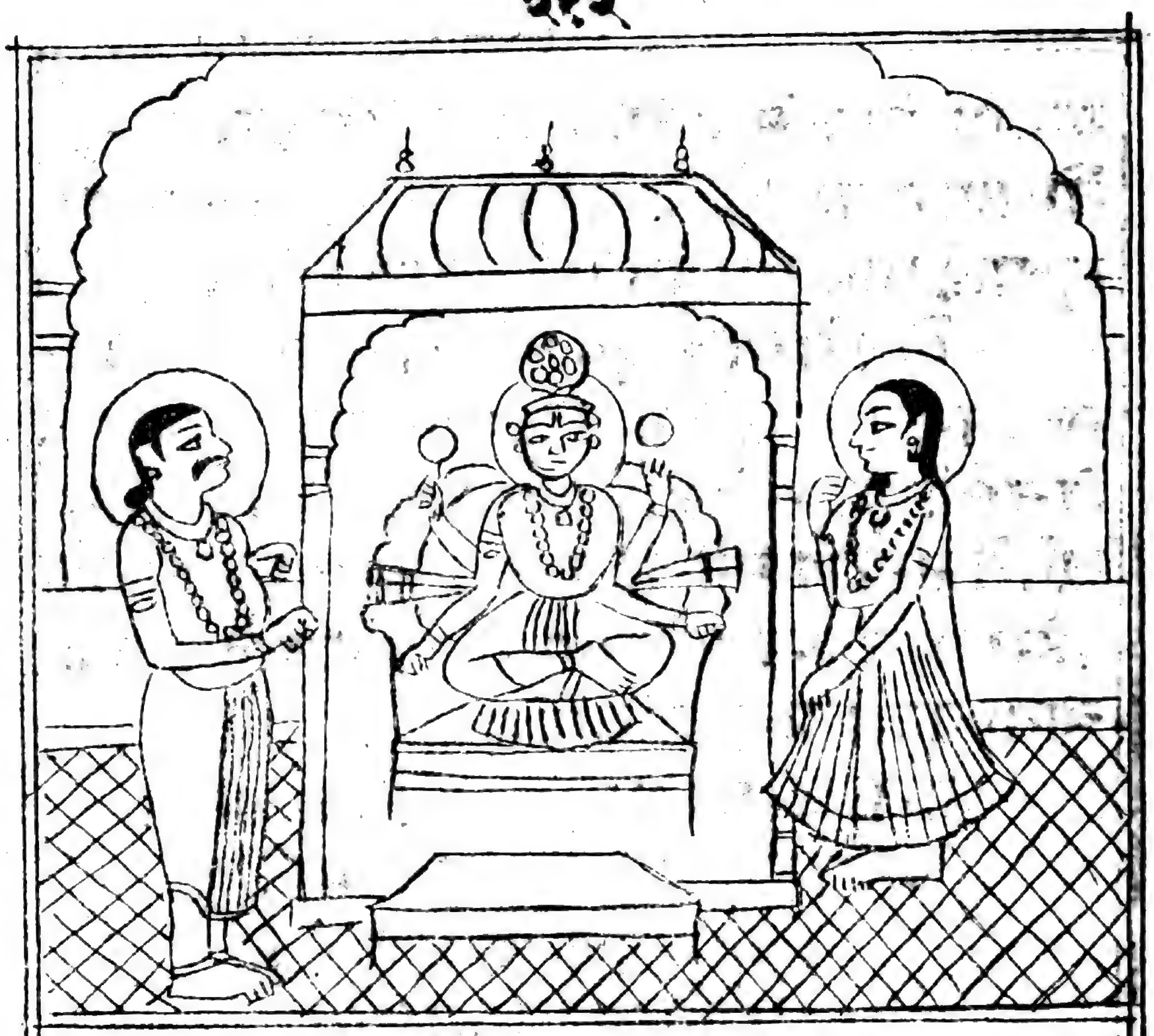

नमों अनुरुक्त हुते सो वा दिन ते मीराबाई को मुख न देख्यो वा की वृत्ति छोड़ दीनी फेर वाके गांव के आ गे होय कें निकसे नाही मीराबाई ने बहुत बुलाए पठाए गमदास जी आए नाहीं तब घर बैठे भेट पठा ई सोई फेरि दीनी और कह्यो जो रांड तेरो श्री आचा र्य जी महा प्रभून ऊपर समत्व नाहीं जो हम कोंते री वृत्ति कहा करनी हैं हमारे तो श्री आचार्य जी म हा प्रभू सरवस्व हैं हम तो उन के हैं उन विना हमारें सर्वस्व त्याग करनों उनके चरणार्विंद को आश्रय सदा तों ऐसी वृत्त बहुतेरी होयगी वे गमदास श्री आ चार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥१०॥

॥वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ॥ ७७॥

श्रीश्री आचार्यजी महाप्रभू न के सेवक रामदास चौ हान तिनकी वार्ता लिख्यते

सो रामदास चौहान श्री गोवर्द्धन की कन्दरामें रहते सोप्रथम श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीनाथ जी द्वार पधारे तब श्रीगोवर्द्धन नाथजीकों पाठ बैठाये तब रामदास कंदरा मे सूं बाहिर आयेत व श्री आचार्य जी महाप्रभून नें रामदासजी सों कहो जो राम दास श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा साव धानी सों करियों तब रामदासजी नें वहां

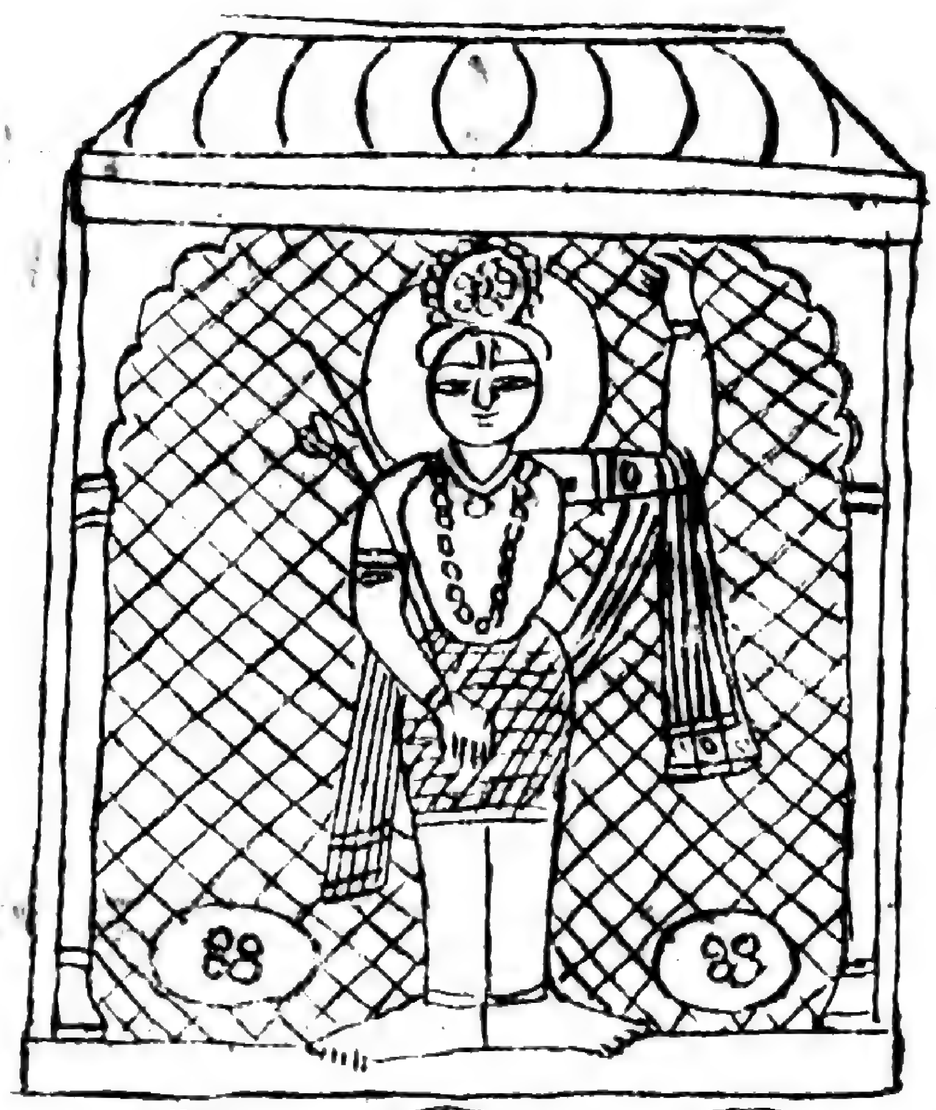

एक मन्दिर कोटो सौ ईटन को बनवायेतब श्री-
आचार्यजी महाप्रभून नें ता मन्दिर में श्रीनाथजी
कों पधराये सो पहिलें श्री गोवर्द्धन नाथ जी श्री
गोवर्द्धन पर्वत ऊपर विराजते सो व्रजवासी लोगननें
एकफूस की छानि करि राखीहुती ता छानि में वे-
ठते और कबहूं कबहूं दूध दही व्रजवासी समर्पे
ते देवदमन यह नाम कहते सो दूध दही मांस्वन
सब आरोगते तथा श्री गोपाल लाल जी यह नाम
कहते सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोव-
र्द्धन नाथ जी कों मन्दिर में पधराय पोछें श्रीनाथ
जीनाम प्रगट कीयो तब ते सब कोऊ श्रीनाथ-
जी कहन लागे वे रामदास जी श्री आचार्यजीम
हाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं
तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहां
तांई लिखिये ॥ *

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥४८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक रामानंद
पंडित सारस्वत।
ब्राह्मण ति-
नकीवा
तीहैं
सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू याने-
स्वर पधारे तहां रामानन्द पंडित के घर पधारे सो
रात्रि कों उहां रोढ़े हते सो जब पिछली रात्रि भई

तव रमानन्द पण्डित नें अपनी स्त्री सों कह्यो
जो वेगि उठि गोवरि और ले चौका कों चढ़ियेगो
नातरि सवारें ये वैष्णव उठेंगे सो लै जायंगे तव य
ह वात श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सुनी तासमय
श्री आचार्यजी महाप्रभू हाय पांव धोय वे कों
उद्यत भये तव अति क्रोधवत भये तव श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें रामा नन्द पण्डित कों बुलायो तव
आपने गडुआ में ते जल लैकें वाके हाथ में मेलि
कें मंत्र पढ़ि कें वा जल कों वा ऊपर छिरक्यो और

अपने श्री मुख सों कह्यो जो में तेरो त्याग कीयो
तेनें मेरे सेवकन सों यों कह्यो जो तू वेगि उठि गो
वर और ले नातर वैष्णव उठेंगे तो ले जायंगो तो तू

रसोई को सामान कहांते करेगो ऐसो कहिकें तहांते
उठिचले क्षणएक रहे नाहीं सो यानस्वरते रुक्यो
वताऊपर मही तापै है सो तहां आये फिर वहां
आपने स्नान कीयो सोजब श्री आचार्यजी महाप्र
भू रामानन्द परिडत के घरतेचलन लागे तब याने
स्वर के वैष्नव नें वहुत वीनती कीनी परि श्री आचा
र्यजी महाप्रभू रहे नाहीं और कह्यो जो मैं इहां रहि
कें जलपान न करूंगो ता पाछें काहू ने रामानन्द
परिडत पास नाम पायो हो तिनसों श्री गुसांई जी
गंगोज्व कहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू याने
स्वर पधारे पाछें रामानन्द की अवस्था विकल
भई तब वाजार में जो वस्तु देखतो सो खातो कछु
मर्यादा न रही परि इतनी मर्यादा तौ करे जो खाय
सो समर्पि कें खाय यों कहे जो श्री गोवर्द्धननाथ
जी तुम आरोगियों इतनों कहि कें मुख में मेलै
सो एक दिन हलवाई की दुकान पै जलेवी वहुत
आछी देखीं सो जलेवी वामे ते लेकें कह्यो जो श्री
नाथजी तुम आरोगियों ऐसें कहि कें खाई ता स
मय श्रीनाथजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों क
ह्यो जो आजतो हमनें जलेवी वहुत आछी आरो
गीहें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो
कौंने समर्पी है तब श्री नाथ जीनें कह्यो जो तुम्हा
रे सेवक रामानन्द ने समर्पी हैं तब श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें कह्यो जो महाराज मैनो वाको त्याग
कीयो तुम वाके यहां क्यों आरोगो हो तब श्री नाथ

जीने कह्यो जो तुम मोकों काहे कों सोंपत हो हम तुम्हारी कानि ते अंगीकार करत हैं तुम हम कों जाकों सोंपत हो ताको तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सोंपे कों नाहीं छोड़त हैं तब यों आचार्यजी महाप्रभू चुप करि रहे तब यह बात श्री आचार्यजी महाप्रभूतनें दामोदरदास हरसानी सों कही तब दामोदरदास हरसानी नें बीनती करी जो महाराज आपयाकों अंगीकार कब करोगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूतनें दामोदरदास सों कह्यो जो यासों अब वैष्णव कों अपराध पड़ेगो तो हमयाकों लक्षजन्म पाछें अंगीकार करेगे श्रीनाथजीने अंगीकार कीयो तोहे परि इन नों अंतराय भयो ताते वैष्णव सों बोलनो सों विचार कें बोलनों बिना विचारें सर्वथा न बोलनों ऐसें वैष्णव कों रहनों ॥ *

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४७ ॥ *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक विष्णुदास
कृपी तिनकी वार्ता
लिख्यते ॥

सो विष्णुदास वृद्ध भया तब श्री गोकुल में श्री गुसांई जी की बैठक के द्वारे की द्वार पालकी करते और कोई पंडित आवतो तासों विष्णुदास पूछते जो तुम कों आरा हो और कहां जात हो तब उन पंडितन नें कह्यो जो हम श्री गुसांई जी के पासवा

दकरनआएहैं तब विष्नुदासने उन पंडितन सों कह्यो जो तुम मोसों वाद करलेऊ तब विष्नुदास उन पंडितन सों वाद करिकें निरुत्तर करदेते व्याकरण शास्त्र पुराण इतिहास सब शास्त्रन के वचन लेकें निरुत्तर करि देते तब वे पण्डित अपने मनमें समाधान करिके पाछें फिर जाते और वे कहते अपने मन में जो जिनके द्वार पालक ऐसे हैं तो तिनके धनी की कहा बात होयगी सो श्रीगुसांईजी सों काहू पंडित को न जान देते द्वार ही ते पंडित निरुत्तर होय कें फिरी जाते तब एकदिन श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो कोई पंडित अववाद करन को नाहीं आवत सो काहे तें तब वैष्णवननें

कह्यो जो महाराज उन पंडितन कों विष्णुदास
निरुत्तर करदेत है ताते पंडित अपने मनमें समा
धान करिकें फिर जात हैं तब श्रीगुसांईजी श्री
मुखसों कह्यो जो विष्णुदास तुमकों तो श्रीमहाप्र
भून की कृपाते ऐसी सामर्थ्य है जो तुम पंडितन
कों जीत कें निरुत्तर करदेत हो परि उन ब्राह्मणों
कों अतिक्रम होत है ताते अब जो कोई पंडित
वाद करन कों आवे ताकों हमारे पास आवन
दीजो तब उन पंडितन कों जान देते विष्णुदा
स श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा
पात्र भगवदीय हे उन कों ऐसी सामर्थ्य हुतीजो
पंडितन कों निरुत्तर करि दूयगा करते॥

वार्ता प्रसंग॥१॥

और एक भट्ट हुतो सो श्रीगुसांईजी सों कहतो
जो तुम्हारे सेवकन कों मैं जिमाउंगो तब श्री गुसांई
जी चुप करि रहते सो वह श्री गुसांईजी कों सुमरह
तो श्री घनश्याम जी कों नाना हुतो सो एक दिन
वा भट्टनें श्रीगुसांईजी कों न्योत्यो तब श्रीगुसांई
जी उनके घर भोजन कों पधारें तब नहां विष्णुदा
स जलपान कों गडुआ लैकें साथ गये तब श्रीगु
सांईजी भोजन करिकें उठे तब श्री गुसांईजी कों
विष्णुदास नें मुख आचमन करवायो पाछें श्री गु
सांईजी मन्दिर में पधारें तब विष्णुदास कों श्री
गुसांईजीने आज्ञा दीनी जो तुम प्रसाद लैकें जाओ
सो वा दिन सांझ समय श्री गुसांईजी भोजन करि

हुते ता यात मेंतें प्रसाद अपनी पातरमें धरि वें-
यार धोय धरयो पाछें आप प्रसाद लेवे कों बैठे न
व भट्ट जी और सामिग्री लेकें आए तब विष्णुदा
सनें कह्यो जो मोकों नाहीं चहियत तब भट्टनें कह्यो
जाकुं तब काहेकों लेत हो नाकों सामिग्री लेउ तब विष्णु
दासने कह्यो जोमाकों नाहीं चहियत मेरी पातर मंडारे
गतौ मेरी पातर छूय जायगी तब भट्ट जी अति क्रोध
वंत भये पाछें उन भट्ट जीने श्री गुसांई जी सों कह्यो

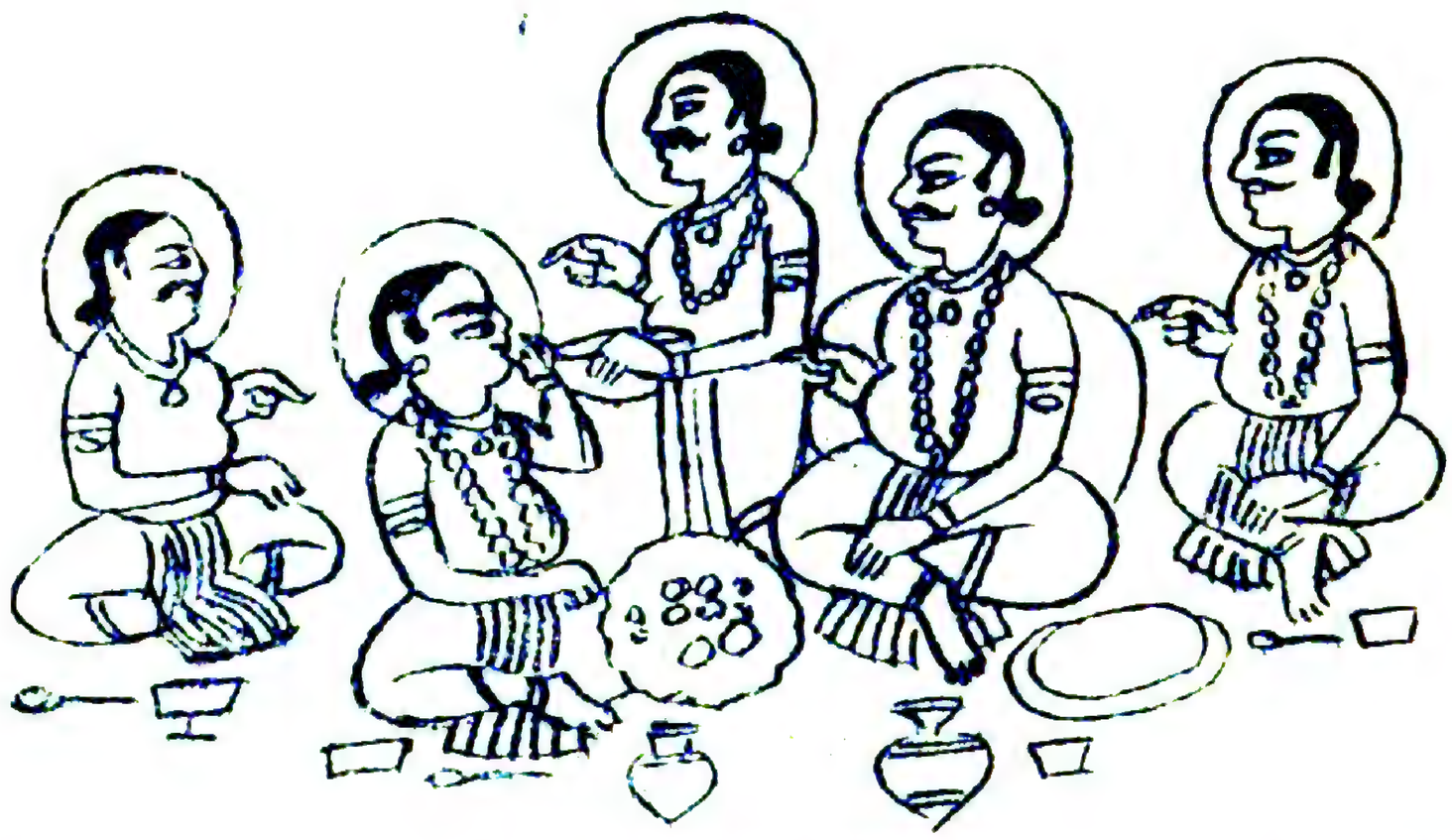

जो तुम्हारे शूद्र ने मोसों ऐसें कह्यो जो मेरी पातर
में मति डारो और डारोगेतो मेरी पातर छूय जायगी
तब श्री गुसांई जी चुपकरि रहे पाछें श्री गुसांई-
जी मुसिक्याय कें भट्ट जी सों कह्यो जो तुमहमारे
सेवकन कों जिमामन कहत हुते सो तुमसों हू-
मारो १ शूद्र न जिमायो गयो और सेवकन कों कै

सें जिमाऱ्योगे तब महा जी मुसिक्याय के चुप के
रि रहे सो वे विष्नुदास श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन
की वानी को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखि
॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५० ॥ सम्बंध ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक जीवनदास क्षत्री
कपूर सीहनन्द के वा
सी तिनकी वा ४
वार्ता लिखिये ०

सो एक समय सीहनन्द के सब वैष्णव मिलि
के श्री आचार्य जी महा प्रभून के दर्शन कों अड़
ल आवत हुते सो मार्ग में एक दिन मङ्गल गायउ

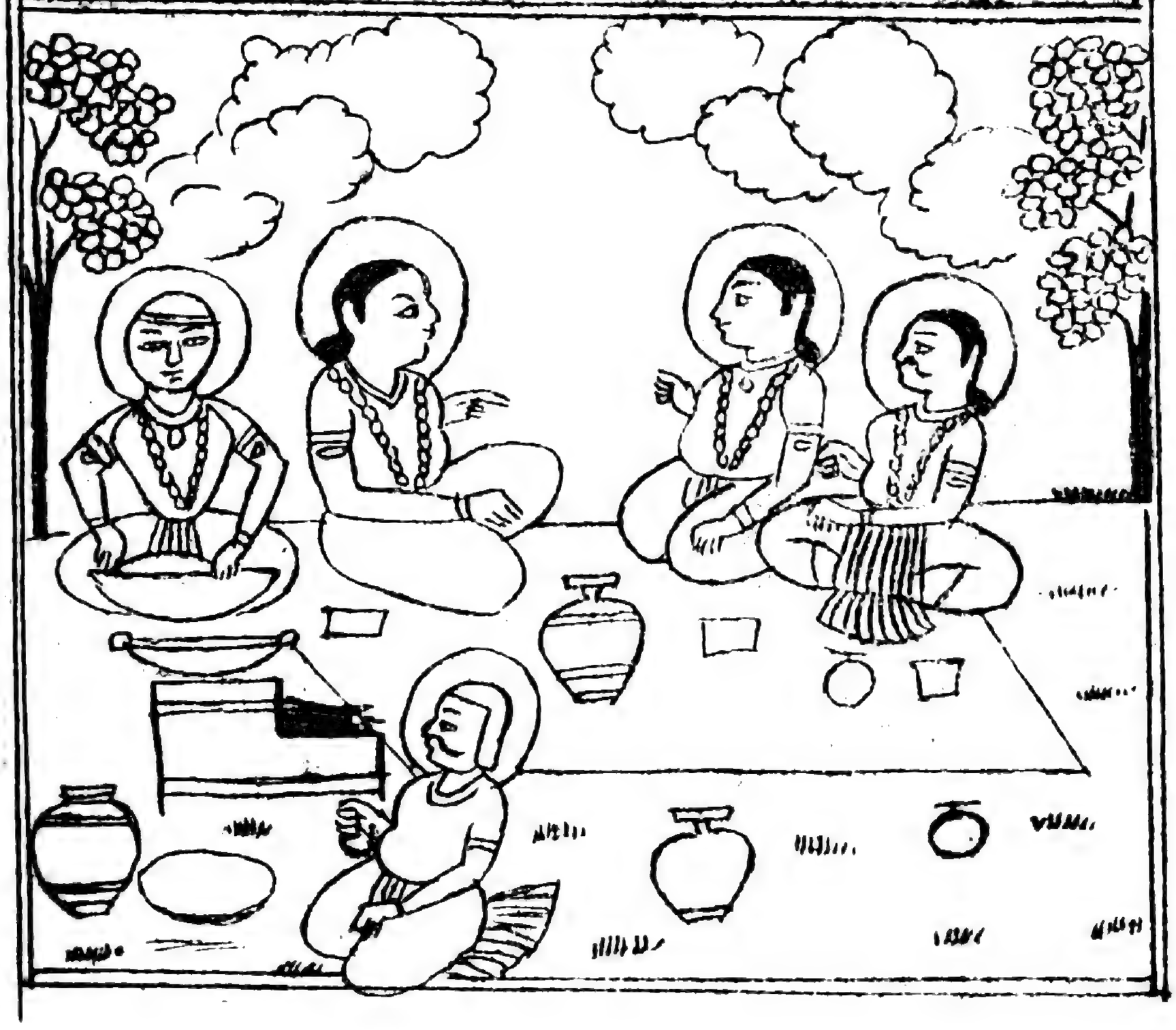

तें तहांसव वैष्णव अपने अपने चौका देत हुते तास
मय मेह चढ़ि आयो तब वैष्णवन नें कह्यो जो वर्षा
आई ऐसो कार्य भयो तब जीवन दास बोले जो तुम
चिंता मति करो तब जीवनदास नें श्रीआचार्य जी
महाप्रभून को नाम लेकें मेह कों आनि दीनो जो तो
को श्री आचार्य जी महाप्रभून को आनि है जो तब
ये मीत तब वह मेह रहि गयो पाछें सब वैष्णवन नें
भोग समर्पि महाप्रसाद लीयो तहां रात्रि को सोये
ना पाछें सब वैष्णव अडेल आये तब श्री आचा-
र्य जी महाप्रभून को दर्शन कीयो पाछें यह वात
सबननें श्रीगुसांई जी सों कही जो महाराज एक
दिन सब हम वैष्णव पाक करत हुते ता समय मेह
चढ़ि आयो तब जीवन दास नें आप को आनि दे
कें ऐसें कहि कें मेह को बरजो तब यह सुनिकें
जीवनदास सों श्री आचार्य जी महाप्रभूननें पूछो
और कह्यो जो कैसें हमारो तेनें आनि दीनो और
कदाचित वर्षा होनी तो तू कहा करतो तब जीवन
दासनें कह्यो जो महाराज वह कौन है जो आपको
आनि दिये उपरांत बरजे यह इन्द्र को कहा सामर्थ्य
है तब यह बात जीवनदास की सुनिकें श्री आचा
र्य जी महाप्रभू मुसिक्याय कें चुप करि रहे तब उ
न जीवन दास पै श्री आचार्य जी महाप्रभून की
ऐसी कृपा हुती उन जीवन दास कों श्री आचार्य
जी महाप्रभुन के स्वरूप को ऐसो ज्ञान हुतो सो आ
नि दैकें मेह बरजो तिनको कहा कहिये .....

तव वैष्णव नें कह्यो ये बड़े भागवदीय हैं वेजी वनदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे प रम कृपा पात्र भागवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग वैष्णव ५३ ॥

अथ श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भगवानदास सारस्व त ब्राह्मण तिनकी वा· र्ता लिख्यते

सो उन भगवानदास नें श्री आचार्यजी महाप्रभू नकी सेवा नीकी भांति सों कीनी तब श्री आचार्य जी आप भगवानदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भये· तब भगवानदास कों श्री आचार्यजी महाप्रभूननें आप कृपा करि कें अपनी श्रीपादुकाजी की से वा दीनी जो तू इनकी सेवा नीकी भांति सों करियो· तब भगवान दास श्री पादुकाजी की सेवा नीकीभां ति सों ऐसी भांति सों सेवा करते जो श्री ठाकुर जी· इनसों सानुभावु ह्वै वानें करते सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू भगवान दास के घर पधारे सो आवेार श्री आचार्यजी महाप्रभू विराजतहैं ताठो रनित्य उठि कें सवारें भगवान दंडौत करते सो ता ते ठाकुर पर कोऊ पाव न धरतो ऐसो उनको भा वहो सोई भगवानदास श्री आचार्यजी महा प्रभू नके ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हैं तातें इनकी वा र्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥वार्तासंग॥१॥वैष्णव॥५२॥

श्रीआचार्यजीमहाप्रभू नके सेवकभगवानदा स श्रीनाथजीकेभी तरिया तिनकी वार्ताहै॥

सो एक समय श्रीनाथजीके बालभोगकी स मग्री करत भगवान दास सों कछु सामग्री दाखी

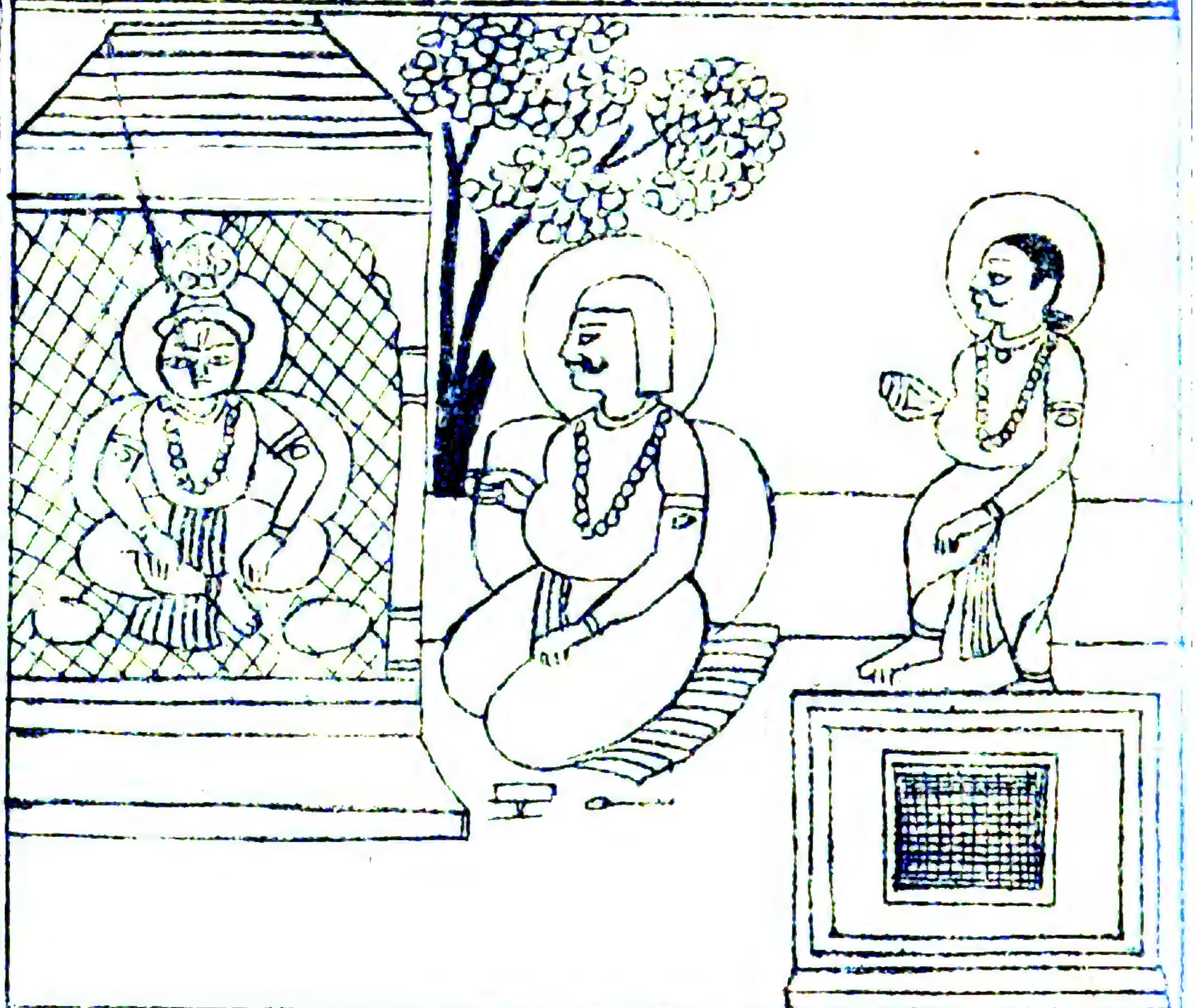

तब श्रीगुसांईजी भगवान दास के ऊपर बहुत खीजे और भगवान दास को सेवा तें भिन्न बैठाये सो भगवान दास गोविंदकुंड ऊपर आय अच्युत दास के पास आय बैठे पाछें श्रीगुसांईजी श्रीप

स्नान करिवे कों गोविंद कुंड ऊपर पधारे और भगवानदास तौ पूछरी की ओर अच्युत दास के पास हुते सो भगवानदास ने सब समाचार कहे पाछें ज व श्री गुसांई जी गोविंद कुंड स्नान करिकें अच्यु तदास कों दर्शन देनें पधारे तब श्री गुसांई जीक दर्शन करिकें अच्युत दास की आंखन में सूझा सून को प्रवाह चल्यो सो देखि कें अच्युत दास कों श्री गुसांई जीने अच्युत दास सों पूछो जो अ

च्युतदास तुमकों कैसो दरस कहा है तब अच्युत दास में श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज श्री आ चार्य जी महाप्रभून कों तौ श्री नाथजी नें आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन कों ब्रह्म सम्बन्ध करावो

सो साठ लाख जीवन कों तुम हाथ अंगीकार क
रनो है और श्री आचार्य जी महाप्रभूनें तो तुमकों
सौंपे हैं और तुम जीवन को अपराध देखन लागो
और जीव तो मर्दा अपराधही ते भर्यो है और जी
वन कों अंगीकार करनों तुम्हारे हाथ है ताते अ
व जीवन कों अंगीकार ..... कैसें होय गो तब
श्रीगुसांई जी यह बात सुनिकें आप भगवानदा
स कों हाथ पकरि कें श्रीगोवर्द्धन पर्वत ऊपर लें
चढ़े और श्री गोवर्द्धननाथ जी की सेवा जा रीति
सों करते ता रीति सों सेवा करन की आज्ञा दीनी
और कही जो अबते सावधानी सों सेवा करियो
और सामग्री आछी भांति सों करियो तब भगव
नदास ने तासमय श्री गुसांई जी के आगे नयो प
करिकें गायो ॥ सो पद ॥ रागसारंग

श्री विट्ठलेस चरण कमल ॥ सो यह पद गायो
सो सुनि कें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये पाछें
भगवानदास सावधानी सों सेवा करन लागे ता
भगवानदास श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे
कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई
लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥ *

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक अच्युतदास
मनोडिया ब्राह्मण ति
नकी वार्ता है ॥

सो ये अच्युतदास मानसी गंगा ऊपर रहते तहां चक्रतीर्थ है तहां रहते सो नित्य शृंगार के समय श्रीनाथ जी के दर्शन कौं आवते सो दर्शन करि के अपने स्थल कौं आवते सो उन अच्युत दास जीनें श्री नाथजीकी तीन परिक्रमा दंडौती करी हुतीं तब श्री गुसांईजी अच्युत दास के ऊपर बहुत प्रसन्न भए और श्रीगुसांईजी अपने श्री मुख सों कहते जो अच्युत दास बड़े भागवदीय हैं और बड़े महा पुरुष हैं सो ये अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के तथा श्री गुसाईजीके ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय है तातें इनकी वार्ता कहा तांई लिखिये ॥*

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५७॥*

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास गौड़ ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते

सो ये अच्युतदास बड़े भागवदीय हैं और श्री आचार्य जी महाप्रभूनने इनके माथे श्री मदन मोहन जीकी सेवा पधराई हुती आप कों पाठ वे ठारे हुते सो अच्युतदास श्री मदन मोहनजीकी सेवा नीकी भांति सों करते तब श्री मदन मोहनजी आप अच्युत दास सों सानुभाव हुते वार्ता कहते और अच्युतदास ऊपर श्री ठाकुर जी ऐसी कृपा करते और एक दिन अच्युत दास श्री नाथजी के

दर्शनको आवत हते तब श्री गोवर्द्धननाथजीकी एक दंडौती परिक्रमा करते ऐसे भगवदीय है औ रजब श्री गुसांईजी के पास आवते तब श्री गुसांई जी अच्युतदास कौं दंडौत न करत देते और कहते

जो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के कृपापात्र भ गवदीय हैं तातें इनकों दंडवत न करन दीजिये पा छें जब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें लौकिक ली ला आसुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युत दासनें श्री मदनमोहन जी कौं श्री आचार्य जी म हाप्रभून के घर पधराये आप श्री बद्री नाथ जी के दर्शन कौं उठि गये तब उहां जायकें श्री बद्रीनाथ जी के दर्शन करि कें अन्नजल को त्याग करि कें

अपनी देह छोड़ी पाछें श्रीमदनमोहनजी कौंक-
हौ गोपीनाथजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास
पधराए वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके ऐसे भगवदीय है जिन श्री आचार्यजीमहा
प्रभूनकोस्वरूप साक्षात करि जान्यो और उन-
की श्री महाप्रभून के ऊपर बडी आसक्ति हुतीजो
परोक्ष भए पाछें अन्नजल को त्याग कीयो तब
देह छोड़ी भक्ति मार्ग को स्वरूप केवल विहास
किहै सो वे अच्युतदास ऐसे भगवदीय है तातें
इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ ※

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ५५ ॥

श्रीश्री आचार्यजीमहा ५
प्रभून के सेवक अच्यु
तदास सारस्वत ब्रा
ह्मण तिनकी ५
वार्ता है ॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग
अच्युतदास नें पृथ्वी परिक्रमा कीनी हुती सो श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें अच्युतदास कौं अपनी
पादुकाजी की सेवा दीनी सो अच्युतदास नें आ
ति उत्तम रीति सों श्रीपादुकाजी की सेवा कीनी
वाते श्री आचार्य जी महाप्रभू अच्युतदास कौं
नित्य दर्शन देते और जो श्री आचार्यजी महाप्रभू
नें सन्यास ग्रहण कीयो सो केवल उनके भावार्थ
कीयो तब एक वैष्णव सों श्री आचार्य जी महा

प्रभून नें कह्यो जो राक डोंगी कासी कों भाडे करलो
उ तव वह वैष्णव डोंगी भाड़ें करि लाये ताके ऊप
र श्री आचार्यजी महाप्रभू चढ़ि कें बनारस पधारे
तहां सन्यास डेढ़ महीना तांई राख्यो तव वह वैष्ण
व जो काशी में गयो हो सो कासी ते कंडा में आयो
तव अच्युतदास तथा सब वैष्णवन सों कह्यो
जो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें सन्यास ग्रहण की
यो फेरि कासी पधारे सो उहां डेढ़ महीना तांई रहे
पाछें असुर व्यामोह लीला निरवाई तव अच्युत
दासनें या वैष्णव सों कह्यो जो तोकों भ्रम भयो हो
यगो तव वा वैष्णवनें कह्यो जो में श्री आचार्यजी
महाप्रभून के साथ हतो सो कासी ते देखि कें अब

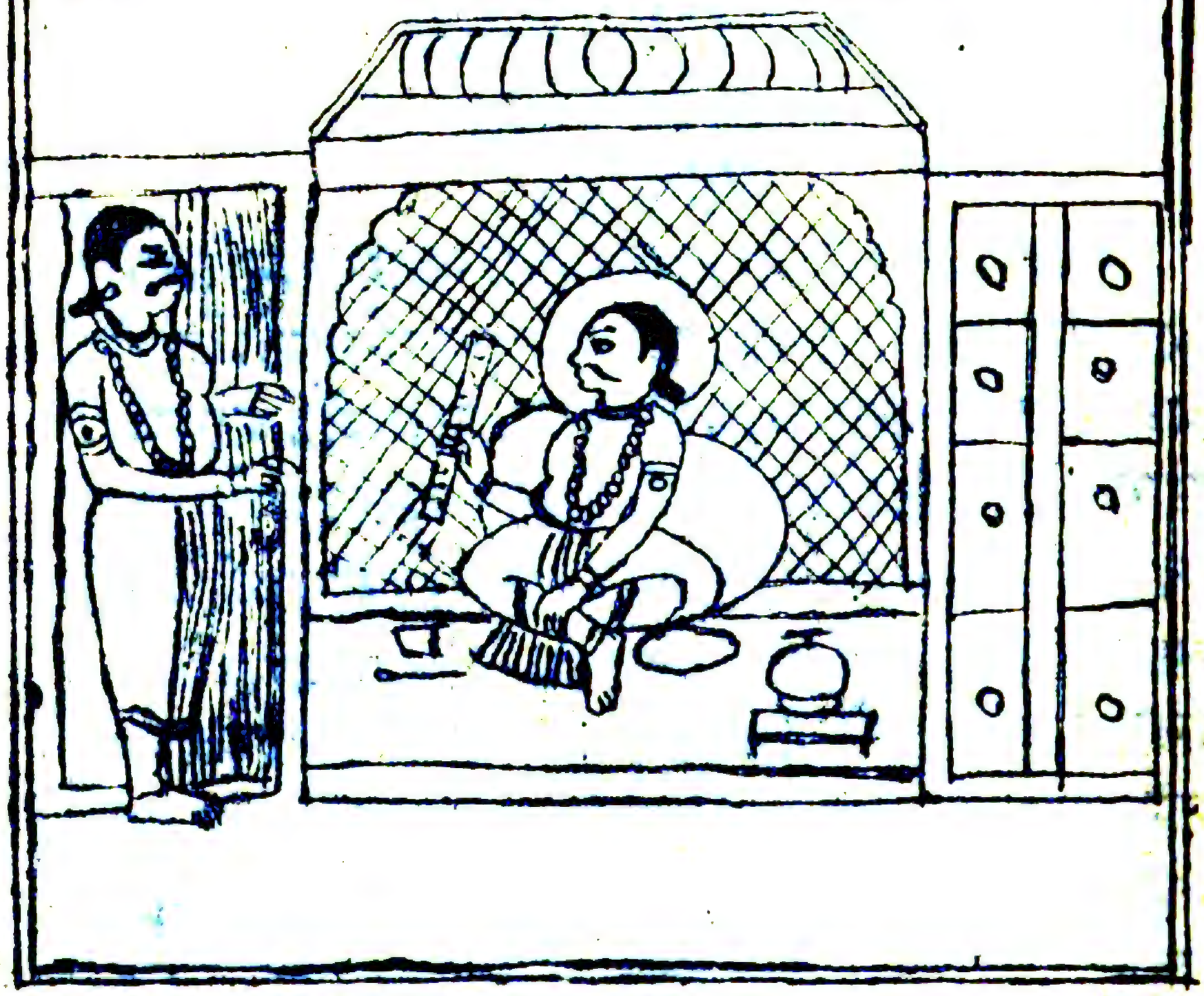

हो हो आयो हों तव श्रच्युतदास नें कह्यो जो ऐसो प्रभू
कबहू न करें जो जीवन कों आसुर व्यामोह लीला
दिखावत हैं तव श्रच्युतदास नें मन्दिर के किवाड़ खो
लिकें वा वैष्णव कों श्री आचार्यजी महाप्रभून के
दर्शन करवाये तव वेसें तो श्री आचार्यजी महाप्रभू
विराजे हैं और पोथी देखत हैं तव वा वैष्णव नें बंडो
त कीनो तव श्री आचार्यजी महाप्रभू नें कह्यो तुम
कछू सन्देह मति करो यह प्रागट्य लौकिक रीति सों
देह धरे की लीला है और सिंहासन बैठिकें अलौकि
क लीला नित्य है ताते यह लीला सर्वदा अवनाम
प्रगट है ताते तहां आगा हैं नाते सन्देह न करनो यह
आसुर व्यामोह लीला है सो श्री गुसांईजी मैं वैष्णव नम
में लिखे हैं जो प्राकृतानुकृत व्याज मोहिता सुरमा
नुषः मनुष्य देह धरे ताकी यह लीला है सो अच्युत
दास ऐसे स्वरूप नेष्टा के जिन कों श्री आचार्यजी
महाप्रभून के स्वरूप कों ऐसो दृढ़ विश्वास हो
वे अच्युत दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांलों
हैं लिखिये ॥*॥

वार्तासंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४६ ॥ सम्बन्ध ॥ १०८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के से
वक नारायणदास अम्बाले
के वासी हते तिनकी
वार्ता लिख्य
ते हैं ॥

सो वे नारायणदास देशाधिपती के चाकर हुते तिनकों राजद्वार को काम बहुत हुतो ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आय सकते नां ही परि अंतः करन में श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की आतुरता बहुत जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब जाउंगो परि आय सकते नाहीं ताते नारायणदास नें एक चाकर राख्यो ताकों महीना रुपैया ४) चारि कों कीनों और वा सों कह्यो जो तेरो यह काम है जो मोकों छिनछिन में सुरत दीवायो करि जो भैया जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब चलोगे यह कहि कें सुनाउ जोहम कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की सुधि रहे सो वह चाकर योंही कह्यो करें

तब नारायणदास अपने कार्य में बैठे तब आगे आप कें ठाडो होय कें एक१ घडी उपरांत कहैजो भैयाजू श्री आचार्यजी महा प्रभून के दर्शन कों कब जाउंगो ऐसेंही नित्य प्रति कहै और नारायणदास श्री आचार्यजी महाप्रभून कों भेट बहुत पठावते नारायणदास ऐसे भगवदीय है सो उन कों चित्त सदा श्री आचार्यजी महाप्रभून के चरणारविंद में रहतो ताते श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत ही प्रसन्न रहते वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५७॥ सम्बन्ध १२६

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नारायणदास मां ट मथुरा में रहने नि की वार्ता ॥ लिख्यते

सो नारायणदास कों श्री मदनमोहनजी नें आज्ञा दीनी हुती जो वृन्दावन में अमुक ठौर हों मो कों वहां सों काढ़ि के मोकों बाहिर पधराउ तब नारायणदास जायकें श्री मदन मोहन जी कों बाहिर पधराय कें पाछें जब श्री गोपीनाथजी नें श्री मदन मोहनजी कों पाठ सिंहासन बैठारे तब कितनेक दिन तांई नारायणदास नें सेवा कीनी तब उनके पाछें उनकों कोऊ नहुती ताते बड़ी गोंडिया सेवा

करन लागो श्रीगोपीनाथजी ने पाट बैठारे ताते सब कोऊ दर्शन कों आवहै वे नारायण दास ऐसे भगवदीय हे तिन कों श्रीमदनमोहनजी आप कृपा करिकें वृन्दावन पधारे श्रीमदनमोहनजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभून कों सेवक जानि कें नारायणदास के ऊपर कृपा कीनी ताते वे नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ * वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५८॥ सम्बंध १३०॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नारायणदास चौहान ठट्ठे के बासी ति

नकी वातीहै
सोवे नरायणादास ठट्ठे के पात्साह के दीवान कुल
कुल्ला हतो जो नारायणदास दीवानकरे सोहोयपाछे
कि ननंका दिन में वह पात्साह नारायणादासके ऊपर को
प्यो तव नारायणदास को पकरयो तव बहुत मारयो
और वन्दीखाने में देदीयो पाछें पचास लाख रुपैया
वाके माथे दंड कोकीयो सो दिन प्रति पांच हजार भ
रे और जादिन रुपैया न भरे तादिन नरायनदास के
पांचसो कोरडा मारने पात्साह ने ऐसोवंधान कीयो
तव एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
दोउ भाई ब्राह्मण तिननें अपने मन में विचार कीयो
जो ठट्ठे में नारायणदास दीवानहै सोहमउनके पास
चलोंहमकों अपनी कन्या को विवाह करनों है ताते
जो वे कहदेय तो कन्या को विवाह करें सो ऐसो
विचार कैं वे दोउ भाई अपने घरते ठट्ठे कों चले सोठ
ठे में जाय कैं पहुंचे तव वहांजाय कें सुन्यो जो नराय
णदास तो वन्दीखाने में पस्यो है तव वे दोउ भाई अ
पने मन में विचार करन लागे जो अव कहा करिये
ऐसो विचार इनदोउ भाईनें कीयो जो अव यहा
सोंचलिये तव प्रातःकाल यह वात नारायणदास
ने सुनीजो वे दोउ भाई श्री आचार्यजी महाप्रभू के
सेवक गांव में आये है सो उननें सुनीजो नारायण
दास तो वन्दीखाने में परे है तातें अव यहांसे प्रातः
काल चलोंगे तव नारायणदासनें उनके पास मनु
ष्य पठायो और कहिवाय पठाईजो तुम आये सो

मेरो बड़ो भाग्य है मेरे पास तुम प्रातःकाल होय
के दर्शन अपने मोकूं देवेके जो यों तब वे दोऊ भाई
प्रातःकाल उठि देह कृति करि तिलक मुद्रा क
रि नित्य कर्म सों पहुंच कें श्री आचार्यजी महा प्र
भून कों चरणामृत और महाप्रसाद लेवें जहां ना
रायणदास बन्दीखाने में हुते तहां दोउ भाई नारा
यणदास के पास जाय मिले तब नारायणदास वे
उनकों देखि कें परम आनन्द भयो और बहुत प्र
सन्न भए तब उन दोऊ भाइनें चरणामृत और म
हाप्रसाद नारायणदास कों दीनों तब नारायणदास ने
लीनों और कह्यो जो मोकों बन्दीखाने में वैस
वनको दर्शन भयो तब नारायणदासनें श्री आचार्य

जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे पाछें भगवद्
वार्ता के प्रसंग करन लागे इतने में नारायणदास के
घरते पांच हज़ार रुपैया न की थैली आई सो द्वार पा
लनें थैली के ऊपर मोहर छाप करि के नारायणदास
के पास पठाई तब नारायणदासनें वे पांची थैली उ
न दोउ भाइन कों सोंपि दीनी और दंडौत कीनी और
कह्यो जो अब तुम बेगि पधारो और श्री आचार्यजी
महाप्रभून कौं मेरी दंडौत करियो और तुम अपनी
कन्या कौ विवाह यादव्यते भली भांति सों करि
यो तब वे दोउ भाई ब्राह्मण नारायणदास ते विदा
होय के चले तब इतने में पातसाह बोल्यो जो पांचो
थैली नारायणा वारी लावो तब दरवान बोल्यो जो
पांचों थैलीन ऊपर मोहर छाप करि कें नित्य नारा
णदास के पास पठावत हैं त्योंही पठाई हैं तब पात्सा
ह बोल्यो जो खजानची कों बुलावो तब मनुष्य जा
य कें खजानची कों बुलाय लाये तब खजानची आगें
आय ठाढ़ो भयो तब पातसाह नें खजानची सों पू
छ्यो जो कोरे तेरे पास नारायणदास के पास वे पांची
थैली आई हैं तब खजानची नें कही जो साहब मेरे
पास तौ नाहीं आई तब पातसाह कौं बहुत क्रोध
भयो और कह्यो जो नारायणदास कों बुलावो तब
नारायणा दास कौं बन्दीखाने मेते बुलाये सो लायकें
पातसाह के आगें ठाढ़ो कीयो तब नारायणा दास ने
पातसाह ने पूछ्यो जो नारायणदास आज थैली क्यों
नाहीं आई पाछें घोड़ो सो गाड़ो कोरड़ा करिकें

कोरड़ा वारी बुलायो और पात्साह नें पांचसौ कोर
ड़ा कौतुक दीयो और पात्साह बोल्यो जो नारायण
दास सांच कहि जो आज थैली क्यों नाहीं आई
द्वारपाल नें तो मुहर छाप करि कें तेरे हवाले कीनी
और तैंने यह कहा कीयो तू सांच कहि नाहीं कोर
ड़ा लागत हैं तब नारायणदास सलाम करिकें बो
ल्यो जो हजरत आज मेरे गुरू भाई आये हुते सो

वे पांचों थैली उनको दीनी और मैनें अपने मनमें
कह्यो जो मैं आज मार खाय रहूंगो परि यह घड़ी
कहां है तब पात्साह चुप करि रह्यो पाछे एक घ
डी विचार कें कह्यो जो स्याबास तू अपने गुरू के
मारग में ऐसो सांचो है सो मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न

तवपातसाह ने वाही समय वेड़ी कटवाइ के वा
ही समय घोड़ा तथा सिरोपाउ मगायकें नारायण
दास कौं पहरायो घोड़ा दीयो और निवाज्यो तव
फेरि कें अपनों कुल कुलादीमान राख्यो जैसो पह
लेंहतो तैसेंई कीयो काम सब सोंप्यों और नारायन
दास के मांथे दंड कीयो हतो सो सब माफ़ करि कें
सिरोपाव पहराय कें कह्यो जो जा घर होय आउ सो
सिरोपाव पहरि कें घोड़ा ऊपर चढ़ि कें नारायणदा
स घर कों गये सो वे दोऊ भाई वैष्णव गांम में ही
हते सोइ दोऊ भाई वैष्णव सुनि कें नारायणदास
सों मिलिवे कों आये तव नारायणदास उनसों
मिलें भेंट और कह्यो जो मेरे गुरू के सेवक आये
तौ मैं छूटो तव उन वैष्णवन नें कह्यो जो श्रीआ
चार्यजी महाप्रभून की कृपाते वेंडी छूटे नवना
रायणदास ने १००० हज़ार मोहरन की एक थे
ली वैष्णवन के हाथ श्रीआचार्यजी महाप्रभून
कों भेट पठाई पाछे वे दोऊ भाई उहां सों चले सो
कितनेक दिन में श्रीगोकुल आये तव श्रीआचा
र्यजी महाप्रभू श्रीगोकुल में हुतो सो उन दोऊ भा
ई वैष्णवननें आय के श्रीआचार्यजी महाप्रभून
को दर्शन कीयो और नारायणदास को हज़ार मो
हरन की थैली आगें राखी तव श्रीआचार्यजी म
हाप्रभूननें नारायणदास के कुशल समाचार पू
छे तव उन वैष्णवननें सब समाचार कहे तव श्री
आचार्यजी महाप्रभू अपनो श्रीमुख सों कहें जो

जाकों वैष्णव ऊपर ऐसो दृढ़ स्नेह है ताको कछु
कयोंहू पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्री आचार्यजी
महाप्रभून ते बिदा होय कें अपने घरको गये सो
बेटी को विवाह आछी भांति सों कीयो और पहु
लेउन कोंनाम नरियाहुतो सो सेवक भए पाछें श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास नाम ध
सो जाको ऐसो मन होय नाथे श्रीठाकुरजी ऐसी
कृपा करें प्रभूजी को नाम भक्त वत्सल है सो अपने
कों योरे ही में कृपा करतहैं सो वे नारायणदास
ऐसे कृपा पावहुते इनकी वाती कहां तांई लि
खियें॥ +

॥वातीप्रसंग॥१॥ वैष्णव ॥५७॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक एक क्षत्राणी
अकेली सीहनन्द ५
मेरहतीतिन ५
कीवाती

सो वाक्षत्राणी कें श्री नवनीत प्रियाजी विराजेहैं
श्रीठाकुरजी सानुभाव हैं सो वह बाई अकिंचन
सेवाजव करि पहुंचे तब सूत कातै तामें जो कछु
बढ़ती आवे तासों निवाह करे सो घर के द्वारे का
किन तरकारी केवन आवे तब श्रीठाकुरजी मन्दि
र में पुकार के कहें अरी अमुकी तरकारी विक
ने आई है तूले ऐसें श्रीठाकुरजी कहें तब वह
क्षत्राणी सब भांति की तरकारी लेहि सो केतिक

तौकच्छी समर्पे केतिक रसोई में छोंकि कें समर्पे
और कबहूं काहिल को पाल्द श्रीठाकुरजीनसु
नें और वह काहिल आगें निकस जाय तब वह
वाई सामग्री कछु लैन सकै तब श्रीठाकुर जी वा
सों बहुत रारि करें जैसे लौकिक स्त्रिका रार करें
तैसे श्रीठाकुर जी वा क्षत्राणी सों झगरो करें और
एक दिन कछू पकवान वाल भोग को होय न आ
यो तब रोटी घी सों चुपरि कें रात्री के लिये धरि
एवी सो जब रात्रि आधी भई तब श्रीठाकुर जी
बोलै वा क्षत्राणी वाई कों जगाई और कहें जो
हों भूखों हों तब वा वाई नें कह्यो जो लालजी प
कवान तौ कछू नाहीं है और रोटी घृत सों चुपरी
धरी है तब श्री ठाकुर जी कहैं जो भलो रोटी ही
लाउ तब वा वाई ने रोटी आगें आनि राखी तब
श्रीठाकुर जीने वा वाई सों कह्यो जो तुम मोकों रो
टी को टुतुरो कर कें दै तब वह वाई श्रीठाकुरजी
के हस्त में दैन जाय तब अपने श्री हस्त में लैकें
कतरि कतरि कें आरोगन जाय पाछें जब पान क
रकें पोढ़े परि वा क्षत्राणी के मन में क्षोभ भयो व
ह्न सों और कह्यो जो सवारे उधारे लाय कें पक
वान करि धरोगी जो रात्रि कों श्री ठाकुर जी नें फी
की अकेली रोटी आरोगी पाछें दूसरे दिन पकवा
न करि धरयो तब रात्रि कों श्रीठाकुर जी नें मांग्यो
तब पकवान लैकें आगें धर्यो तब श्री ठाकुर जी
आरोगे तब कह्यो जो अमुक तेनें पकवान तो ध

सो परि मोकों पकवान वीच रोटी की नुतरी अ
ति अद्भुत स्वाद लगी तब वा क्षत्रानीने कह्यो र
जो महाराज में कहा करूं मेरें कोई कमावन र
हारो तो है नाहीं मैंतो अकेली हों मोते तो कब
हू कछु होय आवत नाहीं तब श्री ठाकुरजीने
वा क्षत्रानीसों कह्यो जो तू नित्य पकवान काहे र
कों करत है तू मोकों रोटी चुपरि कें धरि राख्यो क
रि मोकों तो तेरी रोटी बहुत रुचित है तातें तू सं
कोच मति करे हमकों तो तेरी रोटी चुपरी बहुत
स्वाद लागत है पाछें वह रोटी करि राखती सो श्री
ठाकुर जी आरोगते वह क्षत्रानी श्री आचार्य
जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही

ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये॥ ३९

वार्ताप्रसंग॥१॥ चैत्रसुद॥ ६०॥ ॥ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक दामोदरदास का
यस्थ सेरगढ के वा
सो तिनकी वा
तीहै॥

सो तिनको सेव्य ठाकुर श्री कपूर रायजी सोवत गोर स्वरूप हतो तिनके पास श्री नवनीत प्रियाजी बैठते सो एक समय दामोदरदास की स्त्री वीरवाई ताके गर्भ रह्यो पाछें प्रसूत भई सो पुत्र जन्म भयो सो घर की वहू बेटी सब प्रसूत के काम काज करन लागी सो श्री ठाकुर जी की सेवा में विलम्ब भयो वीरवाई प्रसूतक में ते बहुत कहे जो कोऊ सेवा में न्हाउ श्री ठाकुरजी की सेवा में अबेर होत है पर कोऊ नाहीं न्हाय तब श्री ठाकुरजीने वीरवाई सों कह्यो जो तू स्नान करि के सेवा क्यों नाहीं करत है तब वीरवाई प्रसूतक में ते उठि के श्री ठाकुर जी सों कह्यो जो महाराज मेरी तो यह व्यवस्था है मोको तो सेवा में आप नो नाहीं प्रसूतिका में हे आपरस छूट जाइगी तब श्री ठाकुर जी महाराज ने वीरवाई सों कह्यो जो मोको तो मेवा में लम्ब होय है मोको इतनी अबार भई है और को ऊन्हात नाहीं ताते तू ही न्हाइ तब वीरवाई

श्री ठाकुरजी के श्रृंगार ते उठिके प्रसूतका में ते
य के काछ दैकें श्री ठाकुर जी की सेवा करिकें पाछें
भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय कें
नोंसर करिकें आप भोजन करिकें खाट में सोय
रही श्री ठाकुर जी की आज्ञा सों सेवा कीनी सो
सेचालीस दिन तांई नित्य करती तब श्री ठाकुरजी
ने कह्यो जो तेंने मेरी आज्ञा हू मानी और वेद मार्ग
की रीति हू राखी ताते श्री ठाकुरजी बहुत प्रसन्न
भए तब चालीस दिन बीते तब शुद्ध स्नान करकें
सेवा करन लागी पहले पात्र वस्त्र सब अपरस
दूर कीने और दूसरे सब नये मंगवाए पाछें भली
भांति सों सेवा करन लागी ताते वह वीर वार्ई श्री
आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भग
वदीय ही ताते इनकी वार्ता अब कहां तांई लि
खिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥६१॥*

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक स्त्रीपुरुष दोऊ
स्वामी हूते तिन की ॥
वार्ता लिख्यते

सो वे स्त्रीपुरुष दोऊ जने सीहनन्द में आय रहे सो
वह घर निपट छोटो हुतो ताते श्री ठाकुरजी ता स
मय बैठिते सो आधी कोठरी में तो रसोई करते श्री
र आधी में रहते और सेया को ठौर न हुतो ताते एक
बांस को मेंडा कर राख्यो हुतो ताके ऊपर श्री ठाकु

स्त्री पोढ़ते आप .... स्त्री पुरुष दोउ जने रात्र
कों आगन मे सोय रहते ऐसें करत नव चातुर
मास के दिन आये नव मेह वरस्यो तो तोउ वे आं
गन में सोय रहते परि भीतर न सोवते नव ठाकु
कुर जी भीतर सों बोलते जो अरे अमुका अमु
कोहो तुम भीजत क्यों हो भीतर क्यों नाहीं सोव
त हो बाहिर काहे कों पोढ भीजत हो ताते तुम भी
तर आवो और हमनो ऊंचे मेडा पर हैं तुम नीचे
क्यों नाहीं सो वत हो तब वा स्त्रीने कह्यो जो
महाराज तुम तो ऊंचा मेडा ऊपर पोढत हो और
मैं नीचे कैसें सोऊं तब श्री ठाकुर जी प्रसन्न होय
कें कहें जो कछु बाधक नाहीं तुम कछु संकोच
मति करो हम तुमते प्रसन्न होय कें कहत हैं तातें

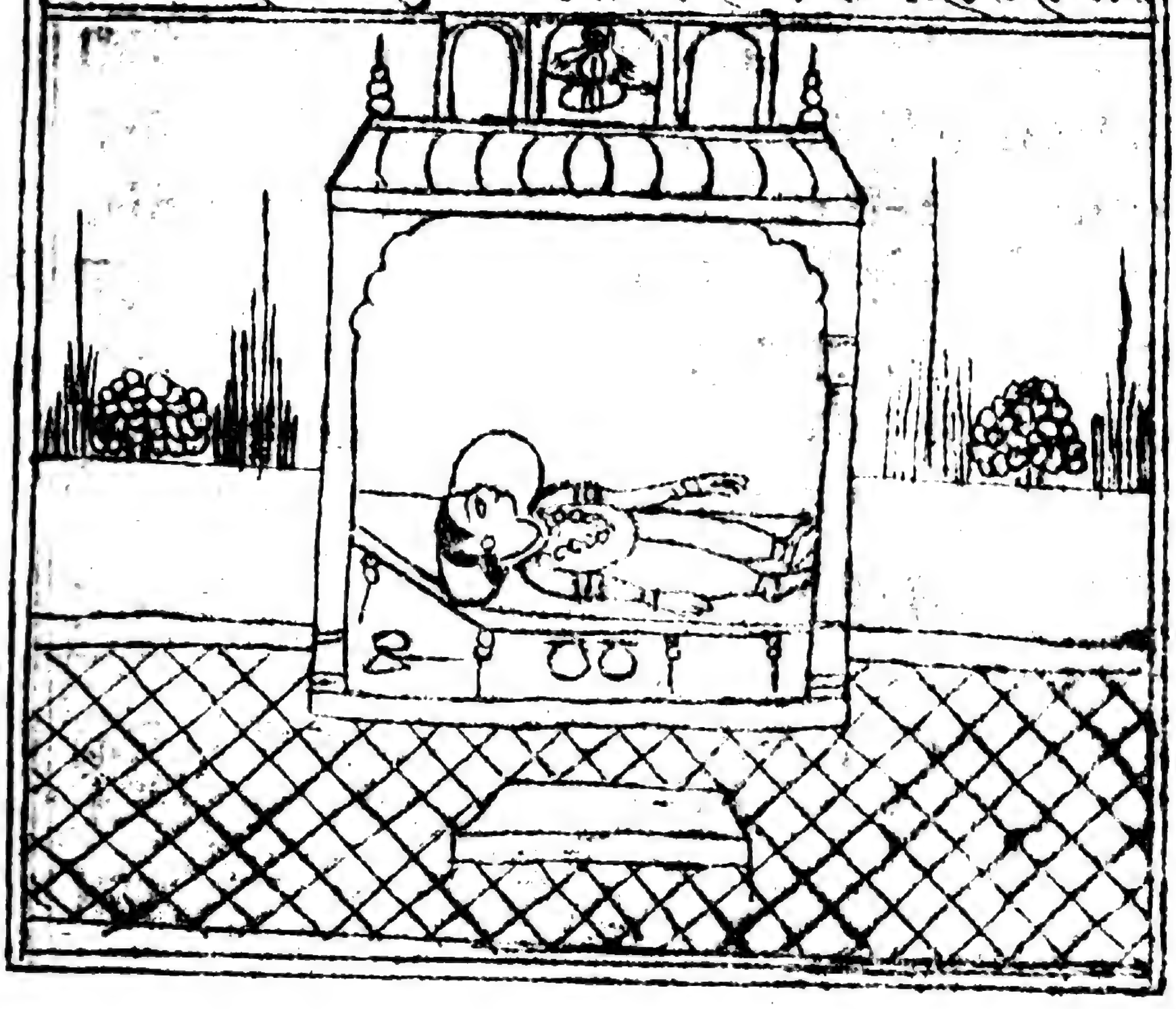

तुम भीतर खुसीसों सोय रहो पाछें तब वे दोऊ जने भीतर सोवन लागे परि ऐसी भांति सों सोवते मति कहूं स्वास वाजे ऐसे सावधानी सों सोवते सोवे स्त्री पुरुष श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहा ताई लिखिये ॥*

वार्तोप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सूतारिकी गिर अडैल में रह ते तिनकी वा० ताहै ॥

सो उन सूतार ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत कृपा करते वा सूतार के ऐसो नेम हतो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन विना एक दिना न रहतो ताते वह सुतार सब घर को काम काज छोडि कें नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों आवतो तब घर के मनुष्य दुख बहुत पावते ताके लिये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप वा सूतार के घर पधारते तासों श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत वार्ता करते और श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता दुलंमागारूजी सो श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता खीजती और कहैं तोतुम ऐसे अनुचित क्यों करत हो ऐसे उचित नाहीं ऐसें कहि कें दुलंमागारूजी बहुत रिस

कर तो परि श्री आचार्य जी महाप्रभू चोथे पाच दि
दिन तो पधारते ऐसी कृपा श्री आचार्य जी महाप्र
भू वा सूतार के ऊपर करते सो वह सूतार श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को ऐसो कृपा पात्र भगव
दीय हो ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥
वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६३ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके सेवक एक क्षत्री हुते
ताको अन्यमार्गीय
को स्नेह हुतो
सो वा क्षत्रीसों अन्य मार्गीय को स्नेह हुतो सो
एक दिन वह क्षत्री अन्यमार्गी के घर गयो तब वह
क्षत्रीसों कह्यो जो तुम आज इहांई पाक करियें
तब वाके आग्रह तें वा क्षत्री वैष्णव ने पाक उहां
ई कीयो तब पाक करिकें वा अन्य मार्गीय ठाकु
र के आगें श्री नाथ जी को नाम लेकें भोग सम
र्प्यो पाछें समयानु सार भोग सराय वाको प्रसाद
दीयो पाछें आपनें लीयो पाछें वहांई विश्राम
कीयो सो निद्रा वस भए तब वा अन्य मार्गीय के
सेव्य स्वरूप ने स्वप्न में कह्यो जो आज तो हम भूखे
रहे तब वा अन्यमार्गीय नें कह्यो जो तुम कोंतो
वा वैष्णव ने पाक भोग समर्प्यो हो और तुम भूखे
कैसें रहिगये तब उनके सेव्य श्री ठाकुर जी ने कह्यो
हो सोच्यो हो श्री नाथ जी आप आरोगिहैं हम
को तो श्री आचार्य जी ने अंशसे न कीयो .....

तब वह अन्य मार्गीय को मित्र सोयो होता कों
जायो तब वह जाग्यो तब सब समाचार कहे तब
वाकी स्त्री ने कह्यो जो मंतो सों के ताकवार कहो
जो यह श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक होय
सो याहो के लिये हमारे प्रभूजी श्री आचार्यजी
महाप्रभून की कृपा ते सेवक के हाथ को आरो
गत हैं पाछें वह अन्य मार्गीय सब कुटुम्ब सहित
श्री आचार्यजी महा प्रभून की सरण आये सब
सों नंत सेवक भयो पाछें वाके स्वरूप को श्री आ
चार्यजी महाप्रभूननें पंचामृत सों स्नान करवा
यो पाछें पाठ बैठारे ता पाछें भोग समर्प्यो समया
नुसार भोग सराय कें सब वैष्णवन को बुलाय
महाप्रसाद लिवायो पाछें वह अन्य मार्गीय
श्री ठाकुरजी की सेवा भलीभांति सों करन लाग्यो
पाछें वह स्त्री भलो वैष्णव भगवदीय भयो
वा स्त्री वैष्णव के संग ते भलो भगवदीय भयो
ताने संगा करनों तो वैष्णव को करनों भगवदीय
को करनों वह स्त्री वैष्णव श्री आचार्यजी म
हा प्रभून को ऐसो कृपा पात्र भगवदीय होता
तेकुलको वार्ता कहा ताई लिखिये ॥ *

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥६४॥

अब श्री आचार्य जीमहा
प्रभून के सेवक लघु पुरु
षोत्तम दास हाती *
तिनकी वार्ता

सोवे लघु पुरुषोत्तम दास श्री आचार्यजी महा
प्रभून कोवथा श्री नाथजी कों एक सार जानते श्री
आचार्य जी महाप्रभून कों स्वरूप साक्षात् पुरुषो
तम करि जानते लघुपुरुषोतम दास की श्री आचा
र्य जी महा प्रभून के ऊपर बड़ी आसक्ति हुती वार्ते
श्री महाप्रभूजी लघुपुरुषोत्तम दास के ऊपर व
हुत प्रसन्न रहते लघु पुरुषोतम दास दूसरो स्व
रूप जानते नाहीं श्रीठाकुर जी कों तथा श्री महा
प्रभूजी कों एक जानते वे लघुपुरुषोत्तम दास ऐ
से कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां
तांई लिखिये ॥ ÷

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ॥ ६५ ॥÷

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक कविराज भा
ट तिनकी वार्ता है ॥ ०

सोवे कविराज भाट ब्राह्मण हुते सो तीन भाई
हुते सो तीन्यों भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के
ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे उनकों नाम
समर्पणा करवायो पाछें श्री नाथजी के सन्निधान
बहुत कवित्त पढ़े भये २ कवित्त करिकें श्री नाथ
जी के सन्निधान कवित्त सुनावते पाछें श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के कवित्त बहुत कीये ताते श्री
आचार्य जी महाप्रभू कविराज भाट के ऊपर बहु
त प्रसन्न रहते सोवे कवि राज भाट श्री आचार्य
जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय

हे तातें इनकी वार्ता कहांलौं लिखाइये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥ *

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके सेवक गोपालदास
ठोरा के वासी तिनकी
वार्ता लिख्यते ॥

सो गोपालदास के कीये छन्द बहुत हैं सो गोपालदास की श्री आचार्य जी महाराज के ऊपर बहुत आसक्ति हती सो याक समें गोपालदास ग्वाल आये सो दूसरे दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून को जन्मोत्सव हतो सो श्री आचार्यजी महाप्रभू मार्कन्डेय पूजा कों बैठे हुते ता समय गोपालदास नें एक नयो कवित्त कह्यो सो गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

माधो मास भरि बैसाख श्री वल्लभहरि जन्म लीये ॥ यह सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए पाछें गोपालदासनें बहुत छन्द कीये सो ये गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां लौं लिखिये ॥ *

॥ वार्तोप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र
भू के सेवक जनार्दन
दासचोपडा क्षत्री
तिनकी वार्ता

एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू श्रीनाथ जी द्वार पधारे हुते पाछें श्री गोकुल आये तब जनार्दन दास ने श्री महाप्रभून कौ दर्शन कीयो तबक हौ जो ये साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम हैं ईश्वर हैं तब जनार्दन दास नें बीनती कीनी जो महाराज मोकों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने जनार्दन दास कों आज्ञा दीनी जो स्नान करि कें आउ तब जनार्दन दास स्नान करिकें आयो और दंडवत कीनी और बीननी कीनी जो महाराज मोकों नाम समर्पण करवाइये तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें श्रीनाथजी के सन्निधान जनार्दन दास कों समर्पण करवायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते जनार्दन दास भलो वैष्णव भयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभूज नार्दन दास के ऊपर बहुत कृपा करते वे जनार्दन दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ *

* ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ६ ॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक गड्डस्वामी मनोड़िया ब्राह्मण तिनकी वार्ता कहे ॥

सो वे गड्डस्वामी आप स्वामी कहावते सो एक स

मय श्री आचार्यजी महाप्रभू वृन्दावन में पधारे
हुते तब गडु स्वामी कों आज्ञा भई श्री ठाकुरजी
ने कृपा करि कें रात्रि कों स्वप्न में जनायो जो सवारे
श्री आचार्य जी महा प्रभू इहां पधारेगें सो तू इन
की सरणा जैयो तू सेवक हूजियो तब श्री आचार्य
जी महा प्रभू आप सवारे पधारे तब गडु स्वामी
स्नान करिकें जहां श्री आचार्यजी पधारे हुते त
हां गये तब जाय के गडू स्वामी नें दंडोत कीनी
और वीनती करिकें यह कह्यो जो महाराज मो
कों सरणा लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्र
भू मुसिक्याय कें कहें जो तुम तो आप स्वामी हो
तुम कों सेवक कैसे करियें तब गडु स्वामी नें श्री
आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महा
राज मोकों भगवद् आज्ञा भई है जो तू श्री आचा
र्यजी महाप्रभून की सरणा जैयो ताते महा राज
मोकों सरणा लीजिये तब श्री आचार्यजी महा
प्रभून नें गडु स्वामी कों नाम दीयो पाछें निवेदन
करवायो ता पाछें जो गडुस्वामी ने जो सेवक कीये
हुते तिन सबन कों श्री आचार्यजी महा प्रभून
पास नाम दिवायो पाछे वे गडु स्वामी बडे भगव
दीय भये श्री आचार्यजी महा प्रभू आप गडु स्वा
मी के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे गडु स्वामी
ऐसे भगवदीय हैं ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र

भून के सेवक कन्हैया सा
ल क्षत्री तिन की
वार्ता है ॥

सोउन कन्हैया साल क्षत्री के ऊपर श्री आचा
र्यजी महा प्रभू बहुत प्रसन्न रहते बड़ी कृपा कर
ते श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आप कृपा करि
कें अपने ग्रंथ कन्हैया साल कौं पढ़ाए सोई ग्रं
थ कन्हैया साल के पास ते श्री गुसांई जी नें पढ़े
सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपाते सब
स्फुर्द रूप भये सो वे कन्हैया साल क्षत्री श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भग
वदीय हे वाते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥७०॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक नरहर
दास गोडिया तिन
की वार्ता है

सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें नरहर
दास के घर श्री मदन मोहन जी पाट बैठारे हुते
सो श्री मदन मोहन जी की सेवा नरहर दास नें नी
की भांति सों कीनी एकंइ सरीर जब पसो तब सेवा
नहोय आई तब नरहर दास नें श्री ठाकुरजी।
श्री गुसांईजी के घर पधराये सो श्री गुसांईजी
श्री रघुनाथ जी के पधराये सो श्री गोकुल चंद्र
माजी के पास हुते बैठत है न्यारे सिंघासन ऊपर

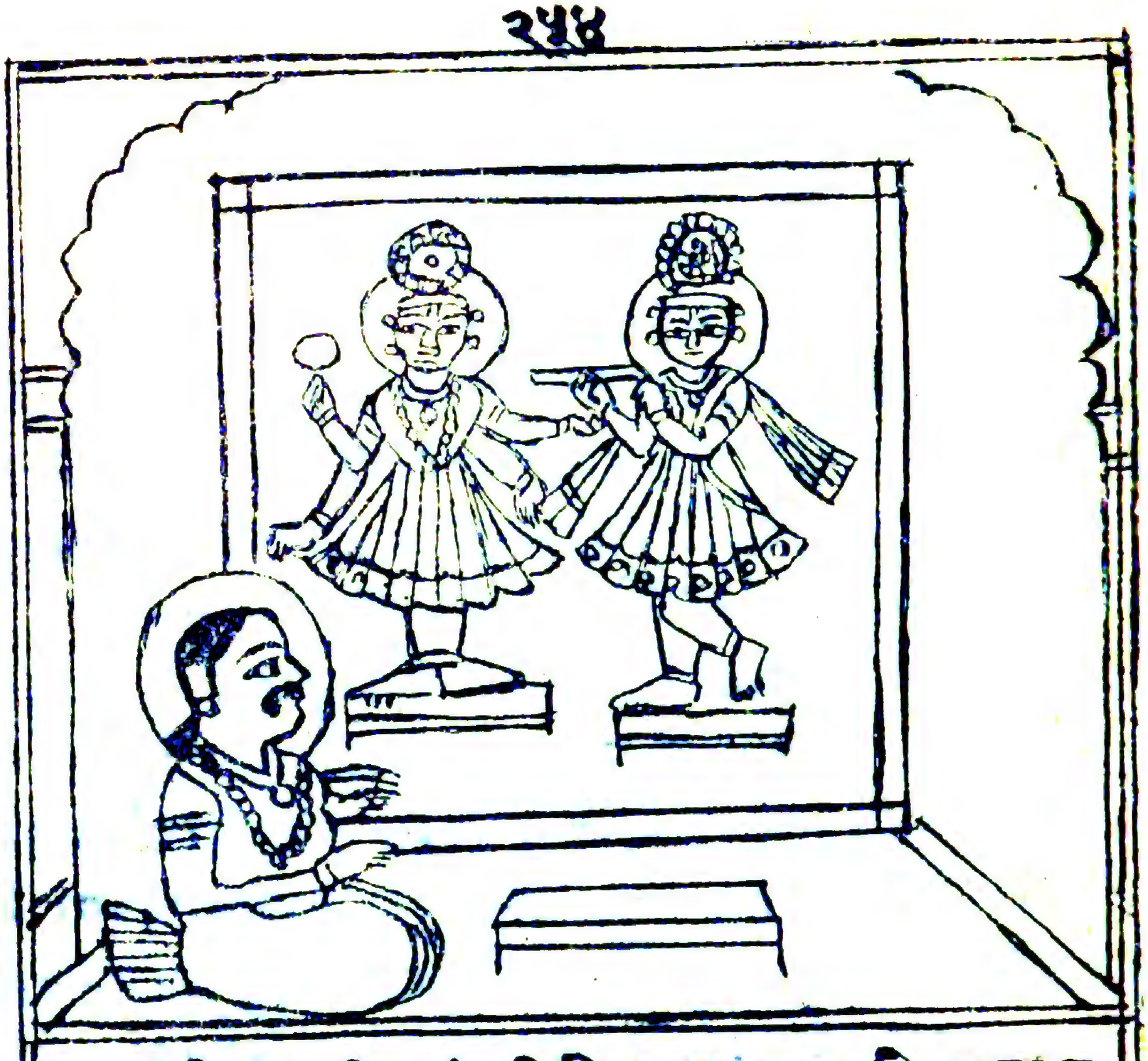

विराजते सो श्रीगुसांईजी नरहरदास के ऊपर व
हुत प्रसन्न भये वे श्रैसे भागवदीय हे श्रौर नरहर
दासनें अपने मन में विचारी जो श्रीठाकुर जी क
बहूंन सुख पामेंगें श्रीगुसांईजीके घर सुख पा
मेंगे सोवे नरहरदास श्रीगुसांईजी के श्रैसे परम
कृपापात्र भागवदीय हे सो इनकी वार्ता कहांतो
दूं लिखियें ॥+

॥वार्ता प्रसंग ॥१॥वैष्णव॥७१॥

श्रवश्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक वादराय
णदास तिनकीवा
र्ता लिख्यते

सो वादरायरणा दास और उनकी स्त्री मोरवी में रहते सो वादरायरणादास को पहिलो नाम वादा हुतो सो एक समय आछे भट्ट द्वारका श्रीरणाछोड जीके दर्शन कों जात हुते सो मोरवी में रात्रिकों व से सो वादरायरणा दास नें उनकों राखे तब वादरायरणा दास नें उन पास नाम पायो पाछें आछे भट्ट के पास श्री भागवत श्रवण कीयो तब श्रीभागवत सम्पूरण करि कें वादरायरणा दास ते विदा हो यकें आछे भट्ट द्वारिका श्रीरणाछोड़ जी के दर्शन कों गये तब कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप द्वारिका श्रीरणाछोड़जी के दर्शन कों पधारे हुते तब मोरवी में उतरे सो वादरायरणा दास और उनकी स्त्री दोऊजननें श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास फेरि कें नाम पायो पाछें समर्पण करवायो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू मोरवी में दिन दोय रहे ता पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप श्रीरणाछोड़जी के दर्शन को पधारे तब वादरायरणादास और उनकी स्त्री श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग गये तब दोऊ स्त्री पुरुष श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवा में रहे सो उन दोउन नें ऐसी सेवा कीनी जो श्री आचार्यजी महाप्रभू उनके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब याको नाम वादरायरणादास धर्यो ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका सों चले तब ये दोनोंजने श्री आचार्यजी महाप्रभून के

* पहले वादहुतो सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनें याको नाम

साथ गये सो मोरवी लों साथ आरा पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून ते आज्ञा मांगि के मोरवी में रहे पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप श्री गोकुल पधारे वे वादरायण दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहांई लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सद्दू पांडे मानिक चंद पांडे इनकी स्त्री तथा नरो चेटी आदि ब्रज में रहते हुते

सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू एथ्वी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे तब श्रीनाथजीने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो तुम मेरी सेवा को चलावो ब्रज में श्री गोवर्द्धन पर्वत है तहां हम तीन दमन हैं देवदमन, नागदमन, इंद्रदमन तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो देवदमन मेरो नाम हैं सद्दू पांडे को बड़ो भाई मानक चन्द पांडे हैं तहां हम प्रगट भये हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू परिक्रमा झारखंड में राखि के ब्रज को पठाये सो सेवक हू पांच सात साथ है दामोदरदास हरसानी कृष्णदास मेघन रामदास जी माधोदास इत्यादिक श्री आचार्यजी महाप्रभून

केसेवक सब ग्वालन्यौर में आए सो सन्ध्यासमय श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप सद्दू पांडे के घर पधारे सो एक बड़ो चौंतरा सद्दू पांडे के घर के द्वारे हुतो ताके ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू विराजे तब सद्दू पांडे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो स्वामी कछु खाउगे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो हम तो कछु न खायगे तब कृष्णदास मेघन नें कह्यो जो ये तो अपने सेवक के हाथ को लेत हैं विना सेवक तो ये काहू के हाथ को लेत नाहीं इतने में श्री गोवर्द्धन पर्वत ते श्रीनाथ जी पुकारे जो नगे मेरो दूध लाउ तब ये ने कह्यो जो महाराज आज तो हमारे पास नें श्री वे हैं ताने दूध नाहीं तब श्री नाथ जी नें कही जो

तेरे पाउंने आए हैं सो तो भली भई हम कहा करें
परि मेरो दूध तो लाउ तब नरो बोली जो वारी लाल
लाई तब नरो कटोरा भरिकें लैगई श्रीनाथ जी
कों प्यायो तब श्री आचार्यजीमहाप्रभून नें दामोदर
दास सों पूछो जो दमला ते कछु सुन्यो तब श्री आ
चार्यजी महा प्रभून सो दामोदर दास नें कह्यो जो
महाराज यह पूरब और झारखंड को प्राय एक
मिलत है सो ऐसो जान्यौ परत है जो इहांई प्रगटे
हैं सबोंई चलेंगे तब इतने में नरो दूध प्याय कें आ
ई तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें नरो सों पूछो
जो तू कहां गई हुती और कहा लैगयी हुती तब न
रो बोली जो राज देव दमन कों दूध प्याय आयी
हों तब नरो पे मांग्यो जो यामें दूध है तब नरो नें
कह्यो जो स्वक है तब श्री आचार्यजी महा प्रभून
नें कह्यो जो यामें ते बच्यो है सो हमकों दे तब नरो
बोली जो महाराज घर में बहुत दूध है तब सद्दू पां
डे नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सो बीनती कीनी
जो महा राज हम हारे आप जीते अब हम कों ना
म दीजिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून के मानि
कचन्द तथा सद्दू पांडे तथा इनकी स्त्री तथा नरो
ये सब सेवक भए उनके ऊपर आपने हाथ फेरयो
और नाम दीयो ता पाछें वह दूध लीयो पाछें उ
नके हू घर को दूध दही अंगीकार करो मो ये भ
ले भागवदीय है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें सद्दू पांडे सों पूछो जो क हो पांडे यहां ऊपर दे

व दमन प्रघट भए हे सो कौन भांति सों प्रघट भये हैं तिनकौ प्रागट्य तुम हमसों कहौ सो श्री आचार्यजी तौ साक्षात ईश्वर हैं आपही करत हैं और आपही पूछत हैं सो काहे तें जो आप जीव के ऊपर कृपा करिवे के लीये तब सद्दू पांडे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो महाराज एक हमारे गांव कौ ग्वाल हुतो सो सब गांव की गायन कों चरावतौ सो सब प्रकार सद्दू पांड़े नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें कह्यौ सो सब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सुन्यौ सो श्री आचार्यजी महाप्रभू तौ आप पूरणपुरुषोत्तम हैं आपही करत हैं सो वे सद्दू पांडे तथा मानिक चन्द पांडे और सब श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे जिनके पास ते श्री आचार्यजी महाप्रभू तथा श्री नाथजी जो चहिये सो मांगि लेते और आप जिन के घर पधारते ॥ ✦

वार्ता प्रसंग ॥१॥

और एक दिन श्री नाथजी इन के घर दूध पीवे कौं सोने को कटोरा ले आए तब श्री नाथजी ने नरो सों कह्यौ जो दूध लाउ तब नरो तौक़ा कटोएमें दूध डारत जाय और श्री नाथजी आप आरोगत जाय सो दूध पीकें श्री नाथजी आप तौ पधारे और कटोरा वहांई भूलि आए तब सकारे भए पाछें मंगला आरती के समय भीतरियानें देखी तौ मन्दिर में कटोरा नाहीं तब ढूंढने में नरो क

दोरा लै आई और कह्यो जो यह कटोरा लेउ रात्रि को लरिका भूखि आयो है तब सबजने बहुत भए सन्न भए वह नरो ऐसो भागवदीय ही ॥*

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून सों श्री नाथजी नें कह्यो जो मोकों गाय भगाय देउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास हरसानी सों कह्यो जो श्री नाथ जी नें गायन के ली ये आज्ञा .... दीनी है सो श्री आचार्य जी महाप्रभूननें अपने हस्त को छल्ला सुवर्ण को दीनो और दामोदरदास हरसानी सों कह्यो याके दामनकी गाय लै आवो तब दामोदर दासनें वह छल्ला सद्दू पांडे को दीनो और कह्यो जो याकों वेचि के या के दामन की गाय लेउ श्री आचार्य जी महाप्रभून नें गाय मगाई है तब सद्दू पांडे ने कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गायन को कहा करेंगे तब दामोदर दास नें कह्यो जो श्री नाथजीनें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों गाय मंगाई है ताके लिये उननें कही है तब सद्दू पांडे नें कही जो मेरे यहां गाय हैं सो कौन की हैं वह तौ श्री आचार्य जी महाप्रभून की हैं जो चहियें सो लीजियें तब दामोदर दास नें कही जो श्री आचार्यजी महाप्रभू न की ऐसी ही आज्ञा है तातें याकों वेचि के गाय लेउ तब सद्दू पांडे नें वह छल्ला वेचि कें ताकी गाय दी लै दीनी सो दाऊ गाय श्री आचार्य जी म

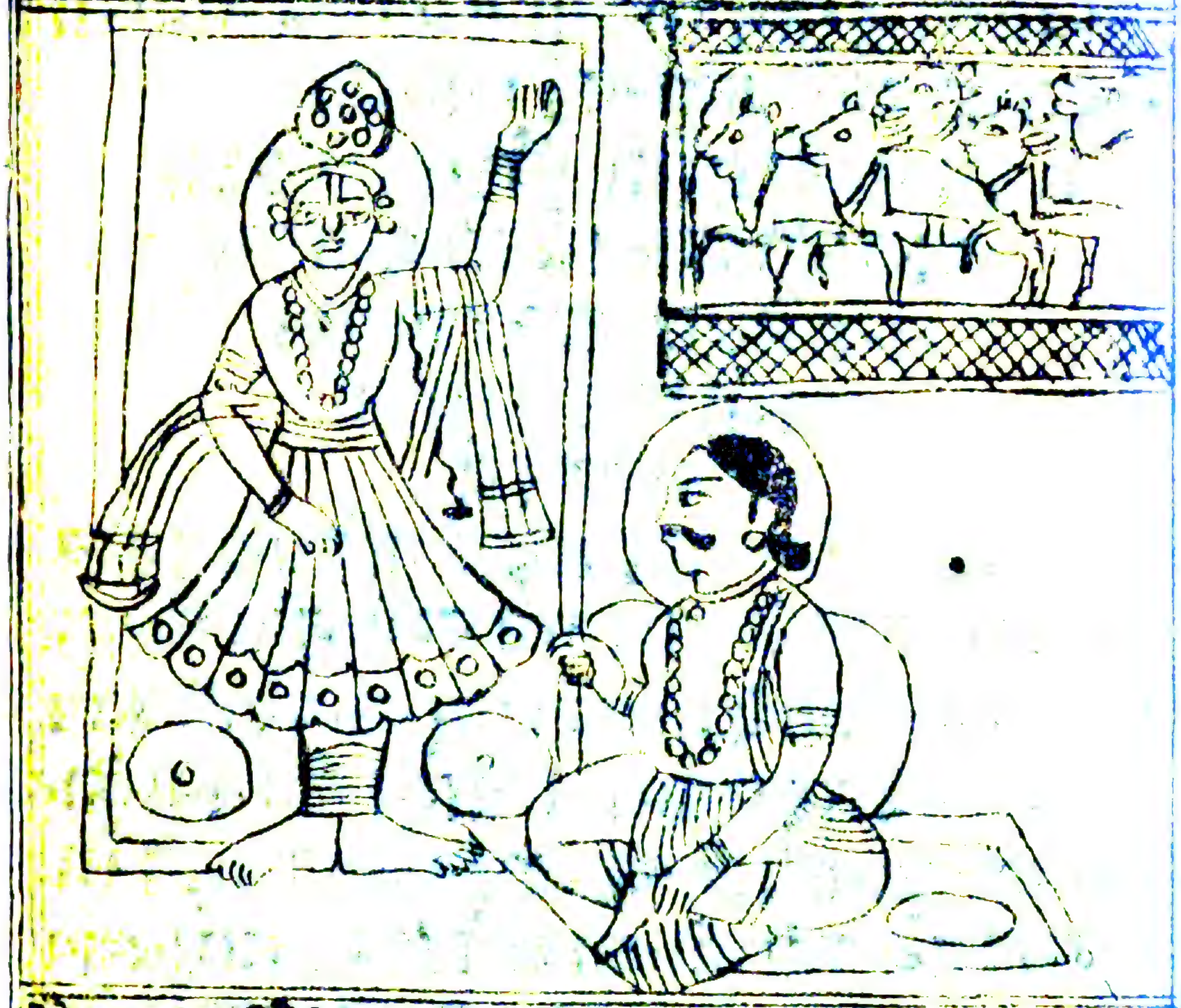

हरिभूननें श्री नाथजी कों समर्पी पाछें दस गाय
सहु पाडेनें श्री नाथजी की भेट कीनी पाछें सब-

वैष्णवन कों खबर भई जो श्रीनाथ जीनें गायन
के निमित्त श्री आचार्य जी महाप्रभून सों आज्ञा
करी है सो वैष्णवन नें गाय पठाई काहू नें दोय
काहू नें चारि काहू नें छ्या पठाई ऐसें करत दो
यसे के आसरे गाय भेली भई सो श्री नाथ जी
कों गाय बहुत प्रिय हैं तबते श्रीनाथजी को ना-
म गोपाल श्री आचार्यजी महाप्रभून ने धर्यो है
तब श्री गुसांईजीने गोपाल नामते गोपालपुर गां
व बसायो ताही ते सूरदास जीने श्री आचार्य जी
महाप्रभून के प्रगट गोपाल नाम कीये हैं प्रथम

गाय सुर गायेो सेा वे सहू पांडे तथा नरेासव केा उ श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय है सेा इनकी वार्ता केा पार नाहीं ता ते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ॥३॥ वार्ता प्रसंग ॥ वैष्णव ॥ ७३ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू न के सेवक नरहर दास स न्यासी तिनकी वार्ता लिख्यते है

सेा एक वेंना कोठारी हुतेा तासे प्रथम नरह रदास सन्यासी के पास नाम पायेा हुतेा सेा एक समय श्री आचार्यजी महा प्रभू आप द्वारिका प धारे हुते तब नरहर दास सन्यासी और वेना कोठारी श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ हुते सेा द्वारिका गये तहां श्री आचार्यजी महा प्रभू आप नरहर दास सन्यासी के ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब नरहर दास सन्यासी नें वीनती कीनी जो महा राज मेरे ऊपर कृपा करिये तेा में प्रार्थना करतहों तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिकाय के चुप कर रहे पाछें कहें जो कहा प्रार्थना करत हेा तब नरहर दास सन्यासी नें कहेायो जो महाराज वेना कोठारी कों सरणा लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कृपा करिकें नाम दीयेा समर्पण करवायेा पाछें वे नरहर दास सन्यासी के ऊपर प्रसन्न बहुत भये सेा वे नरहर दास सन्यासी श्री

श्राचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगा
वदीयहै ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै
॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥७४॥ सं॰१४७१॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक गोपाल दासजदा धारी श्री नाथजी की खवासी करत हुते

सो श्री नाथजी उनसों सानुभाव हते और गरमी के दिन में श्री नाथजी कों भोग आवते तब गोपालदास आप नेत्र मूंदि के पंखा कर ते तब रात्रि कों श्री नाथजी जगामोंहन में पौढ़ ते तहां गोपालदास ठाढ़े होय कें आंख मूंदि कें पंखा करते चार पहर ठाढ़े रहते परि देह श्रम लस कछू बाधा न करती रात्रि के विषै श्री ठा कुर जी के श्री स्वामीजी के वचन सुनतो तब आप कहते.... जो गोपालदास आंख खो ल देउ तेरो परदा कैसो तब गोपालदास कह ते जो महाराज मोकों श्री आचार्यजी महाप्रभ न की आज्ञा नाहीं ताते मैं क्यों करि खोलों त व कबहू श्री नाथजी आपने श्री हस्त सों गोपा लदास के मुख में मेलते ऐसी कृपा करते त व ऐसे करत कितनेक दिन बीते तब एक दिन गोपालदास नें बीनती करिकें कही जो

महाराज मोकों पृथ्वी परिक्रमा करिवे की आज्ञा
दीजिये मेरो मनोरथ पृथ्वी परिक्रमा करिवे को
है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो आव
श्य करिये पाछें गोपालदास आज्ञा मागी के
पृथ्वी परिक्रमा कों गये तब और वैष्णवननें क
ह्यो जो महाराज ऐसे कृपा पात्र को ऐसो मन को
कर होय तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो
जो यह गयो तो हे परि जाय सकेगो नाहीं मजल
दोयचारि जायगो.. तब याकों विरह होयगो ता
विरह करिकें याकी देह छूटैगी तब सब वैष्णव
ननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी
जो महाराज इन की देह या भांति क्यों पड़े तब
श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो महद अ
पराध इन श्री ठाकुर जी सों विगाड़ो ताको नाम
महद अपराध कहिये इनसों एक महद अपरा
ध पड़ो है तासों इनकी यह गति भई तब सब
वैष्णवन नें पूछो जो महाराज इनकी देह या भां
ति सों पड़े तो सही परि महद अपराध काहे सों
कहि यतु है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
कही जो यह गोपालदास पहिलें श्री नाथजी
के बाग की रखवारी करतो सो एक श्री ठाकुर
जी को सेवक ब्राह्मण को लरिका हुतो सो एक
को वा बाग में ते फूल चुराय कें ले जातो सो ए
क दिन गोपालदास नें वाको पकरयो सो वह
भाज्यो सो वह अपने मन्दिर में दुवक्यो सो गो

पालदास नें जाय कें वाकें मुक्की की मारी सो वात
अब श्री ठाकुर जी कों वहवात सुधि जो याकों महद श्राप
ग्रथ परयो है तातें एथ्वी परि क्रमा की इच्छा भई है
सो गोपाल दास पांचचारि मजल गयो पाछें विर-
ह भयो सो विरह करिकें गोपाल दास ने देह छोडी
तव यह वात श्री श्राचार्य जी महाप्रभून नें सुनी त
व श्रपने श्री मुख ते कहें जो गोपाल दास के परलो
क में तौ हानि नाहीं जो यह श्री नाथ जी के चरणान
पास पहुचो तातें भगवदीय कों सर्वथा विगाड न
करनों भगवदीय कौ विगाड करैतौ या भांति सों
होय भगवदीय के विगाडे ते गोपाल दास की य-
गति भई वे गोपाल दास श्री श्राचार्य जी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इन-
की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ १५ ॥

अब श्री श्राचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक कृष्णदास
ब्राह्मण तिनकी
वार्ता है

सो वे कृष्ण दास व्रा गांम में रहते परि श्रकिंचन
रहते सो एक समय वैष्णव दस पन्द्रह मिलिकें श्री
श्राचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों श्रडेल कों
जात हुते सो जा गांव में कृष्ण दास रहते ता गांम में
श्राए सो कृष्णदास के घर श्राए तव कृष्णदास
तौ घर हुते नाहीं कछू कार्य के लिये कोसती

न ऊपर गये हुते और कृष्णदास की स्त्री घरहुती
तवबा स्त्रीनें उन वैष्णवन कों साष्टांग दंडवत
कीनी श्री कृष्ण स्मरण कहि बहुत आदर सन
मान करिकें अपने घर में बैठारे पाछें मन में विचा
रे जो आज कहा करियें तब सुधि आई जो वह
वनियां नित्य टोक करत है जो तू मोसों मिलि
तू मांगेगी सो देउंगो सो आज वासों सीधो सामि
ग्री लाउं ऐसें विचार के स्त्री चली सो वा वनियां
की हाट पै गई तब वा वनियां नें टोकी तबवा
नियां सों स्त्रीनें कही जो मैं तोसों कालि मिलों
गी तू मोकों आज मोदा चहियत है सो दे तबवा
वनियां नें कह्यो जो तू मोसों कौल करै तो मैं मा
नूं तबवा स्त्रीनें वासों कौल करि दीनों तबवा
स्त्री कों सीधो सामग्री चहियत हुतो सो दीनों
तब लैकें घर आई तब घर आय के रसोई करि
श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समयानुसार भो
ग सराय अमोंसरि करि के पाछें वैष्णवन कों
महाप्रसाद लिवायो तब वैष्णवन नें महाप्रसा
द भली भांति सों लीनों पाछें कृष्णदास घर आए
सब वैष्णवन सों मिले दंडौत करिकें भीतर गये
तब स्त्री सों कह्यो जो कहा खबरि है वैष्णवन
कों महाप्रसाद लिवाइयें तब स्त्रीनें कह्यो जो
प्रसाद तो लिवायो है तब कृष्णदास नें कह्यो जो
सीधो सामग्री कहां ते लाई कहा प्रकार कीयो त
बजो प्रकार कीयो हुतो सो सब कह्यो और कह्यो

जो यह वनियां मोसों नित्य टोका करतो जो तू मोसों
एक दिन मिलि तू कहेगी सो देउंगो तब ओ बाज
वासों कौल करार करिकें सीधो सामानी लाई
हों तब कुम्भदास वा स्त्री के ऊपर बहुत प्रसन्न
भए पाछें स्त्री पुरुष दोउ जनेन ने सीरो महाप्रस
द लीयो पाछें कुम्भदास वैष्णवन के पास आय
बैठे सबरी रात्रि भगवद वार्ता करत बीती जब स
वारो भयो तब सब वैष्णव विदा होय कें चलेंतब
कुम्भदास थोरीसी दूर पहुचांवन गयो पाछें आप
घर आय स्नान करि श्रीठाकुर जी की सेवा करि
कें यात्रा कों गये पाछें वा स्त्री नें रसोई करि श्री
ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोंसरि
करि महाप्रसाद टांकि धस्यो तब कुम्भदास घर
आंगन कों आए तब वही सीरो महाप्रसाद दोउ जा
नन नें लीयो तब कुम्भदास ने अपनी स्त्री सों कही
जो तुमनें काल्हि वा वनियां सों कौल कीयो हुतो
सो वह वनियां पेडो देवन होयगो ताते वाको
कौल पूरो करिये सो भलो है तब वह स्त्री उबटनें
करि न्हाय कें स्त्री जन के शृंगार होत हैं सो सब
करि कें वह स्त्री चली सो वर्षा के दिन हुते सो मेह
बरस गयो हुतो सो मारग में कीच भई हुती ताके
लिये कुम्भदास नें अपनी स्त्री सों कही जो तू मे
रे कांधे पै बैठिले में पहुचाय आउं मारग में की
च बहुत भई है तेरे पांय कीच में भरि जायंगे सो व
ह वनियां देखि कें तेरो अनादर करेगो सब वा स्त्री

को अपने कांधे ऊपर चढ़ाय कें लै चले सो वा वनियें
की हाट के आगे उतार दीनी तब वा स्त्री नें वा वनि-
या को हेला पार कें कह्यो जो किवाड़ खोलि तब
वा वनियां नें किवाड़ खोलि दीने और वा स्त्री कें
भीतर लीनी तब वह वनियां पांय धोयवे कों पा
नी ले आयो और कह्यो जो पांय धोय तब वा स्त्री
नें कह्यो जो मेरे पांय कीच सों भरे नाहीं तब वा व
नियां ने कह्यो जो मार्ग में तो कीच बहुत भर्‌यो है
और तेरे पांय कोरे कैसें रहे तब वा स्त्री नें कह्यो
जो तू पूछि कें कहा करेगो तू तेरो काम करि तब वा
वनियां नें कह्यो जो यह तो बात कहीं चाहियें।
तब वा स्त्री नें कह्यो जो मेरो भरतार मोकों कांधे
ऊपर .... चढ़ाय कें लायो है तब यह बात सु-
निकें वा वनियां कों बड़ो आश्चर्य भयो और स
ब वृतांत हो सो पूछ्यो जो यह कहा कारन हैं सो सब
मेरे आगें कहि तब वा स्त्री ने जो प्रकार भयो हो-
सो सब कह्यो सो सुनि कें वह वनियां अपने मन
में धिक्कार करन लाग्यो और कह्यो जो धन्य जन्म
तुमारो जो जिनकों ऐसो मन सांच्यो है और धिक्का
र जन्म मेरो है तब दोउ हाथ जोरि कें दंडौत कीनी
और कह्यो जो मेरो अपराध क्षमा करियें और मे
रे ऊपर कृपा करिबे मेंसों तुम बहन हो ऐसे कहि
वा वनियां नें बहुत दुख मान्यो पाछें वा वनिया ने
स्त्री कों कपड़ा पहराय कें वाके घर पहुंचाय दी
नी और कृष्णदास सों वा वनियां नें बहुत बीनती

की नीजो तुम मेरो अपराध क्षमा करो यह मेरी वहन
है ओस तुम मेरे पूज्य हो तब कृष्णदास नें कही
जो तेरो कहा अपराध है तू संकोच मति करै के
रि यह बनियां कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभून को सेवक भयो नाम समर्पणाकी
थो तब या बनियां को नाम श्री आचार्यजी महा
प्रभूतनें ग्यानचंद धस्यो पाछें यह बनियां बड़ो
भागवदीय भयो सो कृष्णदास के संग ते भयो ता
ते संग करनो तो भागवदीय को करनो जासों भ
गवद भक्ति उत्पन्न होय पाछें यह बनियां सदा
कृष्णदास सों समत रहतो उनकी स्त्री सों बहन
कहतो सो ऐसो सम्बध राखतो सोवे कृष्णदा
स श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र
भागवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लि
खिये ॥+

॥ इति प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ७६ ॥*

अथ श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक संत दास चौप
ड़ा छात्री आगरे के
तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो ये संतदास पहिलें बहुत संपतवान हुते
व्यौपार बहुत हुतो लाखन को व्यौपार करते सो
द्रव्य सब व्यौपार ही में खोयो पाछें सेउ के वाजा
र में कौडी केचन लागो टका २४ की पूंजी हुंती सो

जवतांइ पैसाढाई कमावते तवतांई उहां बैठे र
हते कौड़ीन की टेरी पैसा की करि राखते सो गा
हक पैसा धरिकें कौड़ीन की टेरी लेजाते और
संत दास आप पोथी वांचते मार्ग में काहू सों
बोलते नाहीं भगवद रस में छिके रहते और जो
कोउ भगवद भक्ति आवतो तासों बड़े भगवद
वार्ता करिकें और सों संभाषण न करते रसोई
कों टका एक लगावते और धेला की चबेंनी
आनि राखते सो रात्रि कों वैष्णव आय कें बैठ
ते भगवद वार्ता कीर्तन करते सो सब चबेंनी म
हाप्रसाद बांटि देते सो वैष्णव लेकें उठते औ
सैढाई पैसा में निर्वाह करते ऐसें करत कि

तमेक दिन बीते तब नारायणदास गौड़ देसकेनें सु
नी जो संत दास कें द्रव्य को बहुत संकोच है ताते ना
रायणदास नें संत दास को पत्र लिख्यो और एक
मौहरन की थैली पठाइ सो हुंडी कासद लैकें आ
यो तब संतदास कौं पत्र दीनों तब वह पत्र संत
दास नें वाच्यो और तामें हुंडी ही सो वांची तब हुं
डी ही सो तो श्री गुसांई जी के पास पठाई और ए
कदका कासद कौं दीनी और संतदास नें नारा
यणदास कौं पत्र लिखो तामें लिख्यो जो तुमनें
हुंडी पठाई ही सो तो अडेल श्री गुसांईजी को पठा
यदोनी और तुम्हारो प्रभूता में हमारे एक दिन
की रसोई न भई तादिन की कमाई कासद कौंदी
नी जब हुंडी पहुंची तब भंडारी नें श्री गुसांई जी कों
बधाई सो एक सौ मौहरन की है सो नारायणदा
सनें गौड़देस ते संतदास को पठाई सो संतदास
नें इहां पठाई है तब श्री गुसांई जी नें कह्यो जो सं
तदास तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के बड़े ही
कृपापात्र भागवदीय है ताते वैष्णव को द्रव्य का
है कौं राखेंगे ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥

बहुर कितनेक दिन पाछें श्री गुसांई .. जी नें श्रीगो
कुल वास कीयो तब संतदास उत्सव के दिन
आगरे ते दर्शन को आवते और श्री गुसांई जी
आप आगरे पधारते तब संतदास के घर बिना
बुलाए पधारते आप श्री गुसांई जी श्री आचा

वैजी महाप्रभून के सेवक जानि ऐसी कृपा करते
तव कितनेक दिन पाछें संतदास की देह थकी र
तव श्री गोकुल तें चापा भाई को बुलायो सो चापा
भाई श्री गुसांई जी की आज्ञा मानि कें आगरे आ
ए तव संतदास ने चापाभाई सों कह्यो जो यह घर
तुम्हारो है जानो तो कोई एक दिन स्त्री को रहन
दीजियो और जानों तो गहने धर दीजियो अथवा
बेचि कें दाम लै जाउ ऐसें कहि के घर के पत्र व
त चापा भाई कों सोंप दीनों तव चापाभाई खत प
त्र लैकें श्री गोकुल आए तव श्री गुसांई जी सों स
व समाचार कहे पाछें संतदास बहुत आसकिम
ए तव वैष्णव सब आय जुरे तव संतदास सों कह्यो
जो तुम कहो तो रेणु का स्थल अथवा मथुरा जहां
कहो तहां लै चलें तव संतदास नें कह्यो जो मोकों
कहा रेणु का स्थल कृतार्थ करेगो तव वैष्णवन
ने कह्यो जो श्री गोकुल लै जांय तव संतदास नें
कह्यो जो श्री गोकुल जांय कें कहा राख्व झड़ा
जैगो ऐसें कहि कें आगरे ही में देह छोड़ी पाछें
वैष्णवों कृत्य उहांई कीयो पाछें यह वात वै
ष्णवन ने श्री गुसांई जी के आगें कही तव श्री
गुसांई जी अपने श्री मुख ते कहे जो वे संतदास
ऐसे भागवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तां
ई लिखिवये ॥+

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ७७ ॥ +

अव श्री आचार्य जी महाप्रभू

न के सेवक सुन्दर दास प्रीज
गन्नाथ रायजी के दस को
स परे एक गांव में रह
ते तिनकी वार्ता

सो सुन्दर दास उहां रहते नहां कृष्णचैतन्य को सेवक माधौदास सो उहां रहतो सो सुन्दरदास कें और माधौदास कें परस्पर स्नेह बहुत हुतो सो सुन्दरदास जब श्री आचार्यजी महा प्रभून की सराहना करतो तब माधौ दास कहतो जो मेरो जो कछु है सो सब कृष्णचैतन्य को है सो जहां एक समय श्री आचार्यजी महा प्रभू पाउ धारे हुते तब सुन्दर दास नें अपने घर पधराये तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें उहां रसोई करिकें श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरायो तब माधौदास नें पार आवत देख्यो तो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो भोजन करि कें पोढे तब माधौदास ने सुन्दर दास ते कही जो तेरे गुरू के हाथने श्री ठाकुर जी आरोगे नाहीं और भें श्री ठाकुर जी कों आरोगावतहों सो तो एक हू ग्रास खात नाहीं तब सुंदर दास नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही तब श्री आचार्यजी महा प्रभून ने माधौदास कों बुलाय कें पूछो तब माधौदा मनेजो वृतान्त हतो सो सब कह्यो जो काल्हि हम तेरे घर आमेंगे सो देखेंगे मेरें आगें श्री ठाकुरजी आरोगेंगे तब जानूंगो तब दूसरे दिन श्री आ

चार्यजी महाप्रभू माधोदास के घर पधारे ओर
कह्योजो अब थार श्रीठाकुर जी के आगें आ
न राखि तब माधोदास थार लैगयो श्रीठाकुर
जी के आगें भोग धस्यो फिर बाहिर आयो तब
श्री आचार्य जी महाप्रभू मन्दिर के द्वार ऊपर
बैठे रहे सो उहां एक प्रेत नित्य आय कें श्री

ठाकुर जी के आगे ते खाय जातो सो वह प्रेत
बाहू दिन आयो तब देखे तो श्री आचार्य जी
महाप्रभू विराजे हैं तब वह प्रेत खिस्यानो ओ
र कह्यो जो आज अबहूं भूखेो रहूंगो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जो तेनें अब सांई
खायो सो तो खायो परि अब न खान पावेगो

ताते अबइहां सों जानव वह प्रेत फिर गयो तब माधौदास भोग सरावन गयो तब देखैं तौ थार ज्यों का त्यो भरयौ है तब माधौदासनें कह्यौ जो तुम्हारे आगे मेरे श्रीठाकुर जी आरोगे नाहीं ऐसे सामान्य वचन बहुत बोले परि श्री आचार्यजी महाप्रभू आप चुपिकर रहे कछू बोले नाहीं तब माधौदास रात्रि कों सोयो तब श्रीठाकुर जी के अनुचर आए सो बहुत मारयो और खाट ते औंधों पटक मारयौ तब माधौदास ने उन सों कह्यौ जो तुम मोकों काहे कों मारत हौ जब जगन्नाथ राय जीनें कह्यौ जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभून सों ऐसो सामान्य वचन कों बोल्यो मैं तेरे द्वार कब आरोगत हों जो तू भोग धरतो सो तो प्रेत खाय जातो हौ आज श्री आचार्यजी महाप्रभू भीढार ऊपर बैठे हुते तातें न खाय सक्यो तू उनसों कों बुरो बोल्यो बैतो मेरो स्वरूप हैं तब माधौदास ने उनसों कह्यो जो में सबारें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों अपराध क्षमा कराय लुंगो मैंनें ऐसें न जान्यो तब माधौदास प्रातःकाल उठि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास आयो और साष्टांग दंडवत कीनी और बीनती करि कें कह्यौ जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करियें सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तौ परमदयाल हैं तब प्रसन्न होय कें कहें जो तेरो कह्या अपराध है हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं तब माधौदास

नें वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पाव धारौ. तव श्री आचार्यजी महाप्रभू माधौदास के घर पाव धारे और प्रसन्न होय के माधौदास कौंना म सुनायौ ता पाछें माधौदास कों निवेदन करवायौ पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें माधौ दास के ठाकुर कों पंचामृत से स्नान करवायौ ता पा छें श्रीठाकुरजी कौं सिंगार करिकें सिंहासन पार वैठारे पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पाक करिकें भोग समर्प्यौ तव समयानुसार भोग सरा य आनोंसनि करिकें पाछें श्री आचार्य जी महाप्र भूनें माधौदास सों कह्यौ जो तू वैष्णवन कों वु लाय लावौ. तव माधौदासनें कह्यौ जो महाराज पांच सात वैष्णव वुलाय लाउं तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो पांच सात की कहा है जि तने तेरे मन में आवे तितने वैष्णव वुलाय लाउ तव माधौदासनें श्री महाप्रभू जी सों कह्यौ जो महा राज प्रसाद तौ थोरो है और वैष्णव वहुत आवें गे तौ कैसें होयगी तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ माधौदास सों जो अरे तेरी अक्कल मारी गई है प्रसाद कवहू न घटे तेरे या गांव में जितने वैष्णव होय तिन सव कों वुलाय लाउ पाछें जि तने वैष्णव हे तिन सवन कों वुलाय लायौ तव सवन कों महाप्रसाद लिवायौ तोहू वह थार भरयौ रह्यौ तव माधौ दास सों श्री आचार्यजी महा प्रभूननें कह्यौ जो वैष्णव कें विषें विस्वास चहिये

जो भगवद प्रसाद सदां अटूट रहे या भांति सों माधौ दास कों श्री महाप्रभूजीने अंगीकार कसो सो सुंदर दास के संगते भयो ताते संग करनो तौ भगवदीय को करनो सो वे सुन्दरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥+

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥७८॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक मावजी पटेल
तथा इनकी स्त्री विरजो
तिनकी वार्ता है

सो वे मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो व
रस दिन में दोय वेर श्री गोकुल आवते श्री नाथ
जी के दर्शन कों तथा श्री गुसांई जी के दर्शन कों
आवते सो श्री गुसांई जी इनके ऊपर बहुत प्रस
न रहते बहुत कृपा करते पाछें उनकों कृष्ण भट्ट
को संग भयो तब विरजो ने कृष्ण भट्ट सों कह्यो जो
तुम हमारे माथे मेंणा पधरावो तो भलो है तब कृष्ण भट्ट ने महाराज
गुसांई जी सों बीनती करि कें कह्यो और उन कें
माथे सेवा पधराई सो श्री गुसांई जी ने श्री ठाकु
रजी कों पाट बैठायो सो सनेह पूर्वक सेवा करते
सामग्री भलीभांति सों करते श्री महाप्रभू जी के
सेवक दस कोस पर रहते तिनकों प्रसाद लिवा
वते ऐसें भली भांति सों सेवा करी कृष्ण भट्ट आ
वि हैकें करी ॥+

॥ वार्ती प्रसंग ॥१॥

और एक समय वैष्णव सब प्रसाद लैंन कों उ
त्सव के दिन बैठे हुते तब विरजो नें वैष्णवन कों प्र
नसखडी महा प्रसाद परोसो तब विरजो नें कृष्ण
भट्ट सों वीनती कीनी जो मोकों ऐसो मनोरथ है
जो सब वैष्णव मंडली बैठी होय और में सखडी म
हा प्रसाद सबन कों लिवाऊं तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो
जो यह मनोरथ है सो तो भक्ति भाव सों होय परि
यह द्रव्य साध्य है तब विरजो ने पूछो जो द्रव्य सा-
ध्य सो कहा ताको अर्थ मोकों समझाय के कहो
तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो जो यह वैष्णव मंडली सबै
श्री गोकुल श्री गुसांई जी के पास जैसे पावें श्री
गुसांई जी आज्ञा देय सो करिये जो श्री गुसांई जी
आज्ञा देयं तो सखडी महा प्रसाद लीयो जाय
ताते यह द्रव्य साध्य है जो मार्ग में सब खरच क
रिये और वैष्णवन की आज्ञा लेनी तब विरजो
नें मावजी पटेल ते कह्यो जो मोकों यह मनोरथ
है सो मनोरथ कियो चाहिये तब मावजी पटेल
नें कह्यो जो मेरे पास दो त्रण मुद्रा है इनसों काम
होय तो भलेई करिये तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो जो
इनसों काम अलप्य होयगा आप श्री गुसांई जी पा
स चलें तब श्री गुसांई जी आज्ञा देय सो करिये
सो मावजी की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो सो सब
लैकें उज्जैन आये पाछें कृष्ण भट्ट नें वैष्णव सब
इकठोरे करि के श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्श

न कों आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी के दर्शन किये पाछें कृष्ण भट्टनें श्री गुसांई जी सों बीनती कीनी जो महाराज विरजो कों ऐसो मनोरथ है जो सरवडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों सब वैष्णवन की मंडली बैठी होय तिनको मैं परोसों तब श्री गुसांई जीनें कही जो यह मनोरथ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वैष्णवन की मंडली लैकें विरजो चली श्री जगन्नाथ राय जी कूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची तब श्री जगन्नाथ जी के दर्शन कीये पाछें जो मनोरथ हतो सो सब नाना प्रकार की सामग्री करवाय कें श्री जगन्नाथ राय जी कों भोग सम्पर्यो पाछें वह प्रसाद सरवडी अनसरवडी सबवै

वैष्णवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि के लि
वायो विरजो नें अपनो सब मनोरथ पूरन कीयो॰
पाछें विरजो उहां कछुक दिन रहि कें सब वैष्णवन
सहित श्री गोकुल आई तब श्री गुसांईजी कों द
र्शन कीयो दंडवत कीनी ता पाछें जो बात करी सो
सब श्री गुसांईजी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
लयो सो सब गुसांईजी की भेट कीनों तब श्री गुसां
ईजी विरजो कों भाव देखि कें वाके ऊपर बहुत प्रस
न्न भये पाछें सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवा
यो तब श्री गुसांईजी नें आप प्रसाद लीयो ता पा
छें विरजो तथा सब वैष्णव श्री गुसांईजी के सा
थ श्री नाथजी द्वार आए तब श्री नाथजी के द
र्शन कीने तब विरजो तथा श्री गुसांईजी सब वैष्णवन
सहित श्री नाथजी ते विदा होय के अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगवदीय ही॥

वार्ता प्रसंग॥२॥

और विरजो बरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल
आवती तब एक गाड़ा तो गुड़ को भर लावती॰
और एक गाड़ा घृत कों भर लावती सो एक मही॰
ना लों रहती ता में पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती ती या॰
भांति सों विरजो रहती तब सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सब टांकि धरे जब गायन
के ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती और आवती

न कों आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी
के दर्शन कीये पाछें कृष्ण भट्टनें श्री गुसांईजी सों
बीनती कीनी जो महाराज विरजो कों ऐसो म
नोरथ है जो सरवडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों
सब वैस्नवन की मंडली बैठी होय तिनकों मैं
परोसों तब श्री गुसांईजीनें कही जो यह मनोर
थ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वै-
स्नवन की मंडली लैकें विरजो चली श्रीजगन्
नाथ राय जीकूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची
सब श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कीये पाछें जो
मनोरथ हुतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री
करवाय कें श्री जगन्नाथ राय जी कों भोग सम
र्यो पाछें वह प्रसाद सरवडी अनसरवडी सबनै

समवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि के लि
वायो विरजो नें अपनो सब मनोरथ पूरन कीयो॰
पाछें विरजो उहां कछुक दिन रहि कें सब वैस्नवन
सहित श्री गोकुल आई तब श्री गुसांईजी कों द
र्शन कीयो दंडवत कीनी ता पाछें जो बात करी सो
सब श्री गुसांईजी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
लयो सो सब गुसांईजी की भेट कीनों तब श्री गुसां
ईजी विरजो कों भाव देखि कें वाके ऊपर बहुत प्रस
न्न भये पाछें सब वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवा
यो तब श्री गुसांईजी नें आप प्रसाद लीयो ता पा
छें विरजो तथा सब वैस्नव श्री गुसांईजी के सा
थ श्री नाथजी द्वार आए तब श्री नाथजी कें द
र्शन कीये तब विरजो तथा श्री गुसांईजी सब वैस्नवन
सहित श्री नाथजी ते विदा होय के अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगावदीय ही॥

वार्ता प्रसंग॥२॥

और विरजो बरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल
आवती तब एक गाड़ा तो गुड़ को भर लावती॰
और एक गाड़ा घृत कों भर लावती सो एक मही॰
ना लों रहती तामें पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती॰ या॰
भांति सों विरजो रहती तब सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सब डांकि धरे जब गायन
के ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती॰ और आवती

जब दोऊ पधरावती करती सो वह विरजो ऐसी
भागवदीय ही सो चद्राचल के संगते ताते संग
करनों तो भागवदीय को करनों सो इनकी वार्ता
को पार नाहीं तातें अब कहा तांई लिखिये ॥ इ
॥ वार्ता प्रसंग ॥३॥ तैत्तिव ॥१८॥ सम्बन्ध

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गोपालदास रेड़ा में रहते तिनकी वार्ता है

सो श्री आचार्य जी महाप्रभूननें उनकों आ
ज्ञा दीनी हती जो तुम सबन को नाम दीजियें तातें
वे गोपालदास नाम देते सो एक समय श्री आ
चार्य जी रेडा में पधारे हुते तब गोपालदास लोच
न हुते गोपालदास के बेटा घर हुते गोपालदास
कहू यात्रा कों गए हुते तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें गोपालदास के बेटान सों पूछो जो गोपा
ल दास कहां गए हैं तब गोपाल दास के बेटाननें
कह्यो जो कछु श्री ठाकुर जी के काम गयो है तब
यह सुनि कें श्री आचार्य जी महा प्रभून को मन
प्रसन्न भयो जो गोपाल दास के बेटा कैसे कें
से बोलत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
कह्यो जो ये कैसे वैष्णव हैं तब श्री आचार्य जी
महा प्रभून नें कह्यो जो यहां रहनों उचित नाहीं है
तब फिर अपने मन में विचारे जो गोपाल दास
कों तो आवन दीजियें वह कैसें बोलत है तबपा

कें संध्या समें गोपालदास आरा तव गोपालदास ने संध्यासमय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दंडवत कीयो तव गोपालदास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछो जो गोपालदास तुम कहा गये हते तव गोपालदास नें कही जो महाराज पेट लागि हते ताते या वृति कों गयो हुतो तव यह सुनिकें गोपाल दासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहे जो यह वैष्णव कों लक्षण आहे जो चाकृति में श्री ठाकुर जी को नाम न लेय

वार्ताप्रसंग ॥१॥

और एक समय गोपालदास श्री नाथ जी के दर्शन कों आये सो साथ एक सेवक हुतो तहां ज्वर चढि आयो सो लंघन दै चारि कीये तव एक

कों गोपाल दास कों प्यास लागी सो वा सेवक के पास जल मांग्यो सो सेवक तौ सोयो हुतो सेवक नें तौ सुन्यो न हुतो तब श्री ठाकुर जी जल पान के झारी लैकें आये सो गोपाल दास कों जल पिवायो और वह झारी उहां ही धरि आये श्री नाथजी को हृदय अति कोमल है ताते भक्ति की आर्ति सहि न सकें ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और एक समय गोपाल दास नें चोपरा विरह करिकें गायो सो चोपरा ऐसो + सिरवंडी श्याम घन सरवी कंठ मणी हरद्वार + धन्य दिन जेनींदे सब सूं नयनन नन्द कुमार ॥१॥ ऐसे चोपरा चहु त कीये ॥२॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥

और एक समें श्री गुसांई जी आप रेड़ा में पधारे तब बाहिर डेरा कीये हुते पाछें जब गोपालदास उ स्थापन के समय श्री गुसांई जी के दर्शन कों आए तब हे वैष्णवन नें कह्यो जो हम कों श्री गुसांई जी के पास नाम दिवावो तब गोपाल दास नें कह्यो जो हम नाम देत हैं सो नाम श्री गुसांई जी देत हैं ताते तुम कों घर चलि कें नाम देयंगे. पीछे उन वैष्णव न को मन श्री गुसांई जी पास नाम पायवे कों सो तीन बेर उन वैष्णवन नें कह्यो सो तीनों वार गोप ल दास नें वैसेंही कह्यो जो तुम कों घर चलि कें ना पहुंचौं सो यह वात श्री गुसांई जी नें अपने कान

न सों सुनी पाछें उन वैस्मवन सों श्री गुसांईजीनें
कही जो तुम कहा कहत हो तव उन वैस्मवननेक
हौजो महाराज हम कौ नाम दीजिये तव श्री गु-
सांईजीने उन कों नाम सुनायो उनको कृतार्थ
करे पाछें गोपाल दास सों श्री गुसांईजी यों क-
हैं जो गोपाल दास तुम्हारो अंगीकार श्री आ
चार्यजी महाप्रभून ने कीयो है सो तो दृढ भयो
है परि जिनने तुम्हारे पास नाम पायो है सो तो
हमारे कबहूं न होंयगो सो श्री गुसांईजीने क्रो
ध करिकें गोपालदास सों कह्यो पाछें गोपालदा
सनें जितनेन कौं नाम दीयो हुतो तिन सबनकें
फिर सबन कों सांईजी के पास नाम दिवायो तव
वे सब कृतार्थ भये तिन सों श्री गुसांईजी गंगो-
ज्व कहते उन गोपाल दास कों सामित्व आयो
तातें इन जीवन कों अकाज भयो लातें वे गो
पालदास श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे
परम कृपा पात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता
कहां तांई लिखिये ॥ ❀

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैस्मव ॥ ८० ॥ संवन्ध ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक सूरदासजी
गऊ घाट ऊपर रहे
ते तिनकी वा
ता तिरख
ते हैं ॥

तो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आदे
लसे ब्रज कों पधारे सो कितनेक दिन में गो
उघाट आए सो गउघाट आगरे और मथुरा
के बीचा बीच है तहा श्री आचार्यजी महाप्रभू
पधारे सो एक घाट ऊपर श्री आचार्यजी म
हाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू आ
नहान करि के संध्यावंदन करि के पाक क
रन कों बैठे और श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवकन को समाज बहुत हतो और सेवक
हू आपने आपने श्री ठाकुर जी की रसोई करन
लागे सो एक घाट ऊपर सूरदास जी को स्थल
हतो सो सूरदास जी स्वामी है आप सेवक क
रते सूरदास जी भगवदीय हैं गान बहुत आछो
करते ताते बहुत लोग सूरदास जी के सेवक
भये हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभू गउघाट
ऊपर उतरे सो सूरदास जी के सेवक देखि कें
सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्री आचा
र्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिननें दक्षिण
में दिग्विजय कीयो हैं सब पंडितन को जीते हैं म
ति मार्ग स्थापन कीयो है सो श्री वल्लभाचार्य
यहां पधारे हैं तब सूरदास जी नें आपने सेवक
सों कह्यो जो तू जाय के दूर बैठि तब आप भोजन क
रि कें निराजे तब खबरि करियो हम श्री आचार्य
जी महाप्रभून के दर्शन कों जांगे सो वह तनक

दूर जाय बैठो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून श्राप पाक करत हुते सो पाक सिद्ध भयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून में पीठाद्युत्सो को भोग समर्पी पाछें समयानुसार भोग सराय श्रनोसार करी के महाप्रसाद लेके श्री श्राचार्यजी महाप्रभून गादी उपर विराजे तहां सब सेवक हुते पहुंचि के पीछे श्राचार्यजी महाप्रभून के श्रास पास सब बैठे तब बड़े भक्त हुते को सेवक श्राय सो सूरदास सों कह्यो जो श्री श्राचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं तब सूरदास श्रपने स्थान ते श्राय के श्री श्राचार्य जी महाप्रभून के दर्शन को श्राये तब श्री श्राचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूर श्रावो बैठो तब सूरदासजी श्री श्राचार्यजी महाप्रभून

कोदर्शन करिकें आगें आय बैठे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून में कही जो सूर कछू भगवद् जस वर्णन करौ तब सूरदास में कही जो आज्ञा सो सूरदास नें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के आगे एक पद गायो ॥ (सोपद)

राग धनासरी ॥

हों हरि सब पतितन को नायक ॥ को करि सकै बराबर मेरी इते मान को लायक ॥१॥ जो तुम अजामेलि सों कीनी जो पाती लिखि पाऊं ॥ होय विस्वास भलो जिय अपने और पतित बुलाऊं ॥२॥ मिमिटे जहां तहां ते सब कोउ आय जुरे इक ठौर ॥ सब कें इतने आनि मिलाऊं वे र दूसरी और ॥३॥ होड़ा होडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट ॥ सबहिन लै पायन तरि परि हों यही हमारी भेट ॥४॥ ऐसी कितनी कवना ऊं जान पति सुमरन है भयो आडो ॥ सब की वे र निवार लेउ प्रभू सूर पतित को दाडों ॥५॥

और पद गायो राग धनाश्री

प्रभू मैं सब पतितन को टीको ॥ और पतित सब दोस चारिके मेतो जन्मत ही को ॥१॥ विधिकस जामिति गनिका त्यारी और पूतना ही को ॥ मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे सूल कैसे जी को ॥२॥ कोउन समरथ सेव करन कों खैचि कहत हों ली को ॥ अबियत लाज सूर पतितन में कहत सबन मैं नी को ॥३॥ ऐसो पद श्री आचार्यजी महाप्र

प्रभूनके आगे सूरदासजीने गायो सो सुनि कें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूर हैकें ऐसो विधियान काहे कों हे वल्लभ भागवद लीलें वर्णान करि तब सूरदासनें कह्यो जो महाराज होतें समझता नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो जा स्नान करि आउ हम तो कों समझामेंगे तब सूरदासजी स्नान करि आयेतब श्रीमहाप्रभूजी नें प्रथम सूरदास को नाम सुनायो पाछें समर्पणा करवायो और फिर दशमस्कंध की अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजी कों नव धाभक्ति सिद्धि भयी तब सूरदासजीने भागवद लीला वर्णान करी अनुक्रमणिका ते सम्पूर्ण लीला पुरी सो कों जानियें दशमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरणा को प्रथम कारक कीयेहैं सो यह श्लोक सूरदासजीनें कह्यो सोश्लोक

नमामि हृदये पीठे लीला क्षराब्धि सायनं
लक्ष्मी सहस्र लीला सिः सेव्य मानं कलानिधं

और ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीये सोपद ॥

॥ रागविलावल

चकई री चलि चरणा सरोवर जहांन प्रेम वियोग

॥ यह पद सम्पूरणा करि कें सूरदासजीनें गायो सो यह पद दसमस्कंध के मंगलाचरणा को ५

कारिका के अनुसार कीयो सो यासें कह्यो है।
जो तहां श्री सहस्र सहित नित क्रीडत गोभित
सूरदास या भांति पद कीये ताते जानी जो सूरदा
स कों सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी सो श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें जान्यो जो लीला कों अभ्यास
भयो पाछें सूरदास जीनें नंद महोत्सव कीयो
सो श्री आचार्यजी महाप्रभून कें आगे गायो॥

राग देव गन्धार

ब्रज भयो महर के पूत जवयह बात सुनी॥ सोयह
श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें गायो सो सु
निकें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये
और अपने श्री मुखतें कहे जो सूर दास मानों
निकट ही हुते पाछें सूरदास जीनें अपने सेवक
कीये हुते तिन सबन कों नाम दिवायो पाछें सू
रदास जीनें बहुत पद कीये पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें सूरदास जी कों पुरुषोत्तम स
हस्र नाम सुनायो तब सूरदास जी कों सम्पूरण
भागवत स्फुर्तना भई पाछें जो पद कीये सो श्री
भागवत प्रथम स्कंध तें द्वादस स्कंधताईं की
ये ताते वे सूरदास जी श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भागवदीय है पाछें
श्री आचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दो
य तीन विराजे पाछें फेरि ब्रज कों पाव धारेसब
सूरदास जीहू श्री आचार्यजी महाप्रभून के सा
थ ब्रज कों आये॥ *

॥वार्तप्रसंग॥१

अब जो श्री आचार्यजी महाप्रभू ब्रज कों पधारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ सूरदासजी हू आए तब श्री आचार्य महाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यो जो सूरदास श्री गोकुल कों दर्शन करो सो सूरदास ने श्री गोकुल कों दंडवत करी सो दंडवत करत ही श्री गोकुल की बाल लीला सूरदासजी के हृदे में फुरी और सूरदासजी के हृदय में प्रथम श्री महाप्रभून नें सकल लीला श्री भागवत की स्थापी है तातें दर्शन करत मात्र सूरदासजी कों श्री गोकुल की बाल लीला स्फुरना भई तब सूरदासजी नें विचार्यो मन में जो श्री गोकुल की बाल लीला कों वर्णन करिकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें सुनाइये जन्म लीला को पद तो प्रथम सुनायो है अब श्री गोकुल की बाललीला को पद गायो ॥ सो पद

॥राग विलावल

सोभित कर नवनीत लिये ॥ घुटुरुवन चलत रेणु तन मंडित मुख लेप किये ॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन को तिलक दिये ॥ लार लटकन मानो मत्त मधुप गन माधुरी मधुर पिये ॥२॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत हैं सबको सुचित हिये ॥ धन्य सूर एको पल यह सुख कहा भयो सत कल्प जिये ॥३॥

यह पद सूरदास नें गायो सो सुनिकें आप बहुत
प्रसन्न भया पाछें औरहू पद गाया तब श्री महाप्र
भूजी अपने मन में विचारे जो श्रीनाथजी के यहाँ
और तो सब सेवा को मंडान भयो ॥ और कीर्त
न को मंडान नांही कीयो है ताते अब सूरदास
जी कों दीजियें तब आप श्रीजी हार पधारे सो
सूरदासजी कों साथ लीया हों सो श्रीनाथजी
हार जाय पहुंचे तब आप स्नान करिकें मन्दि
र में पधारे तब सूरदासजी सों कह्योजो सूरदा
स उपर आपु स्नान करि के श्रीनाथजी कों
दर्शन करो तब सूरदास पर्वत ऊपर जायकें श्री
नाथजी कों दर्शन कीयें तब आपने कह्योजो
सूरदास कछु श्रीनाथ कों सुनावो तब सूरदास
ने प्रथम विनयरूप को पद गायो ॥ सोपद

राग धनासरी

अब हों गाऱ्यो बहुत गुपाल ॥ यह पद सम्पूर
णकरि के श्रीनाथजी के आगें गायो तब श्री
महाप्रभूजी नें कह्यो जो अब तो सूरदास तुम में
कछु अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो श्र
भून नें दूर कीनी ताते कछु भगवद जस वर्णनक
रो तब सूरदास ने महात्म और लीला कों सोजस
करि कें गाय सुनायो ॥ सोपद

राग गोरी ॥*

कोंन सुकृत हून ब्रजवासिन कों यह पद संपूर्ण
करिकें गायो सो सुनिकें श्री महाप्रभूजी बहुत

नभये सोजैसो श्री आचार्यजी महाप्रभून्नें मार्गप्र
काश कीयो हो ताके अनुसार सूरदासजीनें पद
कीये श्री आचार्यजीमहाप्रभून के मार्ग कौ कह
स्वरूपहै महात्म ग्यान पूर्वक सुदृदसे हू की
यो परम कारणहै और स्नेह आगे भगवानकौम
हात्म रहत नाहीं ताते भगवान वेर वेर महात्म्यज
नावतहैं नाम प्रकरनमें पूतना करि संकट त
नावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करिवे
कुंठ दर्शन करि ऐसें करिकें भगवान नें बहुतम
हात्मजतायो परि वृनव्रज भक्तन कौ स्नेह परम
काष्ठा पन्न है ताते ताही समै तौ महात्म्य रहे पा
छें बिस्मृत होजाय ॥ ÷

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और सूरदासजीनें सहस्त्रा विधि पद कीयेहैंता
कौंसागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्धि भरासो
सूरदासजी के पद देशाधिपत ने सुने सो सुनिके
यह विचारो जो सूरदासजी काहू विधि सों मिलें
तो भलो सो भगवद इच्छा ते सूरदासजी मिले
सो सूरदासजी सों कह्यो देशाधिपति में जो सूर
दासजी में सुन्योहै जो तुमनें विसन पद बहुत की
येहैं जो मोकों परमेश्वर नें राज्य दीयो है सो सब
गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते तुमहूं कछू गावो
तब सूरदास जीने देशाधिपति के आगें कीर्तन
गायो ॥

सो पद

राग विलावल

मनारे तू करि माधौ सों प्रीति ॥*॥ यह पद देपुं
धिपति के आगें सम्पूर्ण करि कें सूरदासजी नें
गायो सो यह पद कैसौ है जो या पद कों अहर्नि
सध्यान रहे तौ भगवद अनुग्रह की सदा सांति
रहे और संसार से सदा वैराग्य रहे और कुसंग
को सदा भय रहे और भगवदीय के संग की सदा
चाह रहे और श्रीठाकुरजी के चरणारविंद ऊपर स
दा नेह रहे देसाधिप ऊपर आसक्ति न होय ऐसो
पद देपुराधिपति कौं सुनायो सो सुनि कै देपुराधि
पति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदास
जी मोकों परमेश्वर ने राज दीनों है सोसब गुनी
जन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावो त
ब सूरदासजीनें यह पद गायो ॥*॥ सोपद*

राग केदारा

नाहिन रह्यो मन में ठौर ॥*॥ यह पद सम्पूर्ण क
रिकें सूरदासजी नें गायो सो सुनि कें देपुराधिपति
अकबर बादशाह अपने मन में विचार्यो जो ये
मेरो जस काहे कों गावेंगे जो इनकों मेरी कछू वा
ञ्छा लालच होय तो गावें येतौ परमेश्वर के जे
नहे और सूरदासजीने या पद के समाप्त में गायो
हो जो सूर ऐसे दर्शा कों दूसरत लोचन प्यास *
यह गायो हो सो देपुराधिपति नें पूछ्यो जो सूरदास
जी तुम्हारे लोचन तौ देखिवयन माहीं सो प्यासे
कैसें मरत हैं और बिनदेखें उपमा कों देत हो*

सो तुम कैसे देत हो तब सूरदास जी कछु बोले नाहीं तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोभ न है सो तौ परमेश्वर के पास हैं सो उहां देखत हैं सो दर्शन करत हैं तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनको कछु दीयो चाहिये परि यह तौ भगवदीय हैं इन कों कछु काहू बात की इच्छा नाहीं पाछें सूरदास जी देशाधिपति सो विदा होय कें श्रीनाथजी द्वार आये ॥ * ॥ *

वार्ता प्रसंग ३॥

एक समें सूरदास जी मार्ग में चले जात हैं सो कोउ चौपड़ खेलत हुते सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन हैं जो कोउ आवते जाते की सुधि नाहीं ऐसे खेल में मान हैं सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय हे तिनसों सूरदास जी नें कह्यो जो देखो वह प्राणी कैसो अपनों जमारो खोवत है भगवान नें तो मनुष्य देह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजन के लिये दीनी है सो ये तो या देह सों हाड़ कूटत है यामें यह लौकिक सिद्ध नाहि सो काहे तें जो या लोक में तो अपजस और पर लोक में भगवान ते वहिर्मुख ताते श्रीठाकुरजी नें इन कों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदास ने अपने संग के न सों कह्यो ॥ सो पद

राग केदारो ॥

मन तू समझ सोच विचार ॥ भक्ति विन भगवान ॥
दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ साध संगति डारि फार
सांकरि रसना सारि ॥ दाव अब के परयो पूरो उत
रि पहिली पार ॥ २ ॥ + वाक सत्रे सुनि अठारे पर
चही को मारे ॥ दूर ते तजि तीन कानेच मकि चौं
क विचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ओगयो ठ
गनी नारि ॥ सूर हरि के पद भजन विन चल्यो दो
उकर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजी नें अपने संग के भगवदीयन सों कह्यो सो या पद में सूरदासजी नें कहा कह्यो मन तू समझि सोच विचार ये तीन्यो वस्तु चौपड में चहिये सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चहियें काहे ते जो समझि न होय तो श्रवण कहा करे गो ताते पहिलें तो समझ चाहिये और सोच करिये चिंता सो भगवान के प्राप्त की चिंता न होय तो संसार उपर वैराग्य कैसें आवें ताते सोच करिये और विचार जो या जीव कों विचार ही नहीं तो संग सत्संग में कहा करैगो ताते विचार चहियें सो ये तीनो वस्तु होंय तो भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहियें और चौपड़ में हूं ये तीनों वस्तु चहिये समझि कहेंगि न वो न आवतो गोट कैसें चलै और सोच आग मजो मेरे यह दाव पड़े तो यह गोट चलूं विचार जो वाही में तन मन जो येती नो वस्तु होय तो चौप ड़ खेली जाय सोवे सूरदासजी श्री आचार्यजी

महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे
वार्ता प्रसंग ॥ ७ ॥

वहुर सूरदासजी श्रीनाथजी द्वार आय कें वहु त दिन तांई श्रीनाथजी की सेवा कीनी वीचली च में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रियाजी के दर्शन कों आवते सो एक समय श्री सूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीत प्रियाजी के दर्शन कीये और वाल लीला के पद वहुत सुनाये सो श्री गुसांईजी सुनिकें वहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसांईजी ने एक पालना संस्कृत में कीयो सो पालना सूरदास जी कों सिखायो सो पालना सूरदास जीनें श्री नवनीत प्रियाजी झूलनतहुते ता समय गायो सो पद ॥

राग रामकली

शेष पर्यंत कथनं ॥ यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायो श्री नवनीत प्रियाजी कों पो छेंया पद के भाव के अनुसार वहुत पद कीये सो सुनिकें श्री गुसांईजी वहुत प्रसन्न भए पालनाके भाव अनुसार पद गायो ॥ सो पद

राग विलावल

वालविनोद आंगन में की डोलनि ॥ मणि मय भूमि सुभग नंदालय वलि वलि गई तोतरी वोलनि ॥१॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख व्रज माल वहु लर्द अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटि कन मधु गनि लोलनि ॥२॥ लीन्यो कर परसत

नन्धर कछू खाय कछू लाग्यो कपोलनि ॥ कहै जस सूर कहा लौं बरनौं धन्य नंद जीवन जग तो लौंने ॥३॥ *

गोपाल दुरे हैं माखन खात ॥ देखि सखी सो भाजो बढ़ी अति स्याम मनोहर गात ॥१॥ उठि अवलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहिं लखि लेत ॥ चकृत नैन चहुं दिस चितवत और सबनकों देत ॥२॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजतय ह आकार ॥ * ॥ जनु जलरुह तजि वैर विधिसों लारों मिलत उपहार ॥३॥ गिरि गिरि परत वदन तेऊपर द्वै दधि सुत के बिंदु ॥ मानहु सुधा कन खवार वत पिय जिय दंदु ॥ बाल विनोद विलोक सूर प्रभु वित भई ब्रज की नारि ॥ फुरत न बचन वरजि वे कौं मन रही विचार विचार ॥ *

राग जैत श्री

कहां लगि बरनौं सुन्दरताई ॥ खेलत कुमर कृलिक आंगन में नैन निरखि सुख पाई ॥१॥ कुल दै लसत श्याम सुन्दर कें वह विधि रंग विवनाई ॥ मानउ नव घन ऊपर राजत मघुवा धनुष वढ़ाई ॥ सेत पीत अरु असित लाल मणि लटकनि भाल कराई ॥ मानहुं असुर देव गुरु सों मिलि भूमि जस सो समुदाई ॥३॥ अति सुदेस मृदु चिहन हरे मन मोहन मुख वगराई ॥ मानहु मंजुल कंज ऊपर वर अलि अवलि फिराई ॥ दूध दंत दुति कही न जात कछु अलि पल लपझलकाई

॥किलकतहंसतदुरति प्रगटत मानों विंध्रु में वि
पुलतांई ॥५॥ खंडितवचन देत पूरन सुख अद्रुत
यहउपमाई ॥घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन
सूरदास वलिजाइ ॥६॥

रागरामकली

देखोसखी एक अद्भुत रूप ॥एक अम्बुज मध्य दे
खियत वीस दधि सुत जूप ॥१॥एक अवली दोय
जलचर उभे अर्क अनूप ॥ पंचवार चढि गहि देखि
यत कहो कहा स्वरूप ॥२॥ सिसु गन में भई सोभा
कोउ करो विचार ॥ सूरश्री गोपाल की छवि गावो
यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जीनें गाये पाछें फेरि श्रीनाथ
जी द्वार आये ॥*

वार्ताप्रसंग ५॥

अब सूरदासजीनें श्रीनाथजी की सेवा वहुत कीनी
वहुत दिन तांई ता उपरांत भगवदइच्छा जानी जो
अब प्रभून कों इच्छा वुलाय वे की है यह विचारिकें
जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करें
हैं ऐसी जो परासोली तहां सूरदासजी आए श्रीना
थजी की ध्वजा कों दंडोत करिकें ध्वजा के सामे
सन्मुख करिकें सूरदासजी सोये परि अंतःकरन
यहजो श्री आचार्यजी महाप्रभू दर्शन देयंगे अब
यह देह तो यकी ताते अब या देह सों श्रीना थजी
को दर्शन होय तो जानिये परम भाग्य हैं श्री गुसांई
जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन

करतीहैं ऐसे विचार कें सूरदासजी श्री गुसांईजी को चितवन करतैं और श्री गुसांईजी कैसे कृपा सिंधु हैं जैसें सूरदासजी उहां स्मरण करतहैं तेसेही श्री गुसांईजी इनकों छिनहूं नाहिं भूलतहैं श्रीनाथजीकों सिंगार होतों तासमय सूरदासजीमणि कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते सो तादिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों सिंगार करतहुते और सूरदासजी कों कीर्तन करत न देख्यो तब श्रीगुसांईजीनें पूछो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहे तेतव काहू वैष्णवनें कह्योजो महाराज सूरदासजीतो आज परासोली की ओड़ी जातदेखे हे तब श्रीगुसांईजीने जान्योजो भगवद इच्छा ते अवसान समेंहै ताते सूरदासजी परासोली गयेहैतबश्री गुसांईजीनें अपने सेवकन सों कह्योजो पुष्टिमार्गको जिहाजजात है जाकों कछु लेनोंहोयसो ले उ और जो भगवद इच्छा ते राजभोग आरतीपाछें रहत हैं तो मेंहू आवत हौंपाछें श्री गुसांईजीवे बेर सूरदासजीकी खबरि मंगायो करोंजो आवै सोई कहे जो महाराज सूरदासजीतो अचेतहैं कछू बोलत नाहीं ऐसें करत श्रीनाथजीके राजभोग को समय भयो सो राजभोग आरती करि कें श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तेनीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरिया सेवक रामदासजी प्रभृत और कुंभनदासजी और श्री गुसांईजीके सेवक गोविंद स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत

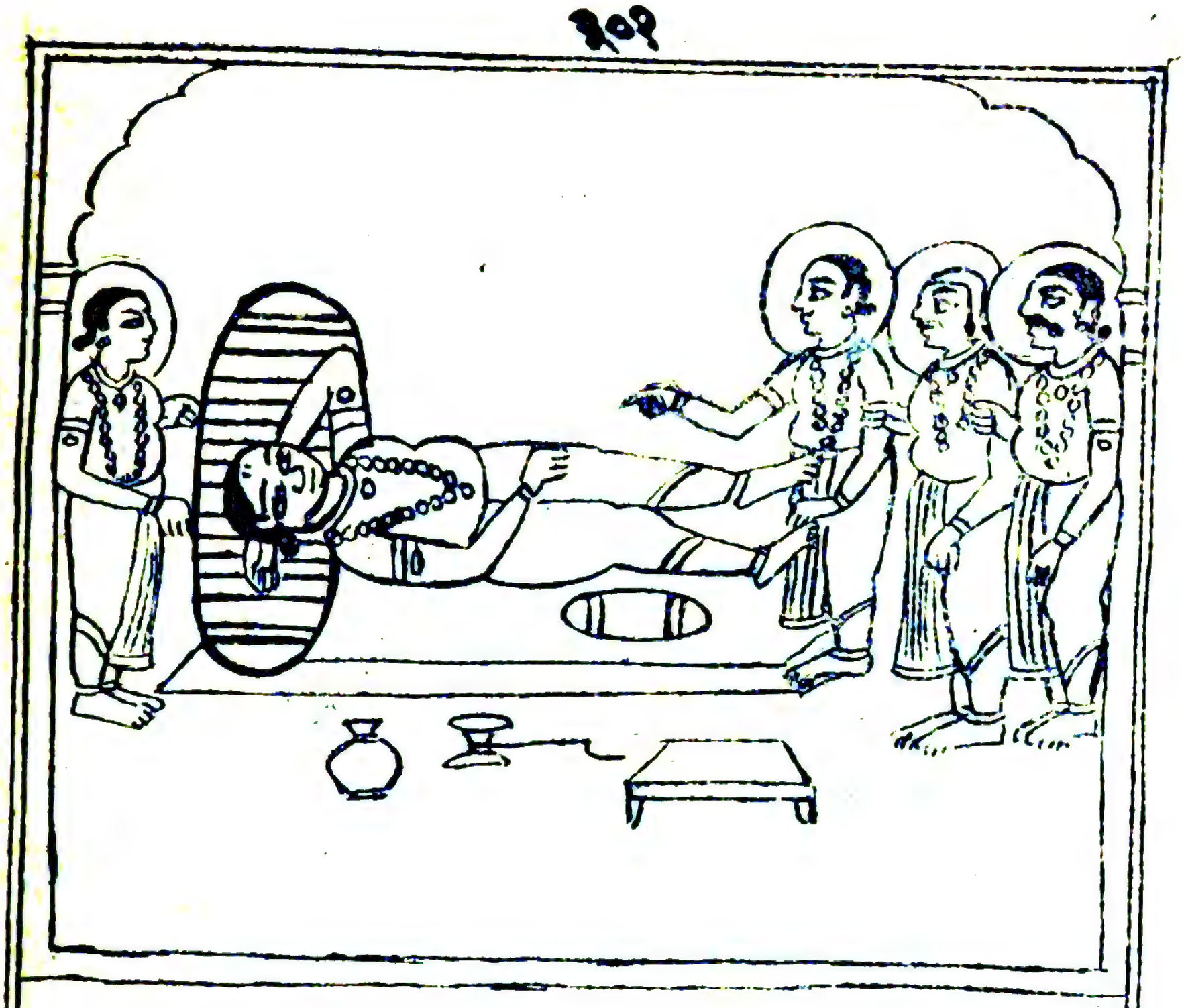

और सब श्री गुसांईजी के साथ आए सो आय तहीं सूरदासजी सों श्री गुसांईजी नें पूछ्यो जो सूरदासजी कैसें हौं तब सूरदासजी नें श्री गुसांईजी कों दंडौत करिकें कह्यो जो महाराज आए हौ महाराज की वाट देखत हुतो यह कहि कें सूरदासजी ने एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग ॥*

देखौ देखो हरि जू को एक सुभाव ॥ अति गंभीर उदार उदधि प्रभू जानि सिरोमन राय ॥१॥ राई जितनी सेवा कौ फल मानत मेरु समान ॥ समझ दास अपराध सिंधु सम वूंदन एकौ जानि ॥२॥ वदन प्रसन्न कमल पद सनमुख दीखत ही है ।

ऐसे ॥ ऐसे विमुख हु भरा कृपा या मुख कीजव
देखो तव तैसे ॥३॥ भक्त विरह करत करुणा भय
डोलत पाछें लागें ॥ सूरदास ऐसे प्रभू कों कह दी
जै पीठ अभागे ॥ *

यह पद सूरदासजीनें कह्यो सो सुनि कें श्रीगुसां
ईजी बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो ऐसो दैन्य
प्रभू अपने सेवकन कों देहि या दैन्य के पात्र एही
हैं तब वा वेर श्री गुसांईजी पास ठाड़े हुते और क्ष
भुजदास हू ठाड़े हुते तब क्षत्र भुजदास नें कह्यो जो
सूरदास जीनें बहुत भावद जस वर्णन कीयो परि
श्री आचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयो
तब यह वचन सुनि कें सूरदासजी बोले जो मैंतो सब
श्री आचार्य जी महा प्रभून कोही जस वर्णन की
योहे कछू न्यारो देखूं तो न्यारो करूं परि तेरे साथ
कहत हो या भांति कहि कें सूरदास जीनें एक पद
कह्यो ॥ सो पद

रागविहागरो

भरोसो दृढ इन चरणन केरो ॥ श्रीवल्लभ नख चंद्र
छटा विनु सब जग मांझि अंधेरो ॥१॥ साधन और
नहीं या कलि में जासों होत निवेरो ॥ सूर कहा
कहि दुविधि आंधरो वि ना मोल कों चेरो ॥२॥ *

यह पद कह्यो पाछें सूरदासजी कों मूर्छा आई तब
श्री गुसांईजी कहें जो सूरदास जी चित की वृति
कहां है तब सूरदासजीने एक पद और कह्यो ॥ *

सोपद

रागविहागरो।।

वलिवलिवलि हो कुमर राधिका नंद सुवनजासों रति मानी।।वे अतिचतुर तुमचतुर सिरोमनश्री त करीकैसें होत है छानी।।१।।वेजु धरत तन कनकपीत पट सोतो सव तेरीगति ठानी।।तें पुनि स्याम सहज वे सोभा अंवर मिस अपने उर आनी।।*२।। पुलकित अंग अवहीं हे आयो निरखिवदे ख रिव निज देह सियानी।। सूर सुजान सखी केखूभै प्रेमप्रकाश भयो विह सानी।।*३*।।

यहपद कहो इतनों कहिकें सूरदासजीको चित्त श्रीठाकुरजी को श्री मुखतामें करुणारस केभरे नेत्र देखे तव श्री गुसांई जी पूछो जो सूरदास जी नेत्र कीवृति कहां है तव सूरदास जीने एक पद और कह्यो।। सोपद

रागविहागरो

खंजन नैन रूप रस माते।।अति सेचारुचपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।।चलि चलि जात निकट श्रवणान के उलटि पुलटि ताटंक फंदाते।।सूरदास अंजन गुण अदक नातर अव उडिजाते।।

इतनों कहतही सूरदास जीनें या पृथिवी कोत्याग कियो सो भगवद् लीला में प्राप्त भये पाछें श्री गुसांईजी सव सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आयेता ते सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सोइनकी वार्ता कौपार नाहीं तातेइनकी वार्ता कहां तांई लिखये।।*

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ८१ ॥ सम्बन्ध ॥ *

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक परमानन्द दास कनौ
जिया ब्राह्मण तिनकी
वार्ता लिख्यते
हैं

सो परमानन्द दासजी परम भगवद लीला मध्य या ती श्रीठाकुर जीके परम सखा हे सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथजीकी आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तेसेई श्री आचार्यजी महाप्रभून को श्रीठाकुरजी को पधरावन सब प्रगट भयो और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत में प्रघट भए सो गोपाल दासजी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अपने कृपाकी वादपुंतार पर वेम ताते परमानन्द दासजी को जन्म कनोज में है क नोजया ब्राह्मण के घर भयो सो वे परमानन्द दासजी बहुत योग्य भए और कवि भये भगवद कृपा के पात्र भये कीर्तन बहुत आछो गावते ताते परमानन्द दास जी के संग समाज बहुत रहतो आप स्वामी क हावते आप सेवक करते सो भगवद इच्छा ते एक समय * परमानन्द दासजी कन्नोजते आप प्रयाग को आ ये सो प्रयाग में उतरे सो वहां कीर्तन बहुत आछें गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे को आवते * और अडेल तें कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इ न के कीर्तन सुनि के पार अडेल में जाय कहते *

जो परमानन्द दास जी इहां प्रयाग में आये है सो की
र्तन बहुत आछें गावत है सो श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक जल घरिया कपूर छत्री सो उनके राग
पर बहुत आसक्ति परि वे अवकाश नाहीं .... पा
वें जो परमानंद दास जीके कीर्तन सुनिवे कों आवें
सेवा में अवकाश नाहीं जो आज जाय सकें सो एक
दिन एक वैष्णव आगरे ते अडेल में आयो सो बानेक
हौं जो आज एकादशी है सो परमानन्द दास जी
आज जागरन करेंगें सो यह सुनिकें वा जल घरि
यानें अपने मन में विचारयो जो आज परमानन्द जी
के कीर्तन सुनिवे कों चलनों सो वे छत्री कपूर जल
घरिया अपनी सेवा सों पहुंचि कें रात्रि को अपने
घर आये सो घर आयकें अपने मन में विचार की
यो जो या बेर नाव तौ मिलैगी नाहीं ताते कहा कर्त
व्य परिवे पैरवे में भले निपुन हुते सो मन में विचारी
जो पैर कें पार जैये पाछें अपने घर तें चले सो श्री य
मुना जी के तीर ऊपर आय ठाढ़े भये तब पर्दनी प
हर कें वस्त्र सब मांथे सों बाधि कें श्री यमुना जी में
पैर कें पार प्रयाग आये पाछें वस्त्र पहर कें जाठौ
र परमानन्द स्वामी उतरे हुते तहां आये सो इनकों
कछु मिलाप तौ परमानन्द स्वामी सों हुतो नाहीं
जहां और सब जने बैठे हुते तहां एक जाय बैठे पर
एक श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक हे सो सब
कोउ जानत हुते ताते सबनें इनकों आदर कर
कें बैठायो सो ए बैठे ता पाछें परमानन्द स्वामी ने

कीर्तन कों प्रारंभ कीयो सो परमानन्द स्वामी ने विर
ह के पद गाये सो विरह के पद काहे कों गाए सो
प्रथम इनकों स्वरूप कहि आये है कही जो येली
ला मध्ययाती श्रीठाकुर जी के परमानन्द स्वामीपर
म सरवाहैं सो उहां सों विछुरे और दूहां तो अवही
श्रीठाकुर जी कों दर्शन नाहीं भयो और श्री आचा
र्यजी महाप्रभून को दर्शन अब होयतो श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धांत है जोभग
वदीय को संग होयतो श्रीठाकुर जी कृपा करें ता
ही के लियें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें परमान
द स्वामी के ऊपर अनुग्रह करि कें अपने कृपापा
त्र भगवदीय के अंतकरन में प्रेरना करिकें परमा

नंद स्वामी के इहां पठाये सो ये श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनकों श्री ठाकुर जी ए
क षन हूं नाहीं छोडत इनके संगही रहत हैं काहे
ते सूरदास जी गाए हैं भक्ति विरह करत करुणा म
य डोलत पाछें पाछें और जगन्नाथ जोसी की हूवा
ती में लिख्यो है जो जब रजपूत नें तरवार चलाई त
ब श्री ठाकुर जी नें हाथ पकरयो ताते श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्री ठाकुरजी नि
कट ही रहत हैं ताते परमानन्द स्वामीने विरह के प
द गाये सो पद ॥

राग विहागरो ॥*

ब्रज के विरही लोग विचारे ॥ बिन गोपाल ठगे से ठा
डे अति दुर्बल तन हारे ॥१॥ मात जसोधा पंथ नि
हारत निरखत सांझ सकारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह
कहि बोलत अँखियन बहत पनारे ॥२॥ यह मथु
रा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे ॥ परमानन्द
स्वामी बिनु ऐसे जैसे चन्दा बिनु तारे ॥३॥*

और पद गायो सो **राग विहागरो**

सब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधन
के ऊधो सो सब बचन ईस पुर कासी ॥ जद्यपि हरि
हम तजी अनाथ करि अब छांडत कोंन रति जासी ॥
अपनी सीतलता तहां छांडत जद्यपि विधु राहु है
ग्रासी ॥ ४॥ किंह अपराध जोग लिखि पठयो नेम
भजन ले करत उदासी ॥ परमानन्द ऐसी को नि
रहन मागें मुक्ति गुन रासी ॥ ३॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को ॥ नंद नंदन विनका सो कहिये सुनरी सखी मेरे दुखिया मन को ॥१॥ कहां वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वह चंद सरद रति को ॥ कहां वे मंद सुगंध अमल रस कहां वे षट पद जल जातन को ॥ २ ॥ कहां वे सेज पौढ़िवो वन को फूल विछौना मृदु पातन को ॥ कहां वे दरस परस परमानन्द कोमल तन कोमल गातन को ॥३॥*

राग कान्हरो

माई कौं मिलवे नंद किसोरे ॥ एक बार को नैन दिखावें मेरे मन की चोरे ॥१॥ जागत नाम गनत नहीं खूटत कों पाउंगी भोरे ॥ सुनरी सखी अब कैसें जीजै सुनतम चर खग रोरें ॥२॥ जो यह प्रीति स्य अंतर गति जिनकाहू वन होरे ॥ परमानन्द प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन दोरे ॥३॥*

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामीनें सगरी राति गाय पाछिली य डीचारि याम रहीत व जोजो जागरन में आए हुते सो सब अपने घरकों गये तैसेंई श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ए जल घरियाक पूर हू परमानंद स्वामी सों जैसीक ए हम स्मरण कहि कें चले और परमानंद स्वामीके ए कीर्तन सुनिकें बहुत प्रसन्न भये और परमानन्द ए स्वामी सों कह्यो जो जैसे हमने सुने हुते तातें अ ए धिक देवे तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो

येजलधरिया क्षत्री कपूर श्री महाप्रभून के परम भ
गवदीयहै सो श्रेजो चलि श्रारा सो परमानन्द स्वा
मीके उपर श्रनुग्रह करिवे कों श्रारा हे नातर भ
गवदीय काहे कों काहू के घर जांय श्रोर यहउ
पर कहि श्रायेहैं जो श्री श्राचार्यजी महा प्रभूनके
निकट ही रहतहैं सो याकों हेत यह जो निकट रहत
हैं तौ इन जलधरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठिकें
श्रीनवनीत प्रियाजीने परमानंद स्वामी के पद सुने
जो श्री श्राचार्यजी महा प्रभून के मार्ग की मर्य्यादा
हे जो श्री श्राचार्यजी महाप्रभूनके श्रनुग्रह विना
श्रीठाकुर जी कृपा न करें सोउन जल धरिया क्षत्री
कपूर उपर श्री श्राचार्यजी महाप्रभून को परम श्रनु
ग्रह हे ताते श्रीनवनीत प्रियाजी इनकी गोद में
बैठि कें परमानन्द स्वामी के पद काहे को सुनने
पड़े सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानन्द
स्वामी के उपर श्रीनवनीत प्रयाजी श्रनुग्रह क
रवे कों श्राप पधारे हैं तातें सुने सो श्री श्राचार्य
जी महाप्रभून के सेवक जलधरिया क्षत्री परमा
नन्द स्वामी सों जैसी कृष्ण कहि कें चले सो श्रीय
मुनाजी के तीर उपर श्राये सो वहां श्राय कें विचा
र कीयो जो नाव की बाट देखें तो श्रवार होयगी
श्रोर सेवा छूटेगी श्रोर श्री श्राचार्यजी महाप्रभू
भी रीझेंगे ताते जैसे पैर के श्राये हुते तैसेही चले
सो पैर के पास गये सो पार श्रावतही स्नान कर
कें श्रपनी सेवा में तत्पर भये पाछे वहां प्राग में

परमानन्द स्वामी की रात्रि के जागरन के श्रमित सो आंखि लगी निंद्रा आई सो कुतनें में स्वप्न आ यो सो स्वप्न में देखे जो जैसें रात्रि के जागरन में श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल घरिया ए श्री बैठे हैं और उनकी गोद में श्री नवनीत प्रिया जी के दर्शन भये और स्वप्न में श्री नवनीत प्रिया जी परमानन्द स्वामी सों कहैं और परमानंद स्वामी की निद्रा खुली सो ना श्री मुख को कोउ सों दर्यो कोटिक दर्पणा वरण्य परमानन्द स्वामी नें देख्यो सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीये और मन में चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो तब यह मन में विचार्यो जो यह दर्शन उन श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सबी जल घरिया विना न होयगो तातें होय तो उनके पास जैये जो उनसों मिलें तब कार्य सिद्धि होय ऐसो परमानन्द स्वामी नें अपने मन में विचार कियो सो ततकाल भागते आ डेल कूंचले सो श्री यमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये सो प्रातः काल को समय भयो सो प्रथम नावचन्नी ता पर बैठि के पार उतरे तब आगे जाय के देखें तो श्री आचार्य जी महाप्रभू जी स्नान सन्ध्या वंदन करतहैं सो परमानन्द स्वामी को श्री महाप्र भूजी को कैसो दर्शन भयो साक्षात पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचंद्र सों श्री गुसांई जी वल्लभाष्टक में लि खेहैं सो वस्तुतः कृष्ण स्वरूप ऐसो दर्शन भयो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जल घरि

याछलीकपूरकीगोद में श्रीठाकुरजीकाहें कोंवे
ठेयहकारणाजिनके माथेश्रैसे प्रभूविराजत हैंपर
मानन्द स्वामी के मन में यह जोछलीकपूर मिले
तौआछी सोकाहेते जोजिन के मांथे श्रैसे प्रभूश्री
रजिनकेदर्शनतश्रीआचार्यजी महाप्रभून कों
दर्शनभयोतापाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभून
नेआपने श्रीमुख सोंकह्योजो परमानन्दकछुभग
वदीयजसवर्णनकरि तब परमानन्दस्वामीनेवि
रह के पदगाये ॥ सोपद

रागसारंग ॥*

कौनवेर भई चलेरीगोपाल ॥ हों ननसार गई हौंर
न्योते वार वार वृंदावन बोले ॥१॥ तेरो तनकोरू
पकहां गयोंमामिन श्रीमुख कमल सुखायरह्यो
तवसोभागयोहरि के संगहुतो सोकमल विरहदह्यो
॥२॥ कोबोले कोनैन उघारे कोप्रति उतर देहिवि
कल मन ॥ जो सर्वस्व श्रक्रूर चुरायो परमानन्द
स्वामी जीवन धन ॥*

रागसारंग

जिय की साधनजिय ही रहीरी ॥ वहुरि गोपालदे
खि नहीं पाए विलपतकुंज श्रहीरी ॥ १ ॥ एकदि
नसोंजे समीप यह मारग वेचन जात दहीरी ॥ पी
तके लिये दान मिस मोहन मेरी बांह गहीरी ॥ २ ॥
विनदेखें घडीजात कलप समवि रहा श्रनलद
हीरी ॥ परमानंद स्वामी विन दर्शनैनन नींदवा
हीरी ॥ ३ ॥ *

रागसारंग ॥+

वह वातकमलदल नैनन की ॥ बारबार सुधिकरै वतरज नीचहु दुरिदेनी सैनी सैनकी ॥ वह लीला वह रास सरद की गोरज रजति आवनि ॥ वह उंची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥ वसनकुंज में रास खिलायो विद्या गमार्इ मैनकी ॥ परमानन्द प्रभू सों कोंजीवे जे पोखी मृदु वेनकी ॥

या भांति परमानन्द स्वामी ने विरह के पद गाय सो सुनि कें परमानन्द स्वामी सों कह्यो जो कछू वा लीला वर्णन करि तव परमानन्द स्वामी नें कह्यो जो महाराज में कछू समझत नाहीं तव श्रीमहाप्रभून नें कह्यो जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे तव परमानन्द स्वामी नें श्री महाप्रभून सों पूछो जो महाराज आप कोसेवक विरक्त कहोंहै तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो कछू हल करत होयगो तव परमानन्द स्वामी स्नान को गये सो तव परमानन्द स्वामी आगे जाय कें देखेंतो यमुनजल की गागर लेकें वह कपूरछत्री आवतहै तव निकट आए सो सामहें मिले सो उनकोदेख कें परमानन्द स्वामी वहुत प्रसन्न भए और परमानन्द स्वामी नें उनकों नमस्कार करी और कह्यो जो रवि कों जागरन में आप पधारे हुते सो श्री ठाकुर जीनें आपकी गोद में बैठि कें मेरे कीर्तन सुने सो आपकी कृपा ते श्रीठाकुर जीनें मोसों क

होजो में श्री आचार्यजी महाप्रभून कें सेवक जल
घरिया स्त्री की गोद में बैठि कें तेरे कीर्तन सुने
हैं और आप की कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है
सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोकों दर्शन भयो
इतनी वात सुनि कें उन जल घरिया नें कह्यो जो ए
से मति कहो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे
तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ कें क्यों गये तातें यह वा
त मति कहो तब इतनी सुनि कें परमानन्द स्वामी
कों आश्चर्य भयो और कह्यो जो ए धन्य है जिन
ऊपर श्रीठाकुर जी कों ऐसो अनुग्रह है और ये

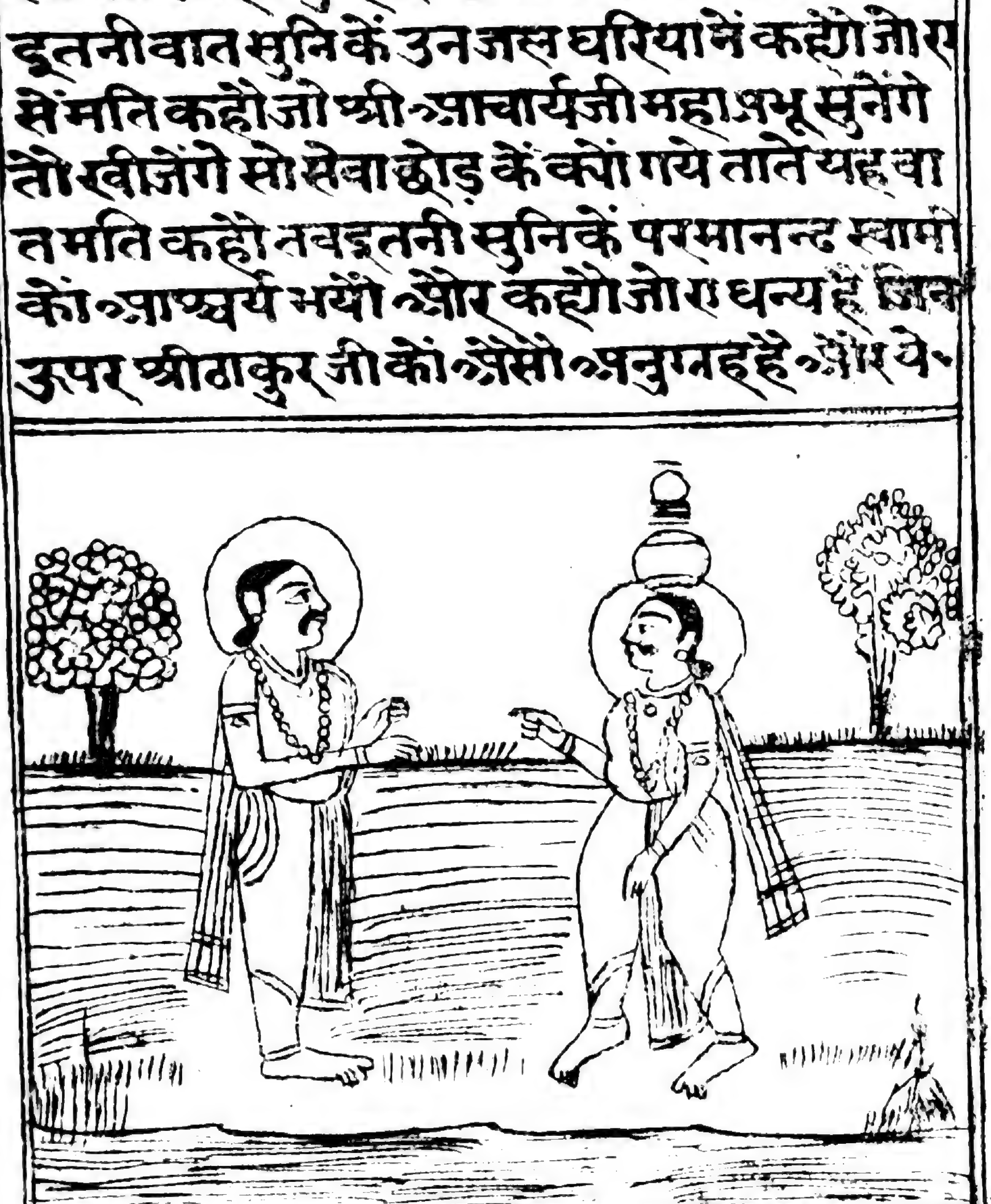

अपनो स्वरूप छिपावत हैं पाछें परमानन्द स्वामी
तो ग्वान कों गये और जल घरिया जल की गागर

लेकें मन्दिर में गयो पाछें परमानन्द स्वामी श्रीज
मुनाजी में स्नानकरिकें ततकाल आप श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के आगें आय ठाढ़े भये तव
श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्योजो परमानन्द
स्वामी आगें आउ बैठि तव परमानन्द स्वामी आ
पु आगें आय बैठे तव श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें परमानन्द स्वामी कों नाम सुनायो पाछें मन्दि
र में पधार कें श्री नवनीत प्रियाजी के सन्निधान
परमानन्द स्वामी कों वल्ल संबध करवायो पाछें
अनुग्रह करिकें परमानन्द स्वामी कों अनुक्रम
णिका सुनाई काहे तेजो प्रथम परमानन्दस्वामी
सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें अपने श्री मुख

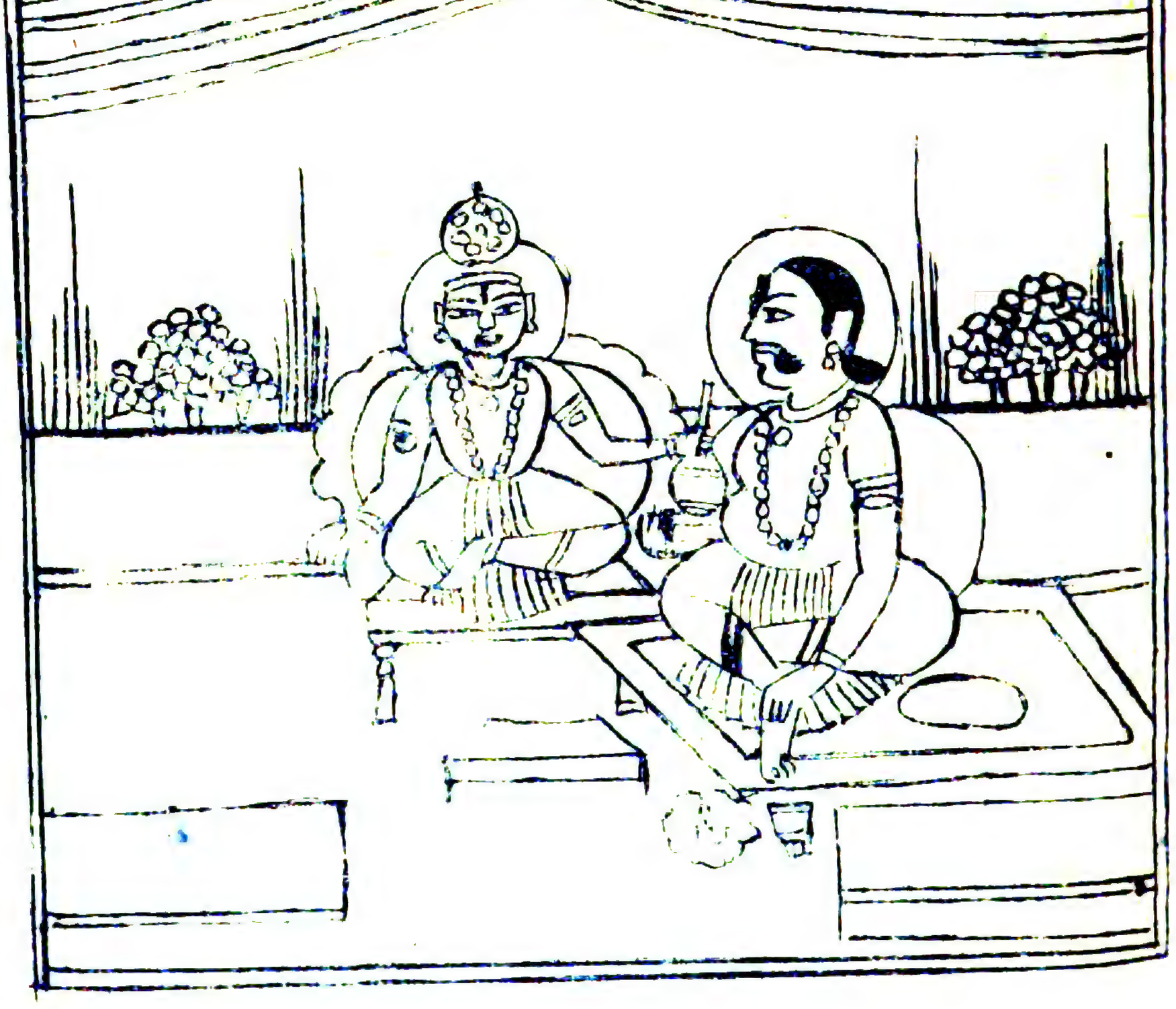

सों कह्योजो भागवद जस वर्णन कीए सो परमानं
द स्वामीनें विरह को पद गायो तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो परमानंद स्वामीवा
लतीला गाउ तब परमानन्द स्वामीनें कह्योजो
राजमें कछू समझत नाहीं सो परमानन्द स्वामी
नें काहे ते कह्यो जो ऊपर कहि आए हैं जो ये श्री
ठाकुर जी सो विछुरे हैं सो विछुरे के दुख की तो
स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयो ताको वि
स्मरन भयो जो काहे ते जो सब लीला चिंतिष्ट
पूरणा पुरुषोतम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून
सों घर पधारे हैं सो परमानन्द दास कों श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमिणाका सुनाई तब सब
लीला की स्फुर्ति भई और अनुक्रमणिका सुना
ई ताको कारण कह्या जो श्री आचार्यजी महाप्र
भून को नाम है श्री भागवत पीयूष समुद्र मथनः
क्षमः सो श्री भागवत को श्री गुसांईजी अमृत
को समुद्र करिकें वर्णन कीये हैं सो अनुक्रमणि
काद्वारा श्री भागवत रूपी समुद्र श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें परमानन्द स्वामी के हृदय में धस्यो ता
ते वाणी तो सब अष्टकाव्य की समान हैं और ये
दोउ परमानन्द स्वामी और सूरदास जी सागर भये
सो याते जो श्री भागवत रूपी अमृत को स्वरूप
इनके हृदय में श्री आचार्यजी महाप्रभून नें ध
स्यो सो काहे ते जो सब कोउ सूरसागर और पर
मानन्द सागर कहते सब परमानन्द दास सो अ

श्राचार्यजी महाप्रभू श्रीमुखसों कहें जो बाल लीला वर्णन करि सो परमानन्दजी नें ततकाल बाललीला के पद करिकें श्रीनवनीतप्रियाजी के सन्निधान गाये॥ सोपद

राग सांमरी

माई री कमल नैन श्याम सुंदर झूलत हैं पलना॥ बाल लीला गावत सब गोकुल के ललना॥१॥ अरुणा तरुणा कमल नख मनि जस जोती॥ कुंचित कच भवराकृत लटकत गज मोती॥२॥ अंगूला गहि कमल पान मेलत मुख माहीं॥ अपनों प्रतिविम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥३॥ जसुमति के पुन्य पुञ्ज बार बार न्हाले॥ परमानन्द स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥४॥

यह पद सुनिकें श्री श्राचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए फेरि और पद गायो॥ सोपद

राग विलावल

जसोधा तेरे भाग्य की कहीं न जाय॥ जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सोप्रघटे हैं आय॥१॥ शिव नारद सनकादिक महा मुनि मिलवे करत उपाय॥ ते नंदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय॥२॥ रतन जटित पौढ़ाय पालने वदन देखि मुसिकाई॥ झूलो मेरे लाल बलिहारी परमानन्द जस गाई॥३॥

राग विलावल

मणि मय आंगन नंद के खेलत दोउ भैया॥ सो कैसे

वालसीलाकेपद परमानन्द दास नें गाए सो सुनिकें श्री आचार्यजी वहुत प्रसन्न भए सो परमानन्द दास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास हे सो परमानन्द दास कों आपने कीर्तन की सेवा दीनी सो परमानन्द दास जी श्री नवनीत प्रियाजी कों नित्य नये पद करिकें भांति भांति के सुनावते जब अवसर होतो तब परमानन्द दास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें पद कीर्तन करें श्री आचार्यजी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानन्द दासजी नित्य सुनते सो ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें परमानन्द दासजी सुनावते सो एक दिन परमानन्द दासजी नें श्री ठाकुर जी के चरणारविंद को महात्म सुन्यो सो चरणारविंद के महात्म को कीर्तन करि श्री आचार्यजी महाप्रभून कों सुनायो सुनिके श्री आचार्यजी महाप्रभू वहुत प्रसन्न भए सो पद॥

राग कान्हरो

चरण कमल वंदौ जगदीस गोधन के संग धाए। जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥१॥ यह पद संपूरण करि के परमानन्द दास जी नें गायो और श्री आचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को और आर्यना को पद गायो॥ सो पद

राग कान्हरो *

यह मागों गोपीजन वल्लभ यह परमानन्द दास स्वामी नें संपूरण करिकें गायो सो सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर

कें परमानन्ददास या पद कों सुनाय के व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है ताते व्रज कों अवश्य चलनों ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू यह विचार करेजो व्रज कों पधारबे को उद्यम कीयो सो दामोदरदास हरिसानी कृष्णदास मेघन परमानन्द दास और यादव दास हलवाई तथा रसोई की सामिग्री संग

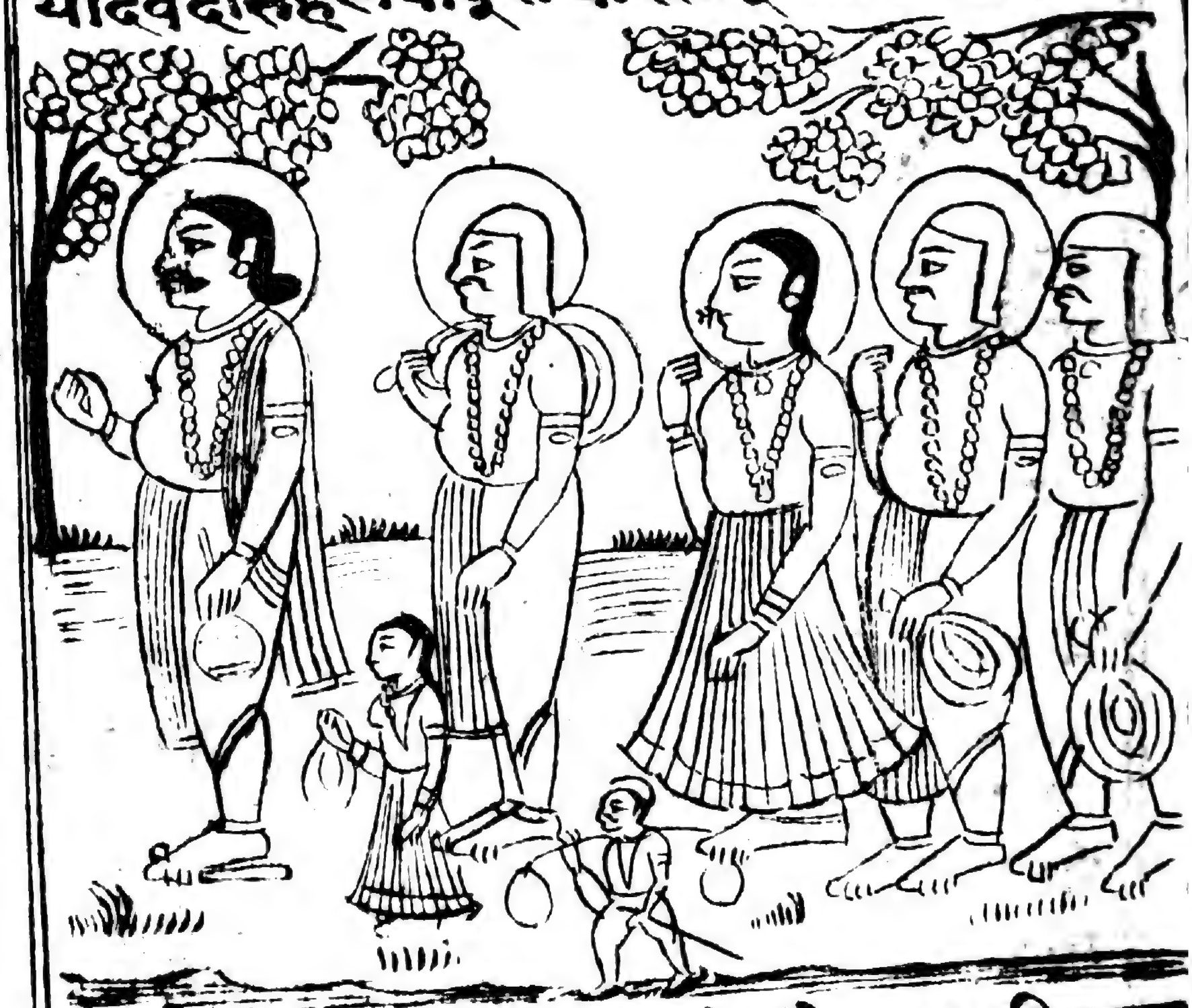

लेकें चले और सब वैष्णव संग लै आप श्री आचार्यजी महाप्रभू व्रज कों पधारें सो व्रज कों आवत परमानन्द दास कों गांव कन्नोज आयो तब परमानन्द दास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती

कीनीजो महाराज मेरे घर पधारिये आप के अनु
ग्रह ते मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरो घर हू पा
वन करिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप अं
तर यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूर्वक आप
कृपा करिकें पधारे सो परमानन्द दास के घर आ
ई भांति सों श्री आचार्यजी महाप्रभूननें रसोई
करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरा
य कें आप प्रसाद लीयो पाछें आप गादीतकिया
न के ऊपर विराजे तब परमानन्द दास सों कह्यो जो
कछु भागवत जस गावो तब परमानंद दासजी नें
मन में विचारी जो या समय श्री आचार्यजी महा
प्रभून कों मन तो व्रज में श्री गोवर्द्धननाथजी के
पास है ताते विरह के पद गाउं सो विरह को पद
ऐसो गायो जामें छिनहूं कलप समान जाय॥

सो पद राग सोरठ॥

हरि तेरी लीला की सुधि आवै॥ कमलनैन मन
मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै॥१॥ एकबार ज
य मिलत माया करि सो कैसें बिसरावै॥ मुख मु
सिकान बंक अवि लोकन बाल मनोहर भावै॥
कबहुक निबड़ तिमर आलिंगन कबहुक पिक
सुर गावै॥ कबहुक सभ्रम छांसि छांसि कहि
संगहीन उठि धावै॥३॥ कबहुक नैन मूंदि अं
तर गति मणि माला पहिरावै॥ परमानंद श्याम ध्या
न करि ऐसें विरह गवावै॥ + ***

यह पद परमानन्द दासनें गायो सो सुनिवो श्री

श्राचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा श्राई सो जानी ला कौ पद परमानन्द दास नें गायो ता लीला विषें ॥ श्री श्राचार्यजी महाप्रभू मान भये सो देहानु संधान न रह्यो सो तीन दिन लों श्री श्राचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा रही सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्री श्राचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करे सो वैसेंही बैठे रहे चतुर्थ दिन के प्रातः काल श्री श्राचार्यजी महाप्रभू सावधान भए तब सब वैष्णव प्रसन्न भए तब परमानन्ददासजी मन मेंऽर पे जो फेरि श्रैसो पद न गाऊ फेरि सूधे पद गाए ॥ सो पद

रागविभाग

माई री हों श्रानंद गुन गाउं ॥ गोकुल की चिंता मणि माधो जो मांगो सो पाउं ॥ जब ते कमल नैन व्रज श्राये सकल संपदा बाढ़ी ॥ नंद रय के द्वारे देखो श्रष्ट महा सिद्धि ठाढी ॥ २ ॥ फूले फले सदा वृंदावन काम धेनु दुहि दीजे ॥ मांगे मेघ इंद्र बरसावें कृष्ण कृपा सुख लीजे ॥ कहत जसोधा सखियन श्रागें हरि उत कये जनावे ॥ परमानंद दास को ठाकुर मुरली मनोहर भावे ॥

श्रौर हू पद गायो ॥ सो

राग गौरी ॥

विमल जस वृंदावन के चंद्र को ॥ यह पद सम्पूर्ण करि कें गायो फेरि श्रौर गायो ॥

राग सारंग ॥

धन्तरी नन्द गांव जाय वसिये ॥ यह पद सम्पूरण क
रि कें गायो सो पद में यह कह्यो जो चलरी नंद गांव जा
यवसिये सो श्री महाप्रभू जी मुनि के व्रज कों पधारे
सो प्रथम श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल आवत
ही श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी के तीर ऊ
पर छोंकर के नीचे बैठक में तहां श्री आचार्य जी मह
प्रभू विराजे और एक बैठक श्री द्वारिकानाथ जी के
मन्दिर के पास है सो भीतर की बैठक है सो गवि के वि
श्राम स्थान खोड़ का ठौर है उहां श्री आचार्य जी मह
प्रभून को घर हुतो जब आप श्री गोकुल पधारते तब
उहां ई उतरते सो यह भीतर की बैठक है पाछें सबवै
ष्णवनें श्री यमुना जी स्नान कीये और परमानन्द
दास जी हू श्री यमुना जी को जस वर्णन कीये सो पद

रागरामकली

श्री यमुना जी यह प्रसाद हों पाउं ॥ तिहारे निकट र
हों निस बासर राम कृस्न गुन गाउं ॥१॥ मंजन विमल
पावन जल चेला कुलरव बहाउं ॥ तिहारी कृपा भान
की तनया हरि पद पीत चढ़ाउं ॥२॥ चिनती करोंय
हों वर मागों अधम संग बिसराउं ॥ परमानन्द दास
फल दाता गगन गोपाल लड़ाउं ॥३॥

रागराम कली

श्री यमुना जी दीन जान मोहि कीजै ॥ सो सेसे पद
सम्पूरण कारके श्री यमुना जी के परमानन्ददास जी
नें बहुत गाए श्री आचार्य जी के आगें तीर विषें गा
ए ता उपरांत श्री महाप्रभू जीनें परमानन्द दास को

कोंचाल्यो लीला विसिष्ट श्री गोकुल के दर्शन करवा
ये सो परमानन्द दास को ऐसो दर्शन भयो सो सब
व्रजभक्त श्री यमुनाजल की गागरि भरि लेजातहै
और श्रीठाकुरजी मार्ग में खेलतहैं और व्रजभक्त
न कों जलकी गागरि उठाय देतहैं और उनकी कछु
तोरेहैं याभांति सों दर्शनभए सो तेसोई पद श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के आगें गायो सो पद

राग विलावल

जमुना जल घर भरि चली चन्द्रावलि नारी॥ मारग रोक
लत मिले घनस्याम मुरारी॥१॥ नैनन सों नैना मिले म
न रह्यो है लुभाई॥ मोहन मूरत जिय बसी पग धरो न
जाई॥२॥ तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट
॥ परमानन्द ऐसो मिलो जैसो गुड़ में चेंट॥३॥

राग सारंग

लाल नेंक देको मेरी बेंया॥ औघट घाट चल्यो नहि
जाई रपटत हों कालिन्दी माहियां॥१॥ यह पद सम्पू
र्ण करके ऐसे पद गाये ता पाछें परमानन्ददास नेवा
ल लीला के पद बहुत गाये और श्री गोकुल कौ स्व
रूप जामें आवे ऐसो पद गायो॥ (सो पद)

राग कान्हरो

गावत गोपी मधु व्रज बानी॥ जाके भुवन वसत त्रि
भुवनपति राजानन्द जसोधा रानी॥१॥ गावत वेद भा
खी गावत गावत ना रुद्रादि मुनि ज्ञानी॥ गावत गुन
गंधर्व कास शिव गोकुलनाथ महातम जानी॥२॥
गावत चतुरानन जद नायक गावत शेष सहस्र मुः

खरास ॥ मन क्रम वचन प्रीत यह अम्बुज अवगाहत परमानन्द दास ॥३॥ यह पद परमानन्द दास नें गा यो पाछें और पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

जसुमति ग्रह आवति गोपी जन ॥ वासर ताप निवार न कारन वारंवार कमल मुख निरखन ॥१॥ चाहत पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसन मन हीं मन ॥ लोंन उतारिढोउ कर वारि फेर करत तन मन घन ॥२॥ लेन उठाय आपत हीयो भरि प्रेम विवस लागे दृग ढरकन ॥ चली लै पलना पौढावन कें अरु कमाय पौढे सुन्दर घन ॥३॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवो लोग गज सुन ॥ परमानन्द दास को ठाकुर भक्त वछल भक्त मन रंजन ॥४॥

राग हमीर ॥

चिंते चिंते चित चासोरी गई ॥ यह पद सम्पूरण कर कें गायो सो ऐसे पद परमानन्द दास नें बहुत गाये ता पाछें श्री गोकुलनाथजी के दर्शन करें कें परम नन्द दास श्री गोकुल उपर बहुत आसक्ति भये तब ऐसे पद गाये जामें श्री आचार्यजी महाप्रभून को यमुनाकानो जो मोको श्री गोकुल में आय के चरणा चिंह के नीचे राख्यो नित प्रति प्रभून के दर्शन करोंम लीला विसिष्ट पूरन पुरुषोतम हैं और यह पद गा यो सो पद ॥

राग कान्हरो

यह माणिजसोदानंदन ॥ चरणा कमल मन मन मधु

। याछवि भेंनन पांउ दर्शन ॥१॥ चरणा कमल की से
वाढाउ तन राजत विजे लता घन नंदन ॥ वृषभानु
[illegible] ॥२॥ अगवा मधा
जमुना जल कविवो श्री वल्लभ कोदास यही पन ॥
महाप्रसाद पाउं हरि गुन गाउं परमानन्ददास जीवन
धन ॥३॥

रागकान्हरो

जवलगि जमुना गाय गोवर्द्धन तवलग गोकुल गांव
गुसांई ॥ यहपद सम्पूरण करके प्रार्थना के पद गो
ये तव कितनेक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री
गोकुल में विराजे ता पाछें सब वैष्णवन कों संग लेके
श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों पधारे ॥

वार्ता प्रसंग ३

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊ
पर पधारे सो आवते ही परमानन्द दास नें श्री नाथ
जी कों प्रथम मुख देखि कें वहां के वहां रहे तब श्री महा
प्रभूजी ने श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द दास कछु
भागवत लीला गावो तब परमानन्द दास अपने म
न में विचारे जो कहा गाऊं तब ऐसें विचारो जो जामें
प्रथम अवतार लीला पाछें चरणारविंद की वंदना
पाछें भगवद वर्णन कों स्वरूप ता पाछें बाल क्रीड़ा
ता पाछें श्री ठाकुर जी को महात्म ऐसो पद परमा
नन्द दास नें गायो सो पद ॥

रागकान्हरो

मोहन नन्द राय कुमार ॥ प्रगट ब्रह्म निकुंज नाय

कभक्तहित अवतार ॥१॥ प्रथमचरणासरोजवन्दो
श्याम घन गोपाल ॥ मकर कुंडल गंड मंडितचारु
नेनावसाल ॥२॥ बलिराम सहित विनोद लीलासें
करहेतादास परमानन्द प्रभू हरि निगमवोलत नेत
॥३॥ और आसक्ति को गायो

रागपूरवी ॥

मेरोमाईमाधो सोंमन लाग्यो ॥ मेरोनैंन और कमल
नैन को दूकठौरो करि सान्यो ॥१॥ लोकवेद की का
नि तजी मे न्योती अपने आन्यो ॥ एक गोविंद चरण
के कारण वैर सबनसोंठान्यो ॥२॥ अबकोभिल्हो
यमेरी सजनी दूध मिल्यो जैसें पान्यो ॥ परमानन्द
मिली गिरधर सोंहे पहली पहचान्यो ॥३॥
ऐसे पद परमानन्ददास नें गाया ता पाछें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू सेन आरती करि श्रीनाथजी कों पो
ढ़ाये तब अनोसर करि आपनीचें पधारे तब परमा
नन्द दास हू नीचे आय बैठे तब रामदास भीतरियानें
परमानन्द दास कों महाप्रसाद दूध पठायो सो दूध
परमानन्द दास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यो तब
परमानन्द दास जीनें सीरो करि कें लीयो ता पाछें
रामदास नें पूछो जो तुमकों महाप्रसाद दूध पठायो
हो सो आयो तब परमानन्द दासनें कही जो हो आयो
परि दूध बहुत तातो हतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुर
जी कैसें आरोगत होत ते दूध तो सुहातो भलो तब रा
मदास नें कह्यो जो बहुत आछो आप भगवदीय हो
जैसें आज्ञा करोगे तैसें करेंगे तब सकारें सब सेवक

स्नान करि कें श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवामें तत्पर भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें स्नान करि कें श्रीगिरराज उपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाए तब व्रजमय परमानन्ददासजी जाय कें श्रीठाकुरजी के जगायवे कों पद गायो सो पद ॥*

राग विभास

जागो गोपाललाल मुख देखों तेरो ॥ पाछें गृहका ज करों नित्य नेम मेरो ॥१॥ विगसत निसा अरुण तिसा उदित भयो भान ॥ गुंजत अंग पंकज वनजा तिये भगवान ॥२॥ ढारे ठाडे बंदीजन करतहें पुकार ॥ वेद प्रसंग गावत हरि लीला सार ॥३॥ परमानंद स्वामी व्यालजगत मंगलरूप ॥ वेद पुराण पढत महिमा लीला अनूप ॥४॥

यहपद परमानन्द दास नें गायो फिर कलेउ कों पद गायो ॥ सो पद

रासरामकली

पिछवारे ढूं ग्वालन टेर सुनायो ॥ कमलनैन प्यारो करत कलेउ कोदन मुखलों आयो ॥१॥ अरीमेरा गैया एक वन व्याय रही हे वछरा उहांही वसायो ॥* मुरली लई न लकुटिया न लीनी अरवराय कोउ सरवा न बुलायो ॥२॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आयकि धों अपनों पायो ॥ फूलनि अंग मात सब त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायो ॥३॥ मिल बैठे संकेत सघन वन विविधि भांति कीयो मन भायो ॥ परमानन्द स्यानी ग्वालनि उलटि अंग लि

धर पिय प्यायो ॥४॥
ऐसे पद परमानंद दास नें गायो ता पाछें श्री गोवर्द्ध
ननाथजी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानन्द
दास नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी सों पूछो जी आप ता
तो दूध क्यों आरोगत हो तब श्री नाथजी नें कह्यो
जो ये हम कों समर्पत हैं सो आरोगत हैं ता पाछें प
रमानन्द दास जी नित्य कीर्तन करि कें सुनावते
तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयो सो श्री गो
वर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब फेरि आय कें रानी
सों कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुन्दर
हैं ताते तू जाय कें दर्शन करि आउ तब रानी ने कही
जो जैसें हमारी रीति हैं सो होय तो दर्शन करें तब राजा
ने कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे
को परदा है तब रानी ने मानी नहीं तब राजा नें श्री
आचार्य जी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो महा
राज मेंतो रानी सों बहुत कहत हों परि वह आवत
नाहीं ताते आप कृपा करि कें दर्शन करवावो तो वह
करे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो य
हां से आवो जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन कर
वावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे तब राजा
अपनी रानी कों लिवाय कें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के
दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये तब रानी द
र्शन करिबे लागी तब इतने में श्री गोवर्द्धन नाथ जी
नें सिंह पौर के किवाड़ खोल दीए सो सब ओर दौरि
कें रानी के ऊपर परी सो रानी के सब वस्त्र निकसपरे

और बहुत लज्जित भई तब राजा नें रानी सों कही जो में
ने तो तोसों पहिलेंही कह्यो हुतो जो श्रीठाकुर जी केर
ध्यान में काहे को परतहै ये व्रज के ठाकुर हैं इनमें का
हू को परदा राख्यो नाहीं तब का समय परमानन्द
दास जीनें पद गायो ॥

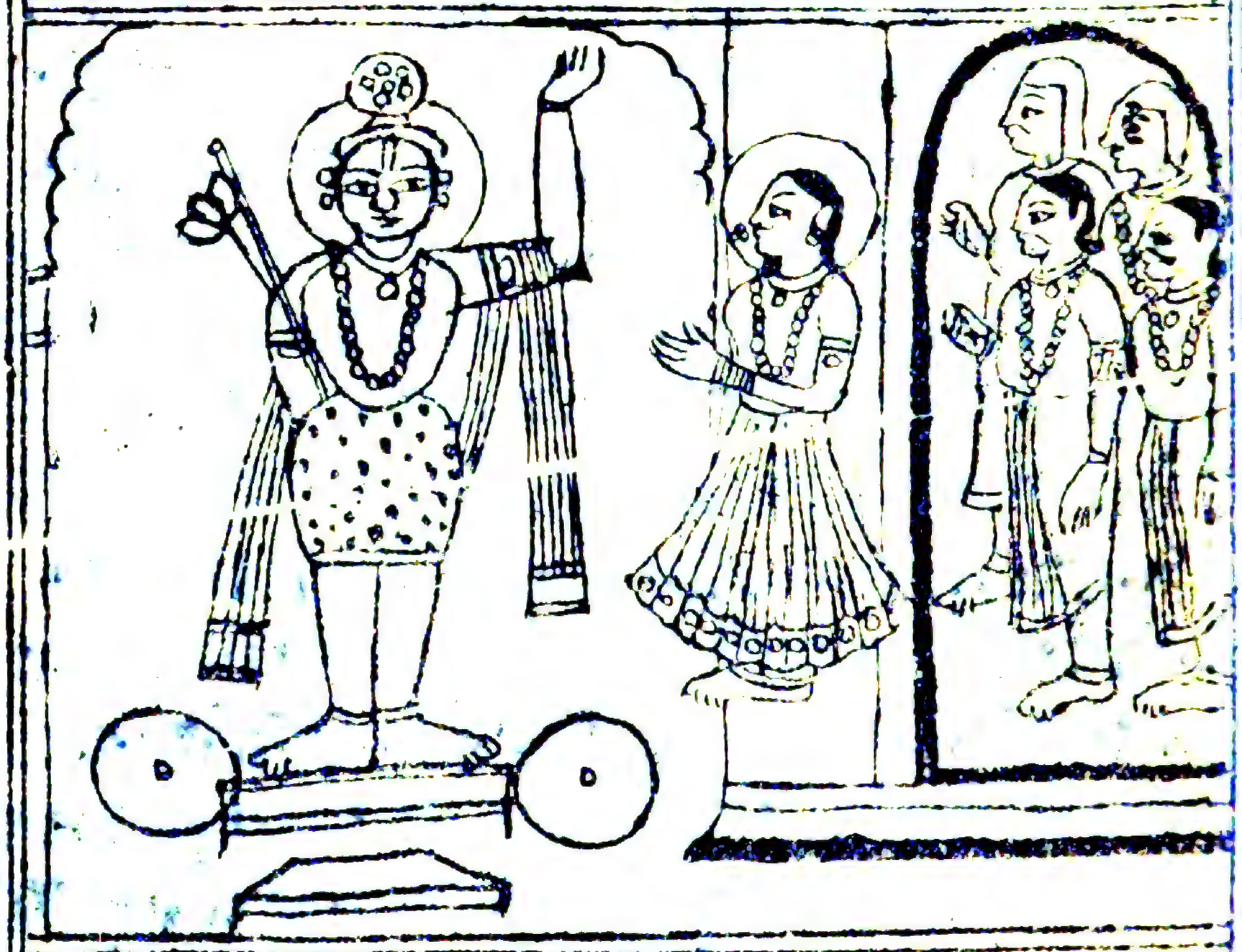

रागदेव गंधार

कौन यह खेलवे की बानि ॥ मदन गोपाल लाल का
हू की राखत नाहिन कानि ॥१॥ यह एक तुक परमा
नन्द दास जीनें गाई हुती तब श्री आचार्यजी महा
प्रभून नें कह्यो जो परमानन्द दास ऐसें कहो जो
भली यह खेलवे की बानि ॥ तब परमानन्द दास
नें ऐसो ही पद गायो ॥ (सो पद)

रागदेव गंधार

भलीयह खेलवे कीवानि॥ मदन गोपाल लाल का
हू कीनाहिन राखत कानि ॥१॥ अपने हाथ लेदेत
है चन वर दूधदही घृत सानि ॥ जो वरजों तो आंख
दिखावै पर धन कौ दिन दान ॥२॥ सुनरीजसोधा
सुत के करतव पहले भांट भयानि॥ फोर डारि दधि
डारि आजर में कौन सहै नित हानि॥३॥ ठाडी देख
त नंदजू की रानी मूंदि कमल मुख हानि॥ परमा
नंद दास जानत है बोलि बूझि धों आनि॥

यह पद परमानन्द दास नें गायो ता पाछें कितेक पद गाए जो जो लीला श्रीठाकुरजी नें करी सो ता ता लीला के पद परमानन्द दास ने गायो सो एकदिन भागवदीय रामदास जी और कृष्णदास जी कुंभन दास जी सब वैष्णव मिलकें परमानंन्द जी जहां रहतते तहां आये सो भागवदीय आए जानि कें परमानन्द दास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भागवदीय आये हैं सो मेरो बड़ो भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयो है सो काहे तें जो श्रीठाकुर जी भागवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं ताते भागवदीयन की कृपा होय तो श्रीठाकुरजी अनुग्रह करैं जो ये सब भागवदीय मेरें घर पधारे हैं सो प्रथम भागवदीय को योछावरि करौं जे वयह विचार कें परमानंन्द दास नें जैसो ही पद गायो सो सो पद॥

रागहमीर

श्राये मेरें नन्द नंदन के प्यारे ॥ मालातिलक मनो हर बानों त्रिभुवन के उजियारे ॥१॥ प्रेमसहत वसत मन मोहन नेकहुं टरत न टारे ॥ हृदय कमल के मध्य विराजत श्रीव्रजराज दुलारे ॥२॥ कहा जानों कौन पुण्य प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे ॥ परमानंद प्र भु की न्योछावर वार वार हों वारे ॥३॥

यह पद भागवदीय न की भेट करि श्रपने श्राए भागवदीयन कों विदा कीये ता पाछें ऐसी रीत सों परमानन्ददास नें श्रीनाथजी की भली भांति सों सेवा कीनी सो वे परमानन्द दास जी श्री श्राचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भागवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

वार्ता प्रसंग ॥५॥ वैष्णव ८२ ॥ संबंध ॥१६६॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक कुंभनदास गोरवा ति की वार्ता है ॥

सोवे कुंभनदास जी श्री गोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतौ गांव है तामें रहते सो जमुनावतौ नाम या गाम को काहेतें है जो जमुनाजी को प्रवाह सा स्वप्न कल्प में याके निकट हुतौ ताते जमुनावतौ नाम या गाम को है तामें कुंभनदास जी रहते श्रौर पारसोली चंद सरोवर के ऊपर उनकी नदास जी की धरती हुती सो वहां खेती करते सो कुम्भनदास

जी श्री गोवर्द्धन्नाथ जी के परमसखा हुते ओर कृपा
पात्र हुते सो अबही श्री गोवर्द्धन्नाथजी प्रगट होय
कें श्री महाप्रभूजी कों बुलावेंगे तब ये भगवदीय प
सिद्धि होयंगे सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू
एथ्वी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे सो झारख
ड में श्री गोवर्द्धन नाथजी नें आज्ञादीनी जो हम गोव
र्द्धन में तीन दमन हैं ॥ नागदमन, इन्द्र दमन, देव द
मन, तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो मेरो नाम हैं
ताते तुम आय कें हमकों पधरावो ओर हमारी
सेवा को प्रकार प्रगट करो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें एथ्वी परिक्रमा उहांही राखि के वेग
पधारे तब दामोदर दास हरसानी कृष्ण दास मेघन
गोविंद दुबे जगन्नाथ जोसी रामदास ये पांच वैष्ण
व संग हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री गोवर्द्धन
की तरहटी आय कें सद्दू पांडे के चौंतरा ऊपर विरा
जे सो आगें श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रागट्य में यह
सद्दू पांडे भवानी नगो श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक भये हुते तिनकी श्री आचार्यजी महाप्र
भून नें श्री गोवर्द्धन नाथजी की सेवा सोंपी ओर व्र
ज वासी व्रज में श्री आचार्यजी महाप्रभून के से
वक बहुत भए ओर कुम्भनदास जी श्री आचार्य
जी महाप्रभून की सरण आये सो श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धननाथजी को एक छोटो
सो मन्दिर सिद्धि करायो तामें श्री नाथजी कों
पधराये ओर रामदास चौहान कूं सेवा की आज्ञा

दीनी ॐ और सब व्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्री गोवर्द्धननाथजी ॐ आरोगत हुते ॐ और रामदास कों जो भगवद इच्छा ते जो ॐ आप प्राप्त होय सो भोग धरते ॐ और ॐ आप प्रसाद लेते ॐ और जे व्रजवासी लोग श्री ॐ आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिन कों श्री ॐ आचार्यजी महाप्रभून नें ॐ आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब वातन सों यत्न राखियों ॐ और सेवा में तत्पर रहियों ॐ और कुम्भनदास कों ॐ और सब सेवकन कों श्री ॐ आचार्यजी महाप्रभून नें ॐ आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये विना महाप्रसाद मति लीजियों तवया भांति सों ॐ आज्ञा करि कें श्री ॐ आचार्यजी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा भारखंड में राखी हुती ॐ सब कुंभनदासजी नित्य श्री ॐ आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते श्री गोवर्द्धननाथजी के दर्शन कों ॐ आवते सो कुंभन दास जी की र्तन बहुत नीके गावते जो श्री ॐ आचार्यजी महाप्रभून नें कुंभनदास जी कों नाम सुनायो ॐ और ब्रह्मसंबंध कर वायो तब कुम्भनदास जी नित्य नए पद करि कें श्री ·· नाथजी कों सुनावते ॐ और श्री नाथजी कुंभनदासजी के घर पधारते ॐ और बहुत क्रीड़ा करते खेलते वार्ता करते ॐ और बहुत कृपा कुंभनदासजी के ऊपर करते ॐ सब रामदासजी श्री गोवर्द्धननाथ जी की सेवा करन लागे सो एक समय म्लेक्ष कोउ पद्रव भयो सो यहां मानिकचंद पाड़े सद्दू पाडे राम दास चौहान कुंभन दास सब मिल कें विचार कीयो

जोयह मतेक्ष आयोहै सोयह धर्म कोहुयोहै सो
कहा कर्तव्य है तब सबनें कही जोयामें कहा क
र्तव्य कहा पूछनों अपनों विचारसो कहा होतहै ता
तश्रीनाथजी कों पूछो जोमहाराज कहा करें तबश्री
नाथजीनें आज्ञादीनीजोहमकों यहां ते ले चलोहम
यहांते उठेंगे तब सबननें पूछ्यो जो महाराज कहां प
धारोगे तब आपनें श्री मुख सों कह्यो जोटोंड के घ
नेमें चलेंगे तब एक भैंसा मंगायो ता पर श्रीगोवर्द्ध
नाथजी कों बैठाए तब एक ओर ते लो रामदास पक
ें रहे ओर एक ओर ते कुंभनदास जीपकरें रहे ओर

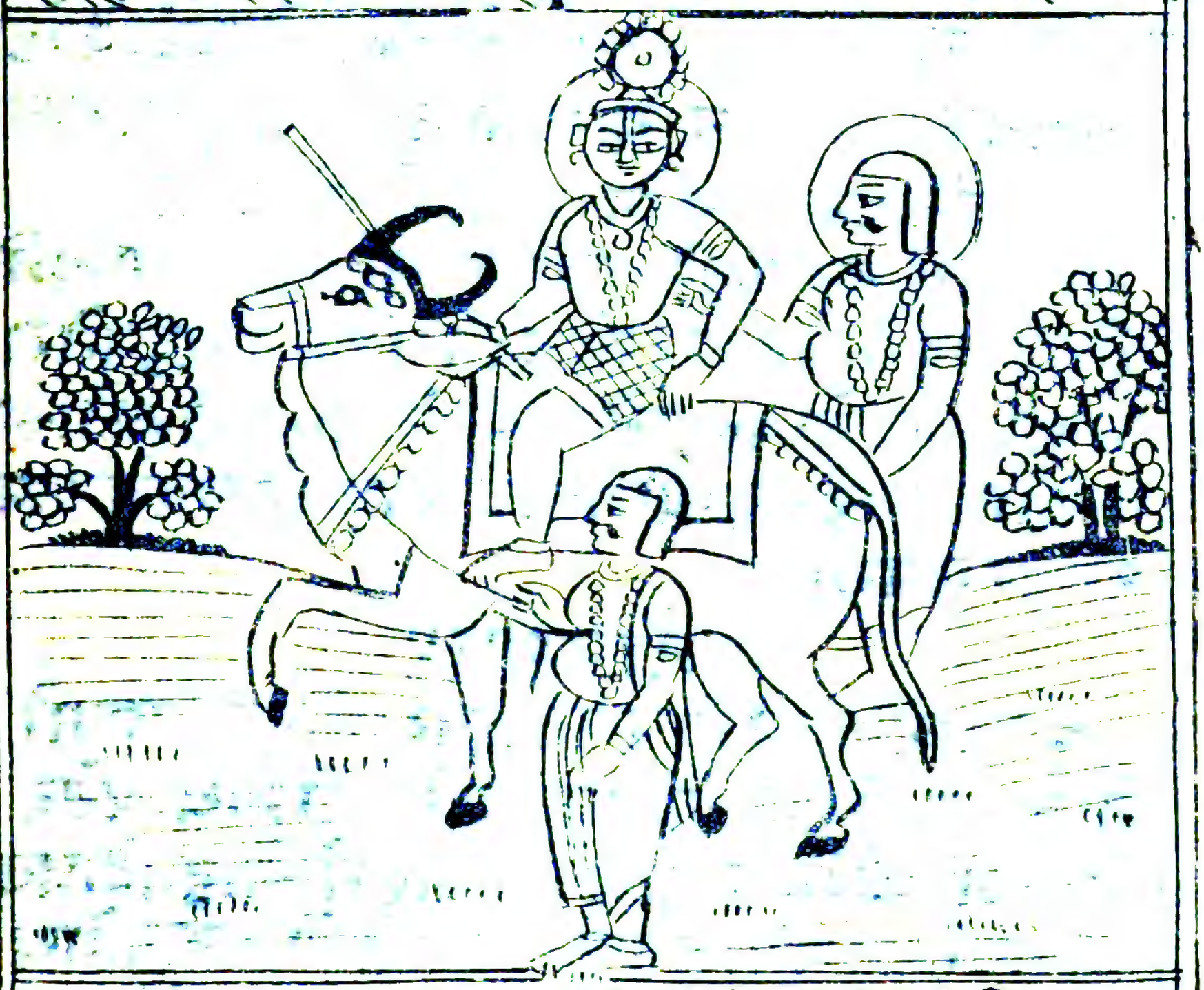

सब सेवक संग चले जातहैं तहां घने में कांटे बहुत
हुते सो उहां कांटेन में बैठे सो वल्लभ सबन के फाटिग

ये ओर सरीर में कांटे लगे दुख बहुत पायो सो घनेमें एक तालाव हुतो तहां रूखन कौ एक चौक है त हां बड़े रूखनीचे श्रीनाथजी विराजे सो कछूक सा मिली संगह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगें धरि कें सब वैष्नव बैठे तब श्री गोवर्द्धननाथजी नें कुंभनदास सों कह्यो जो कुंभन दासजी कछू गावो तब कुंभन दासजी तो मन में कुढ़ रहे हुते तब एक पद नयो करि कें गायो॥ सो प द

राग सारंग

भावत है तोय टोड को घनों॥ कांटे लगे गोखरू बूढ़े फलो जात यह तनों॥१॥ सिह्रों कहा लोकटी कौड़ र यह कहा वानक वन्यो॥ कुंभनदास प्रभु तुम गोव र्द्धन धर वह कौन गुंड ढेडनी को जन्यो

यह पद कुंभनदास नें गायो सो सुनि कें श्रीनाथजी मुसिकाय कें चुपकरि रहे हुते में श्री गोवर्द्धनते स माचार आये जो वह मलेछ की फ़ौज आई हुती सो पाछो फिर गई तब श्री गोवर्द्धन्नाथजी पर्वत ऊपर मन्दिर में पधारे॥

वार्ता प्रसंग १

अब श्रीनाथजी पर्वत ऊपर मन्दिर में पधारे सो व्रज के लोगन कों बहुत हर्ष भयो जो धन्य देव दमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रता पते सब मिट गयो तब कुंभनदासजी प्रसन्न होय कें पद गाए सो पद श्री गोवर्द्धन नाथजी कों सुना ये॥ +

रागश्री॥चर्चरी

जयतिजयतिहरिदास सर्व धरने॥यहपदसम्पूर
नकरिकें गायो पाछें और पद गाये सोपर

रंगतारंग।

कुम्भतनतरा तीर॥यहपद सम्पूरनकरकें कुंभ
नदास नें गायो पाछें नित्य ऐसे पद कुम्भनदासजी
देवदमन कौं सुनावते तव कुंभनदासजी के पद
सब जगत में प्रसिद्धि भये सो सब लोग इनके पद
गावते तव इनकों पद काहू कलामत ने सीख्यो
सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के आगें कुंभनदा
सजी कौ पद कीयो भयो पद वा कलामतने गायो सो
सुनकें देसाधिपत कौ चित वा पद में गड गायो और
माथो धुन्यो जो ऐसे हू महापुरुष हू गए हैं जिनकों
ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं तव वा कलामतने क
ह्यो जो अजी साहव अवहू हैं सो सुनि के देशाधिपति
वहुत प्रसन्न भयो और वा कलामत सों कह्यो जो वे
कहां है तव वा कलामत नें कही जो श्री गोवर्द्धन के
पास जमुनाव तो गांव है तहां वे रहत है तव देसाधिप
तिनें कही जो यहां वुलावो हम उनसों मिलेंगे तव दे
साधिपति ने मनुष्य और असवारी कुंभनदासजी के
वुलायवों कों भेजे तव कुंभनदासजी तो घरहुते प रैसो
लो में वैठे हुते सो मनुष्यननें उहां वताय दीये तव कुं
भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये
हो तव कुंभनदास दास ने कही जो भैया में कछू दे
शाधिपति कौ चाकर तो नाही मेरो देसाधिपति सों

कहा काम है तब देसाधिपति के मनुष्यन नें कही जो
बाबा हमतौ काम कछु समझत नाहीं परि हम कों
देसाधिपति कौ हुकम है जो कुंभनदास कौं लै आवो
नातें यह पालकी है यह घोड़ा है जा पर चाहो ता पर बै
ठि कें चलिये हम तौ आये हैं सो आप कों लै जायंगे
तब कुंभनदास नें मन में विचार कीयो जो बिना जाये
तौ निर्वाह न होय गो सो कुंभनदास जी तत काल उ
ठि तें पनहीं पहरि कें चले तब कुंभनदास जी कों जो ले
बे कौं आये हुते तिननें कही जो बाबा सवारी में बैठि
ये तब कुंभन दास नें कह्यो जो भैया मैं तौ कबहूं बैठ्यो
नाहीं पाछें ऐसें ही चले सो फतेपुर सीकरी आय पहुं
चे सो देसाधिपति के डेरा हुते तहां गए तब मनुष्य न
नें देसाधिपति सों कह्यो जो कुंभनदास जी आये हैं तं
ब देसाधिपति नें कुंभनदास सों कही जो कुंभनदास जी
आवो बैठो सो आय बैठे सो वह स्थल कैसो है जामें
जड़ाव की गवदी तामें मोतीन की झालरि लगी है
ऐसो स्थल हो तामें बैठे तब मन में बहुत दुख लाग्यो
और कह्यो जो यासों तौ हमारे ब्रज के होंसन के रूख
आछे हैं सो जिनमें श्री गोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं
तब इतने में देसाधिपति बोल्यो जो कुंभनदास जी तु
मने बिसनपद बहुत कीये हैं सो मेनें तुम कों बुलायो है
तातें तुम कछु बिसन पद गावो तब कुंभनदास जी
तो मन में कुढ़े हुते जो विचारें जो कहा गाउं मेरी वाणी
के भक्त तौ श्री गोवर्द्धनधर हैं और कछु गाए बिना
बैसो काम चलैगो नाहीं तातें ऐसो गाउं जो कबहूं

मेरो नाम न लेय काहे ते जो याके संगते मेरे प्रभू छूटे हैं
तातें कछू कठोर वचन कहूं जो वुरो मानेगो तो कहा करै
गो तव यह मन में आई जो जाको मन मोहन संग करे ग
को के सब से नहीं मिरत जो जग वैर परै यह विचारिकें
तासमय कुंभन दासजीनें एक नयो शब्द करि के गायो।
सो पद ॥*

राग सारंग

भक्तन को कहा सीकरी काम ॥ आवत जात पन्हैया
टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥१॥ जाको मुख देखे दुख
लागे ताको करन परी परनाम ॥ कुंभन दास लाल
गिरधर बिन यह सब झूंठो धाम ॥२॥*
यह पद गायो सो सुनि के देसाधिपति अपने मनमें च
हुत कुढ्यो और कह्यो जो इनको काहू बात को लाल
च होयतो ये मेरो जस गामें इनको तो अपने परमेश्व
र सों सांचो स्नेह है इनतो कहि के देसाधिपति नें कुंभ
न दास को सीख दीनी तव कुंभन दास जी उहां ते चल
से मारग में आवत अति क्लेश जो कवहों प्रभून को मु
ख देखो सो ऐसो विचार के कुंभन दास जी आवते
ता समय पद गायो सो पद ॥*

राग धनाश्री

कवहूं देखहौं इन नैननु ॥ सुन्दर श्याम मनोहर मूरत
अंग अंग सुख दैननु ॥१॥ वृन्दावन विहार दिनहि
प्रति गोप वृन्द संग लैननु ॥ हंसि हंसि कहा वचन
वन पावन घाटि वाटि पय फैननु ॥२॥ कुंभन दास कि
ते दिन वातें कियें संग सुख सैननु ॥ अब गिरधर वि

निसि और वासर मन न खत कैसें चैननु ॥ ३॥
यह पद मार्ग में गावत आए सो आय कें श्रीगोव
र्द्धन नाथ जी के दर्शन कीये और दोय दिन सों दर्शन
न भए सो कुंभनदास जी कों दोय जुग की बराबर बीते
सो श्री गुरु देखन ही सब दुख बिसर गयो तब एक प
द गायो सो पद ॥

रागधनाश्री

नैन भरि देखों नन्द कुमार ॥ ता दिन ते सब भूलि गयो
हों बिसरयो पन परवार ॥१॥ बिन देखें हों बिकल भ
यो हों अंग अंग सब हारि ॥ ताते सुधि है सामरी मू
ति की लोचन भरि भरि बार ॥ २॥ रस रास पर मिलन
ही मानों कैसें मिलैलों कन्हाई ॥ कुंभनदास प्रभु
गोवर्द्धन धर मिलिये बहुर ही माई ॥ ३॥

रागधनाश्री

हित लगन कठिन है यामन की ॥ जाके लिये देखि मेरी
सजनी लाज गई सब तन की ॥१॥ धर्म जाउ अरु लोग
हंसो सब अरु गावो कुल गारी ॥ सो क्यों रहे ताहि बि
न देखें जो जाको हित कारी ॥ २॥ रस लुब्धक निमख न
छांडत ज्यो आधीन सुगा मानों ॥ कुंभनदास सनेह कर
म श्री गोवर्द्धन धर जानों ॥

ऐसे पद बहुत कुंभन दास जी ने गाये सो सुनके श्री
नाथ जी बहुत प्रसन्न भए और कहो वर सो बिन
हत नाही ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २॥

एक समय राजा मान सिंह सब ठौर ते दिग्विजय

करि कें अपने देस कूं चले तब मन में विचारे जो बहुत
दिन में आये हैं ताते मथुरा विन्द्रावन होय कें चलनों
सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आए तब
विश्रांत घाट करि कें श्री केसांरायजी के दर्शन करि
कें वृन्दावन चले सो उष्मकाल के दिन हुते तब वृन्दा
वन के सब महंतन ने जानीजो आज यहां राजा मान
सिंह दर्शन कों आवेगो सो यह जानि कें श्री ठाकुरजी
कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरन पहराये
पिछवाई चंदोवा सबजगीन के बांधे इतने में राजा मान
सिंह दर्शन कों आयो सो भीतर मन्दिर के आय कें
श्री ठाकुर जी के दर्शन कीये सो उष्णा काल के दिन हु
ते सो बहुत गरमी पड़े सो ता समय राजा मानसिंह पेठा
डो न रह्यो गयो सो ऐसे दर्शनचार पांच जगह बड़े हु
ते सो तहां सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते विदा होय
कें अपने डेरा में आये सो डेरा आय कें मन में विचारे
जो अबही कूंच करें सो उहा सों असवार होय कें च
ले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाव आये सो मानसींग
गा ऊपर डेरा कीये सो तहां श्री हरदेव जी के दर्शन कीये
सो वहां वृन्दावन के महंतननें बड़े ठाठ बनाये हे तेसोई
यहां ठाठ बनाय राख्यो हतो सो राजा मानसिंह तहां ते
दर्शन करि कें चले तब काहूनें कही जो महाराज यहां
श्री गोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहां आप
दर्शन कों चलो तब राजा मानसिंह ने कह्यो जो यहांतो
अवश्य चलनों ए ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इ
नके दर्शन तो अवश्य करने तब तहां ते चले सो गोप

लपुर गांम आए तब आय कें पूछी जो दर्शान को कहें
समय है तब काहू नें कही जो उत्थापन के दर्शान तो
होय चुके हैं अब भोग के दर्शान होयगे तब यह सुनिकें
राजा मान सिंह श्री गोवर्द्धन्नाथ जी के दर्शान कों गि
र राज ऊपर आये सो उष्मकाल के दिन मार्ग के श्रमि
त हू के चले आये सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल
भयो हुतो इतने में भोग के किवाड़ खुले सो राजा मान
सिंह कों मणि कोठा में लेगये तिन दिनन में श्री नाथजी
की सेवा वैभव सों होती हती बड़ो मान्दर सिद्ध भयो
हुतो श्री गोवर्द्धन्नाथजी के आगे गुलाब जल कौ
सिंगार भयो हुतो निज मन्दिर मणि कोठा निवारी स
ब जल मय होय रहे हुते सो ता समय राजा मानसिंह

दर्शन कों गये हुते सो श्री गोवर्द्धनाथजी के दर्शन करि
कें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल
भयो हुतो सो सीतलताई भई बड़ो चैन भयो और श्री
गोवर्द्धनाथजी को श्री मुख देखि कें राजा बहुत प्रस
न्न भयो और कहीं जो साक्षात पूरणब्रह्म श्री कृष्ण
वृन्दावनचन्द्र श्री गोवर्द्धनाथजी हैं आगें श्रीभागवत
में सुन्यौ हुतो सो आज देख्यो आज हैं दिन सो धन्य है सो
आज मेरो बड़ो भाग्य है और मन में कहेो जो यह भाग
को समय है सो तो प्रभू को राजधानी है समय है सो वे
प्रभू विराजे हैं आगें ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत
है सो कुंभनदास जी ठाड़े ठाड़े भोगा कोठा में दर्शन क
रत हैं और कीर्तन गावत हैं सो राजा मानसिंह को मन
आपद में गाढ़ गयो हुतो तेसोई कोटि कंदर्पलाव
ण्य स्वरूप और तेसोई कीर्तन कुंभनदास जो करत
हुते सो पद ॥

राग नट ॥

रूप देखि नेना पल लागे नहीं ॥ गोवर्द्धन के अंग२
प्रति निरखि नैन मन रहत नहीं ॥१॥ कहा कहों क
छु कहत न आवे चित चायो भाग बेदही ॥ कुंभनदा
स प्रभु के मिलन को सुन्दर यात सोई वखान सो कही ॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन तुह सो हे ॥ हो यह अपने ह...
तु सों बैठी निरखि वदन अस्या विसरो हो ॥१॥ रू
पनिधान रसिक नंद नंदन निरखि वदन धीरज नथ
सो हो ॥ कुंभन दास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम

पियूषभरो हो॥॥२॥

ऐसे पद कुंभनदासजी गावत है इतने में राजभो
ग के दर्शन हो यचुके तब राजा मानसिंह दंडौत करि
के अपनें डेरा में गयो तब कुंभनदासजी संध्या आरती
के दर्शन करिकें अपनी सेवा सों पहुंचि कें अपने घर
कों गये तब राजामानसिंह अपने डेरा में जाय कें आप
ने पास के मनुष्य हुते तिनसों श्री गोवर्द्धन्नाथजी के
सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यो जो यह श्री

गोवर्द्धन्नाथ जी के आगें कौन गावतहुतो इननें ऐसे
विसन पद गाये हैं जो कछु कहिवे में नाहीं आवत
तब काहू नें कही जो महाराज एक व्रजवासी है कुंभ
नदास नाम है सो आप देखेही होयगो ऐसा ही परिसो

मिलेहुते सोहें तब राजा मानसिंह नें कही जो हम हूंड
नसों मिलेंतो आछो तब राजामानसिंह सवारे उठे
सो श्रीगिरराज की परिक्रमा कों निकसे जो परासो
ली आरा सो परासोली में कुंभनदास जी न्हाय के बैठे
हुतने में श्री गोवर्द्धननाथजी पधारे सो श्रीमुख सों
कहे हैं जो कुंभनदास जी होतों सो एक बात कहूंगो
तब हुतने में राजा मानसिंह आयो सो कुंभनदास जी
को प्रनाम करिकें बैठो और श्रीनाथ जी तो उहां तें
राजाय ठाढे भए सो श्रीनाथ जी तो एक कुंभनदास
जी कों देखें हैं और दूसरो की भतीजी कों देखे हैं तब कुं
भनदास जी की दृष्टी तो श्रीनाथ जी के संग ही गई सो
श्रीनाथजी बैठे हैं तहां कुंभनदास जी हू बैठो करत
अभतीजी बोल्यो जो बाबा राजा बैठे हैं तब कुंभनदास
जीनें कही जो मैं कहा करूं जो बैठे हैं तो जावात कहा
इन सों तो भाजि गये सो अब कहेंगे तब दूरते श्रीना
थजी कहें जो कुंभनदास मेंवात कहूंगो तब कुंभनदा
सजी प्रसन्न भये और भतीजी सों कह्यो जो अमुकी
आरसी ल्याउ तिलक करों तब भतीजी नें कही जो
बाबा आरसी तो पडिया पीगई तब राजानें कुंभन
दास की भतीजी सों कह्यो जो अरी छोरी पडिया क
ह्यां पीगई तब वह कटोरी में पानी ल्याय के कुंभन
दास जी के आगें धर्यो तब कुंभनदास जी वा में दे
खि कें तिलक करन लागे हुतने में राजा मानसिंह
नें अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी के आगें
धरी और कह्यो जो बाबा यामें देखि कें तिलक करि

येतव कुंभनदास जी बोले जो अरे भैया याकों हों क
हा करूंगो हमारे तो यहां छानि के घर हैं नाते कोउ
याके पीछें हमारो जाव लेयगो नाते हमें तो यह नाहीं
चहियत हैं तब राजा मानसिंह नें इनके आगे सोने
की थैली धरी तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया हम
कों तो यह नाहीं चहियत हमारे तो यह खेती है ता
को धन आवत हैं सो खान है तब राजा मानसिंह नें
कह्यो जो भलो आप को गांव है ताकों लिखवा हों क
रि दें तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया होतो वाल्म
गा नाहीं जो तेरो उदक लेउं तब फेरि राजा मानसिंह
नें कह्यो जो बाबा कछु तो आज्ञा करो तब कुंभन
दास नें कह्यो जो हमारो कह्यो करोगे तब राजा मान
सिंह नें हाथ जोर कह्यो जो आप कहोगे सो करूंगो
तब कुंभनदास नें कह्यो जो फेरि मेरे पास तुम मति
आइयो तब राजा मानसिंह नें कह्यो जो धन्य है मा
या के भक्त तो मार्ग पृथ्वी में फिरयो सो बहुत देखे
परि भागवद भक्त तो राक गही देखे यह कहि कें राजा
मानसिंह कुंभन दास को दंडौत करिके उठि चल्यो
तब फेरि आय कें कुंभनदास सों श्री नाथ जी नें व
ह गान कही और बहुत प्रसन्न भये तब फेरि कुं
भनदास जी श्री गिरराज ऊपर आय कें श्रीनाथजी
की सेवा में तत्पर भये॥

वार्ता प्रसंग ३

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों
इन्द्रावन के महंत हरिवंस भ्रात आये सो यह जानि

कें आये सो महापुरुष हैं इनसों श्रीठाकुर जी बोलतहैं बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन वहु त सुन्दर कीये ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षा त् कार विनान होंय यह जानि कें कुंभनदास सों मि लवे आये सो कुंभनदास जी सों मिलि कें वहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो कुंभनदास जी तुमनें विसन पद वहुत कीये हैं सो हमनें आय कें सुने हैं और आप के पद श्रीस्वामिनी जी को नाहीं सुन्यो ताते आप कोई स्वामिनी जी को पद सुनावो तव कुंभनदास जी ने श्री स्वामिनी जी को पद करि कें गायो सो पद ॥

राग रामकली

तात्तचरचरी ॥

कुमरि राधिका के लुव सकल सौभाग्य की वा वदन पर कोटि सत चंद्र वारों ॥ खंजन कुरंग सत कोटि जं घन ऊपर सिंह सत कोटि उपन्यों छा वर उतारो मत्त स त कोटि चालि पर कुंभ सत कोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥१॥ कीर दशा कोटि दशानन पारिकहिन वारो पंक कें दूर वहूक सत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारों ॥ नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत को टि करि जुगल परवार नें नाहिन कोउ लोक उपमा जु धारो ॥२॥ दास कुंभन स्वामिनी सुन खासिख अति अद्भुत सुठान कहां लगि समारों ॥ लालगिरधर क हत मोहि तोहि लो जीवह रूप छिन छिन निहारो ॥ ॥३॥ ॥ ॥ यह प द कुंभनदास ने गायो सो सुनि कें महंत वहुत ही रीझे

औरकहेंजोहमनें श्रीस्वामिनीजीकेपद वहुतकीये
हैं परि वहांउपमादीनीहै औरवार फेरिडारीतातेकुं
भनदासजी आपवड़ेमहापुरुषहो आपकीसराहवा
कहांतांई करियेवा महंत नेकुंभनदासकी वड़ीवड़ा
ईकरी वहुतरीझे तापाछे वेमहंत आदि सवकुंभन
दासजीसों विदाहोयकें अपनेघर गये॥

वार्ताप्रसंग॥४॥

औरएकसमयश्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें अप
नेघरते श्रीनवनीतप्रियाजीसों आज्ञामांगिकेंवि
देसार्थ द्वारिकाकों पधारे सो श्रीगुसांईजी श्रीना-
थजीद्वार पधारे सो श्रीनाथजी कों सेवा सिंगारकी
ये तापाछे आपभोजनकरिकें गादीउपर विराजेतव
सव सेवकदर्शन कों आये तव वातचलतमें कुंभन
दासजीकी वातचली तव काहू वैष्णवनें कह्यो जो
महाराज कुंभनदासजी कों द्रव्य को वहुत संकोचहै
सात वेटा हूहैं और उपजतो एकखेती कीहै ताकें
धन आवतहै तासों निर्वाहकरतहैं सो यहवात श्री
गुसांईजीने अपनेमन में राखी तापाछें उत्थापन के
समय कुंभनदासजीदर्शन कों आयें तव श्रीगुसांई
अपने श्रीमुखसों कहैं जो कुंभनदासहमश्रीद्वा
रिकाराणछोड़जीके दर्शनकों पधारेंगे और विदेस
हूहोयगोवैष्णवनेवहुतकरिकें लिखेयाहैतातेजो
तुम संगचलोतो विदेसमेंभगवदीय कों गृहकाल
वाधानहोय तवभगवदीय को काल व्यतीतहोजाय
कछूजान्योन परै और में सुन्योहोजो कछु तुम्हारेंद्र

व्य कोसंकोचहैं सोउहां सिद्धि होयगी ताते सर्वथा
तुमकों चल्योचाहियेतब कुंभनदासने कही जो श्री
ठाडइतने में दर्शन को समय भयो सो श्रीगुसाईं जी ५
श्रापस्नान करिकें श्रीनाथजीके मन्दिर में पधारे
श्रीनाथजी की सेवा सों पहुंच कें श्रीनाथजी कों पो
ढ़ायके बैठक में पधारे श्रौर कुंभनदासजी कों सीख
दीनी जो कुंभनदासजीतुम सेवा ते पहुंच कें वेगा श्राइ
यो हम कालि श्रारती करिकें श्रपछरा कुंड उपर जा
यरहेंगे तब कुंभनदासजी श्री गुसांईजी को दंडौत
करकें श्रपने घर कों श्राये सवारे सेवा सों पहुंचि कें
श्रीनाथजी के दर्शन करिकें श्रपछरा कुंड उपर श्रा
ये श्रौर श्री गुसांईजी श्री नाथ सों सीख मांगि कें श्रा
पनीचे श्राये पाछें श्राप भोजन कीये श्रौर सब सेव
कन कों महा प्रशाद लिवायो ता पाछें ताही समय कें
महूर्त हुतो सो श्री गुसांईं श्राप पर्वत नीचे श्राये सो
श्रपछरा कुंड उपर श्राये सो तहां श्रपछरा उपर डेरा
को हुते सब सेवक श्रगाउ सो ठाडे हुते सो श्रीगुसांई
जी डेरा पधारि कें पोढ़े हुते में सब सेवक सामान ले
कें वेउ श्राये सो कुंभनदास उहां बैठि कें विचार तहुते क
हिये जो कहिवे की होय प्रानाथ विछुरन की विरियां
जानत नाहिन कोउ यह विचार करत उत्थापन कों स
भयो तब श्रीगुसांईजी श्राप भीतर डेरा में जागे श्रौ
र कुंभनदासजी कूं दर्शन की सुधि श्राई सो वहां पू
छ्यो की श्रौर कोने में जाय कें बैठि कीर्तन गावत हे ५
श्रौर श्रांखिन में तें जल को प्रवाह वहत हो सो कुंभ

नदासनें एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग

केतेहूं जुगन विनदेखें ॥ तरुणा किसोर रसिक नंदनंदन
कछुक उठति मुखरेखें ॥१॥ वह शोभा वह कांति वद
नकी कोटिक चंद विसेखें ॥ वह चितवन वह हास्य म
नोहर वह नटवर वपु भेखें ॥२॥ श्याम सुन्दर संग मिलि
खेलन की आवत जिये अपेखें ॥ कुंभनदास लालगि
र धर बिन जीवन जन्म अलेखें ॥३॥

यह पद कुंभनदास नें गायो सो श्री गुसांईजी आ
पडेग के भीतर सुनों सो कुंभनदासजी कों कल्यो श्री
गुसांईजी सों सह्यो न गयो सो श्री गुसांईजी आपडे
रा के बाहर पधारे और श्री मुखतें कह्यो जो कुंभन
दास अब तुम वेगि जाऊ तुम्हारो विदेस होय चुक्यो
और जो तुम्हारी अवस्था है प्रेमी उनकी अवस्था है
सो कैसें जानियें जो श्री आक्काजीने गज्जन धावन कों
पान लेवें कों पठायो सो गज्जन कों तो भगवद आस
क्ति देखे विना एक क्षण हूं न रह्यो जाय सो गज्जन धाव
न पान लेवे कों बाहिर गये सो घोरी सीढ़ी गये और च
ढि आयो सो मूरछा खाय कें गिरे और श्री आक्का
जीनें श्री नवनीत प्रियाजी कों भोग समर्प्यो तब श्री न
वनीतप्रियाजीनें गज्जन धावन को बोलन सुन्यो त
ब श्री नवनीत प्रियाजीनें अपने श्री मुख सों कह्यो
जो मेरो गज्जन धावन कहां है तब श्री आक्काजीनें क
ह्यो जो वह तो पान लेवे कों गयो है तब श्री नवनीत
प्रियाजी ने कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तब

श्रीगोकुलेशो सो श्रीहरिवंशकें वेठि रहे तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायो तब गज्जन धावन नें कही जो वा वा श्रीगोकुलेश तब श्रीनवनीतप्रियाजी श्रीगोकुलेश हैं यह श्री आचार्यजी महाप्रभून की मर्यादा हे जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय श्रीर भगवद गीता में भगवान कहे हैं ॥ श्लोक

ये यथा मां प्रपद्यंते ॥
तांस्तथैव भजाम्यहं

यह आधो श्लोक कह्यो ताते श्री मुख सों कहे जो इहां तुम्हारी विवस्था श्रीर उनकी विवस्था हे सो ऐसो ॥ कुंभनदास कों श्रीर श्री नाथजी कों विरह हुतो ताते श्री गुसांई जी ने कुंभनदास कों सांभ दीनो तब कुंभन दास नें श्रीनाथजी के दर्शन कीये तब कुंभनदास नें एक पद गायो सो पद ॥

रागसारंग

जो ये चाँप मिलन की होय ॥ तो क्यों रहे नाहि विन देखे लाख करो जिन कोय ॥१॥ जो ये विरह परस्पर व्यापे जो कछु जीवन वनें ॥ लोक लाज कुल की मर्यादा एक को चित न गनें ॥२॥ कुंभनदास प्रभू जाहि तन लागी श्रीर न कछु सुहाय ॥ गिरधर लाल तोहि विन देखें छिन कल्प विहाय ॥३॥

सो यह पद कुंभनदास नें श्रीनाथजी के सन्मुख गायो सो सुनिकें श्रीनाथजी वदन प्रसन्न भयो सो कुंभनदास श्रीनाथजी कों देख के प्रसन्न भये ॥

वार्तासंग ५

और एक समय कुंभनदासजी श्रीगुसाईजी के पा स बैठे हुते तब कुंभन दासनें श्रीगुसांईजी सों कह्यो जो महाराज बेटा डेढ़ है और हेंतो सात तब श्रीगुसाईजी नें कह्यो जो कुंभनदास डेढ़ कौ कारन कहा तब फेरि कुंभनदासजी कहे जो महाराज आखो बेटा तो चत्रभुजदास है और आधो बेटा कुम्भदास है सो श्रीनाथजी की गायन की सेवा करत है तासों आधो है कुंभन दासजी कुम्भदास सों आधो क्यों कहे ताको हेत यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें पुष्टी मार्ग प्रगट कीयो है सो पुष्टी मार्ग कहा है जो व्रज भक्तन कौ हेत यह मा र्ग प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाए हें जो सेवा रीति प्रीत व्रजजन की जन हित जग प्रगटाई सो व्रजभक्त न की कहा रीति है जो श्रीठाकुरजी के सन्निधान तो सेवा करें और श्रीठाकुरजी वन में पधारे तब गुण गान करें जो ए वस्तु होय तो आखो और इनमें ते ए क होय तो आधो तातें चत्रभुजदास सेवा और गुण गान है तातें आखो और कुम्भदास में एक सेवा है सो आधो तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखते कहें जो भगव द्दीय हें तेई बेटा हें और बहुत भये तो कौन काम के यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हें ॥

अथ कुम्भदास की वार्ता

सो वे कुम्भदास श्रीनाथजी की गायन के ग्वाल हुते श्रीगुसांईजी नें इनको गायन की सेवा दीनी हुती सो कुम्भदास श्रीनाथजी की गायन की सेवा करते सवा

रें खिरक सेवा सों पहुंच कें फेरि गायचरायवे कों जा
ते सो सारे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करतेसो
एक दिन गायचरायकें पूछरी की ओर कृष्णदास गा
यन के संग आवत हुते सो सगरी गाय तो खिरक में
आई और गाय बड़ी हुती ताकों औन बहुत भारी हु
तो सो वह गाय बहुत हरवे चलती सो वा गाय कों
आवत आंधयारो परिगयो सो तहां पर्वत के नीचें
अंधियारे में राक नाहर निकस्यो सो गाय पे दोसो
तब कृष्णदास कहें जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ
जी की गाय हैं तू भूखो होय तो मेरे ऊपर आउ तब
इतने में गाय तो भाजि खिरक में गई और नाहर ने
कृष्णदास कों अपराध कीयो और ऊपर कहि आ

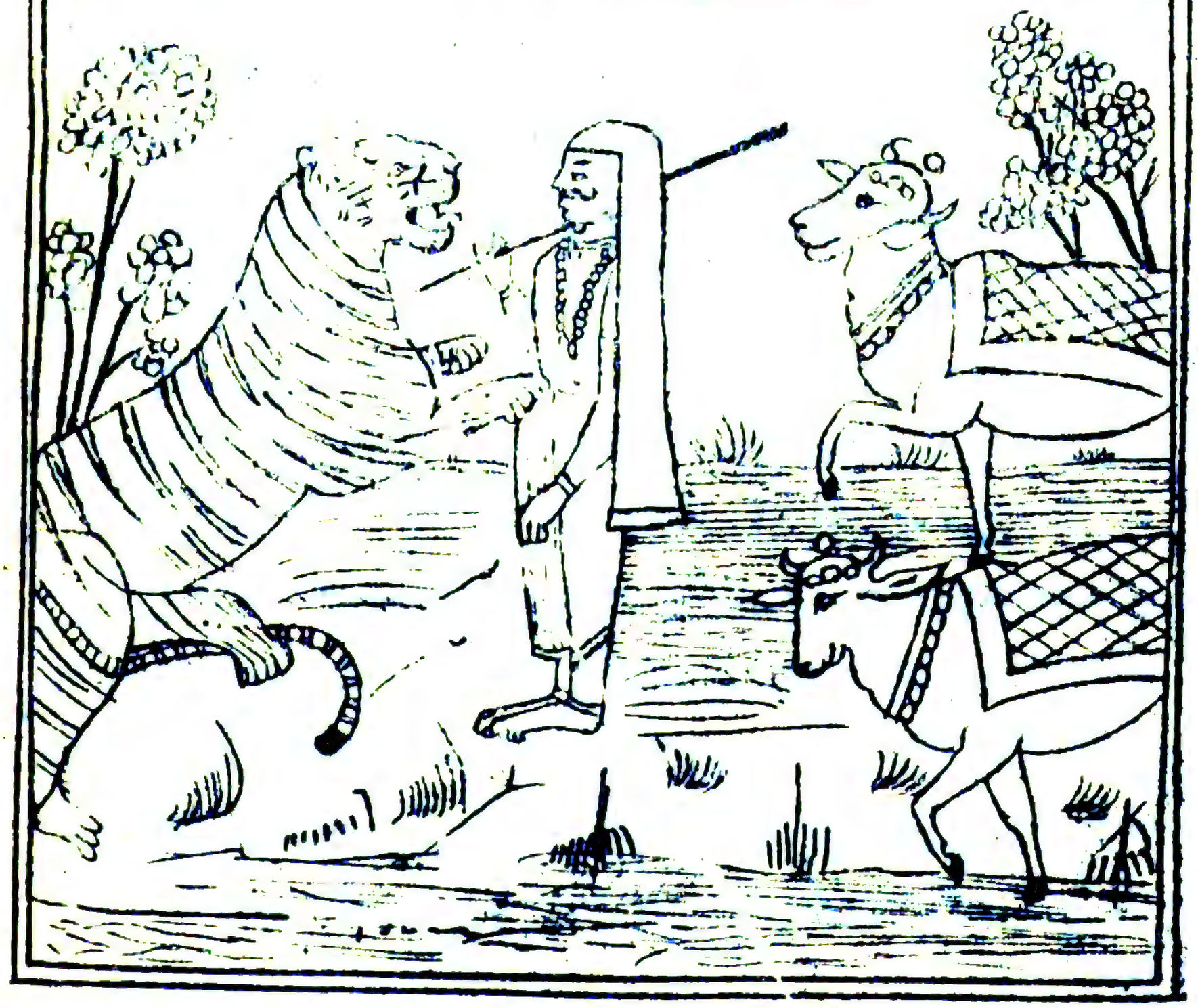

एहैं जो गाय सब खिरक में आई तब श्रीनाथजी आ
प गाय दुहिवेकों आये सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं
और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय को
श्री दुहिवे को बैठें और कुम्भनदास बछरा यामें हैं
और वह गाय बछरा कों चाटत हैं सो ऐसे दर्शनकु
भनदासजी कों भये ता पाछें गोदुहन करिकें श्रीना
थजी गिरराज ऊपर मन्दिरमें पधारे तब श्रीगुसाई
जीनें भोग समर्प्यो और कुंभनदासजी खिरक में से
आये सो दंडौती सिला पास ठाड़े भये दूतनेमें समाचा
र आये जो कुम्भदास कों नाहर नमारो सो सुनिकें कुं
भन दासजी मूर्छा खाय कें गिरे सो ऐसे गिरे जो देहा
नु संधान भूलि गये तब कुंभनदासजी को सबकोउ
बुलावें परि बोलें नाहीं तब ये समाचार काहूनें श्रीगु
सांई सों कहे जो महाराज कुम्भदास कों नाहरनें मा
रयो और गाय को कुम्भदासनें बचाई सो कुम्भदास
उहांहीं परे हैं तब श्रीगुसांईजी कहे जो गाय कबहूं
न छोड़ि आवै अरु जैसे गाय संकल्प करत हैं ताको
गाय उत्तम लोक कों लेजात है और कुम्भदासनेतो
श्रीनाथजीकी गाय बचाई है ताते कुम्भदास कों गाय
वैकुंठ में छोड़ आवेगी और श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो
कुंभनदासजी कहांहै तब काहू वैष्णवननें कही
जो महाराज कुंभनदासजी कों कलेस बहुत बाधा
कीयो है जो कुंभनदासजी ऊपर आवत हुते सो कुंभ
नदासजी के आगें काहूनें कुम्भदास के समाचार
कहे सो सुनतही कुंभनदासजी मूर्छा खाय कें गिरे

सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं तब श्री
गुसांईजी ने अपने श्री मुख सों कह्यो जो फेरि कुंभन
दास जी को खबर लावो जो कुंभनदास जी की देह कैसें
है सो वे आय कें कुंभनदास जी को पुकारे तब ए सब
चार श्री गुसांईजी सों कहे जो महाराज कुंभन दास जी
तो कछू समझत नाहीं तब श्री गुसांईजी तो सेन भोग
के दर्शन करिकें श्रीनाथजी कों पौढ़ाय कें आपनीवे
पधारे सो देख कें मार्ग के सामें कुंभनदास जी परे हैं
और लोग चारों ओर ठाड़े हैं सो कहत हैं जो कुंभन
दास जी कैसें भगवदीय हैं परि पुत्र को सोक बहुत बु
रो हात है या पीरा सों कोई बच्यो नाहीं काहे तें जो अप
नी आत्मा है तब यह बात लोगन की सुनि कें श्री गुसांई
जी मन में विचारे जो इन्हों तो कारण कछू और है और
लोगन कों तो कछू और भासत हैं तातें भगवदीय को
स्वरूप करिवे के लियें श्री गुसांईजी अपने श्री मु
ख सों कहें जो कुंभनदास जी सवारें तुम वेगें आइयो
तुम कों श्री गोवर्द्धन्ना थ जी कें दर्शन करामेंगे तुम मन
में खेद मति करो इतनों श्री गुसांईजी श्री मुख सों कहें
तब कुंभनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भए तब
श्री गुसांईजी कों दंडौत करि कें कुंभनदास कों जो कि
यो करनों हो सो सब कियो पाछें सवारें कुंभनदास जी
दर्शन कों आये श्री नाथजी कों सिंगार करि के श्री
गुसांईजी सों कह्यो जो अब कुंभनदास जी कों दर्शन
कराय दउ सो कुंभन दास जी वैष्णवन के ऊपर यह प्र
कार कियो जो सूत की कों कोन मन्दिर में जान देतो सो

कुंभनदासजी के अनुग्रह ते सबकोऊ दर्शन करतहैं सो कुंभनदास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासोली में जाय बैठते सो वहां बैठें बैठें विरह के पद गाव ते सोपद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल॥ अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे विरही बेहाल॥१॥ सीतल चन्द तप तभयो दाहत किरण कमल जनु जाल॥ चन्दन कुसुम सुहाय घनसार लगत बढ़ी ज्वाल॥२॥ कुंभनदास प्रभू नव घन तुम बिन कनक लता मानिं सूखी जीवमा काल॥ अधरामृत वंसी सींचि लेउ तुम गिरगोवर्द्धन लाल॥३॥

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहर से भए॥ तबते निघटत नाहिन जबते हरि मधुपुरी गये॥१॥ यह जानियें विधाता जु ग समकीने जाम नए॥ जागत जाग विहातन के अरु सेप्रीत ठये॥ व्रजवासी अति परम दीन भए व्याकुल से चलये॥ उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पए॥ कुंभनदास विछुरत नंद नंदन वहत संताप करे॥ अब गिरधर विन रहत निरंतर नैनन नीर छए॥

राग केदारा

औरन कों समीप विछुरनों आयो मेरी हिसा॥+॥ सबकोउ सोवे सुख अपने आली मोकूं चाहत रिसा॥ नाजानों यह विधाता की गति मेरे आकलि वे अैसो कोन रिसा॥ कुंभनदास प्रभू गिरधर कहत

निस दिन रहज्यों चातक घन मिसा॥२॥
ऐसे पद गाय गाय कुंभनदास जीनें सूत ते पद कीये
पाछें शुद्ध होय के कुंभनदासजी भागवद सेवा में आवि
ऐसो जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुंभनदासजी
श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसें परम कृपापात्र
भगवदीय है तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं तातें इ
नकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥+
॥वार्ता प्रसंग॥६॥वैष्णव ८३॥ सम्बंध १७५॥

अब श्री आचार्यजी महा-
प्रभून के सेवक कृष्ण
दास अधिकारी
तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गए हुते सो श्री
रणछोड जी के दर्शन करिकें तहां ते चले सो आधन
मीरा वाई के गांव आयो सो वे कृष्णदास मीरा वाई के
घर गए तहां हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सहवेष्म
वहते सो काहू कों आये आठ दिन काहू कों आये द
श दिन काहू कों आए पंद्रह दिन भये हुते तिनकी वि
दा न भई हुती और कृष्णदास ने तो आवंतही कही
जो हूं तो चलूंगो तब मीरा वाई ने कह्यो जो बैठो तबाक
तनीक मोहर श्री नाथजी कों दैन लागी सो कृष्णदास
नें न लीनी और कह्यो जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभू
नकी सेवक नाहीं होत तातें तेरी भेट हम हाथते लेवेंगे
नाहीं सो ऐसें कहि कें कृष्णदास उहांते उठि चले सो

जब आगे आये तब एक वैष्णवननें कह्यो जोतुमनेंश्री
नाथजी कीभेट नाहीं लीनी तब कृष्णदास ने कह्योजो
भेट की कहाहै पिरमीरावाई के यहां जितने सेवक बैठे
हुते तिन सबनकीनांक नीची करिकें भेट फेरीहै इतने
दूकठौरे कहां मिलते येहू जानेंगे जो एक वेर सद्द श्री
आचार्यजी महाप्रभूनकों सेवक आयोहुतो तानेभेट
नलीनी तो तिनके गुरू की कहावातहोयगी ॥*:*

वार्ता प्रसंग ॥*१*॥

और प्रथमसेवाश्रीनाथजीकी वंगाली करतेजो श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें मुकट काछनीहीरा के आभ
रन भराय दीनेहैं सो नित्य धरते सो भेट आवती सोखर्च
होती कछू संग्रह न राखते सब खर्च होयजातो और
वंगाली सेवाकरते पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभूननेंछ
घ्मदास कों आज्ञादीनीजो तुम श्रीगोवर्द्धन रहो सेवा
टहलकरो तब कृष्णदास अधिकारी भए अधिकार
करन लागे पाछें एक दिन मथुरा कोंचलन लागे सो
अडींगा लों पहुंचे तब पेड़े में अवधूत दास मिले महापुरु
षहुते व्रज में फिरयो करते सो कृष्णदास कों मिलेतब
अवधूत दास ने कह्योजो कृष्णदास तुम कहांचलेतब
कृष्णदासनें कही जो मथुरा जात हौं कछू काम है तब
अवधूतदासने पूछो जो श्रीनाथजीकी सेवाकोनक
रतहै तब कृष्णदासनें कही जो वंगाली करतहै तब अव
धूतदासनें कही जो श्री नाथजीकों अपनों वैभव बढाव
नोहै तातेतुम वंगालीन कौं दूर क्यों नाहीं करत सो अव
धूतदास सों श्रीनाथजी नें कह्यो जो मोकों वंगाली वहु

तदुरवदेतहैं सो तव वंगाल्ली श्री नाथजीकों भोग धरते सो उनकी चुटि में छोटो सो स्वरूप हुतो देवी कोसो सा म्हे बैठावते जब भोग सरावते या देवीकों अपनीं चुटि या में धर लेते ऐसें सदा करते सो बात अव धूत दास कों श्रीनाथजीने जनाई ताते अव धूत दासने कृष्णदास सों कह्यो जो तुम वंगाल्लीन कों दूर करो तव कृष्णदासनें कही जो श्री गुसांईजी की आज्ञा विना कैसें काढे तव अवधूतदासने कह्यो जो तुम अडेल मेंजा यके श्री गुसांईजी की आज्ञा ले आवो जैसें बनें तैसें इन वंगाल्ली कों काढो तव कृष्णदास अडींग ते फिरे सो श्री गोवर्द्धन आए तव वंगाल्लीन सों कह्यो जो हूं तो श्री गुसांईजी के पास अडेल जात हों तुम श्री नाथजी की सेवा सावधानी सों करियो और सब सेवक हुते तिन सों कृष्णदासनें कह्यो जो हूं तो श्री गुसांईजी के पास कछू काम है सो अडेल को जात हों तुम साव धान रहियो ता पाछें श्री नाथजी सों विदा होय के अ डेल कों चले सो दिन पंद्रह में श्री गुसांईजी के पास आय पहुंचे सो आय कें श्री गुसांईजी कों दंडौत कीये तब श्री गुसांईजीने पूछो जो कृष्णदास तुम क्यों आये तब कृष्णदासनें कह्यो जो श्री नाथजी कों अपनों वै भव बढावनों है और वंगाल्लीन नें बहुत मायो उठायो है जो भेट आवत है सो लेजात हैं सो सब अपने गु न कों देत हैं तब श्री गुसांईजी कहे जो श्री आचार्यजी महाप्रभू अमुक्या मोह लीला दिखाई ता पाछें श्री गो पीनाथजी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की

भेट भई पाछें अडेल आये तब श्री गोपीनाथजीनें क
हीजो यह पहलो परदेश्राहे ताते यामें आयो सो सब
श्रीनाथजी कोंहे श्री नाथजी कों विनियोग कीयोचा
हियै ता पाछें श्री गोपीनाथजी दिन दश बारह रहे कें
पाछें श्री नाथजीद्वार पधारे सो जाय पहुंचे तब श्री गो
पीनाथजीनें दर्शन कीयो पाछें जो लाये हुते सो सब
भेट कीयो आभूरदन सब जड़ाव के समराये यार कटो
रा, डवरा, चमचा, तष्टी, प्रभृत, सब सोंना रूपा के कीये
सब करिकें श्री नाथजी सों विदा होय कें श्री गोपीना
थजी अडेल आये ता पाछें बंगाली बरस एक के भीत
र सब लैगये अपने गुरु के यहां जाय कें दीयो यह वात
श्री गुसांईजीनें कृष्णदास सों कही और कह्यो जो बं
गालीननें मांयो उठायोहे परि वे श्री आचार्यजी मह
प्रभून के राखेहैं सो कैसें निकलेंगे तब कृष्णदासनें श्री
गुसांईजी सों कह्यो जो महाराज श्री नाथजी की आ
ज्ञा हे जो बंगालीन कों निकासो ताते आपथावात में
कछू मति बोलो मोकों आप आज्ञा करो तो अपनों
आप करि लेउंगो जैसें बंगाली निकसेंगे तैसें काढ़ूं
गो तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो अवश्य तब कृष्ण
दास नें कह्यो जो महाराज दोय पत्र लिखिये एक राजा
टोडरमल्ल के नाम को एक बीरबल के नाम को तब श्री
गुसांईजीनें दोय पत्र लिखदीने राजा टोडरमल्ल कों
और बीरबल कों लिखो जो कृष्णदास कों श्रीनाथ
जीद्वार भेजे हैं जो तुम सों कृष्णदास कहे सो करि दे
गे सो पत्र लेकें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो आगरे आ

ए तहां टोडरमल्ल राजा वीरवलसों मिले पत्र श्रीगु
सांईजी के हुते सो दीये सो उन पत्र वांचि कें कृष्णदास
सों कह्यो जो तुम कहो तैसें करें तब कृष्णदासनें क
ह्यो जो अब तौ मैं मथुरा जात हौं बंगालीन कों काढि
बे कों ना पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों विदा हो
य कें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो मथुरा आए तब मा
ग में अवधूतदास मिले तब कृष्णदास सों अवधूत
दासनें कही जो कृष्णदासजी दील कहा करि राखी
है बंगालीन कों काढ़ो श्रीनाथजी की ऐसी इच्छा है
श्रीनाथजी कों अपनों वैभ च बढ़ावनों है तब कृष्ण
दासनें कह्यो जो श्रीगुसांईजी की आज्ञा लैकें आयो
हों अब जाय कें बंगालीन कों काढ़त हौं इतनों कहि
कें कृष्णदास चले सो श्रीनाथजी द्वार आये सो वे
बंगाली सब रुद्र कुंड ऊपर रहते सो उहां उनकी झों
परी हुती सो कृष्णदासनें जराय दीनी तब सोर भयो ×
तब बंगाली सेवा छोड़ के पर्वत के नीचें आये तब कृ
ष्णदासनें पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दीये तब बं
गाली देखे तौ कृष्णदासनें झोंपरी में आग लगाय
दीनी हैं तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे
तब कृष्णदास नें दुहूं चारचार लाठी सबन में दीनी
तब वे बंगाली तहां ते भाजे सो मथुरा आये तब रूप स
नातन के पास आय कें सब बात कही तब इतने में कृ
ष्णदास हू आय ठाढे भये तब रूप सनातन ने कृष्णदा
स के ऊपर खीजि कें कह्यो जो बेगारे शूद्र तू कौन जो ×
इन ब्राह्मणान कों मारें तब कृष्णदास नें कही जो हूं

सुद्रहों परि तुमहूंतो अभिनहोनीनाहींतुमहूंतो का
यस्थहो तव सनातननें कह्योजोयहवात पात्साह
सुनेंगो तो तू कहा जुवाव देयगो तव कृष्णदासनें क
ह्योजो होंतो नीकें जुवाव देयंगो परि तुम कोंजुवाव
देतमें दुखहोयगो और तुमकोंजवाव न आवेगो
जोतुम कायस्थ होयकें इनब्राह्मणान सों दंडोत करा
वतहो तव रूपसनातन तोचुपहूं रहे और वंगालीन
सों कह्योजोतुमजानों एजानों तव वंगाली मथुरा
केहाकिम पास गये तव कृष्णदासजाय ठाडेभये
तवहाकिमनें कह्योजो भयो सोनो भयो परि अवइ
नकों राखोतव कृष्णदासनें कह्योजो अवलोइन
कोंनराखेंगेएतो हमारे चाकर हुते सोहमनें इनकों
सेवा सोपींहुती सो ए सेवा छोड़ कें कैसें आयेजोइन
की झोंपरी जरगई हुती तो हम नई छवाय देतेतात
अव हमतो नराखेंगे ता ऊपर तुमकहतहो जोहम
श्री गुसांईजी कोंलिखेंगे वे कहेंगेतैसें करेंगे तुम
श्री गुसांईजी कोंलिखेवो पाछें कृष्णदास श्रीनाथ
जीद्वार आये और वंगाली सव अपने श्री कुंड आये
तव कृष्णदासनें श्री गुसांईजी कों पत्र लिखेवो तामें
वंगाली काढ़े सो सव समाचार विस्तार करि कें लिखे
और लिख्योजो अव पधारियेतो भलोहै सो पत्र श्री
गुसांईजी के पास अडेल आयो तापाछें श्री गुसांई
जी अडेलते चलेसो श्रीनाथजीद्वार आये तव वेव
गाली सव आये तव श्री गुसांईजी सों कह्योजोहम
कोंश्री आचार्यजीमहाप्रभूननें सेवा में राखेहतेसो

कृष्णदास नें हम कों काढे तब श्री गुसांईजी ने कह्यो॰ जो तुम सेवा छोड़कें कयों गये दोष तुम्हारो है ताते अबतो सेवा में न राखेंगे तब बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम स्वायंगे कह्या तब श्री गुसांईजीनें इनकों श्रीनाथजी के बदले श्री मदनमोहनजी की सेवा दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियो जो आवे॰ सो खाइयो तब वे बंगाली श्री मदनमोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बंगालीनें श्री गोवर्द्धन रहिवो छोड़ दीयो ता पाछें श्री नाथजी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे श्री नाथजी कों अपनो वैभव बढावेना हों सो सब भीतरियान कों नेग और सब सेवकन कों नेग जो जा भांति श्री नाथजीनें कह्यो ता भांति श्री गुसांईजीनें बांधो तबतें श्री नाथजी की सेवा प्रनालिका तेहि नस्यागी और कृष्णदास अधिकार करन लागे ॥*

वार्ता प्रसंग ॥२॥

बहुरि श्री नाथजीनें कृष्णदास कों आज्ञा दीनी जो श्यामकुमरि कों लैकें ताल पखावज लैकें तू परासोली में आइयो सो श्यामकुमर आकों मृदंग बजावते॰ सो श्रीनाथजी की सैन आरती उपरांत अनोसर भयो तब कृष्णदास श्यामकुमरि के घर गये तब कृष्णदास नें श्यामकुमरि सों कह्यो जो श्री नाथजीनें आज्ञा करी है सो मृदंग लैकें परासोली चलो तब श्यामकुमर नें कह्यो जो मोहू कों श्रीनाथजीनें आज्ञा करी है ताते चलिये तब श्यामकुमर मृदंग लैकें आयो तब कृष्णदास और श्यामकुमर दोउ जने परासोली आए

सोढरवेंतो श्री नाथजी स्वामिनीजी सहित विराजें हैं
तब श्रीनाथजीने श्यामकुमर सों कह्यो जोतू तो मृदंग
बजाय श्रीकृष्णदास सों कह्यो जोतू कीर्तन करि श्रीनाथजी श्रीस्वामिनीजी नित्य कीयो तहां कृष्ण
दासनें पद गायो सोपद

राग केदारो

श्रीवृषभानुनन्दनीनाचत गिरधर संग लागडाट अरप
तिर पसरंग रंग रह्यो ॥ झपताल मिल्यो राग केदारो
सप्त सुरन अवघा तान रंग रह्यो ॥१॥ पाई सुखसि
द्धि भरत काम विविधि रिद्धि अभि नवदल सत सुहाग
हुलास रंग रह्यो ॥ वनिता सत जूथ संग लिये निर
खत कोंसघन चन्द वलिहारी कृष्णदास सुखरंग
रह्यो ॥२॥

यह पद कृष्णदास नें गायो श्याम कुमार नें मृदंग बजा
यो श्रीनाथजी और स्वामिनी जी नृत्य कीयो ताते श्री
महाप्रभूजी की कानिते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर
ऐसी कृपा करत हुते ॥

वार्ता प्रसंग ३ ॥

और कृष्णदास नें बहुत पद कीयें तब एक समें सूर
दासजीनें कृष्णदास सों पूछो जो तुम पद करत हो तामें
मेरी छाया है तब कृष्णदास नें सूरदासजी सों कह्यो ×
जो अबकें ऐसो पद करूं जो जामें तुम्हारी छाया न
आवै तब कृष्णदास ए कांत में बैठि कें एकाग्र चि
त करि कें नयो पद करन लागे जो जामें तीन तुक कीं
कीयो और चौथी तुक बनें नाहीं तब घड़ी दोय लों
विचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलो फेरि प्रसाद
लेंकें विचारेगें सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वा
ति स्नेरवनी उहाई धरिकें प्रसाद लेवे कों उठे जब कृष्ण
दास प्रसाद लेवे कों बैठे तब श्रीनाथजीनें आप तीन तु
क वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिखि दीये कृष्णदा
सनें आधो पद कियो हुतो ताकों आप श्रीनाथजी पू
रो करिकें आपतो पधारे ता पाछें कृष्णदास प्रसाद ×
लेंकें आये तब देखो तो श्रीनाथजी पूरो पद करि कें
श्रीहस्त सों लिख गये हैं सो देख कें कृष्णदास बहुत
प्रसन्न भये और कहें जो सूरदासजी आवें तो पद सु
नावे तब उत्थापन के समय सूरदासजी दर्शनकों आ
ये तब कृष्णदास ने कह्यो जो सूरदासजी नयो पद एक
मेंनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी तब सूरदा

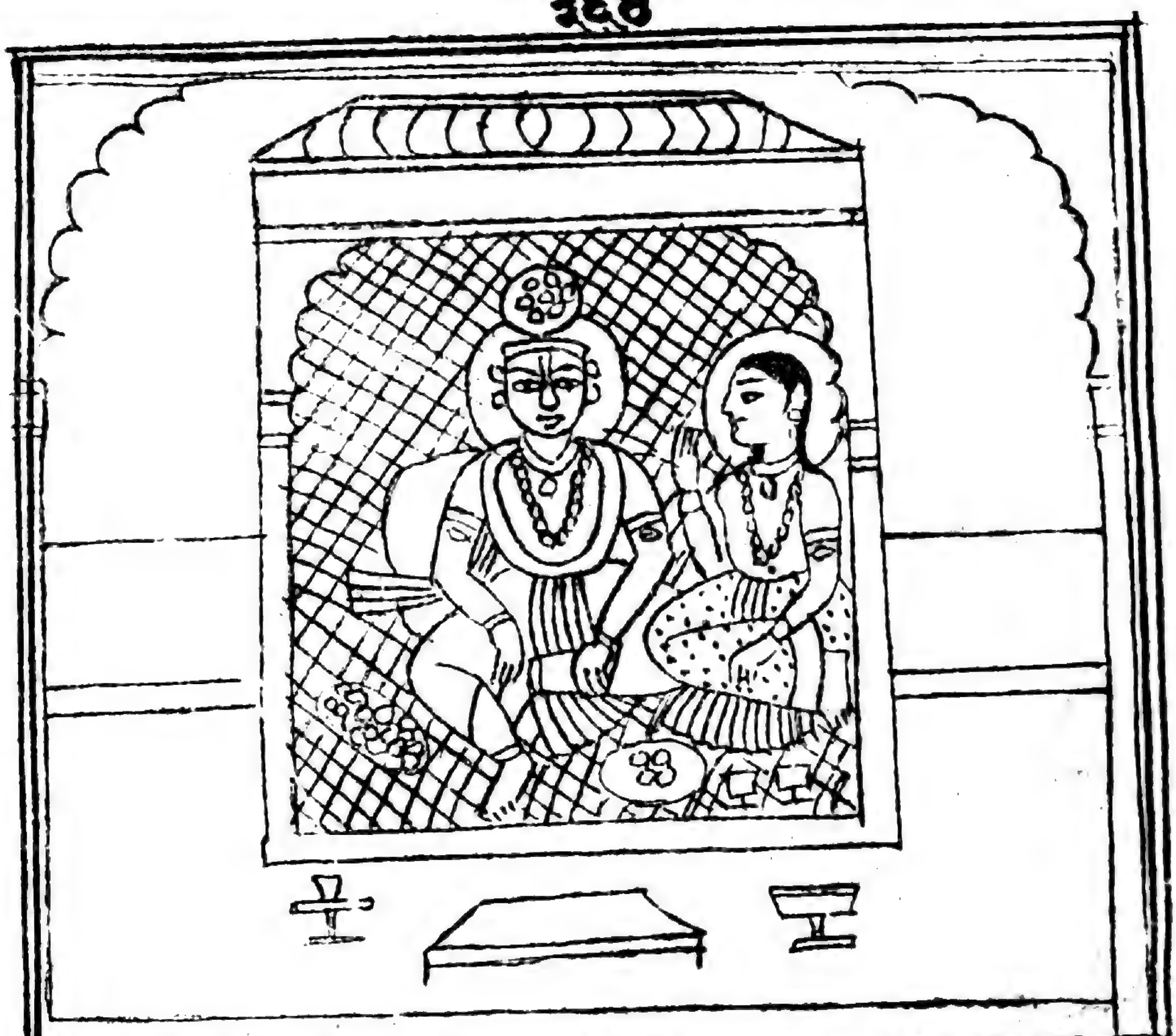

सजानेंकह्योजो कहो सुनोंतव जानोंतव पद कहोंसो
पद ॥*

राग गोरी ॥*

आवतवनेंकान्ह गोपवालक मगानेंचुकी खुर रेणु
छुरतु अलका वली ॥ भौंहेंमनमथचापवक्र लोच
नबान सीस सोभितमत्तमयूरचन्द्रावली ॥१॥उदित
उडुराजसुन्दर सिरोमणि वदन निरखि फूल्लीनवलजु
वती कुमुदावली ॥ अरुणासकुच अधर विंव फल
हसात कहत कलुक प्रकटित होत कुंददसनावली ॥
२॥ श्रवण कुंडलभालतिलक वेसरि नाक कंठको
स्तुभमणि सुभग निवलावली ॥ रत्नहाटकखचितपुर
सि पटिव निपांतिवीच राजत शंभउलक मुक्तावली

॥३॥अथश्रीनाथजीकृत॥वलयकंकण वाजूबंद
आजानुभुज मुद्रिकाकरढलविराजत नखावली॥कं
णातर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिकाजनम
सिग्र सथित प्रेमावली॥४॥कटि क्षुद्र घंटिकाजटित
हीरा मयी नाभि अम्बुजवलित भृंग रोमावली॥धाय
कवहुक चलत भक्त हित जानिपिय गंड मण्डल रुवि
र श्रम जल कणावली॥५॥पीतको सय परिधाने सुं
दर अंग चरणा नूपुर वाद्य गीत सवदावली॥हृदय कृ
ष्णदास गिरवर धरणा लाल की चरणानख चन्द्रिकाह
रति तिमिरावली॥६॥यह पद कृष्णदास नें सूरदास
जी के आगें कह्यो सो सूरदासजी तीन तुक तोड़ी तौ वो
लेनाहीं और तीन तुक के आगे कहनलागे तव सूरदा
सजी नें कृष्णदास सों कह्यो जो कृष्णदास मेरें तुम
सों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की वानी
पहिंचानत हों तव कृष्णदास चुपकरि रहे ताते कृष्ण
दास ऐसे भगवदीय है॥

वार्ता प्रसंग॥४॥

और एक समय श्रीनाथजी के भंडार में कछू सामिग्री
चहियत हुती सो कृष्णदास गाड़ा लैकें आगरे कों आ
ए सो आगरे के वाजार में एक वेस्या नृत्य करत हुती
ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती सव लोगत
मासो देखत हुते सो कृष्णदास वाजार में तमासे में
जाय ठाढ़े भये तव भीर सरकि गई तव वह वेस्या कृ
ष्णदास के आगें नृत्य करन लागी सो वह वेस्याव
हुत सुन्दर और गावै वहुत आछो नृत्य तैसोई क

रै सो कुम्भदासवा वेस्या के ऊपर गिझे और मन में कहैं
जो यहतो श्रीनाथजी के लायक है ता पाछें वा वेस्या
कों दश मुद्रा तो उहांही दीये और कही जो रात्रि कों स
माज सहित आइयो ता पाछें कुम्भदास उहा हवेली
में उतरे सो सामिग्री चहियत हुती सो सब लेके गाड़ा
लदाय सिद्ध करवायो ता पाछें रात्रि पहर गई तब वे
स्या समाज सहित आई ता पाछें नृत्य भयो गान भयो
वा पै कुम्भदास बहुत रीझे सो रुपैया सत राक दीये तब
वा वेस्या सों कह्यो जो तेरो गान हूं आछो और नृत्य
हू आछो परि हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल ध्यान उ
पर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाड्यो ता पाछें कु
म्भदास नें राक पूरवी राग में पद करिकें सिर्वयो ता पा
छें दूसरे दिन वा वेस्या कों साथ लैकें चले सो आगरे ते

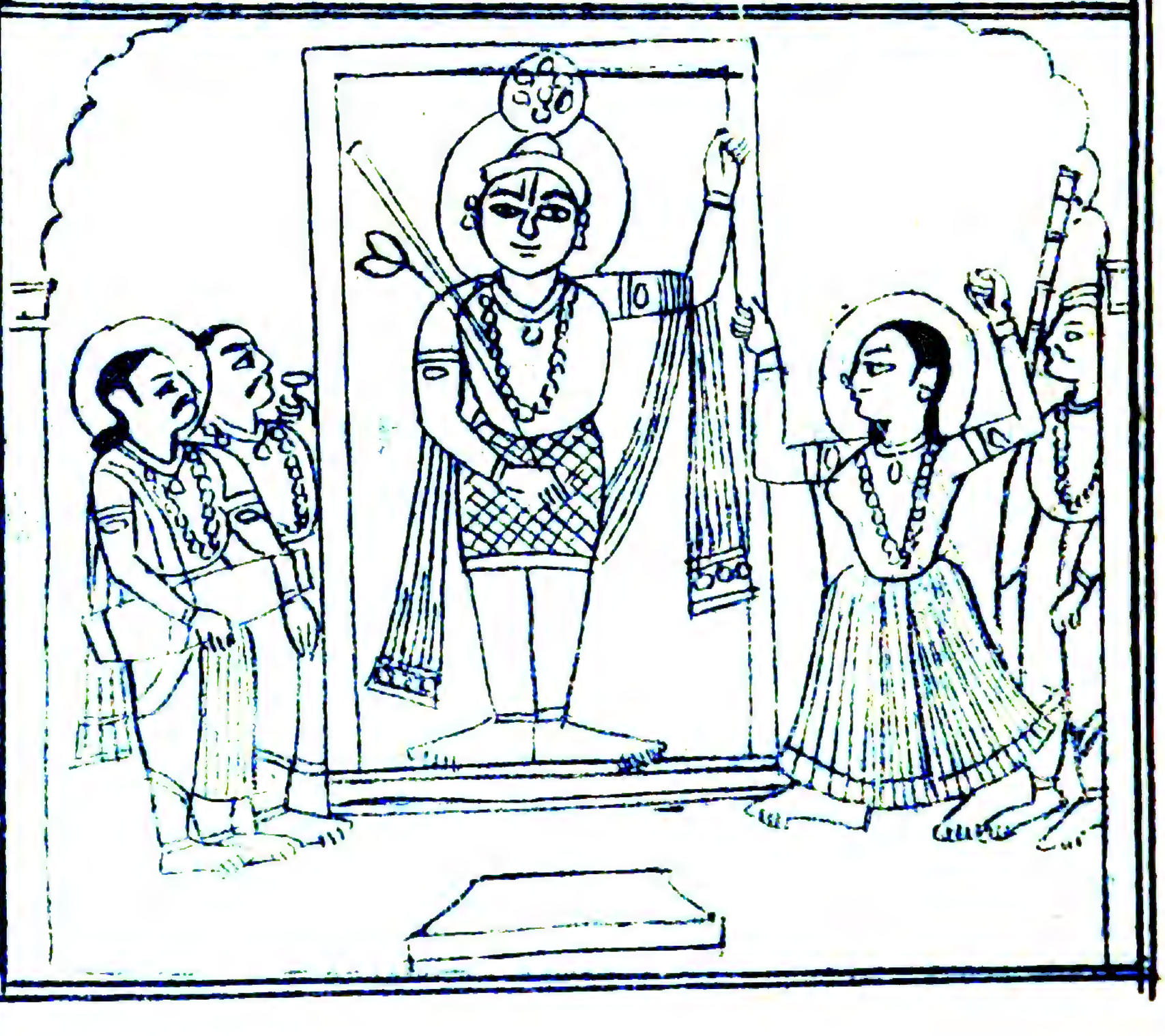

आए पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजी द्वार आये सामग्री सब भंडार में धराई ता पाछें जब उत्थापन को समय भयो तब कीर्तनियाकूंहू कों वागो नहीं ये तब वा वेश्या कों समाज सहित लैगये श्रीगुसांईजी मन्दिर में वाडे श्रीनाथजी कों मूंदा करतहैं और मणा कोठा में वेस्या कृत्य करन लागे और यह पद गायो ॥ सो पद

राग पूरवी ॥

मोमन गिरधर छवि पर अटकेो ॥ ललित त्रभंगी अंग गन परिचलि गयो तहांई ठटकेो ॥१॥ सजल श्याम घन चरण नील है फिर चितन्नानि तन भटकेो ॥ कृष्णदास कियो प्राण न्योछावरि यह तन जग सिर पटकेो ॥ यह पद वा वेश्या नें गायो सो जब गावत २ पिछली तुक आई जो कृष्णदास कियो प्राण न्योछावरि यह तन जग सिर पटकेो इतनों कहत मात्र वा वेस्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरिकें श्रीनाथजी की लीला में प्राप्त भई और वा वेस्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तो या तें जीविका हुती अब हम कहा खायगे तब कृष्णदास नें कहयो जो तुम कों रोकत हो चलो नीचे खाय वे कों देउं तब उन समाजीन कों नीचे लायके कृष्णदास नें सहस्र रुपैया दै विदा किये कृष्णदास नें अपने मन ते समर्पी ताते श्रीनाथजी ने वा वेस्या कों अंगीकार करी ताते श्री आचार्यजी महाप्रभून की कानितें सेवक की समर्पी वस्तु या भांति सों अंगीकार कर तहैं ॥

वार्तासंग ५

श्रीर कृष्णदासकेा गगांवाई सेां कृत स्नेह हतेा सेाय्री गुसांईजीकेां न सुहावते सेा एक दिन श्री गुसांईजी श्री नाथजीकेां भेाग समर्पित हते सेा सामिग्री उपर गगा वाई की दृष्टि परी ताते श्री नाथ जी आरेागे नाही परि भेाग तेा समर्यें ता पाछें समय भयेा तब भेाग सराये तब आरती करि अनेासि करिकें श्री गुसांईजी आप नीचें पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सबनें प्रशाद लीयेा तब श्री गुसांईजी आप तेा भेाजन करिकें पेा दे तब श्री नाथजीनें भीतरिया केां लात मारि कें जगायेा श्रीर वासू कहें जेा हूं तेा भूखेा हूं तब वा भी तरिया नें कहेा जेा महाराज श्री गुसांईजी नें भेाग सम-

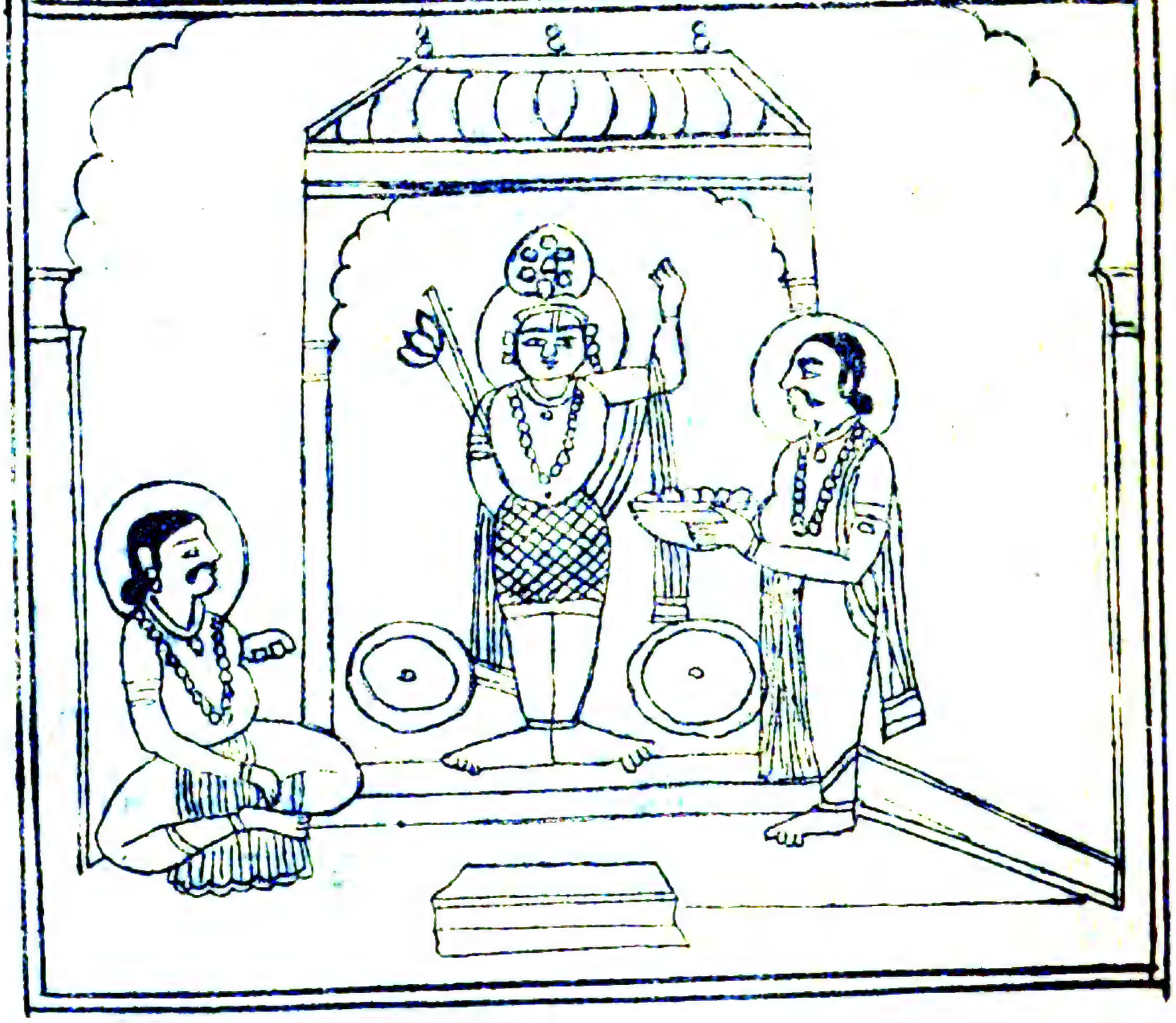

यौंहो और तुम भूखे कोंरहे तब श्रीनाथजीनें कह्यो
जो राजभोग मेंतो गंगावाई कोदृष्टी परीहती तातेंरा
जभोग आरोग्यो नाहीं तब वह भीतरिया गयो श्रीगु
सांईजी के पास आयो सो श्रीगुसांईजी भोजन कर
कें पौढ़े हुते तब भीतरियानें आयकें श्रीगुसांईजीके
चरणदाबे तब श्रीगुसांईजीचौंकि उठे तब देखें तो
श्रीनाथजीकोभीतरियाहै तब वाभीतरियासों पूछे
जो यहांइतनीवेर कहां आयोहो तब वाभीतरिया
नें कह्यो जो महाराज आज श्रीनाथजी भूखेहैं मोकें
लानमारि कें जगायो और कह्यो जो आज तो मंभूखो
हों तब मेंनें श्रीनाथजीसों कह्यो जो महाराजभोग
तो श्रीगुसांईजीनें समर्प्योहोतुम भूखेकोंरहे तब
श्रीनाथजीनें कही जो सामग्रीपरतो गंगावाईकी दृ
ष्टि परी ताते मेंनाहीं आरोग्यो तब श्रीगुसांईजीसुन
तही ततकाल स्नानकरिकें पर्वत ऊपर पधारे सोव
हभीतरियाहू स्नानकरकें श्रीगुसांईजीके साथही
आयोतब श्रीगुसांईजीनें वाभीतरियासों कही
जोभात और बड़ीकरोजो तत्काल सिद्धि होय आवै
तब भात और बड़ीकरीं सो तत्काल सिद्धि भयो तब
श्रीनाथजीकों भोग समर्प्यो पाछें भीतरियासोंई
करिकें स्नान करिकें पर्वत ऊपर आये तब श्रीगु
सांईजीकी आज्ञा भई जोराजभोग की सामग्री तो भई
सिद्धि ता पाछें राजभोग सैनभोग इकठे सो समर्प्यो ता
पाछे समय भयो तब भोग सराय सैन आरती करी
तब श्रीनाथजीकों पौढाये भोग सरयोहो सो प्रसाद

एकडवा मंउहांई रहि गयोतव रामदास भीतरियानें
कह्यो जो पहलो भोग समर्प्यो हुतो सो उहांही रहि ग
यो तब श्री गुसांई जी डवा मेंतें तलाय के लेउतरे
पाछें सब सेवकन कों वह बड़ी भात को महाप्रशाद
सेवक सों दीनों तापाछें श्री गुसांई जी आपहू
आंगो सो वह बड़ी भात को प्रशाद अति अद्भुत भयो
अति अलौकिक स्वाद भयो सो श्री गुसांई जी आप
सरायो तब कृष्णदास ठाड़े हते तब कृष्णदासनें क
ही जो महाराज आपही करनहारे आपही आरोग
नहारे तो कौन उत्तम होय तब श्री गुसांई जीनें ह
सकें कही जो सब तुम्हारेही कीये भोगतहें ॥

वार्ता प्रसंग ६

अब जो यह बात श्री गुसांई जीनें कही जोये तु
म्हारेही कीये फल भोगतहें सो यह बात सुनि कें कृ
ष्णदासनें श्री गुसांई जी सों विगाड़ी तब श्री गुसांई
जी सों कृष्णदास नें कह्यो जो तुम पर्वत ऊपर मति
चढ़ो तब श्री गुसांई जी आप तो तहांते फिरे सो प
रासोली में आय रहे तब मन में विचारे जो कृष्णदा
स कहा मनें करेंगो पर श्री नाथजी की इच्छा जैसी
हे सो श्री नाथजी की इच्छा जानिकें कछू बोले नाहीं
सो आप परासोली में रहे सो परासोली में धजा के
सांझे बैठि कें विश्राम कीये और श्री गुसांई जी तीन
दिन तो श्री गोवर्द्धन रहे और तीन दिन श्री गोकुल
रहते तब ते परासोली आय रहे तब श्री गुसांई जी श्री
नाथजी के मन्दिर की ध्वजा की परासोली की ओर

पदनीताके सांझे बैठि ते तब श्रीनाथजी आप स्वर
की में आय दर्शन दे ते तब यह जानि कें कृष्णदासनें
परासोली को और की खिर की वनवाय दीनी तबते
श्री गुसांईजी गोकुल ते जब परासोली आवते तब
रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथजी की राज
भोग आरती कीर के अनोसर करिकें श्री गुसांईजी के
दर्शन कों परासोली आवते सो आय कें चरणोदक
लेय पाछें प्रसाद लेते सो कृष्णदास कों सुहावतो
नाहीं और सब सेवक श्री गुसांईजी के दर्शन विना
महाप्रशाद कैसें लेंय परि सेवकन सों कृष्णदास
की चल्ते नाहीं और श्री गुसांईजी एक पत्र लिखवें
रामदास भांतरिया कों देते और कहते जो श्रीनाथ
जी कों दे दीजो सो पत्र श्रीनाथजी कों देते श्रीनाथजी
विज्ञप्ति उत्तर लिखि कें रामदास कों देते सो रामदास
श्री गुसांईजी कों देते तब श्री गुसांईजी वा पत्र कों
वांचिकें पानी में पीजाते या भांति सों छै महीना वी
ते परि श्री गुसांईजीनें श्रीनाथजी कों अधिकारी
वैष्णव जानि कें और श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक जानि कछू न कह्यो परि श्रीनाथजी के विरह
को स्नेह बहुत करते या भांति छै महीना भए तब ए
कदिन राजा वीरवल आय निकसे तब ता दिन तो
श्री गुसांईजी परासोली हते श्री गिरधरजी घर हुते
तब राजा वीरवल नें श्री गुसांईजी कों खबर करावी
तब पैंडियानें कही जो श्री गुसांईजी तो परासोली
हैं श्री गिरधरजी घर हैं तब राजा श्री गिरधरजी के

दर्शनकों आए तब वीरबल सों श्रीगिरधरजीने क
हीजो कृष्णदास अधिकारी काकाजी कों श्रीनाथ
जी के दर्शन नाहीं करन देत सो काकाजी कों खेद व
हुत होतहै काकाजी पासोली में जाय दर्शन करतहैं
तब वीरबलनें श्रीगिरधरजी सों कह्यो जो अबहूंजा
य के कृष्णदास को काढ़ूंगा यों कहिकें राजा वीरबल
श्रीगिरधरजी सों विदा होय के मथुरा आये और
श्रीगुसांईजी पासोली ते श्रीगोकुल आये और
वीरबलनें पांचसौ मनुष्य भेजे और कह्यो जो कृष्ण
दास कों पकरि लावो सोवे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन श्री
य के कृष्णदास को पकरि लाये सोवे वीरबलनें
कृष्णदास कों वन्दीखाने में दीनों तब श्रीगिरधरजी
सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को वन्दीखाने में
दीनोंहै तब श्रीगिरधर जीनें श्रीगुसांईजी सों कह्यो
जो कृष्णदास को वन्दीखाने में दीनेंहै तब श्रीगुसांई
जीनें कह्यो जो हाय हाय श्रीआचार्यजी महाप्रभून
को सेवक न को ऐसो करह तब श्रीगुसांईजीनें श्रीगि
रधरजी सों कह्यो जो तुमनें कह्यो होयगो तब श्रीगि
रधरजीने कह्यो जो हमने तो वीरबल सों सहजही क
ह्योहतो जो काकाजी कों दर्शन नाहीं करन देत सो
काकाजी कों बहुत खेद होतहै तब श्रीगुसांईजी
नें कह्यो जो भोजन जब करेंगो तब कृष्णदास आ
वेंगो तब श्रीगिरधरजी तत्काल घोड़ा मंगाय अस
वार होयकें मथुरा कों आये तब वीरबल सों कह्यो
जो काकाजी भोजन नाहीं करत तातें कृष्णदास कों

कोडदेउ तव राजा वीरवलनें कृष्णदास श्री गिरधरजीके

हवालें करदीयो तव श्री गिरधरजी तत्काल सगले श्री गोकुल आये तव श्री गुसांई जीनें सुनी जो श्री गिरधर जी कृष्णदास कों साथ लेकें आवतहैं सो श्री गुसांई जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुंचे सोइ वा ओर ते कृष्णदास आये सो श्री गुसांई जी को दर्शन कीयो और दंडोत करी और एक नयो पद करिकें गायो सो पद ॥

राग केदारो

श्री विट्ठलजू के चरणकी वलि ॥ हमसे पतित उधारन कारन परम कृपालु आप आपनवलि ॥१॥ उज्जल अरुणाद्या रंगरंजित दशा नरवचन्द्र विहरत मन निर्दलि ॥ शुभग कर सुख कर सोभन पावन भक्त मुदित

ललितकर अंजलि ॥२॥ अति सेमरकुल सुंगधसु
सीतल परत त्रिविध तापडासतमल ॥ भजिकृष्ण
दासवारणक सुधि करितेरो कहा करेगो रिपुकल
॥३॥ *

यह पद श्री गुसांईजी के आगें गायो पाछें श्री गुसांईजी कृष्णदास कों अपने घर लै आये पाछें कृष्णदास सों श्री गुसांईजीनें कह्यो जो उठो भोजन करो तब कृष्णदास नें कह्यो महाराज आप भोजन करिये पाछें मैं झूंठन लेउंगो तब श्री गुसांईजी भोजन कों बैठे तब कृष्णदासने एक पद और गायो सो पद

राग कान्हरो

ताहीकों सिर नाइयेजो श्री वल्लभसुत पद रज रतिहोय ॥ कीजे कहा आन ऊचे पद तिनसों कहा सगाई होय ॥१॥ सार सार विचार मतौ करि श्रुति कच गोधन लियो निचोय ॥ तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजहि गोरस लियो विलोय ॥२॥ जाके मन में जुग भरमहै श्री विट्ठल श्री गिरधर दोय ॥ ताकों संग विषम विषहू ते भूलिहू चातुर कर हे जिन कोय ॥ जिन प्रतापदीखि अपने चख असम सारजो भिदेन तोहि ॥ कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री गुसांईजी बहुत प्रसन्न भयेपा छें श्री गुसांईजी भोजन करिकें पधारे तब कृष्णदास सों कह्यो जो अबजाउ भोजन करो तब कृष्णदास भीतर गये तब श्री गिरधरजीनें श्री गुसांईजी की

झूंटन की पातर कृष्णदास के आगे धरी तब कृष्ण
दास ने महाप्रशाद लीनो पाछें बीड़ा दोय दीये
रात्रि कों कृष्ण दास वहांई सोय रहे ना पाछें पिछ
ली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसांईजी उठे देह क
रि कें स्नान कीयो श्रीनवनीतप्रिया जी के मंग
ला के दर्शन करि कें बाहिर पधारे तब श्रीनाथजी द्वार
पधारवे की तैयारी कीये तब घोड़ा दोय मंगाये ए
क घोड़ा ऊपर श्रीगुसांईजी असवार भये एक घो
ड़ा ऊपर कृष्णदास असवार कीयो और श्रीगोकु
ल तें चले सो श्रीनाथजी द्वार दिन पहर सवा एक
चढ़ जाय पै हुंचे सो यहां श्रीनाथजी को राज भोग
आयो हुतो सो श्रीगुसांईजी तत्काल स्नान करि कें
ऊपर पधारे और श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति पत्र परोली
तें लिखने सो रामदास भीनरिया के हाथ पठावते ताकी
प्रति उत्तर श्रीनाथजी पत्र में लिखि कें श्रीगुसांईजी
कों पठावते सो श्रीगुसांईजी जल में धोर पीजाते सो
पिछले दिन कों पत्र श्रीनाथजी के हस्ताक्षर को सो श्रीगु
सांईजी राखे हते सो पत्र सायही ले आराहते पाछें श्री
नाथजी कों राज भोग आयो हुतो सो समय भयो तब
श्रीगुसांईजी भोग सराय वे कों पधारे तब श्रीगुसांई
जी कों देखि कें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये और पूछे
जो नीके हो तब श्रीगुसांईजी कहें जो तुम कों देखें सो
ई दिन नीके हैं पाछें परस्पर दोउ जने मुसिकाए पा
छें श्रीगुसांईजी राज भोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो
सो झांपो में धरयो पाछें राजभोग के दर्शन खुले तब

कृष्णदासनें कीये पाछें श्रीगुसांईजी राजभोग आरती
करि अनोंसर करि नीचें पधारे पाछें रसोई करि भोग
समर्पित भोजन करि श्रीगुसांईजी पौढे सो उत्थापन
ते घड़ीदोय पहिलें उठे पाछें उत्थापन कौ समय भयो
राजभोग करि ऊपर पधारे सो संखनाद करवायो श्री
नाथजी के उत्थापन भए पाछें सेन आरती उपांत द
र्शन करिकें कृष्णदास कों श्रीनाथजी के सन्निधान
बुलायो और कह्यो जो कृष्णदास तुम अधिकार करो
और श्रीनाथजीजी की सेवा नीकी भांति सों करियों
तब कृष्णदासनें श्रीनाथजी के सन्निधान एक पद गा
यो सोपद ॥

राग कान्हरो

पारम कृपाल श्री वल्लभनंदन करत कृपा निजहाथ दै
मांथे ॥ जेजन शरणा आये अनुसरही गहि सोंपति
श्री गोवर्द्धननाथें ॥१॥ परम उदार चतुर चिंतामणिरा
खत भवधाराते साथें ॥ भजि कृष्णदास काज सवस
वसरहीं जो जानें श्री विट्ठलनाथें ॥२॥

यह पद गायो और वीनती कीनी जो महाराज मेरो
अपराध क्षमा करो तब श्रीगुसांईजीनें कह्यो तुमा
रो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे पाछें कृष्णदास को
विदा कीयो पाछें श्रीनाथजी कों पौढाय कें श्रीगुसां
ईजी नीचें उतरे श्रीगुसांईजी परमदयाल कृष्णदास
को कृत कछु मन में न आनों श्री आचार्यजी के सेव
क जानि अनुग्रह कीयो पाछें श्रीगुसांईजी दिन दो
य रहे पाछें श्री गोकुल पधारे फिर कृष्णदास श्रीगु

सांई जीकी आज्ञाते अधिकार करन लागे ॥

वार्ताप्रसंग ॥ ७ ॥

सो वहतवरसलों भली भांतिसों अधिकार कीयो पा
छें एक वैष्णवनें कृष्णदाससों कही जो मोकों एक कू
आ वन वावनों है और मोकों अपने देश को जानों है
तातेद्रव्य तुम कोंदे जातहों सो तुम वनवाय दीजो तव
कृष्णदासनें कही जो आछो तववह वैष्णव तीन सो
रुपये दैकें अपने देस को गयो तव कृष्णदासने उन
रुपैयान मेतें एक सो रुपैया एक कूल्हरा में धरिकें आ
म के वृक्ष के नीचे गाडदीये कह्यो जो दोय से रुपैया ना
गिचुकेंगे तव इनको कादेंगे सो आछो महूर्त देखिवें
रुद्र कुंड ऊपर कूआ खुदायो तव कितेक दिन में व
ह कूआ मोंहतांई वनिकें तैयार भयो और दोय से
रुपैया लगे मठोठा वाकी रह्यो तव उत्थापन के दर्शन
करिकें कृष्णदास कूआदेखन कों गये सो हाथ में
आसा हतो सो आसा टेक कें कूआ के ऊपर ठाडे भ
ये सो वह आसा सरवेपो तव कृष्णदास कूआमें
जाय पडे तवतो मनुष्यदोय कूआमें उतरे सो वहते
गो दूदें परि कृष्णदास को सरीर हू न पायो तवसव
मनुष्य उहांते फिर आये सोतासमय श्री गुसांई
जी श्रीनाथ जी कों सेनभोग धरिकें मंजूष विराजे
हुते और रामदास श्री गुसांई जी के पास बैठे हुते ता
समय काहूनें आय कें कह्यो जोमहाराज कृष्णदा
सनें कूआ वन वायो हो सो कृष्णदास देखन गये
हुते सो आसा टेकि कें कूआ के मोंहडे ऊपर ठाडे

हतेसो आसा सरकेसो सो कूआ में गिरपरे और मनु
ष्यदोय कुंभदास कोढूंढवे को उतरे सो वहौतेरौ॰

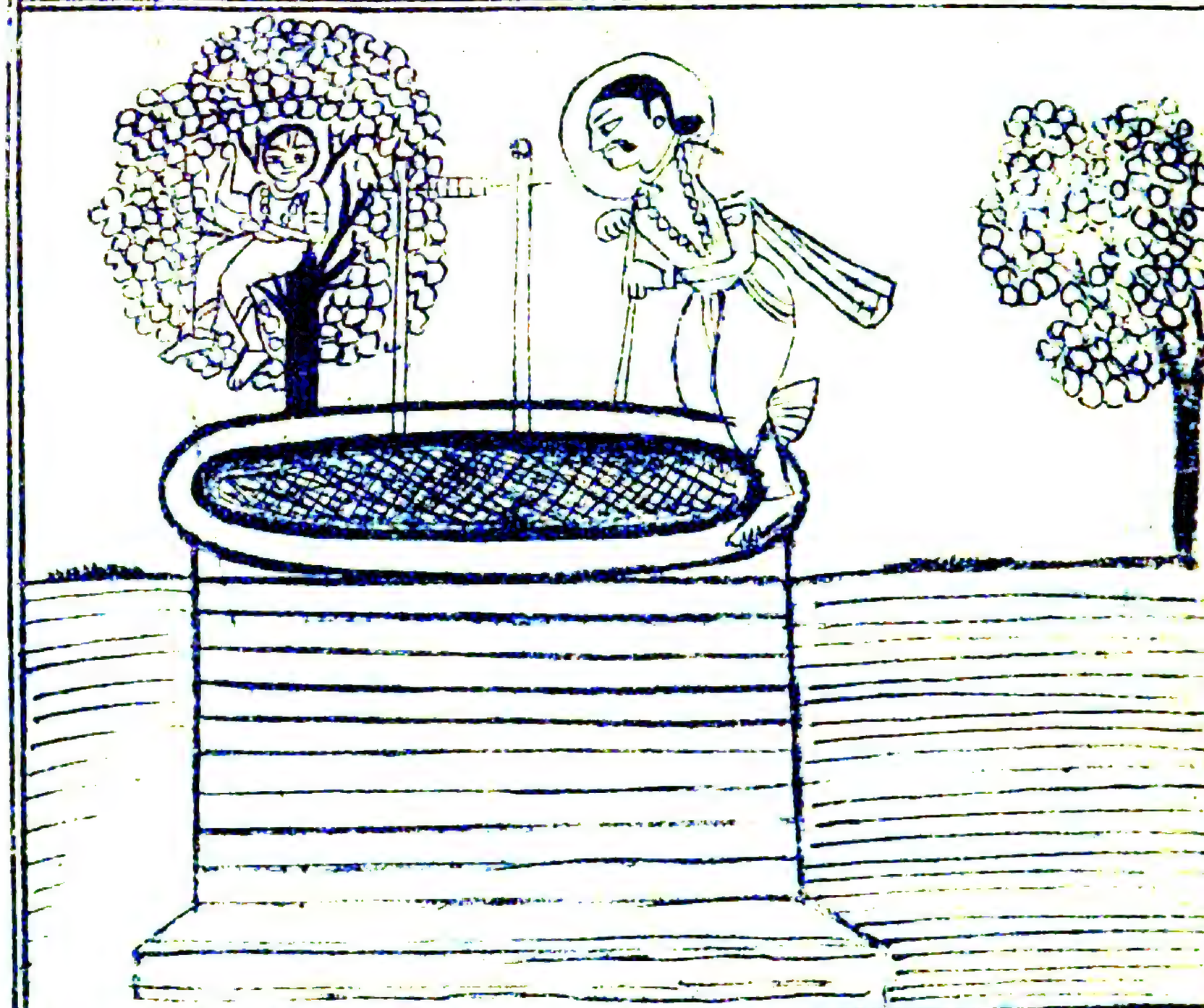

दूंढे पि सरीरहू न पायो कहा जानियें कहा भयो तव
रामदास जो कहें ॥ जो

॰अधोगच्छन्तितामसा:

तव श्री गुसांई जी कहें जो रामदास ऐसें न कहि॰अ
व जो कुंभदास कूआ में गिरे सो सरीर न मिल्यौ ता
को कारन कहा सो ताको कारन यह जो कुंभदासमें
कोई॰अलौकिक जीव हुतो सातो श्रीनाथजी की
सेवामें प्राप्त भयौ॰और कुंभदासनें यासरीर सों॰
श्री गुसांई जी की॰आज्ञा करीहैजो यह सरीर॰अलौ
किक जीव भगवनोंहों सो कूआ में गिरत मात्र क

कृष्णदास को सरीर लौकिक सद्य होयकें पूंछरी को
ओर एक वृक्ष है पीपर को तहां प्रेत होय कें रह्यो भो
गभुगतन कों ताते कृष्णदास कों सरीर कूंआ में न
[illegible] गुसांईजी को आवनो ते कृष्णदास को
यह गति भई जो प्रेत होय कें पूंछरी की ओर पीपर के
वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ८ ॥

ओर एक समय श्री नाथजी की भैंसि खोय गई हुती
सो गोपीनाथ ग्वाल ओर चार पांच ग्वाल पूंछरी की ओ
रढूंढवे को गये हुते सो गोपीनाथ देखें तो पूंछरी की
ओर श्री नाथजी खेलत हैं ओर एक पीपर ऊपर कृ
ष्णदास प्रेत हैं कें बैठे हैं तब कृष्णदास नें गोपीनाथ
ग्वाल सों कही जो ओर भैया मेरी विनती श्री गुसांई

श्री सों करियो और कहियो जो कुंभदास नें कह्यो
हे जो हों तुम्हारो अपराधी हों ताते मेरी यह अवस्था
है हूं श्रीनाथजी के पास हूं तोहू मेरी गति होत नहीं
तातें मेरो अपराध क्षमा करोतो मेरी गति होय और
र बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूल्हा में एक मो
रुपैया गडे हैं सो काढि के वा कृष्णा को मठोठावा
कीरहोहै सो बनवाल्यो तो मेरी गति होय सो गोपी
नाथ बालनें यह बात श्री गुसांई जी के आगें कही
जो महाराज कुंभदास अधिकारीनें यह बीनती करी
है तब श्री गुसांई जीनें आम के नीचेते रुपैया लाय
के मठोठा कृष्णा को बनवायो तब कुंभदास की ग
ति भई कुंभदास को प्रेत जोन में श्री नाथ जी दर्शन
देते ताको कारन यह जो श्री नाथ जी के सन्निधान
श्री गुसांई जीनें कुंभदास सों कह्यो जो कुंभदास
तुम अधिकार करो और श्री नाथजी की सेवा नीकी
भांति सों करियो तब कुंभदास नें कह्यो जो महाराज
मेरो अपराध क्षमा करो तब श्री गुसांई जीनें कह्यो
जो तुम्हारो अपराध श्री नाथ जी क्षमा करेंगे सो श्री
नाथजी की कृपा ते श्री नाथ जीनें अपराध क्षमा
करी सो प्रेत जोन में दर्शन देते भए स्पर्शन कियो जो
स्पर्श होय तो उद्धार होय सो उद्धार तो श्री गुसांईजी के
हाथ हे कुंभदास श्री नाथजी सों कहते जो महाराज
तुम मोकों दर्शन देत हो मोसों बोलत हो और में पे
तहों तातें मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत तब श्रीनाथ
जीनें कह्यो जो हूं तोकों दर्शन देत हों बोलत हों सोतो

श्री गुसांई जी के वचन के लियें नाहीं तौ प्रेत जोन में
दर्शन नाहीं देतौ और बोलतौ हू नाहीं और उद्धार
तौ श्री गुसांई जी के हाथ है तातें श्री गुसांई जी को अ
पराध कीयो है तातें श्री गुसांई जी उद्धार करेंगे तब
होयगो ता पाछें श्री गुसांई जी आप परम कृपाल
कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत
दिन भयें हैं ताते अब उद्धार होय तौ भलो तब श्री
गुसांई जी धुव घाट ऊपर आय कें कृष्णदास कौ
कर्म करवाय उद्धार कीयो तब कृष्णदास को उद्धार
भयो और लाला में प्राप्ति भयो और श्री गुसांई जी
कहें जो कृष्णदास नें तीन बात आछी करी एक
तौ अधिकार कीयो सो ऐसो कीयो जो फेरि ऐसो
न करो दूसरें कीर्तन कीये सो अद्भुत कीये और
तीसरे श्री आचार्यजी महा प्रभून की सेवक होय
कें सेवा हू प्रेमा करीजो कोउन करेगो तातें वे कृ
ष्णदास श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे परम
कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता को पार
नाहीं तातें इन की वार्ता कहां तांई लिखिवये ॥॥
॥प्रसंग॥ ९ ॥सम्बन्ध॥१८४॥वैष्णव॥८४॥

अब श्री आचार्यजी महा प्रभून
के सेवक परम कृपा पात्र।
चौरासी मुख्य वैष्णव
न की लिखी सो।
सम्पूर्णम्॥

श्रीगणेशायनमः

अथ श्रीचौरासीवार्ताकेवैष्णवोंकीवार्तीओंका

सूचीपत्र लिख्यते॥

नाम वैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति	नाम वैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति
दासाऊदासहरसानीकी	२	५	वेणीदास माधोदास दो	७२	४
कृष्णदास मेघन क्षत्री·	१०	५	ऊमाईनकीवार्ता··		
रामोदरदास सम्बरुवार	१९	१	हरिवंशपाठक भारस्वत·	७५	१६
खत्री की वार्ता·			गोविंददास भत्रा कीवा	७७	९
पद्मनाभिदास कनोजिया	३१	१३	रूपा क्षत्राणी कीवार्ता	८१	१२
ब्राह्मण की वार्ता·			गज्जन धावन क्षत्री की·	८३	२४
पद्मनाभिदास की वेटीतु	४३	२४	नारायनदास ब्रह्मचारी	८७	६
रूपाबाई की वार्ता·			सारस्वत ब्राह्मण की वार्ता		
पद्मनाभिदास के वेटाकी	४५	२३	महावन की वासी एक	९३	४
यहू पार्वती ताकी वार्ता·			क्षत्राणी ताकी वार्ता·		
पद्मनाभिदास को नातीपं	४७	१३	जीयदास क्षत्री सूरकी·	९४	१८
वेती को वेटा रघुनाथदास			देवा क्षत्री कपूर की वार्ता	९६	८
रूपो क्षत्राणी झड़ेरू की	४९	४	सेठ दिनकरदास की·	९७	१३
सेठ पुरुषोत्तमदास खत्री	५१	२०	मुकन्ददास कायस्थ की·	९९	१२
बनारस के वासी की वार्ता			प्रभूदास जरोदा क्षत्री सी	१००	१८
सेठ पुरुषोत्तमदास की·	६०	२५	हनंद के वासी की वार्ता·		
वेटी रुक्मणी की वार्ता·			प्रभूदास भाट की वार्ता·	१०१	९
सेठ पुरुषोत्तमदास के वे	६३	६	पुरुषोत्तमदास आगरे में	११०	७
टा गोपालदास की वार्ता			राजघाट पै रहने ताकी·		
रामदास सारस्वत ब्राह्मण	६४	१७	त्रिपुरदास कायस्थ शेर	११२	१५
गदाधरदास सारस्वत ब्रा	६९	७	गढ़ के वासी की वार्ता·		

पूरनमल्लस्वर्णकीवार्ता	११८	२३
यादवेंद्रदासकुम्हारकी·	१२१	२
गुसांईदासमारस्वनकी·	१२३	७
माधोदासभट्टकाग्रसार	१२४	१९
केवासीकीवार्ता·		
गोपालदासकीवार्ता	१२९	२३
पद्मरावलसांचोराब्राह्म	१३७	१८
ण उज्जैनकेवासीकीवा·		
पुरुषोत्तमजोसीकीवार्ता	१४१	८
जगन्नाथजोसीकीवार्ता	१४४	२
जगन्नाथजोसीकीमाताकी·	१४७	११
जगन्नाथजोसीकेबड़ेभा	१५२	७
ईनरहरजोसीकीवार्ता·		
रणव्यासमांचोराब्राह्मण	१५७	२२
गोधराकेवासीकीवार्ता·		
रामदाससारस्वतब्राह्मण	१६२	२४
राजनगरकेवासीकीवार्ता		
गोविंददुबेमांचोराकीवा·	१६५	१
राजादुबेमाधोदुबेदोउ	१६९	१६
भाईनकीवार्ता·		
उत्तमश्लोकदासमांचो	१७१	५
रा ब्राह्मणकीवार्ता·		
ईश्वरदुबेमांचोराकीवार्ता	१७७	१७
वासदेवदासकंकड़ामा	१७९	१३
रस्वतब्राह्मणकीवार्ता·		

बाबावेणुश्रीरकुम्हदास	१८७	६
घघरियानथादेवदास		
इनकीवार्ता·		
जगतानंदसारस्वतब्रा·	१८९	२
थानेश्वरकेवासीकी·		
आनंददासविश्वंभरदा	१९३	२५
सदोउभाईक्षत्रीनकी·		
एकब्राह्मणीकीवार्ता·	१९४	२०
एकदात्राणीकीवार्ता·	१९५	८
गोरजा, समराई, सासव	२००	११
हूसीहनंदकीवासीकी·		
रुक्मनीबहूजीकीदासी	२०६	१६
कुम्हादासीकीवार्ता·		
चूलामिश्रपंडितकीवार्ता	२०९	२
मीराबाईकेपुरोहितराम	२१२	२१
दासकीवार्ता·		
रामदासचौहानकीवार्ता	२१३	२
रामानंद पंडित की वा·	२१४	२३
विष्णुदासछीपीकीवा·	२१७	१७
जीवनदासक्षत्रीकपूर	२२१	७
सीहनंदकेवासीकीवा·		
भगवानदासस्वत·	२२३	६
ब्राह्मणकीवार्ता·		
भगवानदासश्रीनाथजी	२२४	२
केभातिरियाकीवार्ता·		

अच्युतदासजनोड़िया ब्राह्मण की वार्ता.	२२६	२२	सहूपांड़े तथा मानिकचंद्र पांड़े तथाइनकी स्त्रीत.	२५६	८
अच्युतदास गोड़वा. की.	२२७	२४	थानरोवेटी की वार्ता.		
अच्युतदास सारस्वत की.	२२८	२२	नरहरदाससंन्यासीकी.	२६२	६
नारायनदास अम्बाले के वासी की वार्ता.	२३१	२१	गोपालदास जटाधारी श्री नाथजी की खवासीके की.	२६३	४
नारायनदास मांट मथुरा के वासी की वार्ता.	२३३	२३	कृष्णदास ब्राह्मण की.	२६७	२६
नारायनदास चौहान. ढूंढे के वासी की वार्ता.	२३४	२३	संतदास चौपड़ा छात्री. आगरे के वासी की वार्ता	२७०	२७
सीहनंद की छत्राणी की.	२४०	२३	सुन्दरदास श्रीजगन्नाथ जी के पास रहते ताकी वा.	२७४	१
दामोदरदास कायस्थ की	२४३	४	मावजी पटेल तथाइनकी	२७८	८
स्त्री पुर्ष दोउ छात्रीन की.	२४४	२७	स्त्री विरजो की वार्ता.		
अड़ेल के सूतारि कारीगर की.	२४६	८	गोपालदास गोड़ा के बा	२८२	६
एक अन्य मार्गीय के ले ही एक छात्री की वार्ता.	२४७	१	सी की वार्ता		
लघुपुरुषोत्तमदास की.	२४८	२२	सूरदास जी गउघाट के वासी तिनकी वार्ता.	२८५	२०
कविराज भाट की वार्ता.	२४९	२३	परमानन्ददास कनोजि	२०४	२
गोपालदास गेरा के बासी की वार्ता	२५०	३	याज्ञब्राह्मण की वार्ता		
जनार्दनदास चौपड़ा की	२५०	२२	कुम्भनदास गोरवा की	३३०	१४
गड़ स्वामी सनोड़िया की.	२५२	२०	वार्ता		
कन्हैया लाल छत्री की.	२५२	२५	कृष्णदास अधिकारी की वार्ता.	३५५	९
नरहरदास गोड़िया की	२५३	१४			
चाद्गयाणादास की वार्ता	२५४	२२	इति सम्पूर्णम्॥		